Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका

(उत्तरार्द्ध)

पण्डित प्रवर टोडरमलजी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती विरचित गोम्मटसार कर्मकाण्ड की
आचार्यकल्प पण्डित प्रवर टोडरमलजी कृत भाषा टीका

सम्यग्ज्ञान-चन्द्रिका

(द्वितीय खण्ड उत्तरार्द्ध)

गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं उसकी भाषा टीका

प्रकाशक :

जिनश्रुत प्रकाशन समिति, जयपुर
एवं
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर जयपुर-302 015

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथम संस्करण : 2 हजार
(16 मार्च, 1995)

मूल्य : तीस रुपए

टाइपसैटिंग :
प्रिन्टोमैटिक्स
लालकोठी, जयपुर – 302 015
फोन : 515480

मुद्रक :
ग्राफिक ऑफसैट प्रिंटर्स
गोपालजी का रास्ता
जयपुर

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Thanks & Our Request

This shastra has been donated by Daksha Nainesh Shah, London who has paid for it to be "electronised" and made available on the internet.

Our request to you:

1) Great care has been taken to ensure this electronic version of Samyag Gnaan Chandrika Part 2 - Uttar Ardh (Hindi) is a faithful copy of the paper version. However if you find any errors please inform us on rajesh@AtmaDharma.com so that we can make this beautiful work even more accurate.

2) Keep checking the version number of the on-line shastra so that if corrections have been made you can replace your copy with the corrected one.

Version History

Version Number	Date	Changes
001	28 Mar 2011	First electronic version

प्रकाशकीय

आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती विरचित गोम्मटसार कर्मकाण्ड की आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत भाषा टीका जो सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका के नाम से विख्यात है उसके द्वितीय खण्ड का उत्तरार्द्ध प्रकाशित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

दिगम्बराचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती करणानुयोग के महान आचार्य थे। गोम्मटसार जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, लब्धिसार-क्षपणासार, त्रिलोकसार तथा द्रव्यसंग्रह ये महत्वपूर्ण कृतियाँ आपकी प्रमुख देन हैं। पण्डित प्रवर टोडरमलजी ने गोम्मटसार जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड तथा लब्धिसार व क्षपणासार की भाषा टीकाएं पृथक्-पृथक् बनाई थीं। चूंकि ये चारों टीकाएं परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित तथा सहायक थीं अत: सुविधा की दृष्टि से उन्होंने उक्त चारों टीकाओं को मिलाकर एक ही ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत कर दिया तथा इस टीका ग्रंथ का नामकरण उन्होंने सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका किया।

इस सम्बन्ध में पण्डित टोडरमलजी स्वयं लिखते हैं-

या विधि गोम्मटसार, लब्धिसार ग्रन्थनिकी,
भिन्न-भिन्न भाषाटीका कीनी अर्थ गायकैं।
इनिकै परस्पर सहायकपनौ देख्यौ,
तातैं एककर दई हम तिनकौ मिलायकै॥
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका धर्यो है याकौ नाम,
सोई होत है सफल ज्ञानानन्द उपजायकै।
कलिकाल रजनी में अर्थ को प्रकाश करै,
यातै निजकाय कीजै इष्टभाव भायकै॥

इस ग्रन्थ की पीठिका के सम्बन्ध में मोक्षमार्ग प्रकाशक की प्रस्तावना लिखते हुए डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल लिखते हैं-

"सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका विवेचनात्मक गद्यशैली में लिखी गई है। प्रारम्भ में इकहत्तर पृष्ठ की पीठिका है। आज नवीन शैली के क्षेत्र में लगभग दो सौ बीस वर्ष पूर्व लिखी गई सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की पीठिका आधुनिक भूमिका का आरम्भ रूप है किन्तु भूमिका का आद्यरूप होने पर भी उसमें प्रौढ़ता पाई जाती है, उसमें हल्कापन कहीं भी देखने को नहीं मिलता। इसके पढ़ने से ग्रन्थ का पूरा हार्द खुल जाता है एवं इस गूढ़ ग्रन्थ के पढ़ने में आनेवाली पाठक की समस्त कठिनाईयाँ दूर हो जाती हैं। हिन्दी आत्मकथा के साहित्य में जो महत्व महाकवि पण्डित बनारसीदास के 'अर्द्धकथानक' को प्राप्त है, वही महत्व हिन्दी भूमिका साहित्य में सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की पीठिका का है।"

ग्रंथ का अधिकांश भाग गोम्मटसार जीवकाण्ड, लब्धिसार-क्षपणासार तथा गोम्मटसार कर्मकाण्ड का पूर्वार्द्ध प्रकाशित होकर आपके समक्ष पहुँच ही चुके हैं और अब यह कर्मकण्ड टीका का उत्तरार्द्ध आपके हाथों में है।

ग्रंथ का प्रकाशन बड़ा ही श्रमसाध्य कार्य है। इस ग्रंथ का मूल से बारीकी से मिलानकर इसकी प्रूफ रीडिंग करने में श्री सौभाग्यमलजी बोहरा, बापूनगर-जयपुर तथा मुद्रण कार्य में अखिलबंसल का योगदान रहा है अत: दोनों बधाई के पात्र हैं, जिन महानुभावों ने प्रस्तुत ग्रंथ की कीमत कम करने में सहयोग दिया है उनका भी हम आभार मानते हैं।

अब यह टीका ग्रंथ सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका विभिन्न खण्डों के रूप में पूर्ण रूप से प्रकाशित हो चुका है। आशा है पाठकगण इस अमूल्य ग्रंथ से लाभान्वित होकर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगे ऐसी मंगलकामना है।

महामंत्री
जिनश्रुत प्रकाशन समिति, जयपुर

महामंत्री
पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

विषय -सूची

५ स्थानसमुत्कीर्तनाधिकार

मंगलाचरण पूर्वक कथन प्रतिज्ञा	१
बंधादि स्थानों का प्रकृति संख्या सहित गुण स्थानों में कथन	२
मोहनीय कर्म के उदय स्थानों की तथा प्रवृत्तियों की संख्या का उपयोग	
योग-संयम-लेश्या और सम्यक्त्व की अपेक्षा से कथन	२७
मोहनीय के सत्वस्थानों का कथन	३६
नाम कर्म के ४१ जीव पदों का कथन	४२
नाम कर्म के बंधादिस्थान तथा भंग गुणस्थान और मार्गणाओं की अपेक्षा	४३
बंधोदयसत्व के त्रिसंयोगी भंग	१२५
बंधोदय सत्व स्थानों का चौदह जीव समासों की अपेक्षा कथन	१५५
बंधोदय सत्व स्थानों का चौदह - मार्गणाओं की अपेक्षा कथन	१५६
बंधादि त्रिसंयोग में एक आधार और दो आधेय की अपेक्षा कथन	१६४
बंधादि स्थानों में दो आधार एक आधेय की अपेक्षा कथन	१८४
नाम कर्म के संयोगी भेद पूर्ण	१९१

६ आस्रवाधिकार

मंगलाचरण पूर्वक वक्तव्य प्रतिज्ञा	१९१
आस्रवों का स्वरूप भेद सहित	१९२
मूलउत्तर प्रत्ययों का गुण स्थानों में कथन	१९२
आस्रवों के भेदों का कथन	१९६
कर्मों के बंध के कारण परिणामों का कथन	२०६

७ भावचूलिकाधिकार

मंगलाचरण वक्तव्य प्रतिज्ञा	२११
भावों के नाम भेद सहित	२११
भावों की उत्पत्ति का कारण	२१२
भावों के भेदों का नाम	२१२
उत्तर भावों के भेद दूसरी तरह से	२१७
भावों के स्थान भंग और पद भंगों का गुणस्थानों की अपेक्षा कथन	२२८
एकान्तमत के भेदों का स्वरूप	२५१
एकान्त भेदों के भेदों का स्वरूप	२५१
एकान्त मतों का झगडा मेंटने की युक्ति	२५७

एकान्तमतों के मिथ्या होने का कारण २५८

८ त्रिकरणचूलिकाधिकार

मंगलाचरण गुरु के लिए २५९

तीन करणों का स्वरूप २५९

अध:करण का अंकों के संकेत से कथन २६०

अध:करण के काल का प्रमाण २६७

अपूर्वकरण में अंकों की सहनानी २६७

अपूर्वकरण के काल का प्रमाण २६७

अनिवृत्ति करण का स्वरूप २६९

९ कर्मस्थितिरचनाधिकार

मंगलाचरण, वक्तव्य प्रतिज्ञा २७०

कर्मस्थिति रचना का प्रकार २७०

कर्मस्थिति रचना की अंकसंदृष्टि २७३

कर्मस्थिति रचना की अर्थ संदृष्टि २७४

सत्तारूप त्रिकोण यंत्र रचना के जोड़ देने की विधि २९१

स्थिति के भेदों का कथन २९५

स्थिति के कारण कषायाध्यवसाय स्थानों का मूल प्रकृतियों में कथन २९६

स्थिति बंधाध्यवसाय स्थानों का प्रमाण २९८

अध्यवसाय स्थानों में अनुकृष्टि विधान ३०४

स्थिति सम्बन्धी अनुभागबंधाध्यवसाय स्थानों का कथन ३१०

ग्रंथकर्ता की प्रशस्ति

ग्रंथ रचने का प्रयोजन ३११

अजितसेन गुरु को नमस्कार ३११

चामुण्डराय को आशीर्वाद ३१२

दक्षिण कुक्कुट नाम से प्रसिद्ध जिन के प्रतिबिम्ब को जयशब्द ३१२

चामुण्डराय को विशेष आशीर्वाद ३१२

चामुण्डराय ने कर्णाटिकी वृत्ति बनाई इस पर आशीर्वाद देते हुए अपने समाचारों की पूर्णता ३१३

गोम्मटसार कर्मकाण्ड

(उत्तरार्द्ध)

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका

भाषा टीका सहित

स्थानसमुत्कीर्तनाधिकार ॥ ५ ॥

बंध उदय सत्ता सहित, कर्म थानकरि नष्ट ।
नेमिचंद जयवंत जगि, भए केवली स्पष्ट ॥ ५ ॥

ऐसैं त्रिचूलिका-अधिकार कहि श्रीमत् नेमिचन्द्र-सिद्धांतचक्रवर्ती अपने इष्टदेव को नमस्कार पूर्वक आगै जो कार्य करिए है, ताकी प्रतिज्ञा करैं हैं–

णमिऊण णेमिणाहं, सच्चजुहिट्ठिरणमंसियंघिजुगं ।
बंधुदयसत्तजुत्तं, ठाणसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥ ४५१ ॥

नत्वा नेमिनाथं, सत्ययुधिष्ठिरनमस्कृतांघ्रियुगं ।
बंधोदयसत्वयुक्तं, स्थानसमुत्कीर्तनं वक्ष्ये ॥ ४५१ ॥

टीका – प्रत्यक्ष वंदनेवाला सत्य-युधिष्ठिर नामा पांडव ताकरि नमस्कार रूप किया है चरणयुगल जाका, ऐसा 'नेमिनाथ तीर्थंकर' कौं नमि करि बंध, उदय, सत्तासंयुक्त-स्थानसमुत्कीर्तन कौं कहौंगा । सो किस वासतैं ? पूर्वै प्रकृतिसमुत्कीर्तन-अधिकार विषैं जे प्रकृति कहीं, तिनका बंधादिक क्रम तैं हो है, वा बिना क्रम तैं हो हैं, ऐंसा प्रश्न होत संतैं, ऐसे हो हैं, ऐसैं जाननै के अर्थि स्थानसमुत्कीर्तन नामा अधिकार कहिए है ।

स्थान कहा कहिए ? एक जीव कैं एक काल विषैं जितनी प्रकृति संभवैं, तिनके समूह का नाम स्थान है, तिसका व्याख्यान इस अधिकार विषैं हैं ॥ ४५१ ॥

तहां प्रथम ही मूल प्रकृतिनि के बंध, उदय, उदीरणा सत्व का भेद लिए तिस स्थानसमुत्कीर्तन कौं गुणस्थाननि विषैं छह गाथानि करि कहैं हैं–

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

छसु सगविहमट्ठविहं, कम्मं बंधंति तिसु य संत्तविहं।
छव्विहमेकट्ठाणे, तिसु एक्कमबंधगो एक्को ॥ ४५२ ॥

षट्सु सप्तविधमष्टविधं, कर्म बध्नंति त्रिषु च सप्तविधं।
षड्विधमेकस्थाने, त्रिषु एकमबंधकमेकं ॥ ४५२ ॥

टीका – मिश्र बिना अप्रमत्त पर्यंत छह गुणस्थाननि विषैं आयु बिना सात प्रकार अथवा आयु सहित आठ प्रकार कर्म बंधैं हैं। बहुरि मिश्र, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण—इन तीन विषैं आयु बिना सात प्रकार ही कर्म बंधै हैं। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं आयु, मोह बिना छह प्रकार ही कर्म बंधैं हैं। उपशांतकषाय, क्षीणकषाय, सयोगी विषैं एक वेदनीयकर्म ही बंधै हैं। अयोगी विषैं बंध नाही है ॥ ४५२ ॥

चत्तारि तिण्णि तिय चउ, पयडिट्ठाणाणि मूलपयडीणं।
भुजगारप्पदराणि य, अवट्ठिदाणिवि कमे होंति ॥ ४५३ ॥

चत्वारि त्रीणी-त्रीणि, चत्वारि प्रकृतिस्थानानि मूलप्रकृतीनाम्।
भुजाकारल्पतराणि च, अवस्थितान्यपि क्रमेण भवन्ति ॥ ४५३ ॥

टीका– ऐसैं मूल-प्रकृतिनि का सामान्यपनैं बंधस्थानक आठ, सात, छह, एक प्रकृतिरूप च्यारि हैं। तहां उपशम-श्रेणी तैं उतरने विषैं भुजाकार-बंध तीन हैं। उपशांत-कषाय विषैं एक का बंध था, तहां तैं सूक्ष्मसांपराय विषैं आया, तब छह का बंध कीया, सो एक तो यह भुजाकार-बंध भया। बहुरि सूक्ष्म-सांपराय विषैं छह का बंध था, तहां तैं अनिवृत्ति-करण विषैं आया, तब सात का बंध भया, तहां एक यहु भुजाकार बंध भया। बहुरि अपूर्वकरण विषैं सात का बंध था, नीचले गुणस्थान विषैं आठ का होई, तहां एक यहु भुजाकार भया— ऐसैं तीन भुजाकार हो हैं।

१	६	७
६	७	८

बहुरि ऊपरि-ऊपरि गुणस्थान चढ़ने विषैं अल्पतर-बंध तीन हैं। आठ-कर्म के बंध तैं सात का बंध होई, तहां एक अल्पतर होइ। बहुरि सात तैं छह का बंध भए एक अल्पतर होइ, छह तैं एक का बंध भए एक अल्पतर होइ— ऐसैं तीन अल्पतर हैं।

८	७	६
७	६	१

बहुरि अपने ही स्थान विषैं पहिले समयनि विषैं जितने कर्मनि का बंध होइ, तितने ही पिछले समय बंधै, तहां अवस्थित-बंध च्यारि हैं। पहिले आठकर्म का बंध था अर पीछै आठ का ही बंध होइ, तहां एक अवस्थित-बंध भया। सात पीछैं सात का होइ, तहां एक भया। छह पीछै छह का होइ, तहां एक भया। एक पीछैं एक का होइ, तहां एक भया। ऐसैं अवस्थित-बंध च्यारि हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

८	७	६	१
८	७	६	१

बहुरि उपशांत-कषाय तैं उतरि सूक्ष्मसांपराय कौं छोडि अनिवृत्तिकरणादिक कौं प्राप्त न होइ, तातैं एक का बंध पीछै सात का बंध वा एक का बंध पीछे आठ का बंध रूप — ए दोय भुजाकार-बंध नाही संभवै हैं। बहुरि अप्रमत्त वा अनिवृत्ति-करण में बीच के गुणस्थान छोडि उपशांतकषाय को प्राप्त न होइ; तातैं आठ पीछै एक का बंध रूप वा सात पीछै एक का बंध रूप — ए अल्पतर भी दोय बंध न करै हैं।

इहां प्रश्न — जो उपशांतकषाय तैं मरि करि देव-असंयत-गुणस्थानवर्ती होइ, तहां एक तैं सात का बंध रूप वा एक तैं आठ का बंध रूप होइ भुजाकार-बंध संभवै हैं, तैं क्यों न कहे ?

ताका समाधान — अबद्धायु का तो मरण नाहीं, जातैं एक तैं सात का बंध रूप भुजाकार का अभाव है अर बद्धायु का मरण होइ, सो देव-असंयत-गुणस्थानवर्ती होइ; तहां देवायु का छह महीना अवशेष रहे ही आयु का बंध होइ, तातैं एक तैं आठ का बंध रूप भुजाकार का अभाव हैं; तातैं न कहे।

तहां जो पहिलै थोरी प्रकृतिनि का बंध करि पीछैं बहुत प्रकृतिनि को बांधैं, ताकैं भुजाकार बंध कहिए, पहिले बहुत प्रकृतिनि का बंधकरि पीछे थोरी प्रकृतिनि को बांधै, ताकौ अल्पतर-बंध कहिए। पहिलैं थोरी वा बहुत जितनी-प्रकृति बांधैं, तितनी ही पीछै अनन्तर-समय विषैं बांधैं, ताकौं अवस्थित-बंध कहिए। किछू भी न बांधि करि पीछैं बांधैं, ताकौं अवक्तव्य-बंध कहिए। सो यहु अवक्तव्य-बंध मूल-प्रकृतिनि विषैं न संभवै है, उत्तर-प्रकृतिनि विषैं ही संभवैं है।

ऐसैं इनका स्वरूप जानना ॥ ४५३ ॥

अट्ठुदओ सुहुमोत्ति य, मोहेण विणा हु संतखीणेसु।
घादिदराणं चउक्कस्सुदओ केवलिदुगे णियमा॥ ४५४ ॥

अष्टोदयः सूक्ष्म इति च, मोहेन विना हि शांतक्षीणयोः।
घातीतराणां चतुष्कस्योदयः, केवलिद्विके नियमात्॥ ४५४ ॥

टीका– सूक्ष्म-सांपराय पर्यंत आठौं मूलप्रकृतिनि का उदय है। उपशांतकषाय, क्षीणकषाय विषैं मोह बिना सात का उदय है सयोगी-अयोगी विषैं च्यारि अघातियानि का ही उदय है नियमकरि ॥ ४५४ ॥

घादीणं छदुमट्ठा, उदीरगा रागिणो हि मोहस्स।
तदियाऊण पमत्ता, जोगंता होंति दोण्हंपि॥ ४५५ ॥

घातिनां छद्मस्था, उदीरका रागिणो हि मोहस्य।
तृतीयायुषोः प्रमत्ता, योग्यंता भवंति द्वयोरपि॥ ४५५ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका — घातिया-कर्म च्यारि, तिनका क्षीण-कषाय पर्यंत छद्मस्थ उदीरणा करने वाले हैं, तहां भी मोहनीय की उदीरणा करने वाले सूक्ष्मसांपराय पर्यंत सरागी ही हैं। बहुरि वेदनीय अर आयु की उदीरणा करने वाले प्रमत्त पर्यंत प्रमादी जीव ही हैं। बहुरि नाम अर गोत्र की उदीरणा करने वाले सयोगी पर्यंत हैं ॥ ४५५

मिस्सूणपमत्तंते, आउस्सद्धा हु सुहुमखीणाणं।
आवलिसिट्ठे कमसो, सग पण दो चेवुदीरणा होंति ॥ ४५६ ॥

मिश्रोनप्रमत्तांते, आयुषः अद्धा हि सूक्ष्मक्षीणयोः।
आवलिशिष्टे क्रमशः, सप्त पंच द्वे चैवोदीरणा भवंति ॥ ४५६ ॥

टीका— भुज्यमान-आयु का आवली मात्र काल अवशेष रहैं, नियमकरि मिश्र-गुणस्थान तैं अन्य गुणस्थान कौं प्राप्त होइ, तातैं मिश्र बिना प्रमत्त पर्यंत पंच गुणस्थाननि कैं आयु विषैं आवली मात्र काल अवशेष रहै आयु बिना सात की उदीरणा है। बहुरि सूक्ष्म-सांपराय विषैं तितना ही काल अवशेष रहैं, आयु, मोहनीय, वेदनीय बिना पांच की ही उदीरणा है। बहुरि क्षीण-कषाय विषैं तितना ही काल अवशेष रहैं, नाम, गोत्र इन दोऊनि की उदीरणा हैं ॥ ४५६ ॥

संतोत्ति अट्ठ सत्ता, खीणे सत्तेव होंति सत्ताणि।
जोगिम्मि अजोगिम्मि य, चत्तारि हवंति सत्ताणि ॥ ४५७ ॥

शांत इति अष्ट सत्ताः, क्षीणे सप्तैव भवंति सत्त्वानि।
योगिनि अयोगिनि च चत्वारि भवंति सत्त्वानि ॥ ४५७ ॥

टीका— उपशांत-कषाय पर्यंत आठौं मूल-प्रकृतिनि का सत्व है। क्षीण-कषाय विषैं मोह बिना सात ही का सत्व है। सयोगी, अयोगी विषैं च्यारि अघातीनि का ही सत्व है ॥ ४५७ ॥

आगैं उत्तर-प्रकृतिनि के स्थान-समुत्कीर्तन कहै हैं—

तिण्णि दस अट्ठ ठाणाणि दंसणावरणमोहणामाणं।
एत्थेव य भुजगारा, सेसेसेयं हवे ठाणं ॥ ४५८ ॥

त्रीणि दश अष्ट स्थानानि दर्शनावरणमोहनाम्नां।
अत्रैव च भुजाकाराः, शेषेष्वेकं भवेत् स्थानं ॥ ४५८ ॥

टीका— दर्शनावरण का वा मोहनीय का वा नाम का बंध-स्थान अनुक्रम तैं तीन, दश, आठ जानने ; तातैं भुजाकार-बंध भी इनहीं विषैं हैं, जातैं अवशेषनि विषैं ज्ञानावरण अर अंतराय का

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तो पांच प्रकृतिनि का बंध रूप अर गोत्र, आयु, वेदनीय का एक-एक प्रकृति का बंधरूप एक-एक स्थान ही है ॥ ४५८ ॥

णव छक्क चदुक्कं च य, बिदियावरणस्स बंधठाणाणि।
भुजगारप्पदराणि य, अवट्ठिदाणिवि य जाणाहि ॥ ४५९ ॥

नव षट्कं चतुष्कं च, द्वितीयावरणस्य बंधस्थानानि।
भुजाकाराल्पतराणि च अवस्थितान्यपि च जानीहि ॥ ४५९ ॥

टीका – दर्शनावरण के नव प्रकृति रूप अर स्त्यान गृद्धित्रिक बिना छह प्रकृतिरूप अर निद्रा, प्रचला बिना च्यारि प्रकृति रूप – ए तीन बंध-स्थान हैं, तिनके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित-बंध हैं। 'अपि' शब्द तैं अवक्तव्य-बंध भी है सोई कहिए है–

उपशम-श्रेणी से उतरनेवाला अपूर्वकरण का दूसरा भाग विषैं च्यारि प्रकृति रूप दर्शनावरण कौं बाँधि तिस अपूर्वकरण के प्रथमभाग विषैं छह प्रकृतिरूप बांधैं, सो एक तौ यहु भुजाकार भया। बहुरि प्रमत्त, देशसंयत, असंयत, मिश्र विषैं छह प्रकृति रूप बांधै अर पीछै मिथ्यादृष्टि होइ कर वा प्रथमोपशम-सम्यग्दृष्टि सासादन होइ करि नव प्रकृतिरूप बांधे, एक यहु भुजाकार भया – ऐसे भुजाकार-बंध दोय हैं।

बहुरि प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं सन्मुख भया मिथ्यादृष्टि अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं नव प्रकृतिरूप बांधता, अनंतर-समय विषैं असंयत वा देश-संयत वा अप्रमत्त होइ करि छह प्रकृतिरूप बांधै, तहां एक तो यहु अल्पतर भया बहुरि उपशमक वा क्षपक अपूर्वकरण का पहिला-भाग का अंत-समय विषैं छह प्रकृतिरूप बांधता दूसरा भाग का प्रथमसमय विषैं च्यारि प्रकृतिरूप बांधै, एक अल्पतर यहु भया– ऐसैं अल्पतर-बंध दोय हैं।

बहुरि मिथ्यादृष्टि वा सासादन नव प्रकृतिरूप मिश्रादि अपूर्वकरण का प्रथम-भाग पर्यंत छह-प्रकृतिरूप, अपूर्वकरण का द्वितीयभाग तैं सूक्ष्म-सांपराय पर्यंत च्यारि प्रकृतिरूप बांधता, अनंतर-समय विषैं तितनी ही प्रकृतिरूप बांधे– ऐसैं अवस्थित-बंध तीन हैं।

बहुरि उपशांत-कषाय किछू भी दर्शनावरण कौं न बांधता उतरने विषैं सूक्ष्म-सांपराय का प्रथमसमय विषैं च्यारि प्रकृतिरूप वा बद्धायुष्क मरि देव-असंयत होइ छह प्रकृतिरूप बांधै – ऐसै अवक्तव्य-बंध दोय हैं ॥ ४५९ ॥

इस कहे अर्थ कौं प्रगट करै हैं–

णव सासणोत्ति बंधो, छच्चेव अपुव्वपढमभागोत्ति।
चत्तारि होंति तत्तो, सुहुमकसायस्स चरिमोत्ति ॥ ४६० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नव सासन इति बंधः, षट् चैव अपूर्वप्रथमभाग इति।
चतस्रो भवंति ततः, सूक्ष्म कषायस्य चरम इति॥ ४६०॥

टीका– दर्शनावरण कौं नव प्रकृतिरूप सासादन पर्यंत ही बांधै है। ऊपरि अपूर्वकरण का प्रथम-भाग पर्यंत छह-प्रकृति रूप बांधै है, ताके ऊपरि सूक्ष्मसांपराय का अंतसमय पर्यंत च्यारि-प्रकृति रूप बांधै है॥ ४६०॥

खीणोत्ति चारि उदया, पंचसु णिद्दासु दोसु णिद्दासु।
एक्के उदयं पत्ते, खीणदुचरिमोत्ति पंचुदया॥ ४६१॥

क्षीण इति चतस्र उदयाः पंचसु निद्रासु द्वयोर्निद्रयोः।
एकस्यामुदयं प्राप्तायां, क्षीणद्विचरम इति पंचोदयाः॥ ४६१॥

टीका – दर्शनावरण का उदय-स्थान जागताजीव विषैं मिथ्यादृष्टि तैं क्षीण-कषाय का अंत-समय पर्यंत चक्षुदर्शनावरणादिक च्यारि प्रकृति रूप जानना। निद्रावानजीव विषैं प्रमत्तपर्यंत स्त्यानगृद्धयादिक पंचनि विषैं एक का उदय होतैं अर ऊपरि क्षीण-कषाय का द्विचरम-समय पर्यंत निद्रा, प्रचला विषैं एक का उदय होतैं– पंच प्रकृति रूप जानना। ऊपरि दर्शनावरण के उदय का अभाव है॥ ४६१॥

मिच्छादुवसंतोत्ति य, अणियट्टीखवगपढमभागोत्ति।
णवसत्ता खीणस्स दुचरिमोत्ति य छच्चदूवरिमे॥ ४६२॥

मिथ्यात्वादुपशांत इति च, अनिवृत्तिक्षपकप्रथमभाग इति।
नवसत्ता क्षीणस्य द्वि, चरम इति छ षट्चतुरुपरिमे॥ ४६२॥

टीका – दर्शनावरणीय का सत्व-स्थान मिथ्यादृष्ट्यादिक उपशांत-कषाय पर्यंत क्षपक-श्रेणी विषैं अनिवृत्तिकरण का प्रथम-भाग पर्यंत नव-प्रकृति रूप ही है। ऊपरि क्षीण-कषाय का द्विचरम-समय पर्यंत छह-प्रकृति रूप ही है, जातैं स्त्यानगृद्धयादिक त्रिक अनिवृत्ति का प्रथम-भाग ही में नष्ट हो है। बहुरि क्षीण-कषाय का अंत-समय विषैं निद्रा, प्रचला बिना च्यारिरूप ही है। सयोगी, अयोगी विषैं ताके सत्त्व का अभाव है॥ ४६२॥

बावीसमेक्कवीसं, सत्तारस तेरसेव णव पंच।
चदुतियदुगं च एक्कं, बंधट्ठाणाणि मोहस्स॥ ४६३॥

द्वाविंशतिरेकविंशतिः, सप्तदश त्रयोदशैव नव पंच।
चतुस्त्रिकद्विकं चैकं, बंधस्थानानि मोहस्य॥ ४६३॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – मोहनीय के बंधस्थान बाईस, इकईस, सतरह, तेरह, नव, पांच, च्यारि, तीन, दोय, एक प्रकृति रूप दश जानने ॥ ४६३ ॥

बावीसमेक्कवीसं, सत्तर सत्तार तेर तिसु णवयं।
थूले पणचदुतियदुगमेक्कं मोहस्स ठाणाणि॥ ४६४ ॥

द्वाविंशतिरेकविंशतिः, सप्तदशसप्तदश त्रयोदश त्रिषु नवकं।
स्थूले पंचचतुष्कत्रिकद्विकमेकं मोहस्य स्थानानि॥ ४६४॥

टीका – तिन मोहनीय के बंधस्थाननि विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं तो बाईस-प्रकृति रूप स्थान है। सासादन विषैं इकईस-प्रकृति रूप है। मिश्रअसंयत विषैं सतरह-प्रकृति रूप है। देशसंयत विषैं तेरह-प्रकृति रूप है। प्रमत्तादि तीन विषैं प्रत्येक नव-नव प्रकृत्ति रूप है। अनिवृत्तिकरण विषैं पांच, च्यारि, तीन, दोय, एक प्रकृति रूप पांच स्थान हैं॥ ४६४ ॥

उगुवीसं अट्ठारस, चोद्दस चोद्दस य दस य तिसु छक्कं।
थूले चदुतिदुगेक्कं, मोहस्स य होंति धुवबंधा॥ ४६५ ॥

एकोनविंशतिरष्टादश, चतुर्दश चतुर्दश च दश च त्रिषु षट्कं।
स्थूले चतुस्त्रिद्विकैकं, मोहस्स च भवंति ध्रुवबंधाः॥ ४६५॥

टीका – मिथ्यादृष्ट्यादिक अनिवृत्तिकरण के भागपर्यन्त जे स्थान कहे, तिन विषैं क्रम तैं उगणीस, अठारह, चौदह, चौदह, दश, छह, छह, छह, च्यारि, तीन, दोय, एक तो ध्रुवबंधी-प्रकृति पाइए है। जिनका बंध होइ ही होइ, सो ध्रुवबंधी कहिए है॥ ४६५ ॥

सगसंभवधुवबंधे, वेदेक्के दोजुगाणमेक्के य।
ठाणो वेदजुगाणं, भंगहदे होंति तब्भंगा॥ ४६६ ॥

स्वकसंभवध्रुववंधे, वेदे एका द्वियुगयोरेका च।
स्थानं वेदयुगानां, भंगहते भवंति तद्भंगाः॥ ४६६॥

टीका– कही जे अपनी-अपनी ध्रुव-बधी प्रकृति तिनविषैं यथासंभव तीन वेदनि विषैं एक वेद अर हास्य-शोक का युगल में अर रति-अरति का युगल में एक-एक मिलाएं स्थान हो है। बहुरि वेदनि के प्रमाण कौं युग्म के प्रमाण तैं गुणै जो-जो प्रमाण होइ, तितने-तितने एक-एक स्थान विषैं प्रकृतिनि के बदलने तैं भंग जानने। सोई कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिथ्यादृष्टि का बंध कूट विषैं एक मिथ्यात्व, सोलह-कषाय, भय-जुगप्सा-ए उगणीस तो ध्रुव-बंधी अर तीन वेद विषैं एक वेद, दोय-युगलनि विषैं एक-एक अैसैं वाईस प्रकृति रूप स्थान हैं। इहां कूट के आकारि ऐसैं रचना हो है–

२ । भ
२ । २
० । १ । १ ।
१६
१

तातै इहां कूट-संज्ञा धरि है। तहां तीन वेदनि कौं हास्य-रति के युग्म तैं गुणैं छह भए, सो इस स्थान विषैं छह भंग जानने। कैसे ? उगणीस ध्रुव-बंधी, पुरुष-वेद, हास्य, रति ऐसैं एक भंग। बहुरि पुरुष-वेद की जायगा स्त्री-वेद भएं दूसरा भंग। बहुरि तहां नपुंसक-वेद भएं तीसरा भंग। बहुरि हास्य-रति की जायगा शोक-अरति भएं, तैसैं ही तीन भंग और होइ– ऐसैं छह भंग जानने। वाईस का बंध छह प्रकार करि हो है। ऐसैं ही अन्यत्र भी प्रकृतिनि के बदलने तैं भंग जानने। बहुरि सासादन बंध कूट विषैं सोलह-कषाय, भय, जुगुप्सा– ए अठारह तो ध्रुव बंधी हैं अर इन विषैं पुरुष, स्त्री दोय वेदनि मैंस्यौं एक वेद अर दोऊ युगलनि मैंस्यौं एक-एक मिलाएं इकईस प्रकृति रूप स्थान हो हैं।

२ । भ जु
२ । २
० । १ । १
१६
०

तहां वेद दोय-दोय युग्म तैं गुणै च्यारि-भंग हो हैं। बहुरि मिश्र-बंध कूट विषैं बारह कषाय, भय, जुगुप्सा– ए चौदह ध्रुव-बंधी, इन विषैं पुरुष-वेद अर दोऊ युगलनि मैंस्यों एक-एक मिलाएं सतरह-प्रकृति रूप स्थान हो हैं।

२
२ । २
१
१२

तहां एक वेद कौं दोय युग्म तैं गुणै दोय भंग हो हैं। बहुरि असंयत विषैं भी मिश्रवत् चौदह ध्रुव बंधी सतरह प्रकृति रूप स्थान, दोय भंग जानने। बहुरि देशसंयत बंध कूट विषैं आठ कषाय भय, जुगुप्सा– ए दशध्रुव-बंधी। इन विषैं पुरुष वेद, दोय युगलनि मैं एक-एक मिलाएं तेरह प्रकृति रूप स्थान हो हैं।

२
२ । २
१
८

तहां एक वेद कौं दोय युग्म तैं गुण दोय भंग हो हैं। बहुरि प्रमत्त बंधकूट विषैं च्यारि कषाय, भय, जुगुप्सा– ये छह ध्रुव-बंधी इन विषैं पुरुषवेद, दोऊ जुगलनि में एक-एक मिलाएं नव प्रकृतिरूप स्थान हो हैं तहां एकवेद, दोय युग्म तैं गुणैं दोय भंग हो हैं। इहां अरति, शोक बंध तैं व्युच्छित्ति रूप भए। बहुरि अप्रमत्त, अपूर्वकरण बंध कूट विषैं च्यारि संज्वलन, भय, जुगुप्सा– ए ध्रुव-बंधी इन विषैं पुरुष-वेद, हास्य, रति मिलैं नव प्रकृतिरूप स्थान हो हैं।

२
२ । २
१
८

२
२
१
४

इहां भंग एक ही है। इहां हास्य, रति, भय, जुगुप्सा बंध तैं व्युच्छित्ति रूप भए। बहुरि अनिवृत्ति करण का बध-कूट विषैं च्यारि कषाय ध्रुव-बंधी तिनमैं पुरुष वेद मिलैं पांच

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रकृति रूप स्थान हो हैं ५ भया। बहुरि तिसही का दूसरा-भाग विषैं कषाय-चतुष्क ध्रुव-यहाँ पुरुष-वेद व्युच्छित्ति १ बंधी रूप स्थान हो है। ।४। तहां भंग एक। इहां क्रोध व्युच्छित्ति भया। बहुरि तीसरा-भाग विषैं तीन कषाय ध्रुव-बंधी रूप स्थान हो है ।३। तहां भंग एक। इहां मान-व्युच्छेद भया। बहुरि चौथा-भाग विषैं दोय-कषाय ध्रुव-बंधी प्रकृति रूप स्थान हो है। ।२। तहां भंग एक। ।१। इहां माया व्युच्छेद भई। बहुरि पाँचवां-भागविषैं लोभ ध्रुव-बंधी प्रकृति रूप स्थान हो है। भंग एक है ॥ ४६६ ॥

अैसैं भंग कहे तिनकी संख्या कहै हैं—

छब्बावीसे चदु इगिवीसे दो द्दो हवंति छट्ठोत्ति।
एक्केक्कमदो भंगो, बंधट्ठाणेसु मोहस्स॥ ४६७॥

षट् द्वाविंशतौ चत्वार एक, विंशतौ द्वौ द्वौ भवंति षष्ट-इति।
एकैकोतो भंगो, बंधस्थानेषु मोहस्य॥ ४६७॥

टीका— मिथ्यादृष्ट्यादिक अनिवृत्तिकरण पर्यंत मोहनीय के बंधस्थान विषैं भंग, बाईस-प्रकृति रूप स्थान विषैं छह, इकईस-प्रकृति-रूप विषैं च्यारि, ऊपरि प्रमत्तं पर्यंत दोय-दोय, ऊपरि सर्व-स्थाननि विषैं एक-एक जानना ॥ ४६७ ॥

दस वीसं एक्कारस, तेत्तीसं मोहबंधठाणाणि।
भुजगारप्पदराणि य, अवट्ठिदाणिवि य सामण्णे॥ ४६८॥

दशसु विंशतिरेकादश, त्रयस्त्रिंशत् मोहबंधस्थानानि।
भुजाकाराल्पतराणि च, अवस्थितान्यपि च सामान्ये॥ ४६८॥

टीका— पूर्वै मोहनीय के बंध स्थान दश कहे, तिनके भंग विवक्षा बिना कीये भुजाकार-बंध वीस हैं। अल्पतर-बंध ग्यारह हैं अवस्थित-बंध तैंतीस हैं ॥ ४६८ ॥

इनका लक्षण कहैं हैं—

अप्पं बंधंतो बहुबंधे बहुगादु अप्पबंधेवि।
उभयत्थ समे बंधे, भुजगारादी कमे होंति॥ ४६९॥

अल्पं बध्नतो बहुबंधे बहुकादल्पबंधेऽपि।
उभयत्र समे बंधे, भुजाकारादयः क्रमेण भवंति॥ ४६९॥

टीका – अल्प-थोरी प्रकृति कौं बांधता पीछै अनंतर-समय विषैं बहुत प्रकृतिनि कौं बांधै, तब भुजाकार-बंध हो हैं। बहुरि बहुत प्रकृति कौ बांधता पीछै अनंतर-समय विषैं थोरी-प्रकृति

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

कौं बांधै, तब अल्पतर-बंध हो है। बहुरि तिन दोऊनि विषैं थोरी वा बहुत प्रकृति कौं बांधता चकार तैं अवक्तव्य। दोय बंधनि विषैं भी जेती प्रकृति पहिलै बांधता था, तितनी ही पीछै द्वितीयादिक समयनि विषैं बांधै, तब अवस्थित-बंध हो है ॥ ४६९ ॥

आगै सामान्य अवक्तव्य-भंगनि की संख्या कहै हैं—

सामण्णअवत्तव्वो, ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे।
एक्कं च होदि एत्थवि, दो चेव अवट्ठिदा भंगा॥ ४७०॥

सामान्यावक्तव्यः, अवतरमाणेः एको मरणे।
एकश्च भवत्यत्रापि, द्वौ चैवावस्थितौ भंगौ॥ ४७०॥

टीका — सामान्यपनै भंग विवक्षा कौं बिना कीएं अवक्तव्य-बंध उपशम-श्रेणी उतरने विषैं एक है, एक तहां मरण होतैं संतै हो है— ऐसैं दोय हो हैं। बहुरि द्वितीयादि समयनि विषैं तैसैं ही बंध होतैं अवस्थित-बंध भी इहां दोय हो हैं। अब इन भुजाकारादिक बंधनि के उपजने का विधान कहिए है—

उपशम-श्रेणी उतरनेवाला अनिवृत्तिकरण जो एक संज्वलन-लोभ कौं बांधता उतर करि माया, लोभ दोय कौं बांधै अथवा बद्धायु तहां मरि देव-असंयत होइ सतरह कौ बांधै— ऐसैं एक प्रकृतिरूप स्थाननि विषैं दोय भुजाकार भए। बहुरि तिन दोऊनि कौं बांधता उतरिकरि मान सहित तीन कौं बांधै अथवा मरि देव-असंयत होइ सतरह कौं बांधै— ऐसैं दोय प्रकृतिरूप स्थान विषैं भी दोय भुजाकार भए। बहुरि तिन तीनों को बांधता नीचैं उतरि च्यारि संज्वलन कौं बांधै वा मरि देव-असंयत होइ सतरह कौं बांधै— ऐसैं तीन प्रकृतिरूप विषैं भी दोय भए। बहुरि च्यारि कौं बांधता उतरि नीचला भाग विषैं पुरुष वेद सहित पांच बांधै वा मरि देव-असंयमी होइ सतरह बांधै— ऐसैं च्यारि प्रकृतिरूप स्थान विषैं दोय भए। बहुरि पांच कौं बांधता उतरि करि अपूर्वकरण विषैं नव बांधैं वा मरि देव असंयमी होइ सतरह बांधै— ऐसैं पंच प्रकृतिरूप बंध स्थान विषैं दोय भए।

बहुरि अपूर्वकरण वा अप्रमत्त वा प्रमत्त नव कौ बांधता संता अनुक्रम तैं उतरि देशसंयत होइ तेरह बांधै वा असंयत होइ वा मरि देव-असंयत होइ सतरह बांधै वा प्रथमोपशम-सम्यक्त्वी, सासादन होइ इकईस बांधै अर प्रथमोपशम सम्यक्त्वी वा वेदकसम्यक्त्वी-मिथ्यादृष्टि होइ बाईस बांधै— ऐसैं नव प्रकृतिरूप बंध-स्थाननि विषैं च्यारि भुजाकार भए।

बहुरि तेरह प्रकृति कौं बांधता संता असंयत वा देव-असंयत होइ सतरह बांधै वा प्रथमोपशम-सम्यक्त्वी सासादन होइ इकईस बांधै वा प्रथमोपशम सम्यक्त्वी वेदक-सम्यक्त्वी मिथ्यादृष्टि होइ बाईस बांधै— ऐसैं तेरह प्रकृतिरूप बंध स्थान विषैं तीन भुजाकार भए। बहुरि सतरह प्रकृतिनि कौं बांधता संता प्रथमोपशम-सम्यक्त्वी सासादन होइ इकईस बांधै वा

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथमोपशम-सम्यक्त्वी वेदक-सम्यक्त्वी, मिश्र गुणस्थानवर्ती जीव मिथ्यादृष्टि होइ बाईस-प्रकृति बांधै—अैसैं सतरह-प्रकृतिरूप बंध-स्थान विषैं दोय भुजाकार भए। बहुरि इकईस-प्रकृति कौं बांधता संता मिथ्यादृष्टि होइ बाईस कौं बांधै— अैसैं इकईस-प्रकृतिरूप बंध-स्थान विषैं एक भुजाकार भया।

अैसैं भुजाकार-बंध बीस जानने।

अब अल्पतर-बंध कहिए हैं—

अनादि वा सादि मिथ्यादृष्टि तीन-करण करता अनिवृत्ति-करण का अंत समय विषैं बाईस का बंध करता संता अनंतर-समय विषैं प्रथमोपशम-सम्यक्त्वी होइ वा सादि-मिथ्यादृष्टि सम्यक्त्व-मोहनीय के उदय तैं वेदक-सम्यक्त्वी होइ, दोन्यों ही अप्रत्याख्यान के उदय होतैं असंयत होइ सतरह बांधैं वा प्रत्याख्यान का उदय होतैं देशसंयत होइ तेरह बांधैं वा संज्वलन के उदय होतैं अप्रमत्त होइ नव बांधै— अैसैं बाईस-प्रकृतिरूप बंध-स्थान विषैं तीन अल्पतर हैं।

बहुरि वेदक-सम्यग्दृष्टि वा क्षायिक-सम्यग्दृष्टि असंयत सतरह कौं बांधता देशसंयत होइ तरह बांधै वा अप्रमत्त होइ नव बांधै— अैसैं सतरह का बंधस्थान विषैं दोय हैं। बहुरि तेरह कौं बांधता अप्रमत्त होइ नव बांधै। बहुरि नव बांधता अपूर्व-करण वा अनिवृत्तिकरण का प्रथम-भाग विषैं पाँच बांधै। बहुरि पाँच बांधता दूसरा भाग विषै च्यारि बांधै। च्यारि बांधता तीसरा भाग विषैं तीन बांधैं, तीन बांधता चौथा भाग विषै दोय बांधैं, दोय बांधता पाँचवा भाग विषैं एक बांधै— अैसैं इन स्थाननि विषैं एक-एक अल्पतर है।

या प्रकार सर्व अल्पतर-बंध ग्यारह जानने।

बहुरि कहे जे दोय अवक्तव्य, बीस भुजाकार, ग्यारह अल्पतर, तिनविषैं जेती प्रकृतिनि का बंध कह्या, तितनी ही प्रकृतिनि का बंध द्वितीयादिक समयनि विषैं जहां होइ, तहां अवस्थित-बंध कहिए; तातैं अवस्थित-बंध तेतीस जानने॥ ४७० ॥

आगै विशेष भुजाकारादिकनि की संख्या कहै हैं—

सत्तावीसहियसयं, पणदालं पंचहत्तरिहियसयं।
भुजगारप्पदराणि य, अवट्ठिदाणिवि विसेसेण॥ ४७१ ॥

सप्तविंशाधिकशतं, पंचचत्वारिंशत्पंचसप्तत्यधिकशतं।
भुजाकाराल्पतराणि च, अवस्थितान्यपि विशेषेण॥ ४७१ ॥

टीका – विशेषपनैं करि भंगनि की अपेक्षा भुजाकार-बंध एकसौ सत्ताईस हैं, अल्पतर पैंतालीस हैं। अवस्थित एकसौ पिचहत्तरि हैं। ते भुजाकार कहिए है—

मिथ्यादृष्टि विषैं बाईस का बंध, तिसतैं, अधिक बंघ मोहनीय का नाहीं, तातैं तहाँ तो शून्य है। बहुरि सासादन विषैं बन्ध-योग्य इकईस प्रकृति, तहाँ भंग-च्यारि, सो सासादन तैं मिथ्यादृष्टि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विषैं आवैं, तहां एक-एक भंग की अपेक्षा मिथ्यादृष्टि के विषैं बाईस का बंध के छह भंगनि करि भुजाकार कहिए, तब चौईस भए।

अैसैं ही मिश्र विषैं सतरह का बंध विषैं दोय भंग सोई इहां तै मिथ्यादृष्टि विषैं आवै हैं, तातैं मिथ्यादृष्टि का बाईस का बंध विषैं छह भंगनि की अपेक्षा भुजाकार कहिए— तब बारह ए होंइ।

बहुरि असंयत विषैं सतरह का बंध दोय प्रकार सो इहां तैं सासादन विषैं आवैं, तहां इकईस का बंध च्यारि प्रकार, तिनकी अपेक्षा आठ भुजाकार अर मिथ्यादृष्टि विषैं आवे तहां बाईस का बंध छह प्रकार तिनकी अपेक्षा बारह भुजाकार ऐसैं बीस भए।

बहुरि देशसंयत विषैं तेरह का बंध दोय प्रकार, इहां तैं मिश्र विषैं वा असंयत विषैं वा मरि देव असंयत विषैं आवे, तहां सतरह का बंध दोय प्रकार, तिनकी अपेक्षा च्यारि भुजाकार अर सासादन विषैं आवै, तहां इकईस का बंध च्यारि प्रकार, तिनकी अपेक्षा आठ भुजाकार अर मिथ्यादृष्टि विषैं आवे तहां बाईस का बंध छह प्रकार, तिनकी अपेक्षा बारह भुजाकार— अैसैं चौईस भए।

बहुरि प्रमत्त विषैं नव का बंध दोय प्रकार, सो इहां तैं देशसंयत विषैं आवै, तहां तेरह का बंध दोय प्रकार, तिनकरि च्यारि भुजाकार अर मिश्र, असंयत विषैं आवैं, तहां सतरह का बंध दोय प्रकार, तिस — करि च्यारि भुजाकार अर सासादन विषैं, आवैं, तहां इकईस का बंध च्यारि प्रकार, तिनकरि आठ भुजाकार अर मिथ्यादृष्टि विषै आवे, तहां बाईस का बंध छह प्रकार, तिनकरि बारह भुजाकार— अैसैं सर्व अठ्ठाईस भए।

बहुरि अप्रमत्त विषैं बंध एक प्रकार, इहां तैं मरि देव असंयत होइ, तहां सतरह का बंध दोय प्रकार तिनकरि दोय भुजाकार हैं। प्रमत्त विषैं आवै, तहां नवका बंध है ही, तातैं भुजाकार तिसकी अपेक्षा न कह्या।

बहुरि अपूर्व-करण विषैं नव का बंध, तहां भी अैसैं ही दोय भुजाकार हैं। बहुरि अनिवृत्ति करण का प्रथम भाग विषैं पंच का बंध एक प्रकार, इहां तैं अपूर्व-करण विषैं आवै, तहां नव का बंध एक प्रकार, तिसकरि एक भुजाकार अर मरि देव-असंयत होइ, तहां सतरह का बंध दोय प्रकार तिनकरि दोय भुजाकार— एवं तीन बहुरि दूसरा भाग विषैं च्यारि का बंध, इहां तैं प्रथम भाग विषैं आइ पाँच का बंध करै, ताकी अपेक्षा एक भुजाकार अर मरि देव-असंयत होइ, तहां सतरह का बंध दोय प्रकार, तिनकरि दोय भुजाकार— एवं तीन अैसैं ही तीसरा भाग विषैं तीन का बंध, तहां दूसरा भाग विषैं च्यारि का बंध की अपेक्षा एक अर देव-असंयत की अपेक्षा दोय — ऐसैं तीन भए। अर चौथा भाग विषैं दोय का बंध, तहाँ तीसरा-भाग विषैं तीन का बंध करि एक अर देव-असयंत विषैं सतरह का बंध करि दोय— ऐसैं तीन भुजाकार अर पाँचवां-भाग विषैं एक का बंध तहां चौथा भाग विषैं दोय का बंध करि एक वा देव-असंयत विषैं सतरह का बंध करि दोय— अैसैं तीन भुजाकार है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अैसैं सर्व मिलिकरि भुजाकार-बंध एकसौ सत्ताइस हैं ॥ ४७१ ॥

सो इनहीं कौं कहैं हैं–

णभ चउवीसं बारस, वीसं चउरट्ठवीस दो द्दो य।
थूले पणगादीणं, तिय तिय मिच्छादिभुजगारा॥ ४७२ ॥

नभश्चतुर्विंशं द्वादश, विंशं चतुरष्टविंशं द्वौ द्वौ च।
स्थूले पंचकादीनां त्रयस्त्रयो मिथ्यादिभुजाकाराः ॥ ४७२ ॥

टीका – भंगनि की विवक्षा करि विशेष भुजाकार मिथ्यादृष्टि विषै नास्ति, सासादन विषैं चौईस, मिश्र विषैं बारह, असंयत विषैं बीस, देशसंयत विषैं चौईस, प्रमत्त विषै अठाईस, अप्रमत्त विषैं दोय, अपूर्व-करण विषैं दोय-स्थूल जो अनिवृत्तिकरण तीहि विषैं पंचकादिक का बंध विषैं तीन-तीन भुजाकार तिनके पांचौं भाग- विषैं पंद्रह – सर्व मिलि एकसौ सत्ताईस भुजाकार-बंध हैं ॥ ४७२ ॥

अप्पदरा पुण तीसं, णभ णभ छद्दोण्णि दोण्णि णभ एक्कं।
थूले पणगादीणं, एक्केक्कं अंतिमे सुण्णं॥ ४७३ ॥

अल्पतराः पुनस्त्रिंशन्न, भोनभः षट् द्वौ द्वौ नभ एकः।
स्थूले पंचकादीमामेकैकः अंतिमे शून्यं॥ ४७३ ॥

टीका – बहुरि अल्पतर-बंध कहिए हैं– मिथ्यादृष्टि विषैं बाईस का बंध छह प्रकार इहां तैं मिश्र, असंयत विषैं जाइ, तहां सतरह का बंध दोय प्रकार, सो एक-एक प्रकार विषैं, छह-छह प्रकार बाईस का बंध की अपेक्षाकरि बारह अल्पतर, अर देश-संयत विषैं जाइ तहां तेरह का बंध दोय प्रकार, तिनकरि बारह-अल्पतर, अर अप्रमत्त विषैं जाइ, तहां नव का बंध एक प्रकार, तहाँ तिस करि छह अल्पतर – अैसैं तीस भए।

मिथ्यादृष्टि-जीव है सो सासादन, प्रमत्त बिना अप्रमत्त पर्यंत जाइ है, तातैं सासादन का च्यारि प्रकार इकईस का बंध की अपेक्षा अर प्रमत्त का दोय प्रकार नवका बंध की अपेक्षा अल्पतर इहां न कहे। बहुरि सासादन तैं पडि मिथ्यादृष्टि ही हो है, तातैं इकईस का बंध कैं भुजाकार-बंध संभवै हैं, ऊपरि चढ़े नाहीं तातैं अल्पतर का अभाव है ; तातैं शून्य कह्या बहुरि मिश्र तैं पड़ै तौ मिथ्यादृष्टि विषैं आवै, तहां भुजाकार-बंध ही संभवै। अर चढ़े तौं असंयत विषैं जाइ, तहां जो सतरह का बंध मिश्र विषैं था सोई असंयत विषैं रह्या, तहां अवस्थित-बंध संभवै, तातैं मिश्र विषैं अल्पतर-बंध नाहीं ; शून्य है।

बहुरि असंयत विषैं दोय प्रकार सतरह का बंध, इहां तैं देशसंयत विषैं जाइ तहां तेरह का बंध दोय प्रकार तिनकरि च्यारि अल्पतर अर अप्रमत्त विषैं जाइ, तहां नव का बंध एक प्रकार

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिसकरि दोय अल्पतर— एवं छह, बहुरि देश संयत विषैं तेरह का बंध दोय प्रकार, इहां तैं अप्रमत्त विषैं जाइ, तहां नव का बंध एक प्रकार तिसकरि दोय अल्पतर हैं। बहुरि प्रमत्त विषैं नव का बंध दोय प्रकार, इहां तैं अप्रमत्त विषैं जाइ, तहां नव का बंध एक प्रकार, तिसकरि दोय अल्पतर हैं।

इहां प्रश्न — जो प्रमत्त विषैं वा अप्रमत्त विषैं नव ही का बंध पाइए, सो इहां तौ समान संख्या है, सो अवस्थित संभवै अल्पतर कैसैं कहो हो ?

ताका समाधान-प्रमत्त विषैं अरति, शोक के बंध का व्युच्छेद भया है, तिस अपेक्षा अल्पतर-बंध भंगविवक्षा विषैं संभवै है।

बहुरि अप्रमत्त तैं अपूर्व-करण विषैं जाइ, सो इहां दोऊनि विषैं समान नव का बंध है, तहां अल्पतर न संभवै है ; तातैं शून्य है। बहुरि अपूर्व-करण विषैं नव का बंध एक प्रकार अर अनिवृत्तिकरण का— प्रथम-भाग विषैं पंच का बंध एक प्रकार तिसकरि एक अल्पतर है। बहुरि अनिवृत्ति-करण विषैं एक प्रकार पाँच का बंध कैं, एक प्रकार च्यारि का बंध की अपेक्षा एक अर एक प्रकार च्यारि का बंध कैं एक प्रकार तीन का बंध की अपेक्षा एक अर एक प्रकार तीन का बंध कैं एक प्रकार दोय का बंध की अपेक्षा एक अर एक प्रकार दोय का बंध कैं एक प्रकार एक का बंध की अपेक्षा एक अल्पतर है।

बहुरि अनिवृत्तिकरण का पंचम-भाग विषैं एक का बंध, सो इहां तैं सूक्ष्मसांपराय विषैं जाइ, तहां बंध का अभाव है, सो तहां अवक्तव्यबंध संभवै है, अल्पतर बंध नाहीं ; तातैं शून्य है।

ऐसैं अल्पतर-बंध पैंतालीस हैं।

बहुरि एकसौ सत्ताईस भुजाकार कहे, पैंतालीस अल्पतर कहे, तीन अवक्तव्य कहैंगे। इन सबनि विषैं, जितनी-जितनी प्रकृतिनि का पहिले समय बंध होइ, तितनी ही प्रकृतिनि का जहां द्वितीयादिक समयनि विषैं बंध होइ, तहां अवस्थित-बंध कहिए ; तातैं अवस्थित-बंध एकसौ पिचहत्तरि हैं॥ ४७३ ॥

भेदेण अवत्तव्वा, ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे।
दो चेव होंति एत्थवि, तिण्णेव अवट्ठिदा भंगा॥ ४७४॥

भेदेन अवक्तव्या, अवतरति एकको मरणे।
द्वौ चैव भवतोऽत्रापि, त्रय एवावस्थिता भंगाः॥ ४७४॥

टीका — बहुरि भंगविवक्षा हो तैं विशेष करि अवक्तव्य-बंध कहिए है। सूक्ष्मसांपराय है, सो मोह बंध तैं रहित है, तहां तैं उतरि अनिवृत्तिकरण होइ संज्वलन लोभ कौं बांधै, सो एक तौ यहु अवक्तव्यबंध अर चढ़ने विषैं वा उतरने विषैं बद्धायु जो सूक्ष्मसांपराय सो मरि देव-असंयत होइ करि दोय प्रकार सतरह-प्रकृति बांधै, तिनकी अपेक्षा दोय अवक्तव्य— ऐसैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तीन अवक्तव्य-बंध हैं। इहां भी द्वितीयादिक समयनि विषैं समान प्रकृति का बंध भएं तीन अवस्थित-बंध हो हैं, सो ऊपरि कहे ही थे ॥ ४७४ ॥

ऐसैं मोहनीय के सामान्य-विशेष भुजाकार आदि च्यारि-प्रकार बंध कहि, अब मोहनीय ही के उदय स्थान कहिए हैं–

दश णव अट्ठ य सत्त य, छप्पण चत्तारि दोण्णि एक्कं च।
उदयट्ठाणा मोहे, णव चैव य होंति णियमेण॥ ४७५ ॥

दश नवाष्ट च सप्त च, षट् पंच चत्वारि द्वे एकं च।
उदयस्थानानि मोहे, नव चैव च भवंति नियमेन॥ ४७५ ॥

टीका – दश, नव, आठ, सात, छह, पाँच, च्यारि, दोय, एक प्रकृतिरूप मोहनीय के उदय-स्थान नव ही हैं नियम करि ॥ ४७५ ॥

मिच्छं मिस्सं सगुणो वेदगसम्मेव होदि सम्मत्तं।
एक्का कसायजादी, वेददुजुगलाणमेक्कं च॥ ४७६ ॥

मिथ्यं मिश्रं स्वगुणे, वेदकसम्ये एव भवति सम्यक्त्वं।
एका कषायजातिर्वेदद्वियुगलयोरेकं च॥ ४७६ ॥

टीका – मोहनीय की उदय-प्रकृतिनि विषैं मिथ्यात्व अर मिश्र–ए दोऊ मिथ्यादृष्टि अर मिश्र अपना-अपना गुणस्थान विषैं उदय हो हैं। अर सम्यक्त्व-मोहनीय है, सो वेदक-सम्यक्त्वी कैं असंयतादिक च्यारि-गुणस्थाननि विषैं उदय हो हैं। ऐसैं गुणस्थाननि विषैं उदय नियम कौं दिखाइ उदय के कूटादिक कहैं हैं। अनंतानुबंध्यादिक च्यारि कषायनि की क्रोध, मान, माया, लोभ रूप च्यारि जाति, तहां एक जाति का उदय पाइए। तीन वेदनि विषैं एक वेद का उदय पाइए हास्य-शोक का युगल अर रति-अरति का युगल इन दोऊ युगलनि विषैं एक-एक का उदय पाइए॥ ४७६ ॥

भयसहियं च जुगुच्छा, सहियं दोहिंवि जुदं च ठाणाणि।
मिच्छादिअपुव्वंते, चत्तारि हवंति णियमेण॥ ४७७ ॥

भयसहितं च जुगुप्सासहितं द्वाभ्यामपि युतं च स्थानानि।
मिथ्याद्यपूर्वांते, चत्वारि, भवंति नियमेन॥ ४७७ ॥

टीका – बहुरि एक जीव कैं एक काल विषैं भय ही का उदय होइ वा जुगुप्सा ही का उदय होइ वा दोऊनि का उदय होइ वा दोऊनि का उदय न होइ, यातैं इनकी अपेक्षा च्यारि कूट करने। कूट-आकार ऐसैं रचना करनी–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अनंतानुबंधी-सहित मिथ्यादृष्टि-कूट।

२ २ २ १ १ १ ४ ४ ४ ४ १	१ २ २ १ १ १ ४ ४ ४ ४ १	१ २ २ १ १ १ ४ ४ ४ ४ १	० २ २ १ १ १ ४ ४ ४ ४ १

तहां नीचैं ही नीचैं तो एक मिथ्यात्व का एक का अंक लिखना। ऊपरि अनंतानुबंध्यादिक च्यारि-च्यारि कषाय लिखने रूप यथा संभव क्रोध आदि कषायनि के च्यारि जायगा च्यारि-च्यारि के अंक, जहां जिसका उदय होइ सो तहां जानना। बहुरि तिस ऊपरि तीन वेदनि विषैं एक वेद के तीन जायगा एक-एक के अंक लिखने, सो जिसका उदय होइ, सोई तहां जानना। बहुरि तिसके ऊपरि दोय युगलनि विषैं एक-एक प्रकृति का उदय, तिनके दोय जायगा दोय-दोय के अंक लिखने, सो जिन हास्य, रति का वा अरति-शोक का उदय पाइए, सोई तहां जानने। ताके ऊपरि प्रथम कूट विषैं भय-जुगुप्सा दोन्यों जानने, दूसरा कूट विषैं केवल भय ही जानना। तीसरा कूट विषैं जुगुप्सा ही जाननी। चौथा कूट विषैं दोऊनि का अभाव रूप शून्य जानना। तिनके चार्‍यौं कूंटनि विषैं क्रम तैं दोय एक-एक विंदी लिखनी– अैसैं च्यारि कूट करने।

सो प्रथम कूट विषैं दश प्रकृतिरूप उदय स्थान जानना। दूसरा, तीसरा कूट विषैं नव-नव प्रकृतिरूप उदय स्थान चौथा कूट विषैं आठ प्रकृतिरूप उदय स्थान जानना। सो ए तौ च्यार्‍यौं कूट अनंतानुबंधी सहित मिथ्यादृष्टि गुणस्थान के जानने। बहुरि इन च्यार्‍यौं कूटनि विषैं मिथ्यात्व कौं दूर कीजिए, तब च्यार्‍यौं कूट सासादन के जानने।

सासादन कूट

२ २ २ १ १ १ ४ ४ ४ ४	१ २ २ १ १ १ ४ ४ ४ ४	१ २ २ १ १ १ ४ ४ ४ ४	० २ २ १ १ १ ४ ४ ४ ४

बहुरि इनविषैं मिथ्यादृष्टि की जायगा मिश्र मोहनीय मांडिए अर कषाय च्यारि-च्यारि लिखे थे, तहां तीन-तीन ही लिखिए, जातैं ऊपरि के कूटनि विषैं एक काल एक जीव कैं जो क्रोध का उदय है, सो अनंतानुबंध्यादिक च्यारि रूप है। इन कूटनि विषैं अनंतानुबंधी बिना तीन रूप ही है। अैसैं ही मानादिक का उदय जानना, सो ये च्यारि कूट मिश्र गुणस्थान के जानने।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिश्र-कूट

२ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	१ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	१ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	० २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १

बहुरि इन विषैं मिश्र मोहनीय की जायगा सम्यक्त्व मोहनीय मांडिए, तब च्यारि कूट वेदक सम्यक्त्व युत अविरत गुणस्थान के जानने ।

वेदक असंयत कूट

२ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	१ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	१ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	० २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १

बहुरि इन विषैं जहां तीन-तीन कषाय लिखी, तहां दोय-दोय कषाय लिखिए, जातैं अप्रत्याख्यान का भी उदय नाहीं है– सो ए च्यार्‌यौं कूट देशसंयत के होंइ ।

वेदक देशसंयत के कूट

२ २ २ १ १ १ २ २ २ २ १	१ २ २ १ १ १ २ २ २ २ १	१ २ २ १ १ १ २ २ २ २ १	० २ २ १ १ १ २ २ २ २ १

बहुरि इन विषैं प्रत्याख्यान घटाइ, दोय-दोय कषाय लिखे थे, तहां एक-एक कषाय लिखिए– सो ए च्यार्‌यौं कूट प्रमत्त के होंइ ।

वेदक प्रमत्त के कूट

२ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १	० २ २ १ १ १ १ १ १ १ १

बहुरि प्रमत्तवत् चार्‌यौं कूट अप्रमत्त के हैं–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वेदक अप्रमत्त के कूट

२ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १	० २ २ १ १ १ १ १ १ १ १

बहुरि इनविषैं सम्यक्त्व प्रकृति घटाइए तब ए च्यार्‌यौं कूट अपूर्वकरण के होंइ।

अपूर्वकरण के कूट

२ २ २ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १	० २ २ १ १ १ १ १ १ १

ऐसैं मिथ्यादृष्ट्यादिक अपूर्वकरण पर्यंत ही च्यारि-च्यारि कूट हैं नियम करि। इहां छह हास्यादिक की व्युच्छित्ति भई; तातैं अनिवृत्तिकरण का प्रथमभाग विषैं संज्वलन च्यारि कषायनि विषैं एक कषाय, तीन वेदनि विषैं एक वेद का उदय रूप एक ही कूट है। बहुरि इन विषैं वेद कौं घटाए दूसरा भाग विषैं संज्वलन च्यारि कषायनि विषैं एक का उदयरूप एक ही कूट है। इनविषैं क्रोध कौं घटाए तीसरा भाग विषैं तीन संज्वलन कषायनि विषैं एक का उदयरूप एक ही कूट है। बहुरि इनविषैं मान को घटाएं चौथा भाग विषैं दोय संज्वलन कषायनि विषैं एक का उदयरूप एक ही कूट है। बहुरि इनविषैं माया कौं घटाएं पांचवां भाग विषैं बादर संज्वलन लोभ का उदयरूप एक ही कूट है।

अनिवृत्तिकरण के कूट

प्रथम भाग	द्वितीय भाग	तृतीय भाग	चतुर्थ भाग	पंचम भाग
१ १ १ १ १ १	१ १ १ १	१ १ १	१ १	१

बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं सूक्ष्म लोभ का उदय रूप एक ही कूट है।

सूक्ष्म सांपराय कूट
१

ऐसैं कूटाकार करि उदय कह्या है॥ ४७७॥

आगैं मिथ्यादृष्टि विषैं वा असंयतादिक च्यारि गुणस्थाननि विषैं विशेष संभवै है सो कहिए है—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अणसंजोजिदसम्मे, मिच्छं पत्ते ण आवलित्ति अणं।
उवसमखइये सम्मं, ण हि तत्थवि चारि ठाणाणि॥ ४७८ ॥

अनसंयोजितसामान्ये, मिथ्यं प्राप्ते न आवलीति अनं।
उपशमक्षायिके सम्यं, नहि तत्रापि चत्वारि स्थानानि॥ ४७८ ॥

टीका – अनंतानुबंधी का जाकैं विसंयोजन भया अैसा वेदक सम्यग्दृष्टि, सो मिथ्यात्वकर्म के उदय तैं मिथ्यादृष्टि गुणस्थान कौं प्राप्त होइ, ताकें आवली काल पर्यंत अनंतानुबंधी का उदय नाहीं है, जातैं मिथ्यात्व कौं प्राप्त होइ, पहले समय जो समय प्रबद्ध बांधै, ताका अपकर्षण करि आवली प्रमाण काल पर्यंत उदयावली विषैं प्राप्त करने कौं समर्थपना नाहीं अर अनंतानुबंधी का बंध मिथ्यादृष्टि विषैं ही है। पूर्वै अनंतानुबंधी थी, ताका विसंयोजन कीया ; तातैं तिस जीव कैं आवली काल प्रमाण अनंतानुबंधी का उदय नाहीं, तिसकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि विषैं अनंतानुबंधी रहित च्यारि कूट और जानने।

अनंतानुबंधीरहित मिथ्यादृष्टि के कूट

२ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	१ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	१ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १	० २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३ १

इनविषैं पहिला कूट नव प्रकृति रूप, दूसरा-तीसरा विषैं आठ प्रकृति रूप, चौथा विषैं सात प्रकृति रूप, उदय स्थान जानने। बहुरि उपशम सम्यक्त्व विषैं अर क्षायिक सम्यक्त्व विषैं सम्यक्त्व मोहनीय का उदय नाहीं, वेदक सम्यक्त्व ही विषैं है ; तातैं असंयत, देशसंयत, प्रमत्त, अप्रमत्त के पूर्वै जे सम्यक्त्व मोहनीय सहित च्यारि-च्यारि कूट कीए हैं, ते वेदक सम्यक्त्वी की अपेक्षा जानने। तिन सबकूटनि विषैं सम्यक्त्व मोहनीय घटाइए, तब उपशम क्षायिक की अपेक्षा असंयत, देशसंयत, प्रमत्त, अप्रमत्त विषैं च्यारि-च्यारि और कूट हो हैं।

वेदक रहित असंयत कूट

२ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३	१ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३	१ २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३	० २ २ १ १ १ ३ ३ ३ ३

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वेदक रहित देशसंयत कूट

२ २ २ १ १ १ २ २ २ २	१ २ २ १ १ १ २ २ २ २	१ २ २ १ १ १ २ २ २ २	० २ २ १ १ १ २ २ २ २

वेदक रहित प्रमत्त कूट

२ २ २ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १	० २ २ १ १ १ १ १ १ १

वेदक रहित अप्रमत्त कूट

२ २ २ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १	१ २ २ १ १ १ १ १ १ १	० २ २ १ १ १ १ १ १ १

पुव्विल्लेसुवि मिलिदे, अड चउ चत्तारि चदुसु अट्ठेव।
चत्तारि दोण्णि एक्कं, ठाणा मिच्छादिसुहुमंते॥ ४७९ ॥

पूर्व्येष्वपि मिलितेषु, अष्ट चत्वारि चत्वारि चतुर्षु अष्टैव।
चत्वारि द्वे एकं, स्थानानि मिथ्यादिसूक्ष्मांते॥ ४७९ ॥

टीका – ए पीछैं कहे कूट तिनविषैं पहिले कहे थे कूट, ते मिलाएं संतैं मिथ्यादृष्टि विषैं आठ, सासादन मिश्र विषैं च्यारि-च्यारि, असंयतादिक च्यारि विषैं आठ-आठ, अपूर्वकरण विषैं च्यारि, अनिवृत्तिकरण विषैं दोय, सूक्ष्मसांपराय विषैं एक-कूट जानने ॥ ४७९ ॥

इनविषैं अपुनरुक्त् स्थान कहैं हैं–

दसणवणवादि चउतियतिट्ठाण णवट्ठसगसगादि चऊ।
ठाणा छादि तियं च य, चदुवीसगदा अपुव्वोत्ति॥ ४८० ॥

दशनवनवादि चतुस्त्रिक, त्रिस्थानं नवाष्टस सप्तसप्तादि चतुष्कं।
स्थानानि षडादि त्रिकं च च, चतुर्विंशगता अपूर्व इति॥ ४८० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – मिथ्यादृष्टि विषैं दश के आदि च्यारि उदय स्थान हैं, ते दश प्रकृति रूप, नव प्रकृति रूप, आठ प्रकृति रूप, सात प्रकृति रूप हैं। बहुरि सासादन अर मिश्र विषैं नव के आदि तीन-तीन स्थान हैं ; ते नव, आठ, सात, प्रकृति रूप हैं। बहुरि असंयत विषैं नव के आदि च्यारि स्थान हैं, ते नव, आठ, सात, छह प्रकृति रूप हैं। बहुरि देशसंयत विषैं आठ के आदि च्यारि स्थान हैं, ते आठ, सात, छह, पांच प्रकृति रूप हैं। बहुरि प्रमत्त वा अप्रमत्त विषैं सात के आदि च्यारि स्थान हैं ; ते सात, छह, पांच, च्यारि प्रकृतिरूप हैं। बहुरि अपूर्वकरण विषैं छह के आदि तीन स्थान हैं ; ते छह, पांच, च्यारि प्रकृतिरूप हैं –ए सर्वस्थान प्रत्येक चौईस चौईस भंगनिकरि संयुक्त हैं।

इन मिथ्यादृष्टि आदि पंच गुणस्थाननि विषैं अपुनरुक्त स्थान कहे, तिन विषैं किसी की संख्या समान होतैं भी प्रकृति भेद अपेक्षा अपुनरुक्तपना हैं।

जैसे नव-नव प्रकृतिरूप स्थान बहुत कहे, तथापि तिनविषैं प्रकृति अन्य-अन्य पाइए है ; तातैं अपुनरुक्तता ही जाननी। जातैं मिथ्यादृष्टि विषैं स्थान हैं, ते मिथ्यात्वसहित हैं, सासादन विषैं मिथ्यात्वरहित हैं, मिश्र विषैं मिश्रमोहनीय सहित हैं, असंयत विषैं सम्यक्त्वमोहनीय सहित हैं, देशसंयत विषैं प्रत्याख्यानरहित हैं। ऐसैं प्रकृति भेद तैं अपुनरुक्तता जाननी।

एक्क य छक्केयारं एयारेयारसेव णव तिण्णि।
एदे चउवीसगदा चदुवीसियार दुगठाणे॥ ४८१॥

एकं च षट्कमेकादश, एकादशैकादशैव नव त्रीणि।
एतानि चतुर्विंशतिगतानि, चतुर्विंशैकादश द्विकस्थाने॥ ४८१॥

टीका – सर्व गुणस्थाननि विषैं मिल करि दश प्रकृतिरूप तौ एक स्थान हैं, सो मिथ्यादृष्टि विषैं ही हैं। बहुरि नव प्रकृतिरूप छह स्थान हैं। पहिले कूटनि विषैं दोय, पिछले कूटनि विषैं एक– अैसैं मिथ्यादृष्टि विषैं तीन अर सासादन, मिश्र, असंयत विषैं पहिले कूटनि विषैं एक, एक-एक– ऐसैं छह स्थान हैं। बहुरि आठ प्रकृतिरूप, सात प्रकृतिरूप, छह प्रकृतिरूप, ग्यारह-ग्यारह स्थान हैं। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं पहिले कूटनि विषैं एक, पिछले कूटनि विषैं दोय– अैसैं तीन, सासादन मिश्र विषैं दोय-दोय, असंयत विषैं पहिले कूटनि विषैं दोय, पिछले कूटनि विषैं एक– अैसैं तीन, देश संयत विषैं पहिले कूटनि विषैं एक– ऐसैं आठ प्रकृति रूप ग्यारह स्थान जानने।

बहुरि पिछले कूटनि विषैं एक मिथ्यादृष्टि विषैं, एक-एक सासादन मिश्र विषैं, एक पहिले, दोय पिछले कूटनि करि– तीन असंयत विषैं, दोय पहिले, एक पिछले कूटनि करि– तीन देश संयत विषैं, एक-एक प्रमत्त-अप्रमत्त के पहिले कूटनि विषैं – अैसैं सात प्रकृतिरूप ग्यारह स्थान जानने।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि एक असंयत के पिछले कूटनि विषैं एक-एक पहिले, दोय पिछले कूटनि करि — तीन देश संयत विषैं दोय पहिले, एक पिछले कूटनि करि — तीन-तीन प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं एक अपूर्वकरण विषैं छह प्रकृतिरूप ग्यारह स्थान जानने। बहुरि पांच प्रकृतिरूप नव स्थान हैं, ते एक देश संयत का पिछला कूट विषैं एक पहिले, दोय पिछले कूटनि करि — तीन-तीन प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं दोय अपूर्वकरण विषैं जानने। बहुरि च्यारि प्रकृतिरूप स्थान तीन हैं, ते एक-एक प्रमत्त-अप्रमत्त के पिछले कूट विषैं एक अपूर्वकरण विषैं जानने।

अैसैं ए सर्व स्थान कहे तिन एक-एक स्थान विषैं चौईस-चौईस भंग हैं।

जैसैं दश प्रकृतिरूप स्थान विषैं च्यारि क्रोधादि कषायनिका उदय एक-एक वेद विषैं होइ। अैसैं बारह भंग भए, ते बारह भंग हास्य, रति सहित अर बारह भंग अरति, शोक सहित — ऐसैं चौईस भंग भए।

अैसैं ही अन्य स्थाननि विषैं चौईस-चौईस भंग जानने।

बहुरि दोय प्रकृतिरूप एक स्थान हैं, ताके चौईस भंग हैं। बहुरि एक प्रकृतिरूप एक स्थान है ताके ग्यारह भंग हैं॥ ४८१ ॥

इनि दोऊ प्रकृतिरूप स्थाननि के भंगनि का विधान कहैं हैं–

उदयट्ठाणं दोण्हं पणबंधे होदि दोण्हमेकस्स।
चदुविहबंधट्ठाणे सेसेसेयं हवे ठाणं॥ ४८२ ॥

उदयस्थानं द्वयोः पंचबंधे भवति द्वयोरेकस्य।
चतुर्विधबंधस्थाने शेषेष्वेकं भवेत्स्थानं॥ ४८२॥

टीका– अनिवृत्तिकरण विषैं पांच प्रकृति का जहाँ बंध पाइये ऐसा एक भाग अर चार प्रकृति का जहां बंध पाइये तहाँ भी कितने इक काल वेदनि का उदय है तातैं सो एक भाग — अैसैं इन दोऊनि विषैं तीन वेद अर च्यारि संज्वलन विषैं एक का उदय तैं दोय प्रकृतिरूप स्थान पाइए, तहां च्यारि-च्यारि कषाय एक-एक वेद विषैं पाइए, यातैं बारह भंग भए। दोऊ भागनि विषैं चौईस भंग भए।

बहुरि पक्षांतर जो कनकनंदी आचार्य का आम्नाय, ताकी अपेक्षा करि च्यारि प्रकृति का जहां बंध पाइए, तिसका अंत समय विषैं वेदनि के उदय का अभाव ही हैं; तातैं तिसविषैं अर तीन, दोय, एक प्रकृति का जहां बंध पाइए, तिनविषैं अर बंध न पाइए, तिसविषैं क्रम तैं च्यारि,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तीन, दोय, एक-एक संज्वलन कषायनि विषैं एक-एक का उदय पाइए, तहां भंग अनुक्रम तैं च्यारि, तीन, दोय, एक, एक जानने ।

अैसैं एक प्रकृतिरूप बंध स्थाननि विषैं ग्यारह भंग जानने ॥ ४८२ ॥

इस ही अर्थ के प्रगट करने कौं च्यारि सूत्र कहैं हैं–

अणियट्टिकरणपढमा, संढित्थीणं च सरिस उदयद्धा ।
तत्तो मुहुत्तअंते कमसो पुरिसादिउदयद्धा ॥ ४८३ ॥

अनिवृत्तिकरणप्रथमात् षंढस्त्रियोश्च सदृशी उदयाद्धा ।
ततो मुहुर्तांतः क्रमशः पुरुषाद्युदयाद्धा ॥ ४८३ ॥

टीका – अनिवृत्तिकरण के प्रथम भाग के प्रथम समय तैं लगाय नपुंसक, स्त्रीवेद का उदय का काल परस्पर समान है अस्तोक है । तिस तैं पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ का उदय काल अनुक्रम तैं यथासंभव अंतर्मुहूर्त करि अधिक-अधिक जानना ॥ ४८३ ॥

पुरिसोदएण चडिदे बंधुदयाणं च जुगवदुच्छित्ती ।
सेसोदयेण चडिदे उदयदुचरिमम्हि पुरिसबंधछिदी ॥ ४८४ ॥

पुरुषोदयेन चटिते, बंधोदययोश्च युगपदुच्छित्तिः ।
शेषोदयेन चटिते, उदयद्विचरमे पुरुषबंधच्छित्तिः ॥ ४८४ ॥

टीका – पुरुषवेद का उदय सहित जो श्रेणी चढ़े, ताकैं पुरुषवेद की बंध व्युच्छित्ति अर उदय व्युच्छित्ति दोनों युगपत् हो हैं । अथवा 'चकार' तैं बंध की व्युच्छित्ति उदय का द्विचरम समय विषैं हो है । बहुरि शेष स्त्री, नपुंसकवेद का उदय सहित जो श्रेणी चढैं हैं, ताकैं पुरुषवेद की बंध व्युच्छित्ति तिन वेदकनि के उदय के द्विचरम विषैं हो हैं ॥ ४८४ ॥

पणबंधगम्मि बारस भंगा दो चेव उदयपयडीओ ।
दोउदये चदुबंधे बारेव हवंति भंगा हु ॥ ४८५ ॥

पंचबंधके द्वादश, भंगा द्वे चैव उदयप्रकृति ।
द्वयुदये चतुर्बंधे, द्वादशैव भवंति भंगा हि ॥ ४८५ ॥

टीका – पांच प्रकृति का जहां बंध पाइए अैसा अनिवृत्तिकरण विषैं दोय उदय प्रकृति हैं, तहां च्यारि कषाय, तीन वेदनि करि भंग बारह हैं

१	१	१	
१	१	१	१

अैसैं ही च्यारि प्रकृति का जहां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बंध पाइए, अैसैं अनिवृत्तिकरण विषैं भी दोय का उदयरूप स्थान विषैं बारह भंग हैं ॥ ४८५ ॥

कोहस्स य माणस्स य मायालोहाणियट्टिभागम्हि।
चदुतिदुगेक्कं भंगा सुहुमे एक्को हवे भंगो॥ ४८६ ॥

क्रोधस्य च मानस्य च, मायालोभानिवृत्तिभागे।
चतुस्त्रिद्विकैकभंगाः, सूक्ष्मे एको भवेद्भंगः ॥ ४८६ ॥

टीका – क्रोध, मान, माया, लोभ का उदयरूप अनिवृत्तिकरण के च्यारि भाग, जिन विषैं च्यारि, तीन, दोय एक प्रकृतिनि का बंध पाइए, तिनविषैं अनुक्रम तैं कषाय बदलने की अपेक्षा ही च्यारि, तीन, दोय, एक भंग है अर सूक्ष्मसांपराय मोहनीय का बंध रहित, तहां सूक्ष्मलोभ का उदय रूप स्थान विषैं एक भंग है– अैसैं ग्यारह भए ॥ ४८६ ॥

आगै सर्व उदय स्थाननि की वा तिनकी प्रकृतिनि की संख्या कहैं हैं–

बारससयतेसीदी ठाणवियप्पेहिं मोहिदा जीवा।
पणसीविसदसगेहिं पयडिवियप्पेहिं ओघम्मि॥ ४८७ ॥

द्वादशश[illegible]शीति, स्थानविकल्पैर्मोहिता जीवाः।
पंचाशीतिशतसप्तभिः, प्रकृतिविकल्पैरोघे ॥ ४८७ ॥

बं ५	बं ४	बं ४	बं ३	बं २	बं १	सू । ०
उ २	उ २	उ १	उ १	उ १	उ १	उ १
भं १२	भं १२	भं ४	भं ३	भं २	भं १	भं १

४	४	४	बं ४	बं ३	बं २	बं १
५	५	५	क्रो	बं ४	बं ३	बं २
न	स्त्री	पु		मा	बं ४	बं ३
					या	बंध
						लो

१०	९	८	७	६	५	४	२
१	६	११	११	११	९	३	१

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

टीका – ओघ कहिए गुणस्थान तिनविषैं सर्व मोहनीय के उदयस्थान दश प्रकृतिरूप एक, नवरूप छह, आठ सात, छहरूप ग्यारह-ग्यारह, पांच रूप नव, च्यारि रूप तीन, दोय रूप एक मिलिकरि तरेपन भए। तहां एक-एक के चौईस-चौईस भंग:, तातैं चौईसकरि तरेपन कौं गुणैं बारहसैं बहत्तरि भए अर एक प्रकृतिरूप स्थान के ग्यारह भंग– असैं सर्व बारहसै तियासी भए।

अब तिन स्थाननि की जे प्रकृति, तिनकी अपेक्षा कहिए हैं–

दश प्रकृतिरूप एक स्थान की दश प्रकृति, नव रूप छह की चौवन, आठरूप ग्यारह की अठ्यासी, सातरूप ग्यारह की सतहत्तरि, छहरूप ग्यारह की छ्यासठि, पांचरूप नव की पैंतालीस, च्यारिरूप तीन की बारह, दोय रूप एक की दोय सर्व मिलें तीनसै चौवन प्रकृति भई। तहां चौईस भंगनि करि गुणै चौरासीसै छिनवै अर एक प्रकृतिरूप के ग्यारह भंग मिलाएं पिच्यासीसै सात ८५०७, सर्व प्रकृति अपेक्षा भेद हो हैं।

इन स्थान भेदनिकरि वा प्रकृति भेदनिकरि त्रिकाल संबंधी त्रिलोक के चराचर जीव मोहित हैं ॥ ४८७ ॥

आगैं अपुनरुक्त् स्थाननि की संख्या अर तिनकी प्रकृति कहैं हैं–

एक्क य छक्केयारं दससगचदुरेक्कयं अपुणरुत्ता।
एदे चदुवीसगदा बार दुगे पंच एक्कम्मि॥ ४८८ ॥

एकं च षट्कैकादश, दशसप्ततुरेकमपुनरुक्तानि।
एतानि चतुर्विंशगतानि, द्वादश द्विके पंच एकस्मिन्॥ ४८८॥

टीका – दश प्रकृति रूप एक स्थान, नव रूप छह स्थान, आठ रूप ग्यारह स्थान, सात रूप दश ही स्थान पूर्वे ग्यारह कहे थे, तिन विषैं पहिले कूटनि विषैं सम्यक्त्व मोहनीय सहित वेदक सम्यक्त्ववाले कैं प्रमत्त-अप्रमत्त् के सात प्रकृति रूप दोय स्थान कहे, ते दोऊ स्थान समान हैं; तातैं इनमैं एक स्थान पुनरुक्त भया; तातैं दश ही कहे। बहुरि छह प्रकृति रूप सात ही सात ही स्थान पूर्वैं ग्यारह कहे थे, तिन विषैं वेदक सहित पहिले कूटनि विषैं छह प्रकृति रूप दोय कूट प्रमत्त के कीएं अर दोय अप्रमत्त के कीएं, तिनके समानता पाइए है; तातैं इनविषैं दोय ही गिने दोय पुनरुक्त कहे। अर वेदकरहित पिछिले कूटनि विषैं छह प्रकृति रूप स्थान कौं लीएं एक कूट प्रमत्त का कीया एक अप्रमत्त का कीया। सो ए दोऊ कूट अपूर्वकरण का छह प्रकृति रूप कूट के समान हैं; तातैं दोय कूट पुनरुक्त कहे थे।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अैसें च्यारि कूटनि के च्यारि स्थान पुनरुक्त, ते घटाइ दीए।

बहुरि पांच प्रकृति रूप च्यारि ही स्थान हैं। पूर्वें नव कहे थे, तिनविषैं वेदक सहित पहिले कूटनि विषैं एक प्रमत्त का कह्या था, एक अप्रमत्त का कह्या था– ते दोऊ समान हैं ; तातैं इनविषैं एक पुनरुक्त कह्या। बहुरि वेदक रहित पिछले कूटनि विषैं एक देश संयत का दोय-दोय प्रमत्त-अप्रमत्त का अर दोय अपूर्वकरण का इन सात नि विषैं दोय दोय प्रमत्त अप्रमत्त के दोय अपूर्वकरण के समान हैं ; तातैं च्यारि पुनरुक्त कहे हैं– ऐसैं पंच स्थान पुनरुक्त घटाइ दीए।

बहुरि च्यारि प्रकृतिरूप एक ही स्थान है। पूर्वें तीन कहे थे, तिनवषैं ते तीनों ही समान हैं तातैं दोय पुनरुक्त घटाइ दीए ; जिन विषैं प्रकृतिनि की समानता पाइये अैसे पुनरुक्त स्थान घटाएं इस प्रकार स्थान रहे, तिनका जोड़ दीएं चालीस भए, ते एक-एक स्थान चौईस-चौईस भंगनिकरि संयुक्त हैं तातैं चौईस करि गुणैं नवसै साठि भए। इनविषैं दोय प्रकृति रूप स्थान के चौईस भंग कहे थे तिनविषैं बारह पुनरुक्त छोडि बारह गिने अर एक प्रकृति रूप स्थानके ग्यारह भंग कहे थे तिनविषैं छह पुनरुक्त भंग छोडि पंच गिने अैसैं सतरह उनविषैं और मिलाइए॥ ४८८ ॥

णवसयसत्तत्तरिहिं ठाणवियप्पेहिं मोहिदा जीवा।
इगिदालूणत्तरिसयपयडिवियप्पेहिं णायव्वा॥ ४८९ ॥

नवशतसप्तसप्ततिभिः स्थानविकल्पैर्मोहिता जीवाः।
एकचत्वारिंशदेकोनसप्ततिशतप्रकृतिविकल्पैर्ज्ञातव्याः॥ ४८९ ॥

टीका – ऐसैं नवसै सतहत्तरि भेद भए तिनकी प्रकृति कहिए है– दश रूप एक स्थान की दश, नवरूप छह स्थाननि की चौवन, आठ रूप ग्यारह स्थाननि की अठ्यासी, सातरूप दशस्थाननि की सत्तरि, छहरूप सात स्थाननि की वियालीस, पांच रूप च्यारि स्थाननि की वीस, च्यारि रूप एक स्थानकी च्यारि इनका जोड दीएं दोयसै अठ्यासी भई इनकौं भंग चौईस करि गुणिए तब गुणहत्तरिसै बारा हुवा तिनविषैं दोय प्रकृति रूप के बारह-बारह भंग एक-एक प्रकृतिके गिने तातैं चौईस अर एक प्रकृति रूप पंच अैसैं गुणतीस मिलाएं गुणहत्तरिसै इकतालीस ६९४१ भेद भए इन स्थान भेदनिकरि अर प्रकृति भेदनिकरि त्रिकाल संबंधी त्रिलोकवासी चराचर संसारी जीव मोहित हैं॥ ४८९ ॥

आगैं मोहका उदय रूप स्थान वा तिनकी प्रकृति गुणस्थाननि विषैं उपयोगादिक की अपेक्षा करि कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उदयट्ठाणं पयडिं सगसगउवजोगजोगआदीहिं।
गुणयित्ता मेलविदे पदसंखा पयडिसंखा य॥ ४९० ॥

उदयस्थानं प्रकृतिं, स्वकस्वकोपयोगयोगादिभिः।
गुणयित्वा मेलपिते, पदसंख्या प्रकृतिसंख्या च॥ ४९० ॥

टीका - पुव्विल्लिसुवि मिलिदे इत्यादिक गाथा करि कही स्थाननि की संख्या अर तिन स्थानकनि विषैं प्रकृतिनि की संख्या, तिनकौं अपने-अपने गुणस्थाननि विषैं संभवै ऐसै उपयोग वा योग, आदि शब्द तैं संयम, देशसंयम, लेश्या, सम्यक्त्व इनकरि गुणिए बहुरि सबका जोड़ दीजिए जो प्रमाण होइ, तितनी तहां मोह की स्थान-संख्या वा प्रकृति-संख्या जाननी ॥ ४९० ॥

सोई कहिए हैं–

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्ते जिणे य सिद्धे य।
पण छस्सत्त दुगं च य उवजोगा होंति दो चेव॥ ४९१ ॥

मिथ्याद्विके मिश्रत्रये, प्रमत्तसप्तके जिने च सिद्धे च।
पंच षट् सप्त द्विकं च च, उपयोगा भवंति द्वौ चैव॥ ४९१ ॥

टीका - उपयोग है सो मिथ्यादृष्ट्यादिक दोय गुणस्थाननि विषैं तीन अज्ञान, दोय दर्शन– ऐसैं पांच हैं। मिश्रादिक तीन विषैं तीन ज्ञान, तीन दर्शन– ऐसैं छह हैं प्रमत्तादिक सात विषैं च्यारि ज्ञान, तीन दर्शन– ऐसैं सात हैं। सयोगी-अयोगी जिन विषैं वा सिद्ध विषैं केवलज्ञान-केवलदर्शन– ए दोय हैं। तहां मिथ्यादृष्टिविषै पहले कूटनि करि एक तौ दश प्रकृतिरूप अर दोय नव-नव रूप अर एक आठ रूप– ए च्यारि स्थान हैं। तिनकी प्रकृतिनि का जोड छत्तीस भया। बहुरि पिछले कूटनि करि नव रूप एक अर आठ-आठ रूप दोय अर सात रूप एक– ऐसैं च्यारि स्थान, तिनकी बत्तीस-प्रकृति– इनकौं मिलाएं आठ-स्थान, अडसठि-प्रकृति, तिनकौं पांच-उपयोगकरि गुणैं चालीस-स्थान, तीनसै चालीस-प्रकृति हो हैं।

बहुरि सासादन विषैं एक नव रूप अर दोय आठ-आठ रूप अर एक सात रूप– ऐसैं च्यारि स्थान, बत्तीस प्रकृति, तिनकौं पंच उपयोग करि गुणैं बीस-स्थान, एकसौ साठि प्रकृति हो हैं। बहुरि मिश्र विषैं एक नव रूप अर दोय आठ-आठ रूप अर एक सात रूप– ऐसैं च्यारि-स्थान तिनकी बत्तीस-प्रकृति, इनकौं छह उपयोग करि गुणै चौईस स्थान, एकसौ वाणवै प्रकृति हो हैं।

बहुरि असंयत विषैं पहिले कूटनिकरि नव रूप एक अर आठ-आठ रूप दोय अर सात रूप एक– ऐसैं च्यारि स्थान, तिनकी बत्तीस-प्रकृति अर पिछले कूटनि करि आठ रूप एक अर सात-सात रूप दोय अर छह रूप एक– ऐसैं च्यारि स्थान, तिनकी अट्ठाईस-प्रकृति इनकौं मिलाए आठ-स्थान, साठि-प्रकृति, तिनकौं छह उपयोग कर गुणैं अड़तालीस-स्थान, तीनसै साठि-प्रकृति हो हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि देशसंयत विषैं पहिले कूटनि करि एक आठ रूप अर दोय सात-सात रूप अर एक छह रूप— ऐसैं च्यारि-स्थान-अट्ठाईस-प्रकृति पिछले कूटनि करि एक सात रूप अर दोय छह-छह रूप अर एक पंच रूप ऐसैं— च्यारि-स्थान, चौईस-प्रकृति मिलाएं तैं, आठ-स्थान-बावन-प्रकृति, तिनकौं छह उपयोग करि गुणैं अड़तालीस-स्थान, तीन से बारा-प्रकृति हो हैं।

बहुरि प्रमत्त विषैं वा अप्रमत्त विषैं पहिले कूटनि करि एक सात रूप अर दोय छह-छह रूप अर एक पांच रूप— ऐसैं च्यारि-स्थान, चौईस-प्रकृति पिछले कूटनि करि एक छह रूप अर दोय पांच-पांच रूप अर एक च्यारि रूप— ऐसैं च्यारि-स्थान, बीस-प्रकृति मिलाए तैं आठ-स्थान, चवालीस-प्रकृति, तिनकौं सात उपयोगनिकरि गुणैं छप्पन-छप्पन स्थान, तीनसै आठ, तीनसै आठ-प्रकृति हो हैं।

बहुरि अपूर्वकरण विषैं छह रूप एक अर पांच-पांच रूप दोय अर च्यारि रूप एक— ऐसैं च्यारि-स्थान, बीस-प्रकृति तिनकौं सात उपयोगनिकरि गुणै अठाईस-स्थान, एकसौ चालीस-प्रकृति हो हैं।

इन सबनि का जोड दीए ४०, २०, २४, ४८, ४८, ५६, ५६, २८ तीनसौ बीस स्थान भए, तिनकौं चौबीस-भंगनि करि गुणै छिहत्तरिसै असी-स्थान भए। बहुरि प्रकृति सर्व ३४०, १६०, १९२, ३६०, ३१२, ३०८, ३०८, १४० मिलि इकईससै बीस भई। तिनकौं चौबीस-भंगनि करि गुणै पचास हजार आठसै असी प्रकृति भई।

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषैं दोय-प्रकृति रूप एक स्थान, तिनकौं सात उपयोगनि करि गुणै स्थान सात, प्रकृति-चौदह होइ तिनकौं बारह भंगनि करि गुणै चौरासी-स्थान, एकसौ अडसठि-प्रकृति हो हैं। बहुरि अवेद-भागरूप अनिवृत्ति-करण विषैं एक प्रकृति रूप एक-स्थान, तिनकौं सात-उपयोग करि गुणैं सात-स्थान, सात प्रकृति, तिनकौं च्यारि-भंगनि करि गुणै अठाईस-स्थान, अठाईस-प्रकृति हो हैं।

बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं एक प्रकृति रूप एक-स्थान, तिनकौं सात उपयोगनिकरि गुणै सात-स्थान, सात-प्रकृति इहां भंग एक ही है—

ऐसैं इनका जोड दीएं ८४। २८। ७ एकसौ उगणीस-स्थान अर १६८, २८, ७— दोय सै तीन-प्रकृति हो हैं। इनकौं पूर्वै अपूर्वकरण पर्यंत कहे स्थान प्रकृति तिन विषैं मिलाइए॥ ४९१ ॥

णवणउदिसगसयाहिय सत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स।
ठाणवियप्पे जाणसु उवजोगे मोहणीयस्स॥ ४९२॥

नवनवतिसप्तशताधिक, सप्तसहस्रप्रमाणमुदयस्य।
स्थानविकल्पा जानीहि उपयोगे मोहनीयस्य॥ ४९२॥

टीका - ऐसे उपयोग का आश्रय करि मोहनीय के उदय-स्थानों के भेद निन्याणवै अधिक सातसै संयुक्त सात हजार जानहु ७७९९॥ ४९२॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक्कावण्णसहस्सं तेसीदिसमण्णियं वियाणाहि।
पयडीणं परिमाणं उवजोगे मोहणीयस्स॥ ४९३॥

एकपंचाशत्सहस्रं, त्र्यशीतिसमन्वितं विजानीहि।
प्रकृतीनां परिमाण, मुपयोगे मोहनीयस्य॥ ४९३॥

टीका - बहुरि उपयोग आश्रय करि मोहनी के प्रकृतिनि का प्रमाण इकावन हजार तियासी जानहु (५१०८३)॥ ४९३॥

आगै योग आश्रय करि कहै हैं–

तिसु तेरं दस मिस्से णव सत्तसु छट्ठयम्मि एक्कारा।
जोगिम्मि सत्त जोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं॥ ४९४॥

त्रिषु त्रयोदश दश मिश्रे, नव सप्तसु षष्ठे एकादश।
योगिनि सप्त योगा, अयोगिस्थानं भवेत् शून्यम्॥ ४९४॥

टीका - योग मिथ्यादृष्टि, सासादन, असंयत विषैं तेरह-तेरह, मिश्र विषैं दश, देशसंयतादिक सप्तनि विषैं नव-नव, प्रमत्त विषैं ग्यारह, सयोगी विषैं सात, अयोगी विषैं शून्य हैं॥ ४९४॥

आगै मिश्रयोग युक्त अर केवल पर्याप्तयोग युक्त गुणस्थान तिनकौं विशेष करि कहै हैं–

मिच्छे सासण अयदे पमत्तविरदे अपुण्णजोगगदं।
पुण्णगदं च य सेसे पुण्णगदे मेलिदं होदि॥ ४९५॥

मिथ्ये सासने अयते, प्रमत्तविरते अपूर्णयोगगतं।
पूर्णगतं च च शेषे, पूर्णगते मिलितं भवति॥ ४९५॥

टीका - मिथ्यादृष्टि विषैं, सासादन विषैं, असंयत विषैं, प्रमत्तविरति विषैं– इनि च्यारि विषैं अपर्याप्त-योग कौं प्राप्त अर पर्याप्त-योग कौं प्राप्त मिलाइ करि स्थान-प्रमाण अर प्रकृति-प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष-गुणस्थान विषैं केवल पर्याप्त-योग ही कौं प्राप्त स्थान-प्रमाण वा प्रकृति-प्रमाण हो हैं। सोई कहिए हैं–

८
९९
१०
३६

मिथ्यादृष्टिविषैं पहिले कूटनिकरि स्थान च्यारि, प्रकृति छत्तीस तिनकौं तेरह जोगनि करि गुणै बावन-स्थान, च्यारिसै अडसठि-प्रकृति हो हैं। बहुरि अनंतानुबंधी का विसंयोजन रूप अंतर्मुहूर्त विषैं मरण नाहीं; तातैं पिछले कूटनि करि च्यारिस्थान, बत्तीस-प्रकृति

७
८८
९
३२

तिनकौं दश जोगनि करि गुणै स्थान-चालीस, प्रकृति-तीनसौ बीस हो है। बहुरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सासादन विषैं स्थान-च्यारि, प्रकृति-बत्तीस

७
८८
९
३२

तिनकौं वैक्रियिक-मिश्र का जुदा कहिएगा ; तातैं बारहयोगिनि कर गुणैं स्थान-अड़तालीस, प्रकृति-तीनसै चौरासी हो हैं। बहुरि मिश्र विषैं स्थान-च्यारि, प्रकृति-बत्तीस

७
८८
९
३२

तिनकौं दश योगनि करि गुणै स्थान-चालीस, प्रकृति-तीनसै बीस हो हैं। बहुरि असंयत विषैं आठ-स्थान, साठि-प्रकृति

७	६
८८	७७
९	८
३२	२८

तिनकौं कार्माण, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र का जुदा कहिएगा ; तातैं दश योगनि करि गुणै स्थान-अस्सी, प्रकृति-छस्सौ हो हैं। बहुरि देशसंयत विषैं स्थान-आठ, प्रकृति-बावन

६	५
७७	६६
८	७
२८	२४

तिनकौं नव योगनिकरि गुणै स्थान-बहत्तरि, प्रकृति-च्यारसै अड़सठि हो हैं। बहुरि प्रमत्त विषैं, अप्रमत्त विषैं स्थान-आठ, प्रकृति-चवालीस,

५	४
६६	५५
७	६
२४	२०

तिनकौं आहारक-द्विक का जुदा कहिएगा ; तातैं नवयोगनि करि गुणै स्थान-बहत्तरि, बहत्तरि, प्रकृति-तीनसै छिनवै, तीनसै छिनवै हो हैं। बहुरि अपूर्वकरण विषैं च्यारि-स्थान, बीस-प्रकृति

४
५५
६
२०

तिनकौं नव योगनि करि गुणै स्थान-छत्तीस, प्रकृति-एकसौ असी हो हैं। इहां पर्यंत स्थान वा प्रकृति जितने होहिं, तिनकौं चौबीस भंगनि करि गुणिए।

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषैं सवेदभाग विषैं एक-स्थान, दोय-प्रकृति इनकौं नव योगनि करि गुणै नव-स्थान, अठारह-प्रकृति हो हैं इनकौं बारह-भंगनि करि गुणिए। अर अवेदभाग विषैं एकस्थान, एक-प्रकृति नव योगनि करि गुणै नव-स्थान, नव-प्रकृति हो हैं, इनकौं च्यारि भंगनि करि गुणिए। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं एक-स्थान, एक-प्रकृति ; इनकौं नव योगनि करि गुणैं नव-स्थान, नव-प्रकृति हो हैं। इनको एक भंगकरि गुणिए॥ ४९५ ॥

आगैं जुदे राखे योग, तिनका विशेष दोय गाथानि करि कहैं हैं—

सासणअयदपमत्ते वेगुव्वियमिस्स तं च कम्मयियं।
ओरालमिस्स हारे अडसोलडवग्ग अट्ठवीससयं॥ ४९६ ॥

सासनायतप्रमत्ते, वैगूर्विकमिश्रं तच्च कार्मणं।
औरालमिश्रमाहारे, अष्टषोडशाष्टवर्गं अष्टविंशशतं॥ ४९६ ॥

टीका - सासादन का वैक्रियिक-मिश्रयोग विषैं स्थान-अष्ट का वर्ग चौसठि तीहिं प्रमाण

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

है अर प्रकृति-पांचसै बारह हैं। कैसे ? च्यारि कूट सासादन विषैं कीए थे, तिनविषैं तीन वेदनि विषैं एक का उदय कह्या था। इहां नपुंसक-वेद बिना दोय ही वेदनि विषैं एक का उदय जानना। सो नव रूप एक अर आठ-आठ रूप दोय अर सात रूप एक— तिनके च्यारि-स्थान अर बत्तीस-प्रकृति, तिनकौं च्यारि-कषाय, दोय-वेद युगलनि तैं भए सोलह भंग तिनकरि गुणै चौसठि-स्थान, पांचसै बारह-प्रकृति हो हैं।

बहुरि असंयत का वैक्रियिक-मिश्र अर कार्माण-योगनि विषैं पूर्वोक्त आठ कूटनि विषैं स्त्री-वेद बिना दोय-वेदनि विषैं एक का उदय जानना ; तातैं तिन कूटनि विषैं आठ-स्थान, साठ-प्रकृति तिनकौं च्यारिकषाय, स्त्रीवेदविना दोय वेद, दोय जुगलनि तैं भए सोलह-भंग, तिनकरि गुणै अर दोय योगनि करि गुणै सोलह-वर्गप्रमाण दोयसै छप्पन्न-स्थान हो हैं। अर प्रकृति-उगणीससै बीस हो हैं।

बहुरि असंयत का औदारिक—मिश्रयोग विषैं स्त्रीवेद, नपुंसक— वेद दोऊ नाहीं ; तातैं पूर्वोक्त आठ-कूटनि विषैं तीन-तीन जायगा वेद लिखे थे, तहां एक-एक जायगा लिखना। तहां आठ-कूटनि के आठ-स्थान, साठि प्रकृति, तिनकौं च्यारि-कषाय, एक-वेद, दोय-जुगलनि तैं भए आठ-भंग तिनकरि गुणिए, एक योगकरि गुणिए — ऐसैं आठ वर्गप्रमाण चौसठि-स्थान हैं अर च्यारिसै असी-प्रकृति हैं।

बहुरि प्रमत्तसंयत का आहारक-आहारकमिश्र रूप दोय-योगनिविषैं भी स्त्री, नपुंसक वेद नाहीं ; तातैं स्त्री, नपुंसक वेदरहित आठ-कूटनि के आठ-स्थान, चवालीस-प्रकृतिनि कौं आठ-भंगनिकरि गुणै अर आहारक, आहाराक-मिश्र योगनिकरि गुणै एकसौ अट्ठाईस-स्थान अर सातसै च्यारि-प्रकृति हो हैं ॥ ४९६ ॥

आगैं तिस घटाया वेद कौं आप ग्रंथकर्ता निषेधै हैं—

णत्थि णउंसयवेदो इत्थीवेदो णउंसइत्थिदुगे।
पुव्वुत्तपुण्णजोगग चदुसुट्ठाणेसु जाणेज्जो ॥ ४९७ ॥

नास्ति नपुंसकवेदः, स्त्रीवेदो नपुंसकस्त्रीद्विकं।
पूर्वोक्तापूर्णयोग, चतुर्षु स्थानेषु ज्ञातव्यं ॥ ४९७ ॥

टीका– पूर्वोक्त अपर्याप्त-योग कौं प्राप्त च्यारि-स्थान, तिनविषैं सासादन का वैक्रियिक-मिश्रयोगविषैं नपुंसक-वेद नाहीं, जातैं सासादनवाला मरि नरक विषैं उपजै नाहीं। बहुरि असंयत का वैक्रियिक-मिश्र वा कार्माणयोग विषै स्त्री-वेद नाहीं, जातैं असंयतवाला मरि स्त्री विषैं उपजै नाहीं। बहुरि असंयत का औदारिक-मिश्र योग विषैं अर प्रमत्त का आहारक-दोय योगनि विषैं स्त्री-नपुंसक दोय वेद नाहीं— ऐसा जाना।

इहां मिथ्यादृष्ट्यादिक अपूर्वकरण-पर्यंत जेते स्थान होंइ, तिनकौं एकठे करि चौबीस-भंगनि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करि गुणिए जो प्रमाण होइ, तिसविषैं अनिवृत्ति का सवेद-अवेद भाग का वा सूक्ष्मसांपराय का एकसौ तरेपन-स्थान मिलाइए अर अपर्याप्त-सासादन-असंयत-प्रमत्त का पीछे कहे पांच सै बारह-स्थान, ते मिलाइए सबका जोड़ दीजिए ॥ ४९७ ॥

तेवण्णणवसयाहिय बारसहस्सप्पमाणमुदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु जोगं पडि मोहणीयस्स ॥ ४९८ ॥

त्रिपंचाशन्नवशताधिक, द्वादशसहस्रप्रमाणमुदयस्य ।
स्थानविकल्पान् जानीहि योगं प्रति मोहनीयस्य ॥ ४९८ ॥

टीका - ऐसैं योग का आश्रय करि सर्व मोहनीय के उदय-स्थान तरेपन सहित नवसै अधिक बारह हजार जानहु (१२९५३) । बहुरि प्रकृति भी मिथ्यादृष्ट्यादिक अपूर्वकरण पर्यंत सर्व-प्रकृति एकठी करि तिनकौं चौईस-भंगनि करि गुणै जो प्रमाण होइ, तिसविषैं अनिवृत्तिकरण के सवेद-अवेद भाग वा सूक्ष्म-सांपराय की दोयसै इकसठि प्रकृति मिलाइए ॥ ४९८ ॥

बहुरि तहां कहा करिए ? सो कहैं हैं—

बिदिये बिगिपणमयदे खदुणवएक्कं खअट्ठचउरो य ।
छट्ठे चउसुण्णसगं पयडिवियप्पा अपुण्णम्हि ॥ ४९९ ॥

द्वितीये द्वयेकपंचकमयते, खद्विनवैकं खाष्टचत्वारश्च ।
षष्ठे चतुःशून्यसप्त, प्रकृतिविकल्पा अपूर्णे ॥ ४९९ ॥

टीका - सासादन का वैक्रियिक-मिश्र विषैं प्रकृति-विकल्प दोय, एक, पंच अंक रूप पांचसौ बारह (५१२), असंयत का वैक्रियिक-मिश्र, कार्माण विषैं विंदी, दोय, नव, एक अंक रूप उगणीससै बीसचकार तैं असंयत का औदारिक-मिश्रयोग विषैं विंदी, आठ, च्यारि अंक रूप च्यारिसै असी प्रमत्त का आहारक-द्विक विषैं च्यारि, शून्य, सात अंक रूप सातसै च्यारि हैं, सो इनका जोड देय तिनही में मिलाइए ॥ ४९९ ॥

पणदालछस्सयाहिय अट्ठासीदीसहस्समुदयस्स ।
पयडीणं परिसंखा जोगं पडि मोहणीयस्स ॥ ५०० ॥

पंचचत्वारिंशत्षट्शताधि, काष्टाशीतिसहस्रमुदयस्य ।
प्रकृतीनां परिसंख्या, योगं प्रति मोहनीयस्य ॥ ५०० ॥

टीका - ऐसैं योग आश्रय करि मोहनीय के सर्व उदय-प्रकृतिनि के भेद पैंतालीस सहित छसै अधिक अठ्यासी हजार हैं (८८६४५) ॥ ५०० ॥

आगै संयम का आश्रय करि कहिए हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तेरससयाणि सत्तरि सत्तेव य मेलिदि हवंतित्ति।
ठाणवियप्पे जाणसु संजमलंबेण मोहस्स॥ ५०१ ॥

त्रयोदशशतानि सप्तति, सप्तैव च मिलिते भवंतीति।
स्थानविकल्पा जानीहि संयमालंबेन मोहस्य॥ ५०१ ॥

टीका - संयम के अवलबंन करि मोहनीय के उदय-स्थान के भेद मिलाएं तेरहसै सतहत्तरि हैं, ते जानहु। सोई कहिए है– प्रमत्त, अप्रमत्त विषैं सामायिकादिक तीन संयम हैं, तिनकरि आठ-आठ स्थानकनि कौं गुणै चौबीस-चौबीस स्थान हो हैं अर तिन स्थाननि की प्रकृति चवालीस, तिनकौं गुणैं एकसौ बत्तीस, एकसौ बत्तीस-प्रकृति हो हैं। बहुरि अपूर्वकरण विषैं सामायिकादिक दोय संयम, तिनकरि तहां कै च्यारि-स्थान गुणै आठ-स्थान हो हैं अर बीस-प्रकृतिनि कौं गुणै चालीस-प्रकृति हो हैं, सो इनकौं तो चौवीस-भंगनि कर गुणिए। बहुरि अनिवृत्तिकरण का सवेद-भाग विषैं एक-स्थान, दोय-प्रकृति, तिनकों दोय संयम करि गुणै दोय-स्थान, च्यारि-प्रकृति होंइ। इनकौं बारह-भंगनि करि गुणिए अवेद-भाग विषैं एक-स्थान, एक-प्रकृति, इनकौं दोय-संयम करि गुणै दोय-स्थान, दोय-प्रकृति होंइ। इनकौं च्यारि भंगनि करि गुणिए। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं संयम एक, सो तहां एक-स्थान, एक-प्रकृति ही है, भंग भी एक ही है।

इहां प्रमत्तादिक तीन के छप्पन-स्थानकनि कौं चौबीस करि गुणै तेरासौ चवालीस अर अनिवृत्तिकरणादिक के तेतीस मिलाए तैं तेरह सौ सतहत्तरि उदय-स्थान के भेद हो हैं॥ ५०१ ॥

तेवण्णतिसदसहियं सत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स।
पयडिवियप्पे जाणसु संजमलंबेण मोहस्स॥ ५०२ ॥

त्रिपंचाशत्यिशतसहितं, सप्तसहस्रप्रमाणमुदयस्य।
प्रकृतिविकल्पान् जानीहि, संयमावलंबेन मोहस्य॥ ५०२ ॥

टीका - संयम के अवलंबन करि मोहनीय का उदय-प्रकृति भेद प्रमत्तादिक तीन का तीनसै च्यारि कौं चौबीस करि गुणिए ७२९६। तिन विषैं अनिवृत्तिकरणादि की सत्तावन मिलाएं तरेपन सहित तीनसै अधिक सात हजार जानहु (७३५३)॥ ५०२ ॥

आगैं गुणस्थान विषैं संभवती लेश्या कहिए है–

मिच्छचउक्के छक्कं देसतिये तिण्णि होंति सुहलेस्सा।
जोगित्ति सुक्कलेस्सा अजोगिठाणं अलेस्सं तु॥ ५०३ ॥

मिथ्यचक्तुष्के षट्कं, देशत्रये तिस्रो भवंति शुभलेश्याः।
योगी इति शुक्ललेश्या, अयोगिस्थानमलेश्यं तु॥ ५०३ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका - मिथ्यादृष्ट्यादिक च्यारि गुणस्थाननि विषैं प्रत्येक छह-लेश्या हैं। देशसंयतादिक तीन विषैं तीन शुभ-लेश्या ही हैं। ऊपरि अपूर्वकरणादि सयोगी पर्यंत विषैं शुक्ल-लेश्या ही है। अयोगी-गुणस्थान लेश्यारहित है ॥ ५०३ ॥

कही लेश्या का आश्रय करि मोह के स्थान वा प्रकृतिनि की संख्या दोय गाथानिकरि कहै हैं—

पंचसहस्सा बेसय सत्ताणउदी हवंति उदयस्स।
ठाणवियपपे जाणसु लेस्सं पडि मोहणीयस्स॥ ५०४ ॥

पंचसहस्राणि द्विशतसप्तनवतिः भवंति उदयस्य।
स्थानविकल्पा जानीहि, लेश्यां प्रति मोहनीयस्य॥ ५०४ ॥

टीका - ए कही गुणस्थाननि विषैं लेश्या तिनकौं आश्रय करि सर्व मोहनीय के उदय-स्थान पांच हजार दोय सै सत्याणवै, हे शिष्य तू जानि (५२९७) ॥ ५०४ ॥

अट्ठत्तीससहस्सा बेण्णिसया होंति सत्ततीसा य।
पयडीणं परिमाणं लेस्सं पडि मोहणीयस्स॥ ५०५ ॥

अष्टत्रिंशत्सहस्राणि, द्विशतानि भवंति सप्तत्रिंशच्च।
प्रकृतीनां परिणामं, लेश्यां प्रति मोहनीयस्य॥ ५०५ ॥

टीका - लेश्या प्रति मोहनीय के उदय-प्रकृतिनि का प्रमाण अठतीस हजार दोयसै सैंतीस हैं (३८२३७)। सोई कहिए है— मिथ्यादृष्टि विषैं स्थान-दश आदि च्यारि, नव आदि च्यारि तिन आठ-स्थाननि कौं छह लेश्यानि करि गुणैं अडतालीस-स्थान भए अर तिनकी अड़सठि-प्रकृतिनि कौं छह लेश्यानि करि गुणैं प्रकृति च्यारिसैं आठ भई। बहुरि सासादन विषैं नव आदिक च्यारि-स्थान ते षट् लेश्या करि गुणैं स्थान-चौईस हो हैं अर तिनकी बत्तीस-प्रकृतिनि कौं गुणैं प्रकृति-एकसौं वाणवैं हैं। बहुरि मिश्र विषैं स्थान-नव आदि च्यारि, प्रकृति-बत्तीस तिनकौं छह लेश्यानि करि गुणै स्थान-चौईस, प्रकृति-एकसौ बाणवैं हो हैं।

बहुरि असंयत विषै स्थान नव आदि च्यारि, अष्ट आदि च्यारि— ऐसै आठ, अर तिनकौं प्रकृति-साठि। तिनकौं छह लेश्यानि करि गुणै स्थान-अठतालीस, प्रकृति-तीनसै साठि हो हैं। बहुरि देशसंयत विषैं स्थान-अष्ट आदि च्यारि, सप्त आदि च्यारि मिलि करि स्थान-आठ, प्रकृति-बावन। तिनकौं तीन लेश्यानि करि गुणै स्थान-चौईस, प्रकृति-एकसौ छप्पन हो हैं। बहुरि प्रमत्त विषैं वा अप्रमत्त विषैं स्थान-सप्त आदि च्यारि, छह आदि च्यारि मिलिकरि स्थान-आठ। तिनिकौं प्रकृति-चवालीस, तिनकौं तीन लेश्यानि करि गुणै स्थान-चौईस-चौईस, प्रकृति-एकसौ बत्तीस, एक सौ बत्तीस हो हैं। बहुरि अपूर्वकरण विषैं स्थान-छह आदिक च्यारि, तिनकौं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रकृति-बीस, तिनकों शुक्ल-लेश्या करि गुणैं स्थान-च्यारि, प्रकृति-बीस हो हैं।

इहां पर्यंत स्थान वा प्रकृतिनि कौं चौबीस करि गुणिए।

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषै सवेदभाग विषैं स्थान-एक प्रकृति-दोय। तिनकौं शुक्ल-लेश्याकरि गुणै स्थान एक प्रकृति दोय इनकौं बारह भंगनि करि गुणिए। अवेद भाग विषैं स्थान एक प्रकृति एक शुक्ल-लेश्या करि गुणै भी स्थान-एक, प्रकृति-एक। इनकौं च्यारि-भंगनिकरि गुणिए। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं स्थान-एक, प्रकृति-एक, शुक्ल-लेश्या करि गुणै भी स्थान-एक, प्रकृति-एक। इनकौं एक-भंग करि गुणिए।

इहां अपूर्वकरण पर्यंत स्थान वा प्रकृतिनि का जोड देय तिनकौं चौबीस करि गुणि, बहुरि अनिवृत्तिकरणादिक का सतरह-स्थान तो स्थानप्रमाण विषैं अर गुणतीस-प्रकृति, प्रकृति-प्रमाण विषैं मिलाएं पूर्वोक्त स्थान भेद वा प्रकृति-भेद का प्रमाण हो हैं॥ ५०५॥

आगैं सम्यक्त्व का आश्रय करि कहैं हैं–

अट्ठत्तरीहिं सहिया तेरसयसया हवंति उदयस्स।
ठाणवियप्पे जाणसु सम्मत्तगुणेण मोहस्स॥ ५०६॥

अष्टसप्तिभिः सहितानि, त्रयोदशकशतानि भवंति उदयस्य।
स्थानविकल्पा जानीहि सम्यक्त्वगुणेन मोहस्य॥ ५०६॥

टीका - सम्यक्त्व-गुण करि सहित मोहनीय के उदय-स्थान के विकल्प अठहत्तरि सहित तेरासै (१३७८) जानहु॥ ५०६॥

अट्ठेव सहस्साइं, छव्वीसा तह य होंति णादव्वा।
पयडीणं परिमाणं, सम्मत्तगुणेण मोहस्स॥ ५०७॥

अष्टैव सहस्राणि, षड्विंशतिस्तथा च भवंति ज्ञातव्याः।
प्रकृतीनां परिमाणं, सम्यक्त्वगुणेन मोहस्य॥ ५०७॥

टीका - सम्यक्त्व-गुण करि सहित मोहनीय के प्रकृतिनि का प्रमाण आठ हजार छब्बीस जानना (८०२६)। सोई कहिए है– असंयत विषैं क्षायोपशमिक-सम्यक्त्व के स्थान-नव आदि च्यारि

७
८८
९

तिनकी प्रकृति-बत्तीस। औपशमिक-क्षायिक के स्थान-अष्ट आदि च्यारि ८, ७, ७, ६ ; प्रकृति-अट्ठाईस सो दोऊ सम्यक्त्वनि के मिलाएं स्थान-आठ प्रकृति-छप्पन। बहुरि देश-संयत विषैं क्षायोपशम-सम्यक्त्व के स्थान-अष्ट आदि च्यारि ८, ७, ७, ६, प्रकृति-अट्ठाईस। औपशमिक वा क्षायिक के जुदे-जुदे स्थान-सप्त आदि च्यारि ७, ६, ६, ५ प्रकृति-चौईस सो

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दोऊ सम्यक्त्वनि के स्थान-आठ, प्रकृति-अठतालीस।

बहुरि प्रमत्त विषैं वा अप्रमत्त विषैं क्षायोपशमिक के स्थान सप्त आदिक च्यारि-च्यारि ७, ६, ६, ५, तिनकी प्रकृति चौईस-चौईस। औपशमिक वा क्षायिक विषैं स्थान-छह आदि च्यारि-च्यारि ६, ५, ५, ४ तिनकी प्रकृति बीस-बीस। सो दोऊ सम्यक्त्वनि के स्थान-आठ-आठ, प्रकृति-चालीस-चालीस। बहुरि अपूर्वकरण विषैं क्षायोपशमिक नाहीं, औपशमिक-क्षायिक विषैं स्थान-छह आदि च्यारि ६, ५, ५, ४, तिनकी प्रकृति-बीस। सो दोऊ सम्यक्त्वनि के स्थान-आठ, प्रकृति-चालीस।

इहां पर्यंत स्थान प्रकृतिनि कौं चौबीस-भंगनि करि गुणिए।

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषैं सवेद-भाग विषैं स्थान-एक, प्रकृति-दोय, सो औपशमिक-क्षायिक करि स्थान-दोय, प्रकृति-च्यारि, इनकौं बारह-भंगनि करि गुणिए अवेदभाग विषैं स्थान-एक,। सो दोऊ सम्यक्त्वनि के दोय, प्रकृति-एक, सो दोऊ सम्यक्त्वनि की दोय इनकौं च्यारि भंगनिकरि गुणिए। बहुरि सूक्ष्म-सांपराय विषैं स्थान एक, सो दोऊ सम्यक्त्वनि के दोय, प्रकृति-एक, सो दोऊ सम्यक्त्वनि की दोय, इनकौ एक भंग करि गुणिए।

इहां अपूर्वकरण पर्यंत स्थान वा प्रकृतिनि कौं जोडि, तिनकौं पृथक चौबीस करि गुणिए तहां अनिवृतिकरणादिक के स्थान वा प्रकृति तिनकौं गुणकार तैं गुणै स्थान तो स्थान-प्रमाण विषैं अर प्रकृति-प्रकृति-प्रमाण विषैं मिलाएं, पूर्वोक्त स्थान-प्रमाण अर प्रकृति-प्रमाण हो हैं।

इसप्रकरण विषैं जैसैं गुणास्थाननि विषैं उपयोग, योग, संयम, लेश्या, सम्यक्त्वनि के आश्रयकरि मोहनीय के उदय-स्थान वा तिसके प्रकृति-भेद कहे, तैसैं ही जीव-समासनि विषैं वा गति आदि विशेष-मार्गणानि विषैं वा आगै कहिए हैं इकतालीस जीव-पद तिनविषैं आगम के अनुसारि मोहनीय के उदय-स्थान-भेद वा प्रकृति-भेद कहने ॥ ५०७ ॥

आगै मोहनीय के सत्त्व का प्रकरण ग्यारह गाथानि करि कहै हैं—

अट्ठ य सत्त य छक्क य चदुतिदुगेगाधिगाणि वीसाणि।
तेरस बारेयारं, पणादि एगूणयं सत्तं॥ ५०८ ॥

अष्ट च सप्त च षट्कं च, चतुस्त्रिद्विकैकमधिकानि विंशतिः।
त्रयोदश द्वादशैकादश, पंचादि एकोनकं सत्त्वं॥ ५०८॥

टीका - आठ, सात, छह, च्यारि, तीन, दोय, एक करि अधिक वीस अर तरेह, बारह, ग्यारह अर पंचादिक एक-एक घाटि प्रकृति रूप सत्त्व-स्थान हैं। २८, २७, २६, २४, २३, २२, २१, १३, १२, ११, ५, ४, ३, २, १। सोई कहिए है—

तीन दर्शनमोह, पचीस चारित्र मोह— ऐसैं अठाईस प्रकृति रूप सत्त्व हैं। तिनविषैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सम्यक्त्व-मोहनीय की उद्वेलना भए सत्ताईस प्रकृतिरूप सत्त्व हो हैं। तिनविषैं मिश्रमोहनीय की उद्वेलना भएं, छब्बीस-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। बहुरि अट्ठाईस में अनंतानुबंधी का विसंयोजन भएं, चौबीस प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। तिनविषैं मिथ्यात्व का क्षय भए, तेईस प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। बहुरि मिश्रमोहनीय का क्षय भएं, बाईस प्रकृतिरूप सत्त्व हो हैं। बहुरि सम्यक्त्व-मोहनीय का क्षय भएं, इकईस-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। बहुरि अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानरूप मध्यम आठ-कषाय का क्षय भएं, तेरह-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं।

बहुरि स्त्रीवेद वा नपुंसक वेद विषैं एक का क्षय भएं, बारह-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। बहुरि स्त्रीवेद वा नपुंसक-वेद विषैं अवशेष एक वेद का क्षय भएं, ग्यारह-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। बहुरि छह हास्यादिक नोकषायनि का क्षय भएं, पंच-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। बहुरि पुरुषवेद का क्षय भएं, च्यारि-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं।

बहुरि संज्वलन-क्रोध का क्षय भएं, तीन-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। बहुरि संज्वलनमान का क्षय भएं, दोय-प्रकृति रूप सत्त्व हो हैं। बहुरि संज्वलन-माया का क्षय भएं, एक-वादर लोभरूप सत्त्व हो हैं। बहुरि वादर-लोभ का क्षय भएं सूक्ष्म-लोभ रूप सत्त्व हो हैं। सो वादर वा सूक्ष्म, एक लोभ प्रकृति ही है, तातैं दोऊ का एक ही स्थान कह्या है— ऐसैं पंद्रह सत्त्व-स्थान हैं ॥ ५०८ ॥

आगै ए गुणस्थाननि विषैं कैसे संभवै है ? सो कहै हैं—

तिण्णेगे एगेगं दो मिस्से चदुसु पण णियट्टीए।
तिण्णि य थूलेकारं सुहुमे चत्तारि तिण्णि उवसंते ॥ ५०९ ॥

त्रीण्येकस्मिन्नेकस्मिन्नेकं द्वे मिश्रे चतुर्षु पंच निवृत्तौ।
त्रीणि च स्थूले एकादश, सूक्ष्मे चत्वारि त्रीण्युपशांते ॥ ५०९ ॥

टीका - मिथ्यादृष्टि विषैं तीन, सासादन विषैं एक, मिश्र विषैं दोय, असंयतादिक च्यारि विषैं पाँच-पाँच, अपूर्वकरण विषैं तीन, अनिवृत्तिकरण विषैं ग्यारह, सूक्ष्म-सांपराय विषैं च्यारि, उपशांत-कषाय विषैं तीन सत्त्व-स्थान संभवै हैं ॥ ५०९ ॥

ते कौन ? सो कहै हैं—

पढमतियं च य पढमं पढमं चउवीसयं च मिस्सम्हि।
पढमं चउवीसचऊ अविरददेसे पमत्तिदरे ॥ ५१० ॥

प्रथमत्रयं च च प्रथमं, प्रथमं चतुर्विंशकं च मिश्रे।
प्रथमं चतुर्विंशचतुष्कं, अविरतदेशे प्रमत्तेतरे ॥ ५१० ॥

टीका - मिथ्यादृष्टि विषैं तीन-सत्व-स्थान अठाईस, सत्ताईस, छब्बीस रूप, जातैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सम्यक्त्व-मोहनीय, मिश्र मोहनीय की उद्वेलना मिथ्यादृष्टि विषैं चारों गति के जीव करै हैं। बहुरि सासादन विषैं अठाईस रूप एक ही हैं। बहुरि मिश्र विषैं अठाईस रूप वा चौबीस रूप दोय हैं, जातैं अनंतानुबंधी के विसंयोजनवाले भी मिश्रमोहनीय के उदय तैं मिश्र विषैं आवै हैं। बहुरि असंयत आदिक च्यारि गुणस्थाननि विषैं पाँच-पाँच स्थान अट्ठाईस, चौईस, तेईस, बाईस, इकईस प्रकृतिरूप हैं, जातैं अनंतानुबंधी का विसंयोजन अर तीन दर्शन मोह का क्रम तैं क्षय इनविषैं संभवै है ॥ ५१० ॥

अडचउरेक्काबीसं उवसमसेढिम्हि खवगसेढिम्हि।
एक्काबीसं सत्ता अट्ठकसायाणियट्टित्ति॥ ५११ ॥

अष्टचतुरेकविंशतिः, उपशमश्रेण्यां क्षपकश्रेण्यां।
एकविंशतिः सत्ता, अष्टकषायानिवृत्तिरिति॥ ५११ ॥

टीका - बहुरि उपशमश्रेणी विषैं अपूर्वकरणादिक च्यारि गुणस्थाननि विषैं तीन-तीन, स्थान अट्ठाईस, चौईस, इकईस प्रकृतिरूप हैं, जातैं अनंतानुबंधी विसंयोजनवाले वा तीनों दर्शनमोह, च्यारि अनंतानुबंधी का जिनके क्षय भया, ते भी तहां चढै हैं। बहुरि क्षपकश्रेणी विषैं, अपूर्वकरण विषैं अर अनिवृत्तिकरण विषैं आठ-कषाय नष्ट भए पहिले, इकईस-इकईस प्रकृतिरूप एक-एक स्थान है ॥ ५११ ॥

तेरस बारेयारं तेरस बारं च तेरसं कमसो।
पुरिसित्थिसंढवेदो दयेण गदपणगबंधम्हि॥ ५१२ ॥

त्रयोदश द्वादशैकादश, त्रयोदश द्वादश च त्रयोदश क्रमशः।
पुरुषस्त्रीषंढवेदोदयेन गतपंचकबंधे॥ ५१२ ॥

टीका - ताके ऊपरि जो पुरुष-वेद का उदय सहित श्रेणी चढै हैं, ताके पुरुष-वेद च्यारि संज्वलन— इन पांच-प्रकृतिनि का जहां बंध, ऐसा अनिवृत्तिकरण का भाग विषैं तेरह-प्रकृतिरूप, बारह प्रकृति रूप, ग्यारह प्रकृतिरूप तीन स्थान हैं। बहुरि अष्ट-कषाय का क्षय के अनंतरि अनिवृत्ति-करण विषैं स्त्री, नपुंसक-वेद का अनुक्रम तैं क्षय हो हैं; तातैं स्त्री वेद का उदय सहित जो श्रेणी चढै है, ताकैं सो तेरह प्रकृति रूप स्थान हैं अर नपुंसक वेद का क्षय भए बारह-प्रकृति रूप स्थान हैं। बहुरि जो जीव नपुंसक-वेद का उदय सहित श्रेणी चढै, ताकै तहां सो तेरह प्रकृतिरूप स्थान ही है, जातैं ताकैं नपुंसक[१](?) स्त्री वेद का युगपत क्षपणा का प्रारंभ है ॥ ५१२ ॥

---

१ (?) यहां संस्कृत टीका में पुरुषवेद है, पर हिन्दी की सभी प्रतियों में नपुंसक मिला है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पुरिसोदयेण चडिदे अंतिमखंडंतिमोत्ति पुरिसुदओ।
तप्पणिधिमिदराणं अवगदवेदोदयं होदि॥ ५१३॥

पुरुषोदयेन चटिते, अंतिमखंडांतिम इति पुरुषोदयः।
तत्प्रणिधौ इतरयोरपगतवेदोदयो भवति॥ ५१३॥

टीका - पुरुष-वेद का उदय सहित क्षपक-श्रेणी कौं चढै तिहिं विषैं अंत का खंड का अंत-समय पर्यंत पुरुष-वेद का उदय की प्रथमस्थिति का काल विषैं नपुंसक-वेद-क्षपणा-खंड वा स्त्री-वेद-क्षपणा-खंड वा पुरुष-वेद-क्षपणा-खंडनि विषैं अंत का खंड का अंत-समय पर्यंत निरंतर पुरुष-वेद का उदय अर बंध पाइए है। बहुरि तिसही पुरुष-वेद-क्षपणा का अंत का खंड का निकटि अन्य नपुंसक-स्त्री वेदनि का उदय का अभाव हो है॥ ५१३॥

ऐसैं होतैं कहा हो है ? सो कहै हैं–

तट्ठाणे एक्कारस सत्ता तिण्होदयेण चडिदाणं।
सत्तण्हं समग छिदी पुरिसे छण्हं च णवगमत्थित्ति॥ ५१४॥

तत्स्थाने एकादश, सत्ताः त्रिकोदयेन चटितानां।
सप्तानां समकं छित्तिः पुरुषे षण्णां च नवकमस्तीति॥ ५१४॥

टीका - तीहिं पुरुषवेद का उदयसहित श्रेणी चढ्या, ताका अनिवृत्तिकरण का सवेदभाग का अंत का खंड विषैं, बहुरि तिसही खंड के निकटि अनिवृत्तिकरण का तिस अंत का खंड का काल विषैं, स्त्री-नपुंसक वेद का उदयकरि सहित चढै, तिनके स्त्रीनपुंसक-वेद का उदय का अभाव रूप दोय-स्थान विषैं, पुरुषवेदसहित सात-नोकषाय अर च्यारि संज्वलन– इन ग्यारह प्रकृतिरूप सत्त्वस्थान हैं। बहुरि तीन में किसी वेद का उदय सहित श्रेणी चढे होहु, तिनकैं सात-नोकषाय क्षपणा का प्रारंभ अर तहां अंत का खंड का अंत-समय विषैं तिन सातों की सत्त्व की व्युच्छित्ति युगपत् हो है, याकौं भएं च्यारि ही का सत्त्व रहै हैं।

तहां इतना विषेष– जो पुरुषवेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या है, ताकैं एक समय घाटि दोय आवली प्रमाण समय-प्रबद्धनि विषैं एकसमय घाटि आवली प्रमाण क्षय भएं पीछैं, अवशेष आवली प्रमाण संपूर्ण पुरुषवेद कैं नवक समय-प्रबद्ध पाइए हैं ; तातैं ताकैं छह-नोकषायनि ही का सत्व की व्युच्छित्ति है। सो पुरुषवेद सहित चढ़नेवाले कैं पांच का सत्त्व रहै हैं।

जिनका बंध भए थोरा काल भया संक्रमणादि करनेयोग्य जे निषेक न भए, ऐसैं नूतन समय प्रबद्ध के निषेक, तिनका नाम नवक-समयप्रबद्ध जानना।

तैं वे नवक-समयप्रबद्ध अपने-अपने बंध के प्रथम समय तैं लगाय आवली प्रमाण-कालविषैं अन्य अवस्थान धरैं ; तातैं इस आवलीकाल कौं अचलावली कहिए। तिस अचलावली कौं व्यतीत भएं संतै, समय-समय प्रति एक-एक फालि जो समय विषैं संक्रमण होनेयोग्य परमाणूनि का समूह, ताकौं अन्यप्रकृतिरूप परिणमाइ उदय में ल्यावना, सोई परमुख करि उदय होना

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिसरूप होतैं आवली काल विषैं क्षय होत संतैं, एकसमय घाटि दोय आवली काल विषैं सर्व उच्छिष्टावलिमात्र निषेकनि करि सहित क्षय हो हैं।

इहां नवक समयप्रबद्ध कह्या, तहां गले पीछै अवशेष समयप्रबद्ध के निषेक रहे, ते समयप्रबद्ध के अंश हैं, तातैं तिन निषेकनि कौं समयप्रबद्ध कहिए है। नवक-समय-प्रबद्ध की सहनानी च्यारि का अंक है, तिस समय-प्रबद्ध की अचलावली प्रमाण आबाधा है। तिसविषैं उदयादिक रूप न हो हैं ताकी सहनानी च्यारि बिंदी हैं।

बहुरि उच्छिष्टावलि जो उदय कौं प्राप्त भए जे कर्म, तिनके आवली मात्र अवशेष रहे निषेक अर जे उदय कौं प्राप्त न भए कर्म, तिनके आवलि मात्र निषेक उलंघि स्थिति का अंतकांडक की अंतफालि का पतन विषैं आवली मात्र अवशेष रहे निषेक, ते क्षपणा विना संक्रमविधान करि अन्य प्रकृतिरूप होई परमुख उदय करि समय-समय प्रति एक-एक निषेक अनुक्रमतैं गलन होइ विनसैं हैं।

भावार्थ– ऐसा जो वेदक्षपणाकाल विषैं पुरुषवेद का नवक-समय-प्रबद्ध का सत्त्व अवशेष रहै है, सो क्रोधक्षपणाकाल विषैं क्रोधरूप परिणमि विनसै हैं ; तातैं तहां पांच का भी सत्त्व जाना।

निषेक संक्रमादिक स्वरूप वर्णन पूर्वैं कीया था, सो जानना। बहुरि इनका विशेष कथन इहां भाषा विषैं आगै क्षपणासार अनुसारि कथन लिखेंगे, तहां जानना ॥ ५१४ ॥

इस अर्थ कौं कहि अनिवृत्तिकरण विषैं सत्त्व-स्थाननि का विशेष कहै हैं–

इदि चदुबंधक्खवगे तेरस बारस एगार चउसत्ता।
तिदुइगिबंधे तिदुइगि णवगुच्छिट्ठाणमविवक्खा॥ ५१५ ॥

इति चतुर्बंधक्षपके त्रयोदश द्वादशैकादश चतुःसत्ता।
त्रिद्विकैकबंधे त्रिद्विकैकं नवकोच्छिष्टयोरविवक्षा॥ ५१५ ॥

टीका - इस कहे विधान करि जो नपुंसकवेद सहित श्रेणी चढै हैं, ताकैं वेदसहित अनिवृत्ति का भाग जिस-विषैं मोहनीय की च्यारि-प्रकृति का बंध पाइए, तहां तेरह प्रकृतिरूप सत्त्व है। बहुरि जो स्त्रीवेद का उदय सहित चढै, ताकैं तहां ही बारह-प्रकृतिरूप सत्त्व है। बहुरि नपुंसक वा स्त्रीवेद का उदय सहित श्रेणी चढै, तिनकैं वेद का उदय रहित अर च्यारि प्रकृति का जहां बंध, ऐसैं भाग विषैं ग्यारह प्रकृतिरूप सत्त्व है। बहुरि नपुंसक वा स्त्रीवेद का उदय सहित श्रेणी चढै, तिनकैं सात-नोकषाय का क्षय भएं, च्यारि प्रकृतिरूप सत्त्व स्थान है। अर पुरुषवेद का उदय सहित श्रेणी चढै, ताकैं च्यारि वा पांच प्रकृति रूप भी सत्त्व-स्थान है, जातैं ग्यारह का सत्त्व-स्थान संबंधी पुरुषवेद के नवक-समय-प्रबद्ध की विवक्षा है। बहुरि ताके ऊपरि तीनू ही वेदों का उदय सहित श्रेणी चढै, तिनके तीन, दोय, एक प्रकृति का जिनविषैं बंध पाइए, ऐसै तीन भागनि विषैं क्रम तैं तीनरूप, दोयरूप, एकरूप सत्त्वस्थान पाइए है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

क्षपक अनिवृत्तिकरण के सत्त्वस्थाननि का यंत्र

बंध १ २ ३ ४ — सत्त्व १ २ ३ ४			बंध १ २ ३ ४ — सत्त्व १ २ ३ ४			बंध १ २ ३ ४ — सत्त्व १ २ ३ ४ वा ५		
व्युच्छित्ति नोकषाय ७	बंध ४	सत्त्व ११	व्युच्छित्ति नोकषाय ७	बंध ४	सत्त्व ११	व्युच्छित्ति नोकषाय ७	बंध ५	सत्त्व ११
	बंध ४	सत्त्व १३		बंध ४	सत्त्व १२	व्युच्छित्ति स्त्री	बंध ५	सत्त्व १२
	बंध ५	सत्त्व १३		बंध ५	सत्त्व १२		बंध ५	सत्त्व १३
	बंध ५	सत्त्व १३		बंध ५	सत्त्व १३		बंध ५	सत्त्व १३
		सत्त्व २१			सत्त्व २१			सत्त्व २१
नपुंसक वेद सहित श्रेणी चढ़ने वालों कै			स्त्रीवेदसहित श्रेणी चढ़ने वालों कै			पुरुषवेद सहित श्रेणी चढ़ने वालों कै		

इहां पूर्ववत् नवक-बंध के समय घाटि दोय आवली प्रमाण समय-प्रबद्ध अर उच्छिष्टावलिमात्र उदय तैं अवशेष प्रथमस्थिति के निषेक हैं, तथापि तिनकी विवक्षा इहां नाहीं है। जैसैं पुरुषवेद के नवक-समय-प्रबद्ध का सत्त्व अवशेष रहै है, ते क्रोध क्षपणाकालविषैं परमुख होइ विनसै है, तैसैं क्रोध, मान, माया के भी नवक-समयप्रबद्ध के सत्त्व अवशेष रहि, क्रम तैं मान, माया, लोभ का क्षपणाकाल विषै परमुख होइ विनसै हैं; परंतु तिनकी विवक्षा न ग्रही जो विवक्षा होती तो जैसैं च्यारि का सत्त्व की जायगा पांच का भी सत्त्व कह्या तैसैं तीन दोय एकको जायगा च्यारि तीन दोय का भी सत्त्व कहते सो विवक्षा नाहीं तातैं तीन दोय ही का सत्त्व कह्या है ऐसैं अनिवृत्तिकरण विषैं उपशम श्रेणी विषैं तो अट्ठाईस चौईस इकईस रूप तीन सत्त्व स्थान हैं क्षपक श्रेणी विषैं इकईस तेरह बारह ग्यारह पंच च्यारि तीन दोय एकरूप नवस्थान, तिनविषैं इकईस रूपस्थान उपशमक वा क्षपक दोऊ विषैं कह्या तातैं पुनरुक्त है। तातैं ग्यारह सत्त्वस्थान कहे। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं उपशमश्रेणी विषैं अठाईस चौइस इकईस रूप तीन स्थान, क्षपकश्रेणी विषैं सूक्ष्म लोभरूप एक स्थान ऐसैं च्यारि हैं। सो लोभ कैसा है ? अनिवृत्तिकरण विषैं अनुक्रमतैं अनंतवे अनंतवे भाग वादर संज्वलन लोभ का अश्वकर्ण करण सहित कबहूं न भया ऐसा अपूर्वस्पर्धक करण हो है। बहुरि तिन स्पर्धकनिका स्थूल खंडरूप वादर कृष्टि करण हो है। बहुरि तिन वादर कृष्टिनि का सूक्ष्म खंडरूप सूक्ष्मकृष्टि करण हो है तिन सूक्ष्मकृष्टिनिका उदय अनिवृत्ति विषैं नाहीं ते सूक्ष्मसांपराय विषैं उदय कौं प्राप्त होवैं ऐसा जानना। अश्वकर्णादिक का स्वरूप क्षपणासार अनुसार आगैं इहां लिखैंगे तहां जानना। बहुरि उपशांतकषाय विषैं अठाईस चौईस इकईस रूप तीन स्थान हैं। ऊपरि मोहनीय के सत्त्व का अभाव है॥ ५१५ ॥

आगैं मोहनीय के बंधस्थाननि विषैं सत्त्वस्थान कैसैं पाइए ? सो गाथा दोय करि कहैं हैं—

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

तिण्णेव दु बावीसे इगिवीसे अट्ठवीस कम्मंसा।
सत्तरतेरेणवबंधगेसु पंचेव ठाणाणि॥ ५१६॥
पंचविधचदुविधेसु य छ सत्त सेसेसु जाण चत्तारि।
उच्छिट्ठावलिणवकं अविवेक्खिय सत्तठाणाणि॥ ५१७॥ जुम्मं।

त्रय एव तु द्वाविंशतौ एकविंशतौ अष्टविंशतिः कर्मांशाः।
सप्तदशत्रयोदशनवबंधकेषु पंचैव स्थानानि॥ ५१६॥
पंचविधचतुर्विधेषु च षट् सप्त शेषेषु जानीहि चत्वारि।
उच्छिष्टावलिनवकमविवेक्ष्य सत्त्वस्थानानि॥ ५१७॥

टीका - मोहनीय का जहां बाईस बंधरूप स्थान हैं तहां कर्मांश कहिए सत्त्व स्थान ते अठाईस सत्ताईस छबीस प्रकृतिरूप तीन हैं। बहुरि इकवीस का बंध जहां है तहां अठाईस रूप ही सत्त्व स्थान हैं। बहुरि सतरह वा तेरह वा नवका बंध स्थाननि विषैं अठाईस चौईस तेईस बाईस इकईस रूप पांच-पांच सत्त्व स्थान हैं। बहुरि पांच का बंध स्थानविषैं अठाईस चौईस तेरह बारह ग्यारह प्रकृतिरूप ऐसैं छह सत्त्व स्थान हैं। बहुरि च्यारि का बंध स्थानविषैं छह पूर्वोक्त एक च्यारि प्रकृतिरूप ऐसैं सात सत्त्व स्थान हैं। इहां पांच प्रकृतिरूप सत्त्वस्थान नवक बंध रूप समय प्रबद्ध वा उच्छिष्टावलीकी इहां विवक्षा नाहीं तातैं न कह्या। बहुरि तीन का बंध स्थानविषैं अठाईस चौईस इकईस अर तीन प्रकृति रूप च्यारि सत्त्व स्थान हैं। बहुरि दोयका बंध स्थान विषैं अठाईस चौईस इकईस अर दोय प्रकृति रूप च्यारि स्थान हैं। बहुरि एकका बंध स्थानविषैं अठाईस चौईस इकईस अर एक प्रकृतिरूप च्यारि सत्त्व स्थान हैं। ए सत्त्व स्थान उच्छिष्टावली नवक समय प्रबद्धकी विवक्षा विना कहे हैं। ऐसैं जीवनि कैं ऐसैं बंध स्थान होतैं ऐसैं सत्त्व स्थान पाइए है॥ ५१६-५१७॥

दसणवपण्णरसाइं बंधोदयसत्तपयडिठाणाणि।
भणिदाणि मोहणिज्जे एत्तो णामं परं वोच्छं॥ ५१८॥

दशनवपंचदश बंधोदयसत्त्वप्रकृतिस्थानानि।
भणितानि मोहनीये इतो नाम परं वक्ष्यामि॥ ५१८॥

टीका - मोहनीय विषैं दश बंध स्थान नव उदय स्थान पंद्रह सत्त्व स्थान कहे यातैं आगैं नाम कर्म के कहैंगे॥ ५१८॥

तहां प्रथम ही नामकर्म के स्थाननि के आधारभूत इकतालीस पद तिनकौं दोय गाथानि करि कहै हैं—

णिरया पुण्णा पण्हं बादरसुहुमा तहेव पत्तेया।
वियलाऽसण्णी सण्णी मणुवा पुण्णा अपुण्णा य॥ ५१९॥

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सामण्णतित्थकेवलि उहयसमुग्घादगा य आहारा।
देवावि य पज्जत्ता इदि जीवपदा हु इगिदाला॥ ५२० ॥ जुम्मम्।

निरयाः पूर्णाः पंच वादरसूक्ष्माः तथैव प्रतयेकाः।
विकला असंज्ञिनः संज्ञिनो मनुष्या पूर्णा अपूर्णाश्च॥ ५१९ ॥
सामान्यतीर्थकेवलिन उभयसमुद्घातगाश्च आहाराः।
देवा अपि च पर्याप्ता इति जीवपदा हि एकचत्वारिंशत्॥ ५२० ॥

टीका - नारकी सर्व पर्याप्त ही हैं बहुरि पृथ्वी अप तेज वायु साधारण वनस्पती ए वादर वा सूक्ष्म तिनकी दश अर प्रत्येक वनस्पती वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री असंज्ञी पंचेन्द्री अर संज्ञी पंचेन्द्री अर मनुष्य ऐसैं सतरह पर्याप्त वा अपर्याप्त तिनके चौंतीस भए। बहुरि सामान्य केवली तीर्थंकर केवली अर समुद्घात कौं प्राप्त सामान्य केवली तीर्थंकर केवली ए च्यारि अर आहारक अर देव ए छह पर्याप्त ही हैं ऐसै इकतालीस जीव पद हैं। तहां नामकर्म का बंधस्थाननि की विवक्षाकरि कर्मपद है जातैं इन प्रकृतिरूप नाम कर्म का बंध हो है। उदय सत्त्व की विवक्षाकरि जीवपद हैं जातैं इनका उदय सत्त्व जीव कैं पाइए है। सोई कहिए है—

नरकगति नाम १ बहुरि पृथ्वीकाय स्थावर विशेषरूप वादर एकेन्द्री १ पृथ्वीकाय स्थावर विशेषरूप सूक्ष्म एकेन्द्री १ अपकाय स्थावर विशेषरूप बादर एकेन्द्री १ अपकाय स्थावर विशेषरूप सूक्ष्म एकेन्द्री १ तेजः काय स्थावर विशेषरूप बादर एकेंद्री १ तेजः काय स्थावर विशेषरूप सूक्ष्म एकेन्द्री १ वायुकाय स्थावर विशेषरूप बादर एकेन्द्री १ वायुकाय स्थावर विशेषरूप सूक्ष्म एकेन्द्री १ साधारण स्थावर विशेषरूप बादर एकेन्द्री १ साधारण स्थावरविशेषरूप सूक्ष्म एकेन्द्री १ स्थावर वादर विशेषरूप प्रत्येक वनस्पती एकेन्द्री १ ए ग्यारह नाम कर्म एकेन्द्री जातिनामा नामकर्म एकेन्द्री के निमित्त तैं हैं। बहुरि त्रस विशेषरूप वेन्द्री १ त्रस विशेषरूप तेन्द्री १ त्रस विशेषरूप चौन्द्री १ त्रस विशेषरूप असंज्ञी पंचेन्द्री १ त्रस विशेषरूप संज्ञी पंचेन्द्री १ अर मनुष्यगति नाम १ ए सतरह पर्याप्त नामकर्म के विशेषकौं धरैं पर्याप्त पद जानने, अपर्याप्त नाम विशेष धरैं अपर्याप्त जानने। बहुरि च्यारि केवली केवल जीवपद ही हैं इनविषैं कर्मपद नाहीं जातैं केवलीपना जीव का स्वभाव है। बहुरि आहारपद भी जीवपद ही है जातैं देवगतिविना और गति सहित आहारकका बंध नाहीं तातैं देवगति विषैं आहारकपदकौं गर्भित कीया बहुरि पर्याप्त विशेषरूप देवगति नाम। ऐसैं नारक देवगति रूप दोय पद अर तिर्यंच मनुष्यगति के चौंतीस पद ऐसैं मिलिकरि च्यारि केवली आहारक विना कर्मपद छत्तीस ही जानने अर जीवपद सर्व इकतालीस जानने॥ ५१९-५२० ॥

तेवीसं पणवीसं छव्वीसं अट्ठवीसमुगतीसं।
तीसेक्कतीसमेवं एक्को बंधो दुसेढिम्हि॥ ५२१ ॥

त्रयोविंशतिः पंचविंशतिः षड्विंशतिरष्टविंशमेकोनत्रिंशत्।
त्रिंशदेकत्रिंशदेवमेको बंधो द्विश्रेण्यां॥ ५२१ ॥

टीका - नामकर्म के बंधस्थान तेईस पचीस छवीस अठाईस गुणतीस तीस इकतीस एक प्रकृतिरूप आठ हैं तिन विषैं आदि के सात स्थान अपूर्व करण के छठे भाग पर्यंत यथासंभव पाइए है। एक प्रकृतिरूप दोऊ श्रेणीनि विषैं अपूर्वकरण के सातवें भाग के प्रथम समय तैं सूक्ष्मसांपराय के अंत समयपर्यंत बंधै हैं ॥ ५२१ ॥

ते बंधस्थान किस कर्म पद सहित बंधै हैं सो दो सूत्रनिकरि कहै हैं—

ठाणमपुण्णेण जुदं पुण्णेण य उवरि पुण्णगेणेव।
तावदुगाणण्णदरेणण्णदरेणमरणिरयाणं ॥ ५२२ ॥
णिरयेण विणा तिण्हं, एक्कदरेणेवमेव सुरगइणा।
बंधंति विणा गइणा, जीवा तज्जोगपरिणामा ॥ ५२३ ॥ जुम्मं ॥

स्थानमपूर्णेन युतं, पूर्णेन चोपरि पूर्णकेनैव।
आतपद्विकयोरन्यतरेणान्यतरेणामरनिरययोः ॥ ५२२ ॥
निरयेन विना त्रयाणा, मेकतरेणैवमेव सुरगतिना।
बध्नंति विना गतिना, जीवास्तद्योग्यपरिणामाः ॥ ५२३ ॥ युग्मम् ॥

टीका - तेईस प्रकृतिरूपस्थान अपर्याप्त-प्रकृति सहित बंधै हैं। पचीसरूप स्थान पर्याप्त-प्रकृति सहित बंधै हैं, चकार तैं अपर्याप्त-प्रकृति सहित भी बंधैं हैं। छब्बीस आदिक स्थान पर्याप्त-प्रकृति सहित ही बंधैं हैं, तहां भी छब्बीसरूप स्थान आतप-उद्योत विषैं एक कोई प्रकृति सहित बंधैं हैं। अठाईस प्रकृतिरूप स्थान देवगति वा नरक गति विषैं एक गति प्रकृति सहित बंधै हैं। गुणतीस रूप स्थान अर तीस रूप स्थान तिर्यंच आदि तीन विषैं एक गति-प्रकृति सहित बंधै हैं। इकतीस प्रकृतिरूप स्थान देवगति-प्रकृतिसहित बंधैं हैं। एक प्रकृतिरूप स्थान किसी गति प्रकृति सहित नाहीं बंधै हैं।

ऐसैं इन स्थाननि कौं जीव तींह-तींह स्थानयोग्य परिणामनि करि युक्त भए बांधै हैं ॥५२२-५२३ ॥

ते आतप-उद्योत प्रकृति प्रशस्त हैं, ते किस पद सहित बंधैं हैं सो कहैं हैं—

भूवादरपज्जत्तेणादावं बंधजोग्गमुज्जोवं।
तेउतिगूणतिरिक्खप, सत्थाणं एयदरगेण ॥ ५२४ ॥

भूवादरपर्याप्तेनातापो बंधयोग्य उद्योतः।
तेस्त्रिकोनतिर्यक्, पशस्तानामेकतमेन ॥ ५२४ ॥

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका - पृथ्वीकाय-बादरपर्याप्त सहित ही आतप-प्रकृति बंधयोग्य है, अन्य सहित बंधै नाही। बहुरि उद्योत-प्रकृति है, सो तेज, वायु, साधारण-वनस्पती संबंधी बादर-सूक्ष्म अन्य संबंधी सूक्ष्म ये अप्रशस्त हैं, तातैं इन-विना अवशेष तिर्यंच संबंधी बादर-पर्याप्त आदि प्रशस्त-प्रकृतिनि विषैं किसी प्रकृति सहित बंध योग्य हैं, तातैं पृथ्वीकाय बादर-पर्याप्त सहित आतप, उद्योत विषैं एक प्रकृति संयुक्त छब्बीस-प्रकृति रूप बंध-स्थान हो हैं वा बादर-अप्कायिक-पर्याप्त, प्रत्येक-वनस्पती-पर्याप्त विषैं किसी करि सहित उद्योत-प्रकृतिसंयुक्त छब्बीस प्रकृतिरूप बंध-स्थान हो हैं।

बहुरि वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी-पंचेंद्री, संज्ञी-पंचेंद्री विषैं किसी एक प्रकृति करि सहित उद्योत-प्रकृति संयुक्त तीस प्रकृतिरूप बंधस्थान संभवै है ॥ ५२४ ॥

णरगइणामरगइणा, तित्थं देवेण हारमुभयं च।
संजदबंधट्ठाणं, इदराहि गईहिं णत्थित्ति ॥ ५२५ ॥

नरगतिनामरगतिना, तीर्थं देवेनाहारमुभयं च।
संयतबंधस्थानमि, तराभिर्गतिभिर्नास्तीति ॥ ५२५ ॥

टीका - तीर्थंकर, आहारक ए विशेष प्रशस्त-प्रकृति हैं, तातैं तीर्थंकर-प्रकृति कौं देव-नारक-असंयत तौ मनुष्यगति सहित ही बांधै है अर मनुष्य-असंयतादि च्यारि-गुणस्थानवर्ती देवगति सहित ही बांधै है। बहुरि आहारक-द्विक वा तीर्थंकर, आहारक दोऊ, देव-गति सहित ही बांधैं हैं, जातैं संयत के योग्य जो बंधस्थान, सो देवगति बिना अन्य गति सहित बंधै नाही है। सो इसही सूत्र करि ते देव, नारकी तो मनुष्यगति संयुक्त तीस-प्रकृतिरूप स्थान कौं अर मनुष्य हैं, ते देवगति संयुक्त गुणतीस-प्रकृतिरूप स्थान कौं तीर्थंकर-सहित बांधै हैं।

बहुरि अप्रमत्त, अपूर्वकरण का षष्ठम-भाग पर्यंत देवगति-संयुक्त आहारक-द्विक सहित तीस-प्रकृतिरूप स्थान कौं अर तीर्थंकर, आहारक-द्विक सहित इकतीस-प्रकृतिरूप स्थान कौं बांधै हैं— ऐसा कह्या है ॥ ५२५ ॥

आगैं तेईस आदि स्थाननि विषैं प्रकृति जानने के अर्थि पाठ का अनुक्रम गाथा तीन करि कहैं हैं—

णामस्स णवधुवाणि य, सरूणतसजुम्मगाणमेक्कदरं।
गइजाइदेहसंठाणाणूणेक्कं च सामण्णा ॥ ५२६ ॥
तसबंधेण हि संहदि, अंगोवंगाणमेगदरंग तु।
तप्पुण्णेण य सरगम, णाणं पुण एगदरगं तु ॥ ५२७ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पुण्णेण समं सव्वेणुस्सासो णियमदो दु परघादो।
जोगट्ठाणे तावं उज्जोवं तित्थमाहारं॥ ५२८ ॥ विसेसयं।

नाम्नो नव ध्रुवाश्च स्वरोनत्रसयुग्मकानामेकतमकं।
गतिजातिदेहसंस्थानानूनामेका च सामान्याः॥ ५२६ ॥
त्रसबंधे हि संहत्यंगोपांगानामेकतरकं तु।
तत्पूर्णेन च स्वरगमनानां पुनः एकतरकं तु॥ ५२७ ॥
पूर्णेन समं सर्वेणोच्छ्वासो नियमतस्तु परघातः।
योगस्थाने आतप उद्योतः तीर्थमाहारः॥ ५२८ ॥ विशेषकं।

टीका - नामकर्म की तैजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ उपघात १ निर्माण १ वर्णादिक च्यारि ए नव तौ ध्रुवबंधी हैं इनका तो निरंतर सर्वजीवनि कैं बंध है। बहुरि स्वर विना नव युग्म त्रस १ वादर १ पर्याप्त १ प्रत्येक १ स्थिर १ शुभ १ सुभग १ आदेय १ यशस्कीर्ति १ ऐसैं इनके प्रतिपक्षी स्थावरादिक तिनकरि संयुक्त नव युगल तिन एक एक युगल विषैं एक प्रकृति का बंध होइ ऐसैं नव प्रकृति ए भई बहुरि च्यारि गति पांच जाति तीन शरीर छह संस्थान च्यारि आनुपूर्वी इन विषैं एक-एक का बंध होइ ऐसैं पांच प्रकृति ए भई सर्व मिलि तेईस प्रकृति भई, सो ए तौ सामान्य हैं, इनका तो बंध सर्व कैं हैं।

बहुरि त्रसपर्याप्त वा अपर्याप्तनि विषैं एक किसी प्रकृति सहित छह-सहनन, तीन-अंगोपांगनि विषैं एक-एक का बंध योग्य है, अन्य सहित नाहीं। बहुरि त्रस-पर्याप्त सहित ही सुस्वर-दुःस्वर विषैं एक का वा प्रशस्त-अप्रशस्तविहायोगति विषैं एक का बंध-योग्य है, अन्य सहित नाहीं। बहुरि पर्याप्त सहित वर्तमान सर्व ही त्रस, स्थावर तिनकरि सहित उस्वास, परघात बंध योग्य है, अन्य सहित नाहीं है। बहुरि पूर्वगाथोक्त योग्य नामपद ही विषैं आतप, उद्योत, तीर्थंकर, आहारक-द्विक बंध योग्य हैं॥ ५२६-५२८ ॥

तित्थेणाहारदुगं, एक्कसराहेण बंधमेदीदि।
पक्खित्ते ठाणाणं, पयडीणं होदि परिसंखा॥ ५२९ ॥

तीर्थेनाहारद्विकमेकसराहेण बंधमेतीति।
प्रक्षिप्ते स्थानानां, प्रकृतीनां भवति परिसंख्या॥ ५२९ ॥

टीका – तीर्थंकर सहित आहारक-द्विक है सो 'एकसराहेण' कहिए एक काल करि युगपत बंध कौं प्राप्त हो हैं; तातैं पूर्वोक्त सामान्य तेईस का बंध कह्या, तिसविषैं यथायोग्य-प्रकृति मिलाएं स्थाननि की वा प्रकृतिनि की संख्या हो है॥ ५२९ ॥

तिसही कौं दोय गाथानि करि कहैं हैं–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

एयक्खअपज्जत्तं, इगिपज्जत्तबितिचपणरापज्जत्तं।
एइंदियपज्जत्तं, सुरणिरयगईहिं संजुत्तं॥ ५३०॥
पज्जत्तगवितिचपमणु, सदेवगदिसंजुदाणि दोण्णि पुणो।
सुरगइजुदमगइजुदं, बंधट्ठाणाणि णामस्स॥ ५३१॥ जुम्मं॥

एकाक्षापर्याप्त, मेकपर्याप्तं द्वित्रिचपनरापर्याप्तं।
एकेंद्रियपर्याप्तं, सुरनिरयगतिभ्यां संयुक्तं॥ ५३०॥
पर्याप्तकद्वित्रिचपं, मानुषदेवगतिसंयुते द्वे पुनः।
सुगतियुतमगतियुतं, बंधस्थानानि नाम्नः॥ ५३१॥ युग्मम्॥

टीका – नामकर्म के एक-जीव कैं एकसमय विषैं बंध संभवै, अैसै बंधस्थान कहिए है— तहां पूर्वोक्त नव-ध्रुवबंधी आदि आनुपूर्वी पर्यंत तेईस-प्रकृति, सो तिनविषैं स्थावर, अपर्याप्त, तिर्यंच-गति, एकेन्द्रिय-जाति संयुक्त जो बंध, सो एकेन्द्री-अपर्याप्तयुत तेईस का बंध-स्थान है २३ ए अ। बहुरि यामें अपर्याप्त-प्रकृति घटाई पर्याप्त, उस्वास, परघात ए तीन मिलाइए, तब
१
एकेन्द्री-पर्याप्त युत पचीस का बंध-स्थान हो है। बहुरि इन विषैं स्थावर, पर्याप्त एकेन्द्रीजाति, उस्वास, परघात — इन पंचनि कौं घटाइ त्रस, अपर्याप्त, वेन्द्री-जाति, स्फाटकसंहनन, औदारिक-अंगोपांग ए पांच मिलाइए तब द्वीन्द्रिय-अपर्याप्तयुत पचीस का स्थान होइ।

बहुरि इनविषैं वेन्द्री-जाति घटाइ, तेंद्री-जाति मिलाइए, तब त्रींद्रिय-अपर्याप्त युत पचीस का स्थान होइ। बहुरि इनविषैं तेंद्री-जाति घटाइ, चौंद्री-जाति मिलाइए, तब चतुरिंद्रिय-अपर्याप्त युत पचीस का स्थान होइ है। बहुरि इनविषैं चौंद्री-जाति घटाइ, पंचेन्द्री-जाति मिलाइए, तब पंचेन्द्रिय-अपर्याप्त युत पचीस का स्थान होइ। बहुरि इनविषै तिर्यंच-गति घटाइ, मनुष्य-गति मिलाइए, तब मनुष्य-अपर्याप्त युत पचीस का स्थान होइ

ए प	वि	ति	च	पं	म अ
१	१	१	१	१	१

अैसैं ए पचीस-प्रकृतिरूप बंध-स्थान छह भए। बहुरि तिस मनुष्यगति युत पचीस का स्थान विषैं त्रस, अपर्याप्त मनुष्यगति, पंचेंद्री-जाति, सृपाटिका-संहनन, औदारिक-अंगोपांग— ए छह प्रकृति घटाइ, स्थावर, पर्याप्त, तिर्यंच-गति, एकेन्द्री-जाति, उस्वास, परघात— ए छह अर आतप इन सातनि कौं मिलाएं, एकेन्द्री-पर्याप्त युत छब्बीस का बंधस्थान हो है। बहुरि इनविषैं आतप घटाइ, उद्योत मिलाएं भी एकेन्द्री-पर्याप्त युत छब्बीस का ही बंधस्थान हो है।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates
Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ए छब्बीस-प्रकृतिरूप दोय स्थान भए।

अब अठाईस-प्रकृतिरूप कहै हैं—

नव-ध्रुवबंधी, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर-अस्थिर विषैं एक, शुभ-अशुभ विषैं एक, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति विषैं एक, देवगति, पंचेंद्री-जाति, वैक्रियिक-शरीर प्रथम-संस्थान, देव-गत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक-अंगोपांग, सुस्वर, प्रशस्तविहायोगति, उस्वास, परघात— इन अठाईसरूप देवगति युत अठाईस का स्थान हो है।

बहुरि नव-ध्रुवबंधी, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्ति, नरकगति, पंचेन्द्री-जाति, वैक्रियिक-शरीर, हुंड-संस्थान, नरकगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक-अंगोपांग, दुःस्वर, अप्रशस्तविहायोगति, उस्वास, परघात— इन रूप नरकगतियुत अठाईस का स्थान हो है।

ए दोय अठाईस के बंधरूप स्थान भए।

बहुरि नव-ध्रुवबंधी, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर-अस्थिर विषैं एक, शुभ-अशुभ विषैं एक, दुर्भग, अनादेय, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति विषैं एक, तिर्यंचगति, वेंद्रीजाति, औदारिक-शरीर, हुंडस्थान, तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी, असंप्राप्तासृपाटिका-संहनन, औदारिक-अंगोपांग, दुःस्वर, अप्रशस्तविहायोगति, उस्वास, परघात— इन रूप द्वींद्रिय-पर्याप्त युत गुणतीस का स्थान हो हैं।

बहुरि इनविषैं वेंद्री-जाति घटाइ, तेंद्री-जाति मिलाएं, त्रींद्रिय-पर्याप्तयुत गुणतीस का स्थान होइ। बहुरि इन विषैं तेंद्री-जाति घटाइ चौंद्री-जाति मिलाएं चतुरिंद्रिय-पर्याप्त युत गुणतीस का स्थान हो है।

बहुरि इनविषैं चतुरिंद्रिय-जाति घटाइ, पंचेन्द्रिय-जाति मिलाइए अर इहां स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, सुभग-दुर्भग, आदेय-अनादेय, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति, छह-संस्थान, छह-संहनन, सुस्वर-दुःस्वर, प्रशस्त-अप्रशस्तविहायोगति इनविषैं कोई एक-एक कोई प्रकृति ग्रहण कीजिये, तब पंचेन्द्रिय-पर्याप्त युत गुणतीस का स्थान हो है।

बहुरि इनविषैं तिर्यंच-गति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी घटाइ, मनुष्यगति अर मनुष्यगत्यानुपूर्वी मिलाएं पर्याप्त-मनुष्ययुत गुणतीस का स्थान हो है।

बहुरि नव-ध्रुवबंधी, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येक एक, स्थिर-अस्थिर विषैं एक शुभ-अशुभ विषैं एक, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति विषैं एक, देवगति, पंचेन्द्री-जाति, वैक्रियिक-शरीर, प्रथम संस्थान, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक-अंगोपांग, सुस्वर, प्रशस्तविहायोगति, उस्वास, परघात, तीर्थंकर— इन रूप देव युत गुणतीस का स्थान हो है। याकौ असंयतादि च्यारि-गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही बांधै हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अैसैं गुणतीसरूप छह कहे।

बहुरि द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पंचेंद्रिय-पर्याप्त युत गुणतीस के च्यारि कहे थे, तिनविषैं उद्योत प्रकृति मिलाएं, पर्याप्त द्वींद्रिय युत तीस का, पर्याप्त त्रींद्रिय युत तीस का, पर्याप्त-चतुरिंद्रिय युत तीस का, पर्याप्त-पंचेंद्रिय युत तीस का– ए च्यारि-बंध-स्थान हो है।

बहुरि पर्याप्त- मनुष्य युत गुणतीस का विषैं तीर्थंकर-प्रकृति मिलाएं असंयत देव-नारकी कैं बंध-योग्य मनुष्यगति युत तीस का स्थान हो है। विशेष इतना– जो इहां स्थिर-अस्थिर विषैं, शुभ-अशुभ विषैं, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति विषैं, सुभग-दुर्भग विषैं एक-एक कोई प्रकृतियुत स्थान जानना।

बहुरि देवगति युत गुणतीस का स्थान विषैं तीर्थंकर-प्रकृति घटाइ, आहारक-द्विक मिलाइए, तब देव-गतियुत तीसका स्थान हो है, याकौं अप्रमत्त-गुणस्थानवर्ती बांधैं है।

अैसै तीस-प्रकृतिरूप छह-स्थान भए। बहुरि देवगति-तीर्थयुत गुणतीस का स्थान विषैं आहारकद्विक मिलाए, अप्रमत्त के बंध-योग्य देवगति युत इकतीस का स्थान हो है। अैसैं अपूर्वकरण का छठा-भागपर्यंत बंध-योग्य इकतीस-प्रकृतिरूप एक-स्थान है। बहुरि एक यशस्कीर्ति-प्रकृतिरूप अपूर्वकरण के सातवें-भागतैं सूक्ष्मसांपरायपर्यंत एक का स्थान है।

अैसैं नामकर्म के बंध-स्थान कहे ॥ ५३०-५३१ ॥

आगैं इन नाम-कर्मनि के बंध-स्थाननि के भंग कहै हैं–

नामकर्म के बंधस्थाननि का यंत्र

तेईस का स्थान १	१ एकेंद्री पर्याप्त उद्योत युत २६	तीस के स्थान ६
१ एकेंद्री अपर्याप्त युत २३	अठाईस के स्थान २	१ वेंद्री पर्याप्त उद्योत युत ३०
पचीस का स्थान ६	१ देवगति युत २८	१ तेंद्री पर्याप्त उद्योत युत ३०
१ एकेंद्री पर्याप्त युत २५	१ नरकगति युत २८	१ चौंद्री पर्याप्त उद्योत युत ३०
१ वेंद्री अपर्याप्त युत २५	गुणतीस के स्थान ६	१ पंचेंद्री पर्याप्त उद्योत युत ३०
१ तेंद्री अपर्याप्त युत २५	१ वेंद्री पर्याप्त युत २९	१ मनुष्य तीर्थ युत ३०
१ चौंद्री अपर्याप्त युत २५	१ तेंद्री पर्याप्त युत २९	१ देव आहारक युत ३०
१ पंचेंद्री अपर्याप्त युत २५	१ चौंद्री पर्याप्त युत २९	इकतीस का स्थान १
१ मनुष्य अपर्याप्त युत २५	१ पंचेंद्री पर्याप्त युत २९	१ देव, आहारक, तीर्थ युत ३१
छब्बीस के स्थान २	१ मनुष्य पर्याप्त युत २९	एक का स्थान १
१ एकेंद्री पर्याप्त आतप युत २६	१ देव तीर्थ युत २९	१ यशस्कीर्तिरूप १

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संठाणे संहडणे, विहायजुम्मे य चरिमछज्जुमे।
अविरुद्धेक्कदरादो, बंधट्ठाणेसु भंगा हु॥ ५३२॥

संस्थाने संहनने, विहायोयुग्मे च चरमषड्युग्मे।
अविरुद्धै एकतरात्, बंधस्थानेषु भंगा हि॥ ५३२॥

टीका – छह-संस्थान, छह-संहनन, विहायोगति-युगल, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति अर इनके प्रति-पक्षीरूप छह-युगल इनविषैं एक-एक का बंध पाइए, सो इनकौं ऊपरि-ऊपरि स्थापन करि अविरुद्ध एक-एक का ग्रहण कीएं, प्रकृति के बदलने तैं भंग हो हैं। सो इन सबनि कौं ६, ६, २, २, २, २, २, २, २ परस्पर गुणन कीएं छियालीससै आठ भंग हो हैं।

जैसैं प्रथम-संस्थान सहित स्थान कह्या, पीछैं दूसरा सहित कह्या अैसैं अक्ष संचार करि एक-एक प्रकृति बदलने तैं ए भंग हो हैं, अैसा भावार्थ जानना॥ ५३२॥

तत्थासत्थो णारयसव्वापुण्णेण होदि बंधो दु।
एक्कदराभावादो, तत्थेक्को चेव भंगो दु॥ ५३३॥

तत्राशस्तो नारक, सर्वापूर्णेन भवति बन्धस्तु।
एकतराभावात्, तत्रैकश्चैव भंगस्तु॥ ५३३॥

टीका – तिन प्रशस्त-अप्रशस्त-बंधरूप प्रकृतिनि विषैं नरकगति सहित हुंड-संस्थान, अप्रशस्त-विहायोगति आदि एक-एक अप्रशस्त-प्रकृतिनि ही का बंध है। बहुरि त्रस-स्थावर सहित जो अपर्याप्त, तीहिं सहित दुर्भग, अनादेय आदि अप्रशस्त-प्रकृतिनि ही का बंध है, जातैं इनविषैं बंध-योग्य एक प्रकृति का प्रतिपक्षी-प्रकृतिनि का बंध नाहीं, संस्थानादि विषैं जाका बंध है, तिस एक-एक ही प्रकृति का बंध है, तातैं पूर्वै इकतालीस-पद कहे थे, तिनविषैं नरक-गति सहित अठाईस का स्थान विषैं अर एकेंद्रिय युत ग्यारह-पदनि के अपर्याप्तयुत तेईस का स्थाननि विषैं अर त्रस-सहित छह-पद, तिनके अपर्याप्त युत पचीस का स्थाननि विषैं एक-एक ही भंग है॥ ५३३॥

२३	२५
१	१

तत्थासत्थ एदि हु, साहारणथूलसव्वसुहुमाणं।
पज्जत्तेण य थिरसुह, जुम्मेक्कदरं तु चदुभंगा॥ ५३४॥

तत्राशस्ता एति हि, साधारणस्थूलसर्वसूक्ष्माणाम्।
पर्याप्तेन च स्थिरशुभ, युग्मैकतरं तु चतुर्भंगाः॥ ५३४॥

टीका – तिन एकेन्द्रिय के ग्यारह भेदनि विषैं साधारण-वनस्पती-वादर-पर्याप्त अर सर्व सूक्ष्म-पर्याप्त-सहित पचीस का बंध-स्थान विषैं भी तिन पूर्वोक्त-प्रकृतिनि विषैं एक-एक अप्रशस्त

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ही का बंध है। विशेष इतना-स्थिर-अस्थिर विषैं कै स्थिर का बंध होइ, कै अस्थिर का होई। अर शुभ-अशुभ युगल विषैं कै शुभ कै अशुभ का बंध होइ ; तातैं इन दोऊ-युगलनि करि साधारण-वादर-वनस्पती-पर्याप्त सहित पचीस का स्थान विषैं अर पृथ्वी, अप, तेज, वायु, साधारणनिका सूक्ष्म-पर्याप्त-सहित पचीस का स्थान पांच-स्थानकनि विषैं च्यारि-च्यारि भंग जानने ॥ ५३४ ॥

पुढवीआऊतेऊ, वाऊपत्तेयवियलसण्णीणं।
सत्थेण असत्थं थिर, सुहजसजुम्मट्ठभंगा हु ॥ ५३५ ॥

पृथिव्यप्तेजोवायु, प्रत्येकविकलासंज्ञिनां।
शस्तेनाशस्तं स्थिर, शुभयशोयुग्ममष्टभंगा हि ॥ ५३५ ॥

टीका — पृथ्वी, अप, तेज, वायु, प्रत्येक-वनस्पती, वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी-पंचेंद्री इनके अविरुद्ध त्रस-वादर-पर्याप्तादिक यथासंभव तैं भए पचीस, छब्बीस, गुणतीस, तीस के स्थाननि विषैं दुर्भग, अनादेयादिकनि का तो एक-एक अप्रशस्तहीनि का बंध है। अर स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यशः-अयशः— इन तीन युगलनि विषैं एक-एक प्रशस्त वा अप्रशस्त किसी का बंध हो है ; तातैं इन तीन युगलनि की प्रकृति बदलने तैं आठ-आठ भंग हो है।

पृथ्वीकाय-वादर-पर्याप्त युत पचीस का स्थान, आतपयुत वा उद्योत युत छब्बीस का स्थान, बहुरि अपकाय-वादर-पर्याप्त युत पचीस का स्थान, उद्योत सहित छब्बीस का स्थान, बहुरि तेज-कायिक-वादर-पर्याप्त युत पचीस का स्थान, बहुरि वायुकायिक-वादर-पर्याप्तयुत पचीस का स्थान, बहुरि प्रत्येक-वनस्पति-पर्याप्तयुत पचीस का स्थान अर उद्योतयुत छब्बीस का स्थान, बहुरि वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी-पंचेंद्री-पर्याप्त-सहित गुणतीस, तीस के बंध-स्थान— तिनविषैं आठ-आठ भंग हैं ॥ ५३५ ॥

अवशेष तिर्यंच-पंचेंद्री पर्याप्तयुत संज्ञी-कर्म-पद विषैं अर मनुष्यगति-पर्याप्तयुत मनुष्य-कर्मपद विषैं गुणतीस अर तीस का स्थाननि विषैं भंग कहने कौं गुणस्थाननि विषैं विभाग करै हैं—

सण्णिस्स मणुस्सस्स य, ओधेक्कदरं तु मिच्छभंगा हु।
छादालसयं अट्ठ य, बिदिये बत्तीससयभंगा ॥ ५३६ ॥

संज्ञिनो मनुष्यस्य च, अधिकतरं तु मिथ्याभंगा हि।
षट्चत्वारिंशच्छतमष्ट च, द्वितीये द्वात्रिंशच्छतभंगाः ॥ ५३६ ॥

टीका — तिर्यंच-गति-पर्याप्त-युत संज्ञी का गुणतीस का स्थान अर उद्योत-युत तीस का स्थान विषैं अर मनुष्य-गति-पर्याप्त युत गुणतीस का स्थान विषैं सामान्य छह-संस्थान, छह-संहनन, विहायोगत्यादिक सात युगल। सो इन विषैं एक-एक करि सर्व-प्रकृतिनि का बंध संभवै है ;

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तातैं छह-संस्थानादिकनि कै एक-एक करि बदलने तैं पूर्वोक्त एक-एक स्थान विषैं छियालीससे आठ भंग हो है, ते ए मिथ्यादृष्टि विषैं ही हैं।

बहुरि मनुष्य-गतियुत तीस का स्थान तीर्थंकर सहित है, सो इसका बंध असंयत देव-नारकनि ही कैं हैं ; तातैं मिथ्यादृष्टि कै बंध-स्थान भंगनि विषैं यहु न कह्या। बहुरि सासादन का उद्योत-रहित गुणतीस का स्थान विषैं अर उद्योत सहित तीस का स्थान विषैं पांच-संस्थान, पांच-संहनन, सात-युगलनि विषैं एक-एक करि बंध संभवै, सो इनकी एक-एक प्रकृति बदलने तैं बत्तीससै-बत्तीससै भंग हो हैं। सासादन का मनुष्य-गति पंचेंद्री-पर्याप्त युत गुणतीस का स्थान विषैं भी अैसें ही बत्तीससै भंग हैं ॥ ५३६ ॥

मिस्साविरदमणुस्स, ट्ठाणे मिच्छादिदेवजुदठाणे।

सत्थं तु पमत्तंते, थिरसुहजसजुमगट्ठभंगा हु ॥ ५३७ ॥

मिश्राविरतमनुष्य, स्थाने मिथ्यादिदेवयुतस्थाने।

शस्तं तु प्रमत्तांते, स्थिरशुभयशोयुग्मकाष्टभंगा हि ॥ ५३७ ॥

टीका — देव-नारकी-मिश्र, असंयत-गुणस्थानवर्ती कैं पर्याप्त-मनुष्यगतियुत गुणतीस का स्थान विषैं, बहुरि देव-नारकी-असंयत कैं मनुष्यगति-पर्याप्त-तीर्थंकर युत तीस का स्थान विषैं स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश इन तीन जुगलनि विषैं तो कोऊ एक-एक प्रकृति का बंध है अर और संस्थानादिक विषैं एक-एक प्रशस्त-प्रकृति ही का बंध है दुर्भग दुःस्वर अनादेय, अप्रशस्त-विहायोगति आदि का बंध-व्युच्छेद सासादन विषैं ही भया तातैं तीन युगलनि की प्रकृति बदलने तैं एक-एक पूर्वोक्त-स्थान विषैं आठ-आठ भंग हैं।

बहुरि तिर्यंच-मनुष्य, मिश्र, असंयत-गुणस्थानवर्ती के तिर्यंच-मनुष्य विषैं मनुष्यगति का बंध-व्युच्छेद सासादन ही विषैं भया ; तातैं ते पूर्वोक्त दोऊ-स्थान न कहे। बहुरि मिथ्यादृष्ट्यादि असंयतपर्यंत जीवनि के देवगति संयुक्त अट्ठाईस का स्थान विषैं अर असंयत-जीव कैं देवगति, तीर्थंकरयुत गुणतीस का स्थान विषैं अर देश-संयत, प्रमत्त-जीव कैं देव गतियुत अठाईस का स्थान अर देवगति-तीर्थंकर युत गुणतीस का स्थान विषैं प्रशस्तनि ही का बंध है, तथापि अस्थिर, अशुभ, अयशस्कीर्ति इनका प्रमत्त पर्यंत बंध है ; तातैं तीन-युगलनि तैं इन स्थाननि विषैं आठ-आठ भंग संभवै हैं। बहुरि अप्रमत्त अपूर्वकरण के देवगति युत अठाईस का तीर्थंकर युत गुणतीस का तीर्थंकर रहित आहाराकद्विक युत तीस का तीर्थंकर, आहाराक-द्विक युत इकतीस का— इन च्यारयों स्थाननि विषैं प्रतिपक्षी अप्रशस्त-प्रकृतिनि का बंध नाहीं ; तातैं एक-एक ही भंग संभवै हैं। बहुरि अपूर्वकरण का अंतभाग का प्रथम-समय तैं लगाय सूक्ष्मसांपराय का अंतसमय पर्यंत यशस्कीर्ति बंधरूप एक ही का स्थान विषैं एक ही भंग है ॥ ५३७ ॥

आगैं पर्याय कौ छोड़ना या पर्याय विषैं उपजना तिनकौं कहै हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

णेरयियाणं गमणं, सण्णीपज्जत्तकम्मतिरियणरे।
चरिमचऊतित्थूणे, तेरिच्छे चेव सत्तमिया॥ ५३८॥

नैरयिकाणां गमनं, संज्ञिपर्याप्तकर्मतिर्यग्नरे।
चरमचतुष्कतीर्थोनि, तिरिश्चि चैव सप्तमिकाः॥ ५३८॥

टीका – गमन कहिये मरिकरि उपजना सो नारकी धर्मादि तीन-पृथ्वी वालेनि कैं तौं गर्भज-पंचेंद्री-पर्याप्त-सैनी-कर्मभूमियां तिर्यंच वा मनुष्यनि विषैं ही गमन हैं, जातैं अर्धचक्री, सकलचक्री, बलभद्र विना पंद्रह-कर्मभूमि के तिर्यंच, मनुष्यनि विषैं अर लवणोद-कालोद समुद्र वा स्वयंप्रभाचल पर्वत परैं आधा स्वयंभूरमण-द्वीप विषैं वा सर्व स्वयंभूरमण-समुद्र विषैं अर स्वयंभूरमण-समुद्र के परैं च्यारयो कूणां, जातैं त्रस-नाली चौकोर है, स्वयंभू-रमण समुद्र गोल है ; तातैं तिन च्यारयों कूंणानि विषैं भी पंचेंद्री तिर्यंच हैं, सो इनविषैं आदि के तीन नरक तैं निकसि जीव हैं, सो जलचर-स्थलचर-नभचर तिर्यंच विषैं उपजैं हैं।

बहुरि तीस भोगभूमि, छिनवै-कुभोगभूमि के तिर्यंच-मनुष्य विषैं वा मानुषोत्तर अर स्वयंप्रभाचल के बीच जघन्य-भोगभूमि असंख्याते-द्वीप-समुद्रनि विषैं हैं, तहां के तिर्यंचनि विषैं नाहीं उपजै हैं।

बहुरि अंजना-पृथ्वीवाले तीर्थंकर बिना अर अरिष्टावाले चरम-शरीरी विना अर मघवीवाले सकल-संयमी विना पूर्वोक्त तिर्यंच वा मनुष्यनि विषैं उपजैं हैं। बहुरि माधवीवाले देश-संयत, असंयत, मिश्र, सासादन विना पूर्वोक्त मिथ्यादृष्टि-तिर्यंचनि विषैं ही उपजैं हैं, जातैं तिर्यंच बिना अन्य-आयु का इनकैं बंध नाहीं॥ ५३८॥

तत्थतणऽविरदसम्मो, मिस्सो मणुवदुगमुच्चयं णियमा।
बंधदि गुणपडिवण्णा, मरंति मिच्छेव तत्थ भवा॥ ५३९॥

तत्रतनोऽविरतसम्यक्, मिश्रो मानवद्विकमुच्चकं नियमात्।
बध्नाति गुणप्रतिपन्ना, म्रियंते मिथ्ये एव तत्र भवाः॥ ५३९॥

टीका – 'तत्रतनः' कहिए सातवां माघवी-नरक विषैं उपज्या जीव असंयत-सम्यग्दृष्टी अर मिश्र-गुणस्थानवर्ती सो अपने-अपने गुणस्थान विषैं मनुष्य-गति वा आनुपूर्वी अर उच्चगोत्र इनकौं नियम करि बांधै है। बहुरि तहां के उपजे सासादन, मिश्र, असंयत-गुणस्थान कौं प्राप्त भए जीव, ते जिस काल मरैं, तिसकाल मिथ्यादृष्टि-गुणस्थान विषैं प्राप्त होइ करि ही मरै हैं॥ ५३९॥

तेउदुगं तेरिच्छे, सेसेगअपुण्णविलयगा य तहा।
तित्थूणणरेवि तहाऽसण्णी घम्मे य देवदुगे॥ ५४०॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तेजोद्विकं तिरश्चि, शेषैकापूर्णविकलकाश्च तथा।
तीर्थोननरेऽपि तथा, असंज्ञी धर्मे च देवद्विके ॥ ५४० ॥

टीका — तिर्यंचगति विषैं वादर वा सूक्ष्म पर्याप्त वा अपर्याप्त जे तेजस्कायिक वा वातकायिक जीव हैं, ते मरि करि तिर्यंच-गति ही विषैं नियम तैं उपजैं हैं, जातैं सर्व भोग-भूमिया पंचेंद्री विना अन्य सर्वत्रिलोकवर्ती वादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त पृथ्वी, अप, तेज, वायु, साधारण, पर्याप्त-अपर्याप्त-प्रतिष्ठित, अप्रतिष्ठित प्रत्येक, वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, सैनी-असैनी पंचेंद्री— इन सर्वतिर्यंचनि विषैं तेजकाय, वायुकाय के जीव उपजै हैं।

बहुरि अवशेष वादर वा सूक्ष्म पर्याप्त वा अपर्याप्त पृथ्वीकायिक वा अप्कायिक, बहुरि नित्य-निगोदिया, चतुर्गति-निगोदिया पर्याप्त वा अपर्याप्त, बहुरि प्रतिष्ठित वा अप्रतिष्ठित-प्रत्येक, अपर्याप्त वा पर्याप्त बहुरि वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री— इतने जीव मरिकरि तेज वायु-वत् तिर्यंचनि विषैं अर तरेसठि-शलाका पुरुष बिना मनुष्यनि विषैं उपजैं हैं।

इतना विशेष-जो नित्य-चतुर्गति सूक्ष्म-निगोद तैं आए मनुष्य सम्यक्त्व वा देश-संयम को ग्रहैं हैं अर सकल-संयम को न ग्रहैं अर असंज्ञी-पंचेंद्री हैं, सो पृथ्वीकायिकवत् तिर्यंच, मनुष्यनि विषैं वा प्रथम-नरक विषैं वा भवनवासी, व्यंतरदेवनि विषैं उपजैं हैं। बहुरि अन्य देव, नारकीनि विषैं उपजैं नाहीं हैं, जातैं असंज्ञी कैं आयु का उत्कृष्ट स्थिति-बंध पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण ही है ॥ ५४० ॥

सण्णीवि तहा सेसे, णिरये भोगेवि अच्चुदंतेवि।
मणुवा जंति चउग्गदि, परियंतं सिद्धिठाणं च॥ ५४१ ॥

संज्ञी अपि तथा शेषे, निरये भोगेऽपि अच्युतांतेऽपि।
मानवा यांति चतुर्गति, पर्यंत सिद्धिस्थानं च॥ ५४१ ॥

टीका — बहुरि संज्ञी-तिर्यंच भी असंज्ञी-पंचेंद्रीवत् सबनि विषैं अर सर्व नारकीनि विषैं वा सर्व भोग-भूमियांनि विषैं वा अच्युत-स्वर्गपर्यंत सर्व देवनि विषैं उपजै हैं। बहुरि कर्मभूमिया-पर्याप्त मनुष्य हैं, ते संज्ञीवत् सर्व जीवनि विषैं वा कल्पातीत-अहमिंद्र-देवनि विषैं उपजै हैं। बहुरि अपर्याप्त-मनुष्य हैं, ते कर्मभूमिया-तिर्यंचनि विषैं वा तीर्थंकरादि विशेष पद रहित सामान्य-मनुष्यनि विषैं उपजै हैं।

बहुरि तीस-भोगभूमि के तिर्यंच वा मनुष्य अर असंख्यात-द्वीप-समुद्र संबंधी जघन्य, तिर्यंच संबंधी भोगभूमि के तिर्यंच ते सम्यग्दृष्टी तो सौधर्म-ईशान विषैं उपजैं हैं अर तेई मिथ्यादृष्टी-सासादन अर कुभोगभूमिया मनुष्य ते भवनत्रिक-देवनि विषैं उपजैं हैं। बहुरि चरम-शरीरी मनुष्य हैं, ते स्वात्मोपलब्धिरूप सिद्धिस्थान कौं प्राप्त हो हैं ॥ ५४१ ॥

आहारगा दु देवे, देवाणं सण्णिकम्मतिरियणरे।
पत्तेयपुढविआऊ, बादरपज्जत्तगे गमणं॥ ५४२ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भवणतियाणं एवं, तित्थूणणरेसु चेव उप्पत्ती।
ईसाणंताणेगे, सदरदुगंताण सण्णीसु ॥ ५४३ ॥ जुम्मं

आहारकास्तु देवे, देवानां संज्ञिकर्मतिर्यग्नरे।
प्रत्येकपृथिव्यव्वादरपर्याप्तके गमनं ॥ ५४२ ॥
भवनत्रिकाणामेवं, तीर्थोननरेषु चैवोत्पत्तिः।
ईशानांतयोरेकस्मिन्, शतारद्विकांतानां संज्ञिषु ॥ ५४३ ॥युगमम्

टीका – आहारक देह सहित मरे प्रमत्त-संयमी, तिनका गमन वैमानिक-देवनि विषैं ही हैं। बहुरि देव सर्वार्थ-सिद्धि पर्यंतनि का पंद्रह-कर्मभूमि के मनुष्यनि विषैं ही गमन हैं, अन्यत्र नाहीं। बहुरि सहस्रार पर्यंत देवनि का तिन मनुष्यनि विषैं वा पंद्रह-कर्मभूमि लवणोद, कालोद समुद्र स्वयंभूरमण द्वीप का अपरार्ध स्वयंभूरमण-समुद्रवर्ती संज्ञी-पर्याप्त जलचर, स्थलचर, नभचर तिर्यंचनि विषैं उपजना है।

बहुरि ईशान पर्यंत देवनि का तिन पूर्वोक्त मनुष्य, तिर्यंचनि विषैं वा वादर-पर्याप्त पृथ्वी, अप, प्रत्येक-वनस्पतीरूप एकेंद्रिय विषैं भी उपजै हैं। बहुरि भवनत्रिक-देवनि का भी सौधर्म-ईशानवत् ही उपजना है। विशेष इतना-जो मनुष्यनि विषैं तीर्थंकरादिक तरेसठि-शलाका-पुरुषनि विषैं ते नाहीं उपजैं हैं ॥ ५४२-५४३ ॥

अैसैं च्यारयों गति के जीवनि का च्यवन-उत्पत्ति कौं संक्षेपता करि कहि, आगैं तिन नामकर्म के बंध-स्थाननि कौं चौदह-मार्गणानि विषैं आठ-गाथानि करि कहैं हैं–

णामस्स बंधठाणा, णिरयादिसु णवयवीस तीसमदो।
आदिमछक्कं सव्वं, पणछण्णववीस तीसं च ॥ ५४४ ॥

नाम्नः बंधस्थानानि, निरयादिषु नवकविंशं त्रिंशदतः।
आदिमषट्कं सर्वं, पंचषट्नवविंशं त्रिंशच्च ॥ ५४४ ॥

टीका – नामकर्म के बंधस्थान नरकादि-गति विषैं क्रम तैं नरकगति विषैं तौ गुणतीस, तीस के दोय स्थान बंधै हैं। तहां पंचेंद्री-पर्याप्त-तिर्यंच-गति युत अर मनुष्य-गतियुत गुणतीस कै स्थान कौं तौ मघवी पर्यंत बांधैं हैं अर पंचेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंच-गति युत गुणतीस का वा उद्योत युत तीस का स्थान कौं माघवी पर्यंत बांधैं हैं अर पर्याप्त-मनुष्य-गति-तीर्थंकर सहित तीस के स्थान कौं मेघा-पृथ्वी पर्यंत ही बांधै है।

बहुरि मार्गणानि विषैं गुणस्थान विवक्षाकरि तिन स्थाननि का लगावना सुगम है, जातैं गति, इंद्री, पर्याप्तादिक के विशेषस्थान २ प्रति कहे हैं। तहां नारकी-मिथ्यादृष्टि वा सासादन सो तिर्यंच-गति युक्त वा मनुष्य-गति युक्त गुणतीस के स्थान कौं बांधैं है। सम्यग्मिथ्यादृष्टी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मनुष्य-गतियुक्त गुणतीस कौं ही बांधै हैं, जातैं तिर्यंच-गतिद्विक अर उद्योत का बंध-व्युच्छेद सासादन विषैं ही भया है। बहुरि असंयत-मनुष्य-गति युत गुणतीस के स्थान कौं वा आदि के तीन नरकनि विषैं मनुष्यगति-पर्याप्त-तीर्थंकर सहित तीस के स्थान कौं बांधैं है।

बहुरि तिर्यंच-गति विषैं आदि के छह-स्थान हैं, तहां स्थावर-वादर-अपर्याप्त-एकेंद्री सहित वा स्थावर-सूक्ष्म-अपर्याप्त-तिर्यंचगति एकेन्द्री सहित तेईस के स्थान कौं बांधैं हैं। बहुरि एकेन्द्री-वादर-पर्याप्त सहित वा एकेन्द्री-सूक्ष्म-पर्याप्त सहित वा त्रस-अपर्याप्त वेंद्री वा तेंद्री वा चौंद्री वा पंचेंद्री-जाति तिर्यंचगति सहित वा त्रस-अपर्याप्त-मनुष्यगति सहित पचीस के स्थान कौं बांधै हैं।

बहुरि पृथ्वीकाय विशेषरूप वादर-एकेन्द्री-जाति-आतप-तिर्यंच-गति सहित वा तेजकाय, वातकाय, साधारण विना अन्य एकेन्द्री वादर-अपर्याप्त-उद्योत-तिर्यंच-गति सहित छवीस के स्थान कौं बांधै है। बहुरि त्रस-पर्याप्त-नरकगति सहित वा त्रस-पर्याप्त-देवगति सहित अठाईस के स्थान कौं बांधैं हैं। बहुरि त्रस-पर्याप्त वेंद्री वा तेंद्री वा चौंद्री वा पंचेंद्री तिर्यंच-गति सहित वा त्रस-पर्याप्त-मनुष्य-गति सहित गुणतीस के स्थान कौं बांधै है। बहुरि त्रस-वादर-पर्याप्त-वेंद्री वा तेंद्री वा चौंद्री वा पंचेंद्री-तिर्यंचगति उद्योत सहित तीस के स्थान कौं बांधै हैं।

ऐसैं छह स्थान हैं।

बहुरि लब्धि-अपर्याप्त तिर्यंच हैं, सो अठाईस के विना पांच ही स्थाननि कौं बांधै हैं। बहुरि मनुष्यगति विषैं सर्वं ही स्थाननि कौं बांधै है। बहुरि देवगति विषैं पचीस, छवीस, गुणतीस, तीस के च्यारि-स्थाननि कौं बांधै हैं ॥ ५४४ ॥

पंचक्खतसे सव्वं, अडवीसूणादिछक्कयं सेसे।
चउमणवयणोराले, सड देवं वा विगुव्वदुगे॥ ५४५ ॥

पंचाक्षत्रसे सर्व, मष्टविंशोनादिषट्कं शेषे।
चतुर्मनोवचनौराले, सर्वं देवं वा वैगूर्वद्विके॥ ५४५ ॥

टीका – इंद्रिय-मार्गणा विषैं तौ पंचेन्द्रिय विषैं अर काय-मार्गणा विषैं त्रस विषैं तौ सर्व बंध-स्थान हैं। बहुरि अवशेष एकेन्द्रियादिक च्यारि विषैं अर पृथ्वीकायादिक पांच विषैं आदि के छह-स्थानकनि विषैं अठाईस का विना पांच-पांच स्थान जानने। बहुरि च्यारि मनोयोग, च्यारि वचन-योग, औदारिक-काय-योग– इनविषैं तो सर्व बंध-स्थान हैं। बहुरि वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र विषैं देवगतिवत् च्यारि स्थान हैं॥ ५४५ ॥

अडवीसदु हारदुगे, सेसदुजोगेसु छक्कमादिल्लं।
वेदकसाये सव्वं, पढमिल्लं छक्कमण्णाणे॥ ५४६ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अष्टविंशद्विकमाहारद्विके, शेषद्वियोगयोः षट्कमाद्विमं।
वेदकषाये सर्वं, प्राथमिकं षट्कमज्ञाने ॥ ५४६ ॥

टीका – आहारक, आहारकमिश्र योग विषैं अठाईस, गुणतीस के दोय स्थान हैं। शेष कार्माण, औदारिकमिश्र विषैं आदि के छह-स्थान हैं। इहां देवगति, आहारक-द्विक सहित स्थान न संभवै हैं, जातैं इसका बंध अप्रमत्त, अपूर्वकरण विषैं ही संभवै हैं। बहुरि कार्माण वा औदारिकमिश्र सहित तिर्यंच वा मनुष्य मिथ्यादृष्टि विषैं अठाईस का बंध नाहीं, जातैं 'कम्मे उरालमिस्सं' इस सूत्र करि देवद्विक, नरकद्विक का तहां बंध का अभाव है।

बहुरि कार्माण-योग सहित तिर्यंच-मनुष्य सासादन विषैं सर्व एकेंद्री-वादर सूक्ष्म-पर्याप्त-अपर्याप्त सहित तेईस, पचीस, छवीस का अर नरकगति-देवगति संयुक्त अठाईस अर विकलत्रय संयुक्त गुणतीस, तीस का— इन विना अवशेष तिर्यंच-पंचेन्द्री वा मनुष्यगति संयुक्त गुणतीस वा तीस के दोय बंध-स्थान हैं। इहां 'मिच्छुदुगे देवचऊ तित्थं णहि' इस वचन करि देवगतियुत अठाईस के स्थान का अभाव जानना। बहुरि कार्माण सहित तिर्यंच-मनुष्य असंयत विषैं देवगति युत अठाईस का स्थान अर कार्माण सहित मनुष्य-असंयत विषैं देवगति, तीर्थ सहित गुणतीस का भी स्थान जानना।

बहुरि तीनों वेदनि विषैं अर च्यारयों क्रोधादिक-कषायनि विषैं सर्व बंध-स्थान हैं, तहां विशेष कहिए हैं—

नपुंसक-वेद विषैं गुणतीस, तीस के दोय-स्थान, आदि के तीन नरकनि विषैं जानने। बहुरि नपुंसक-वेद सहित तिर्यंचगति विषैं एकेन्द्री-वादर-सूक्ष्म-अपर्याप्त युत तेईस का, एकेन्द्री-वादर-सूक्ष्म-पर्याप्त युत पचीस का, त्रस-अपर्याप्त-वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री-तिर्यंच मनुष्य-गति युत पचीस का, एकेन्द्री-वादर-पर्याप्त-आतप वा उद्योत युत छवीस का तिर्यंच वा मनुष्य-गति पर्याप्त युत गुणतीस का, तिर्यंच-गति-पर्याप्त उद्योतयुत तीस का अर तिर्यंच-पंचेन्द्री-नपुंसक-वेदी विषैं नरक-देव युत अठाईस का भी स्थान पाइए है। बहुरि तिर्यंच-स्त्रीवेदी पुरुष-वेदी विषैं छह-स्थान जानने।

बहुरि मनुष्य-लब्ध्यपर्याप्तक नपुंसकवेदी विषैं, एकेन्द्री-विकलत्रय विषैं जे कहे, ते पंच-स्थान जानने। बहुरि पर्याप्त-मनुष्य द्रव्य नपुंसक, स्त्री, पुरुष वेदी ते पुरुष, स्त्री, नपुंसक-वेद के उदय करि भाव पुरुष, स्त्री, नपुंसकवेदी हो हैं, तीर्थंकर, देव विना। तहां भाव-नपुंसक, स्त्री, पुरुष वेद विषैं गुणस्थान अपना-अपना सवेद-अनिवृत्तिकरणपर्यंत जानने। तहां नव-नव बंध-स्थान वेदनि विषैं जानने।

विशेष इतना– जो क्षपकश्रेणीवाला नपुंसक, स्त्रीवेदी विषैं देवगति तीर्थयुत गुणतीस का वा इकतीस का स्थान न पाइए है, जातैं केई चरम-शरीरीनि कैं तहां क्षपकश्रेणी विषैं तीर्थंकर का बंध संभवै भी है, तथापि ते जीव क्षपक-श्रेणी विषैं पुरुष-वेद का उदय सहित ही चढै हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि तीर्थंकर-बंध का प्रारंभ चरम-शरीरीनि कैं असंयत, देशसंयत गुणस्थान विषैं होई तौ तिनकैं तपकल्याण आदि तीन ही कल्याण होई अर प्रमत्त, अप्रमत्त विषैं होइ, तो ज्ञान, निर्वाण ये दो ही कल्याण होंइ अर जो पूर्वभव विषैं ही तीर्थंकर का बंध प्रारंभ किया होइ, तौ ताकैं गर्भावतरण आदि पांचों-कल्याण होंइ, ऐसा विशेष जानना।

बहुरि कषाय-मार्गणा विषैं क्रोधादिकनि कैं अनंतानुबंधी आदि भेद करि च्यारि भेद हो हैं, तथापि जाति का आश्रय करि एकत्वपना ही ग्रह्या है, जातैं इहां शक्ति की प्रधानता करि भेद कहने की इच्छा नाही हैं। सोई कहिए है—

बारहकषायनि के स्पर्धक तौ सर्वघाती ही हैं, ते देशघाती नाही हैं अर संज्वलन के स्पर्धक-सर्वघाती वा देशघाती दोऊ हैं ; तातैं अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ विषैं एक का उदय होत संतैं अप्रत्याख्यानादिक तीनों का भी उदय है ही, जातैं अनंतानुबंधी का उदय सहित औरनि का उदय कैं भी सम्यक्त्व, संयम-गुण का घातकपणा है। बहुरि तैसैं ही अप्रत्याख्यान-क्रोधादिक विषैं एक का उदय होतैं प्रत्याख्यानादिक दोय का भी उदय है ही, जातैं अप्रत्याख्यान का उदय की साथि तिन दोऊनि का उदय भी देश-संयम कौं घातै है। बहुरि प्रत्याख्यान-क्रोधादिक विषैं एक का उदय होतैं संज्वलन का भी उदय है ही, जातैं प्रत्याख्यानवत् संज्वलन भी सकल-संयम कौं घातै है। बहुरि केवल संज्वलन कौं उदय होतौ, प्रत्याख्यानादिक तीन का उदय नाहीं हो है, जातैं और कषायनि के स्पर्धक सकल-संयम के विरोधी हैं।

बहुरि केवल प्रत्याख्यान, संज्वलन का भी उदय होतैं, शेष दो कषायनि का उदय नाहीं है, जातैं अवशेष कषायनि के स्पर्धक देश, सकल-संयम कौं घातैं हैं। बहुरि केवल-अप्रत्याख्यानादिक तीन का उदय होतैं, अनंतानुबंधीनि का उदय नाही हैं, जातैं अनंतानुबंधी के स्पर्धक सम्यक्त्व , देशसंयम, सकल-संयम को घातै हैं।

या प्रकार अनंतानुबंधीनि के अर तिसके उदय की साथि अप्रत्याख्यानादिकनि कैं चारित्रमोहपणां कौं होत संतैं भी सम्यक्त्व, संयम का घातकपणा कह्या। बहुरि अनंतानुबंधी का उदयरहित अप्रत्याख्यानादिनि के उदय हैं, ते देशसंयम कौं घातैं हैं। बहुरि अप्रत्याख्यान का उदयरहित प्रत्याख्यान, संज्वलन का उदय है, सो सकल-संयम कौं घातै है। बहुरि प्रत्याख्यान का उदय रहित केवल संज्वलन-देशघातियानि का उदय यथाख्यात कौं घातै हैं।

ऐसै शक्ति-साधारण विवक्षा करि सोलह-कषायनि के क्रोधादिक भेद करि च्यारि-कषाय ही अंगीकार कीए हैं तीह कारण करि सम्यक्त्व देशसंयम, सकल-संयमनि का असंयत, देशसंयत, प्रमत्तादिक विषैं उपजना कह्या है।

इहां प्रश्न— जो अनंतानुबंधी की शक्ति करि और कषायनि की शक्ति कैसैं समान हो है ? ताका उत्तर—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आवरणदेसघादंतरायसंजलणपुरिससत्तरसं।

चउविहे भावपरिणदा तिविहा भावा हु सेसाणं॥ १८२॥ गो. कर्म.

देशघाती च्यारि ज्ञानावरण, तीन दर्शनावरण अर पंच अंतराय, च्यारि संज्वलन, पुरुषवेद– ए सतरह-प्रकृति तौ च्यारि प्रकारकरि अनुभागरूप परिणमै हैं। बहुरि अवशेष मिश्र-मोहनी बिना केवलज्ञानावरणादिक सर्व घातिया वीस, नोकषाय आठ, अघातिया-पिचहत्तरि– ए तीनप्रकार अनुभागरूप परणमै हैं। सो अनुभाग-बंध का कथन विषैं पूर्वै कथन कीया है; तातैं अनुभाग-शक्ति के विशेष तैं अनंतानुबंधीवत् अन्यकषायनि कैं भी सम्यक्त्वादिक का घात करने तैं सादृश्यपना संभवै है।

सो मिथ्यात्व सहित उदय होंय कषाय ते सम्यक्त्व कौं घातै हैं। अनंतानुबंधी सहित उदय होइ ते सम्यक्त्व-संयम कौं घातैं हैं। अप्रत्याख्यान सहित उदय होंइ ते देशसंयम, सकल-संयम कौं घातैं है, प्रत्याख्यान सहित उदय होंइ ते सकल संयम कौं घातै हैं। संज्वलन के देशघाती-स्पर्धकनि का उदय है, सो यथाख्यात कौं घातै हैं– अैसैं बारह कषाय अर सर्वघाती-संज्वलन के स्पर्धकनि विषैं कोई प्रकारकरि भेद है, तथापि शक्ति की समानता तैं समान कार्य कौं करै है; तातैं इहां अनंतानुबंधी आदि भेद न कहे। क्रोधादिक च्यारि-कषाय ही कहे।

तहां क्रोध विषैं नामकर्म के बंधस्थान नारक विषैं तो गुणतीस, तीस के दोय, तिर्यंचगति विषैं आदि के छह, मनुष्यनि विषैं सर्व, देव विषैं देवगतिवत् च्यारि हैं। अैसैं ही मान, माया लोभ विषैं भी जानने।

बहुरि ज्ञानमार्गणा विषैं तीन कुज्ञाननि विषैं आदि के छह, तहां नारकीनि कैं ज्ञाननि विषैं तौ तिर्यंचगति, मनुष्यगति पर्याप्त सहित गुणतीस अर उद्योत सहित तीस के दोय हैं। अर एकेन्द्री, विकलेन्द्री कौं कुमति, कुश्रुत विषैं नरकगति-देवगति संयुक्त अठाईस का बिना योग्य तिर्यंच, मनुष्ययुत तेईस कानै आदि देकरि पंच हैं। बहुरि पंचेन्द्री-तिर्यंच-मनुष्य-अपर्याप्त का कुमति, कुश्रुत सहित मिथ्यादृष्टि विषै भी तेई पांच हैं। बहुरि कुज्ञान तीन सहित मिथ्यादृष्टि, सासादनवर्ती पर्याप्त-पंचेन्द्री तिर्यंच-मनुष्यविषै यथायोग्य चतुर्गतियुत छह स्थान हैं।

बहुरि भवनत्रिक सौधर्मद्विक विषै तिर्यंच-गति सहित यथायोग्य पचीस, छवीस, गुणतीस, तीस के अर मनुष्यगतियुत गुणतीस का– ए पांच हैं। बहुरि सनत्कुमारादि सहस्रारपर्यंत विषैं संज्ञी-पंचेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंच-मनुष्यगति सहित गुणतीस का अर उद्योतसहित तीस का ये दोय हैं। बहुरि आनतादि नवग्रैवेयक पर्यंत विषैं मनुष्यगति सहित गुणतीस का ही है, जातैं 'तदो णत्थि सदर चऊ' इस वचन तैं तहां तिर्यग्गति युत स्थान का अभाव है।

अैसैं कुज्ञानवाले जीवनि की अपेक्षा तीन कुज्ञाननि विषैं छह-स्थान कहे हैं॥ ५४६॥

सण्णाणे चरिमपणं, केवलजहखादसंजमे सुण्णं।

सुदमिव संजमतिदए, परिहारे णत्थि चरिमपदं॥ ५४७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सज्ज्ञाने चरमपंच, केवलयथाख्यातसंयमे शून्यं।
श्रुतमिव संयमत्रितये, परिहारे नास्ति चरमपदं॥ ५४७॥

टीका – मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय ज्ञाननि विषैं अठाईस के तैं लगाय पांच-स्थान पाइए हैं। जातैं इहां तेईसकानैं आदि देकरि तीन का अभाव है। तहां मतिज्ञानादिक तीन हैं, ते पर्याप्त-अपर्याप्त नारकी अर संज्ञी-तिर्यंच अर मनुष्य-देव इनविषैं पाइए। तहां नारकीनि विषैं मनुष्यगतियुक्त गुणतीस का वा आदि तीन-पृथ्वी विषैं मनुष्य-गति, तीर्थंकर सहित तीस का – ए दोय स्थान हैं। सौधर्मादिक देवनि विषैं भी तेई दोन्यों स्थान हैं। भवनत्रिक विषैं मनुष्यगति युक्त गुणतीस ही का है। बहुरि तिर्यंच विषैं देवगति सहित अठाईस ही का है। मनुष्य विषैं देवगति सहित अठाईस वा देवगति, तीर्थंकर सहित गुणतीस का है।

अैसें मतिज्ञानादिक तीन विषैं कहे।

मनःपर्यय सहित च्यारि ज्ञाननि विषैं प्रमत्त विषैं, तेई अठाईस, गुणतीस के दोय-स्थान हैं। बहुरि अप्रमत्त, अपूर्वकरण का षष्ठम-भाग पर्यंत ते दोऊ अर देवगति, आहारक-द्विकयुक्त तीस का अर देवगति, तीर्थंकर, आहारकयुक्त इकतीस का अैसें च्यारि हैं अर अपूर्वकरण के सातवें-भाग तैं सूक्ष्मसांपराय पर्यंत यशस्कीर्तिरूप एक– अैसें पंच-स्थान हैं।

बहुरि केवलज्ञान विषैं नामकर्म का बंध का अभाव है।

बहुरि सामायिकादिक तीन संयमनि विषैं श्रुतज्ञानवत् पांच स्थान हैं। तहां परिहार-विशुद्धि विषैं अंत का एक स्थान नाहीं है; तातैं च्यारि ही हैं। तहां 'सं' कहिए एकीभाव करि सम-भाव विषैं 'अय' कहिए गमन-परिणमन, सौ समय कहिए। समय सोही सामायिक, अथवा समय है प्रयोजन जाका सो सामायिक कहिए। एतावन्मात्र क्षेत्रकाल का नियम होतैं तिष्ठ्या जो मुनि, ताकैं महाव्रत हो हैं। केवल स्थूल-सूक्ष्म जीवहिंसादिक का त्याग कीएं ही महाव्रत न हो हैं, जातैं अैसी क्रिया तो चारित्र-मोह का उदय होतैं अर्हंत-लिंग का धारी मिथ्यादृष्टि विषैं भी संभवै है।

जैसे राजकुल विषैं प्राप्त राजमान्य-जन कौं राजा कहिए, तैसैं तिस क्रिया कौं उपचार तैं महाव्रत कहिए है; तातैं देशकाल का तावत् जितना योग्य तितना प्रमाणकरि एकत्वरूप वृत्ति सोई सामायिक है यहु सिद्धि भया।

तहां प्रमाद-योगनि करि प्राणनि का हिंसन सो हिंसा, याका त्याग सो अहिंसा-महाव्रत अर अनृत स्तेय, अब्रह्म, परिग्रह का त्याग, ते सत्यादिक-महाव्रत हैं। बहुरि सम्यक् ईर्या, भाषा, एषणा, आदाननिक्षेपण, उत्सर्ग– ए पांच समिति हैं। बहुरि सम्यक् योगनि का निग्रह ते तीन गुप्ति हैं। काय, वचन, मन का व्यापाररूप योग, तिनकी स्वेच्छा-प्रवृति का त्याग सोई निग्रह कहिए।

ते गुप्ति विषय-सुख का अभिलाष-निमित्त-प्रवृत्ति का निषेध के अर्थि भई हैं; तातैं सम्यक् कहिए, सो ए सत्यादिक सर्व अहिंसा-व्रत के पालने के अर्थि भले उपाय हैं; तातैं ए तेरह भेद

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

हैं ते सर्व सावद्य तैं मैं त्यागी हूँ— अैसैं अंगीकार कीया सामायिक, तिसविषैं गर्भित हैं। ताही तैं श्रीवर्धमान-स्वामीकरि पूर्वले उत्तम-संहनन के धारी जिनकल्प आचरणरूप परिणए मुनि, तिनकैं सो सामायिकरूप एक प्रकार ही चारित्र कह्या है। बहुरि पंचमकाल विषैं स्थविरकल्पी हीन संहनन के धारी, तिनकौं सो चारित्र तेरह प्रकार कह्या है।

बहुरि नियत-क्षेत्र वा नियत-अनियतकाल विषैं प्रमाद तैं अनर्थ-दोषकरि सामयिक विषैं विलोपभएं सम्यक् प्रतिक्रिया-ताके शुद्ध करने का उपाय वा विकल्प जे भेद ता का त्याग सो छेदोपस्थापन कहिए। बहुरि परिहार कहिये प्राण हिंसा का त्याग तिहिं करि विशेषता रूप शुद्धता जिस विषय होइ सो परिहार-विशुद्धि कहिये। बहुरि सूक्ष्म है सांपराय कहिए कषाय जिसविषैं, सो सूक्ष्मसांपराय कहिए।

बहुरि मोहनीय का समस्त उपशम तैं वा क्षय तैं आत्मस्वभाव विषैं अवस्थितिरूप उपेक्षा-उदासीनता है लक्षण जाका, सो यथाख्यात है। पूर्वै चारित्र के धारीनि करि मोह का क्षय वा उपशम करि पाया सो यथाख्यात कहिए। 'यथा' शब्द अनंतर-वाची है, सो समस्त मोह का क्षय वा उपशम के अनंतरि प्रगट हुआ, सो यथाख्यात है, अथवा 'तथाख्यात' भी याकौं कहिए, जातैं जैसा आत्मस्वभाव अवस्थित था, तैसा ही प्रगट हूवा।

सो इनविषैं सामायिक, छेदोपस्थापन विषैं तौ प्रमत्त विषैं देवगति युक्त अठाईस का, देवगति-तीर्थंकर सहित गुणतीस का— ए दोय हैं। अप्रमत्त, अपूर्वकरण का षष्ठम-भागपर्यंत दोय तो तेई अर देवगति, आहारक युत तीस अर तीर्थंकर, आहारक सहित इकतीस के च्यारि हैं। बहुरि अपूर्वकरण का सातवां-भाग अर अनिवृत्तिकरण विषैं एक का है— अैसें पांच-बंधस्थान हैं। बहुरि परिहारविशुद्धि विषैं सामायिकवत्, प्रमत्त विषैं दोय, अप्रमत्तविषैं च्यारि हैं, इहां श्रेणी चढ़ने के अभाव तैं एक का स्थान नाहीं है ॥ ५४७ ॥

अंतिमठाणं सुहुमे, देसाविरदीसु हारकम्मं वा।
चक्खूजुगले सव्वं, सगसगणाणं व ओहिदुगे ॥ ५४८ ॥

अंतिमस्थानं सूक्ष्मे, देशाविरत्योः आहारकर्म वा।
चक्षुर्युगले सर्वं, स्वकस्वकज्ञानं वा अवधिद्विके ॥ ५४८ ॥

टीका — सूक्ष्मसांपराय-संयम विषैं अंत का एक का ही स्थान है। यथाख्यात विषैं केवलज्ञानवत् बंधका शून्य है। बहुरि देशसंयम विषैं आहारकवत् देवगतियुत अठाईस का अर देवगति, तीर्थंकर युत गुणतीस का— ए दोय हैं। तहां देशसंयम सहित तिर्यंच विषैं देवगतियुत अठाईस का ही है। बहुरि असंयम विषैं कार्माणवत् आदि के छह-स्थान हैं।

तहां नारकी-मिथ्यादृष्टि, सासादन विषै पंचेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंचगतियुक्त वा मनुष्यगतियुक्त गुणतीस अर उद्योत-सहित तीस का— ए दोय हैं। मिश्र विषैं मनुष्यगति युत गुणतीस का ही

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

है। असंयत विषैं घर्मादि तीन विषैं मनुष्य-गतियुत गुणतीस अर मनुष्यगति तीर्थ सहित तीस का— ए दोय हैं। अवशेष पृथ्वीनि विषैं मनुष्यगतियुक्त गुणतीस का ही है।

बहुरि तिर्यंचगति विषैं तेईसकानैं आदि देकरि छह हैं। तहां इतना विशेष— जो पर्याप्त-अपर्याप्त एकेन्द्री, विकलेंद्रीनि विषैं अर अपर्याप्त-पंचेन्द्री विषैं नरकगति-देवगतियुत अठाईस का बंधस्थान नाही है। बहुरि बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त तेजःकायिक, वातकायिकनि विषैं मनुष्यगति-अपर्याप्तयुक्त पचीस का अर पर्याप्त-मनुष्यगतियुत गुणतीस का— ए दोय नाहीं हैं।

बहुरि प्रथमोपशम-सम्यक्त्व तीह संयुक्त देशव्रत, ताकी विराधनाकरि सासादन भया अैसा तिर्यंच, सो तिर्यंच-गतियुत वा मनुष्यगति युत गुणतीस का अर उद्योत युत तीस का अर देवगतियुत अठाईस का— अैसैं तीनस्थान बांधै है। मरण विषैं नरक बिना और गतिनि विषैं उत्कृष्ट एक समय घाटि छह-आवली, जघन्य एक समय पर्यंत अपर्याप्त-दशा में सासादन हो है; तातैं सासादन-तिर्यंच है, सो 'णहि सासणो अपुण्णे साहारणसुहुमगे य तेउदुगे' इस वचन तैं एकेन्द्री, विकलेन्द्री, संज्ञी, असंज्ञी जीव ही अपर्याप्त-सासादनवर्ती हैं, सो नरकगति वा देवगति युत अठाईस कौं न बांधता शरीर-पर्याप्ति के पहिले ही सासादनपणां छांडि नियम तैं मिथ्यादृष्टी होइ, पर्याप्त-अवस्था के ऊपरि ही नरकगतियुत वा देवगति युत अठाईस के स्थान कौं बांधैं है।

"मिच्छदुगे-देवचऊ तित्थं णहि" इस वचन तैं संज्ञी, असंज्ञी भी अपर्याप्त-दशायुक्त सासादन विषैं अठाईस का स्थान बांधै है। बहुरि तिर्यंच मिश्र व असंयत-गुणस्थानवर्ती है, सो संज्ञी-पर्याप्त ही हैं, सो मिश्र विषैं तो देवगति युत अठाईस कौं ही बांधै हैं, जातैं 'उवरिम छण्हं च छिदी' इस वचन तैं तिर्यंच, मनुष्यगति बंधने का याकैं अभाव है। बहुरि असंयत विषैं भी सोई स्थान बंधै हैं, जातैं तिर्यंच -जीव विषैं तीर्थंकर, आहारक का बंध नाहीं है। बहुरि असंयम सहित मनुष्य विषैं मिथ्यादृष्टिविषैं लब्धि-अपर्याप्तक मनुष्य कैं तौ नरकगति, देवगति युत अठाईस का बिना तेइसकानैं आदि देकरि छह-स्थान हैं। बहुरि पर्याप्त-मनुष्य कैं च्यारयों गति सहित छहौं-स्थान पाइए हैं।

बहुरि 'चदुगदि मिच्छो सण्णी' इत्यादिक सामग्री सहित जीव करणलब्धि का अंत-समय विषैं दर्शन-मोह कौं उपशमाइ प्रथमोशम-सम्यक्त्वी भया वा प्रथमोपशम-सम्यक्त्व सहित देशव्रती वा महाव्रती भया। तिस उपशम-सम्यक्त्व का अंतर्मुहूर्त-काल विषैं एक समय तैं लगाय छह-आवली पर्यंत कोई काल अवशेष रहैं अनंतानुबंधीनि का अप्रशस्त-उपशम भया था, तिस विषैं एक कोई क्रोधादिक का उदय होतैं, पाया था जो प्रथमोपशम-सत्यक्त्व गुण, ताका घात करि सासादन भया, अैसा मनुष्य, सो एकेन्द्री, विकलेन्द्री का तो मिथ्यादृष्टी विषैं ही बंध है; तातैं पंचेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंच गति वा मनुष्यगतियुत गुणतीस का स्थान कौं वा उद्योतयुत तीस का कौं वा देवगतियुत अठाईस का कौं बांधै है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मरणविषैं तिर्यंच वा मनुष्य वा देव यावत् काल अपर्याप्त-दशा विषैं सासादन रहै, तावत् काल तौ गुणतीस वा तीस के दोय ही बांधै नरकगति, देवगति युत अठाईस का कौं न बांधै। बहुरि सासादन का काल पूर्ण भए पीछै मिथ्यादृष्टि होइ, तहां जितना-काल निवृत्ति-अपर्याप्त-दशा का अवशेष रहैं, तिसविषैं अठाईस का विना पचीसकानैंआदि देकरि पांच-स्थाननि कौं बांधैं। बहुरि पर्याप्त-अवस्था विषैं अठाईस का सहित छह-स्थान बांधै।

बहुरि कर्मभूमिया वा भोगभूमिया-मनुष्य मिश्र-वा असंयत-गुणस्थानवर्ती, सो देवगतियुत अठाईस कौं ही बांधै है, जातैं नरक-तिर्यंच गति का सासादन ही विषैं बंध-व्युच्छेद भया है। बहुरि विग्रहगति विषैं तीर्थंकर वा निर्वृत्त्यपर्याप्त-अवस्था विषैं तीर्थंकर वा गर्भ-अवस्था विषैं तीर्थंकर वा जन्म-अवस्था विषैं तीर्थंकर वा कुमार-अवस्था विषैं तीर्थंकर वा जाकैं देवायु, नरकायु का पूर्वैं बंध भया अर पीछै तीर्थंकर-बंध का प्रारंभ कीया— अैसा जीव वा तीर्थंकर-सत्त्व का धारी चरमशरीरी मनुष्य-असंयत गुणस्थानवर्ती, सो देवगति तीर्थंकर सहित गुणतीस का स्थान कौं ही बांधै है।

बहुरि असंयम सहित देव सो पर्याप्त-दशा विषैं मिथ्यादृष्टि-भवनत्रिक-सौधर्मद्विकवाले तौ एकेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंचगति सहित पचीस का वा आतप, उद्योत युक्त छवीस का वा पंचेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंच-मनुष्यगति युत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का— अैसैं च्यारि स्थान कौं बांधै है, और सानत्कुमारादि दश स्वर्गवाले मनुष्य-तिर्यंच गति सहित गुणतीस का वा तिर्यंचगति-उद्योत सहित तीस का स्थान कौं बांधै हैं। बहुरि आनतादि स्वर्ग अर नवग्रैवेयकवाले ते मनुष्यगति सहित गुणतीस का स्थान कौं ही बांधै हैं।

अब देवनि की निर्वृत्त्यपर्याप्त-अवस्था विषैं बंध कहैं हैं; तातैं देव विषैं कौन कैसे उपजै हैं ? सो कहै हैं—

मनुष्यलोक संबंधी तीस भोगभूमि के तिर्यंच, मनुष्य वा मानुषोत्तर-स्वयंप्रभ-पर्वत के वीचि असंख्यात द्वीप-समुद्र संबंधी जघन्य तिर्यंच भोगभूमि के संज्ञी-तिर्यंच वा लवणोद, कालोद विषैं छिनवै कुमानुष-द्वीपवासी कुमनुष्य, सो नियम तैं अपनी-आयु के नव महीने अवशेष रहैं आठ अपकर्षनि विषैं कही त्रिभाग अवशेष विषैं देवायु कौं बांधि भुज्यमान-आयु का नाश तैं भवनत्रिक विषैं वा कल्पवासिनी-स्त्री विषैं मिथ्यादृष्टी होइ उपजैं, तहां यावत् शरीर-पर्याप्ति पूर्ण न होई, तावत् निर्वृत्त्यपर्याप्त हैं।

इहां औरनि के कथन निमित्त प्रासंगिक-गाथा कहिए है—

सव्वट्ठोत्ति सुदिट्ठी महव्वई भोगभूमिजा सम्मा।
सोहम्मदुगं मिच्छा भवणतियं तावसा य वरं॥ ५४६ ॥ त्रिलोकसार ॥

मिथ्यादृष्टि भोगभूमिया अर तापसी ते वरं उत्कृष्टपनैं भवनत्रिक विषैं उपजैं हैं अन्यत्र नाहीं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि भरत, ऐरावत, विदेहवासी वा स्वयंभूरमण-द्वीप का अपरार्ध अर स्वयंभूरमण, लवणोद, कालोद समुद्र तिनके वासी जीव कैई जलचर, थलचर, नभचर संज्ञी-पर्याप्त भद्र-मिथ्यादृष्टी अर उपशम-ब्रह्मचर्य सहित वानप्रस्थ वा एकजटी, शत-जटी, सहस्रजटी वा नागा वा कांजी भक्षणकरनेवाले वा कंदमूल, पत्र, पुष्प, फल के खानेवाले वा अकाम-निर्जरा संयुक्त वा एकदंडी, त्रिदंडी मिथ्यातपश्चरण रूप परिणए ते कायक्लेशादि आचरण करि कोई अपनी-अपनी विशुद्धता के अनुसारि भवनत्रिकादिक अच्युत-स्वर्गपर्यंत उपजैं हैं।

'अकाम' कहिए अपने अभिलाष बिना बंधनादिक करि क्षुधा-तृषा का सहना, ब्रह्मचर्य धारना, भूमि विषैं सोवना, मलादिक धारना, परीषहादिक सहना इन करि जो निर्जरा होइ सो अकाम-निर्जरा कहिए।

बहुरि मिथ्यादर्शन सहित, मोक्ष उपाय रहित बहुत काय-क्लेश करना कपटरूप बहुत व्रत धारना सो बालतप कहिए– ए भी देव विषैं उपजने कौं कारण हैं। सो इहां तिनके उपजने की प्रासंगिक-गाथा कहिए है–

चरिया य परिव्वाजा बम्होत्तरचुदपदोत्ति आजीवा।

अणुदिसअणुत्तरादो चुदा ण केसवपदं जंति॥ ५४७॥ त्रिलोकसार॥

'चरकाः' कहिए नागा, परिब्राजक कहिए संन्यासी, एकदंडी, त्रिदंडी ए उत्कृष्ट भवनत्रिकादिक ब्रह्मस्वर्गपर्यंत उपजै हैं। बहुरि आजीवा कहिये कांजी के भक्षण करनेवाले उत्कृष्ट भवनत्रिकादिक अच्युत-स्वर्गपर्यंत उपजैं हैं। बहुरि अनुदिश, अनुत्तर-विमानवासी देव द्विचरम-शरीरी हैं; तातैं ते मरि नारायण, प्रतिनारायण नरकगामी जीवनि विषैं नाहीं उपजैं हैं। बहुरि सादि वा अनादि वा अभव्य जो मिथ्यादृष्टी अर्हंत के द्रव्य-लिंग का धारी, बाह्य छै प्रकार तप विषैं मग्न, त्रिकाल देववंदनादिक क्रिया सहित, दर्शन-चारित्र मोहरूप घातिया-कर्म का जाकैं उदय पाइए, उपशम-ब्रह्मचर्यादिक संयुक्त द्रव्यलिंगी, सो उपरिम-ग्रैवेयक पर्यंत उपजै हैं। बहुरि ऊपरि नाहीं।

यहाँ प्रासंगिक गाथा कहिए है–

णरतिरियदेसअयदा उक्कस्सेणच्चुदोत्ति णिग्गंथा।

णरअयददेसमिच्छा गेव्वेज्जंतोत्ति गच्छंति॥ ५४५॥ त्रिलोकसार॥

तिर्यंच-मनुष्य देशसंयत वा असंयत ते उक्कृष्टपनैं अच्युत-स्वर्गपर्यंत उपजैं हैं अर द्रव्य तौ जिनरूप-महाव्रती भावां असंयत वा देश-संयत वा मिथ्यादृष्टी ते उपरिम-ग्रैवेयक पर्यंत उपजैं हैं– ऐसैं देवनि विषैं उपजना कह्या।

तिन विषैं निर्वृत्त्यपर्याप्त मिथ्यादृष्टी-भवनत्रिक देव वा कल्पवासिनी-स्त्री वा सौधर्म-ईशानवाले जे एकेन्द्री-पर्याप्तयुत पचीस का अर आतप, उद्योतयुत पर्याप्त-तिर्यंचगति-एकेन्द्री सहित-छवीस

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का अर पंचेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंच गतियुक्त वा मनुष्यगति युक्त गुणतीस का वा उद्योत सहित तीस का– अैसैं च्यारि-स्थाननि कौं बांधे है। बहुरि तैसैं ही सनत्कुमारादिक दशस्वर्ग के वासी पंचेन्द्री-पर्याप्त तिर्यंच-गतियुत वा मनुष्यगतियुत गुणतीस कौं अर उद्योत तिर्यंचगति पंचेन्द्री सहित तीस कौं बांधै है। बहुरि आनतादि उपरिम ग्रैवेयकवाले मनुष्यगतियुक्त गुणतीस कौं ही बांधै हैं, जातैं तिर्यंचगति सहित गुणतीस, तीस का इहां बंध नाहीं।

अैसैं संक्षेप तैं असंयम-सहित मिथ्यादृष्टि-जीवनि कैं देवगति अपेक्षा तैं नामकर्म के बंधस्थान कहे। इहां जीवसमास, पर्याप्ति, प्राणादिक की विवक्षा करि ग्रंथ बधने के भय तैं न कहैं हैं। परमागम के ज्ञायकनि करि लगायलेने।

आगै असंयत सहित अपर्याप्त-सासादन विषैं कहिए हैं–

संज्ञी-पर्याप्त-गर्भज विशुद्धता सहित साकार ज्ञान उपयोग का धारी-मिथ्यादृष्टि अैसा भोगभूमिया-तिर्यंच तौ जातिस्मरण वा देव-संबोधन तैं अर तीस-भोगभूमि का तिर्यंच जातिस्मरण वा देव-संबोधन वा चारणमुनि-संबोधन तैं प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं ग्रहिकरि असंयत-गुणस्थानवर्ती होय अर स्वंयप्रभाचल-पर्वत के परैं कर्मभूमि का तिर्यंच जातिस्मरण वा देव-संबोधन तैं प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं पाइ असंयत होइ वा प्रथमोपशम-सम्यक्त्व सहित देशसंयम कौं पाइ देश-संयत होइ। बहुरि पंद्रह कर्मभूमि के वासी तिर्यंच जातिस्मरण वा देव, मनुष्य-संबोधन वा जिन-बिम्बदर्शन तैं तैसैं ही असंयत वा देशसंयत होइ।

बहुरि तैसा ही मनुष्य तैसैं ही असंयत वा देशसंयत होइ वा कोई मनुष्य प्रथमोपशम-सम्यक्त्व सहित महाव्रत अंगीकार करि अप्रमत्त-गुणस्थानवर्ती होइ। यहु अप्रमत्त कोई उतरि करि प्रमत्त विषैं आवै। बहुरि कोई जीव द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व कौं अंगीकार करि श्रेणीं चढ़ि अनुक्रम तैं उतरि असंयत वा देशसंयत वा प्रमत्त होइ।

ए प्रथम-द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व के धारी जीव ते अपने पर्याय का अंत विषैं जघन्य एक समय, उत्कृष्ट छह-आवली अवशेष रहैं, केई एक अनंतानुबंधी-कषाय के उदय करि सासादन होंइ केई पूर्वैं देवायु बांध्या था ते मरि करि अर केई पूर्वैं आयु न बांध्या, ते तहां अंत-समय विषैं देवायु बांध, मरि करि देव-निर्वृत्ति-अपर्याप्त सासादन-गुणस्थानवर्ती होंइ, ते भवनत्रिक-कल्पवासिनी-स्त्री, सौधर्म-द्विकवाले देव तो तहां पंचेन्द्री-तिर्यंच, मनुष्यगति-पर्याप्तयुत गुणतीस का वा तिर्यंचगति-उद्योत पर्याप्तयुत तीस का स्थान कौं बांधै हैं। अर सासादनकाल कौं उलंघि मिथ्यादृष्टि होइ, तिन दोऊ स्थाननि कौं अर यावत् शरीर-पर्याप्ति पूर्ण न होइ, तावत् एकेन्द्री पर्याप्त युत पचीस का वा उद्योत, आतप एकेन्द्री पर्याप्तयुत छवीस का स्थान कौं बांधै हैं।

बहुरि सनत्कुमारादि दश स्वर्गवाले तहां तिन गुणतीस, तीस के दोऊ स्थाननि ही कौं बांधै

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

हैं। बहुरि आनतादि स्वर्ग अर नवग्रैवेयकवाले तहां मनुष्यगतियुत गुणतीस के स्थान ही कौं बांधै हैं।

बहुरि सासादन का काल व्यतीत भएं पीछै तिस निर्वृत्ति-अपर्याप्त-मिथ्यादृष्टिवत् स्थाननि कौं बांधै हैं। बहुरि भवनत्रिकादिक उपरिम-ग्रैवेयक पर्यंत मिश्र-गुणस्थानवर्ती अर पर्याप्त भवनत्रिक, कल्पवासिनी स्त्री, असंयत-गुणस्थानवर्ती, ते मनुष्यगतियुत गुणतीस के स्थान कौं बांधै हैं। बहुरि वैमानिक-देव, तीर्थ रहित तिसही गुणतीस के स्थान कौं अर तीर्थ सहित तीस के स्थान कौं बांधे हैं।

बहुरि चक्षु-दर्शन अर अचक्षुदर्शन विषैं सर्व बंध-स्थान हैं। तहां चक्षु-दर्शनसहित नारकी गुणतीस, तीस के दोय स्थान कौं बांधे हैं। चौंद्री-जीव अठाईस के स्थान बिना तिर्यंच-मनुष्यगतियुत तेईसकानै आदि देकर छह स्थान बांधैं हैं। पंचेन्द्री-तिर्यंच तेईसकानै आदि देकरि छह-स्थान बांधै है। मनुष्य सर्व-स्थाननि को बांधै है। देव यथायोग्य पचीस, छवीस, गुणतीस, तीस के च्यारि-स्थाननि कौं बांधै हैं।

बहुरि अचक्षुदर्शन सहित नारकी चक्षुदर्शनवत् दोय कौं अर एकेन्द्रिय आदि चौंद्रिय पर्यंत नरक-देवगतियुत अठाईस के बिना तेईस आदि पांच कौं अर पंचेन्द्री-तिर्यंच तिस सहित छह कौं अर मनुष्य-सर्वस्थाननि कौं अर देव चक्षुदर्शनवत् च्यारि-स्थाननि कौं बांधै हैं।

बहुरि अवधि-दर्शन विषैं अवधिज्ञानवत् अंत के पांच-स्थान हैं। असंयत देवनारकी विषैं वा असंयत, देशसंयत संज्ञी-पर्याप्त, तिर्यंच विषैं वा असंयतादि क्षीणकषाय पर्यंत मनुष्य विषैं देशावधि-ज्ञान है अर प्रमत्तादि क्षीणकषाय चरम-शरीरी विषैं परमावधि वा सर्वावधि पाइए है, सो ऐसैं अवधिज्ञानी जीवनि कैं ही अवधि-दर्शन पाइए है।

तहां अवधि-दर्शन के धारी धर्मादि तीन नरकवाले तीर्थंकर, मनुष्यगतियुत तीस कौं अर तीर्थंकर सत्त्व रहित धर्मादिवाले वा अंजनादिवाले मनुष्यगति गुणतीस कै कौं बांधै हैं। बहुरि तिर्यंच हैं, ते देवगतियुत अठाईस के कौं बांधै हैं। बहुरि मनुष्य हैं, ते देवगतियुत अठाईसकानें आदि देकरि एक का पर्यंत पांच कौं बांधै हैं। बहुरि देव हैं ते सौधर्मादिकवाले तीर्थ-सत्त्व सहित तीर्थंकर, मनुष्यगतियुत तीस कै कौं अर तीर्थ-सत्त्व रहित वा भवनत्रिकादिक ते मनुष्यगतियुत गुणतीस के कौं बांधैं हैं। बहुरि केवल-दर्शन केवलज्ञानवत् बंध शून्य है ॥ ५४८ ॥

कम्मं वा किण्हतिये, पणुवीसाछक्कमट्ठवीसचऊ।
कमसो तेऊजुगले, सुक्काए ओहिणाणं वा॥ ५४९ ॥

कर्म वा कृष्णत्रये, पंचविंशतिषट्कमष्टाविंशचतुष्कं।
क्रमशः तेजोयुगले, शुक्लायामवधिज्ञानं वा॥ ५४९ ॥

टीका – कृष्णादिक अशुभ तीन-लेश्या विषैं कार्माणयोगवत् आदि के छह बंध-स्थान हैं। बहुरि तेजो-लेश्या विषैं पचीसकानै आदि दैकरि छह हैं। बहुरि पद्मलेश्या विषैं अठाईसकानै

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आदि देकरि च्यारि हैं। बहुरि शुक्ल-लेश्या विषैं अवधिज्ञानवत् अंत के पंच-स्थान हैं। तहां वर्णनामा नामकर्म के उदय तैं भया शरीर का वर्ण द्रव्यलेश्या, सो इहां ग्रहण न करी। मोह का उदय वा उपशम वा क्षय वा क्षयोपशम तैं भई जीव की चंचलता रूप भाव-लेश्या, सो इहां ग्रहण करी है, सो लेश्या कृष्णादिक भेद तैं छह प्रकार हैं।

तहां प्रथम-नरक का प्रथम इंद्रक विषैं कपोत का जघन्य-अंश है। तीसरा-नरक का द्विचरम-इंद्रक विषैं कपोत का उत्कृष्ट-अंश है। बहुरि तीसरा-नरक का अंत इंद्रक विषैं नील का जघन्य-अंश है। पंचम-नरक का द्विचरम इंद्रक विषैं नील का उत्कृष्ट-अंश है। बहुरि पंचम नरक का अंत इंद्रक विषैं कृष्ण का जघन्य-अंश है। बहुरि सप्तम-नरक का अवधिस्थान इंद्रक विषैं कृष्ण का उत्कृष्ट-अंश है। तिन जघन्य उत्कृष्ट-स्थानकनि का मध्य विषैं तिन-तिन लेश्यानि का मध्यम-अंश जानने। तिन नरकनि विषैं उपजने कौं यौग्य कौन जीव है ? सो कहिए है—

मिथ्यादृष्टी जीव घर्मा-पृथ्वी विषैं कर्मभूमिया छहौं-संहनन के धारी असंज्ञी, सरीसृप, पंखी, सर्प, सिंह, स्त्री, मछला, मनुष्य उपजै हैं। तहां वंशा विषैं सरीसृपादिक ही उपजैं हैं, असंज्ञी नाहीं उपजैं हैं। मेघा विषैं पंखी आदिक ही उपजैं हैं। अंजना विषैं आदि के पंच-संहनन के धारक सर्पादिक ही उपजैं हैं। अरिष्टा विषैं सिंहादिक ही उपजैं हैं। मघवी विषैं आदि के च्यारि-संहनन के धारक स्त्री, मछले, मनुष्य ही उपजैं हैं। माघवी विषैं आदि संहनन के धारक मछले वा मनुष्य ही उपजै हैं।

ते तिन नरकनि विषैं उपजे शरीर-पर्याप्ति पूर्ण भएं वा न पूर्ण भएं तिर्यंच-मनुष्यगति युत गुणतीस वा तीस के स्थाननि कौं बांधै हैं। सातवीं-पृथ्वी विषैं तिर्यंचगतियुक्त ही गुणतीस, तीस के स्थाननि कौं बांधै हैं। बहुरि सासादनवाले भी तैसैं ही तिर्यंच, मनुष्यगतियुत दोऊ-स्थाननि कौं बांधै हैं। बहुरि मिश्र अर असंयतवाले मनुष्यगति युत गुणतीस ही कौं बांधै हैं।

बहुरि धर्माविषैं निर्वृत्त्यपर्याप्त वा पर्याप्त-क्षायिक वा वेदक-सम्यग्दृष्टी वा कृतकृत्य-वेदक-तीर्थसत्त्व रहित, सो तौ मनुष्यगति गुणतीस के कौं अर तीर्थसत्त्व सहित, सो मनुष्यगति, तीर्थसहित तीस के कौं बांधै हैं। बहुरि वंशा, मेघा विषैं तीर्थंकरसत्त्व सहित जीव सो पर्याप्ति पूर्ण भएं नियम करि मिथ्यात्व कौं छोडि सम्यग्दृष्टी होइ तीस के कौं ही बांधै हैं। बहुरि तिर्यंचगति विषैं पर्याप्तादिक तीनप्रकार सर्व एकेन्द्री, वेन्द्री, तेन्द्री, चौंद्रीनि विषैं वा लब्धि-अपर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त, असंज्ञी विषैं वा मिथ्यादृष्टि नरकादिकस्यों आया, तीहि विषैं वा सासादन-अपर्याप्त-संज्ञी विषैं तीन-अशुभलेश्या ही हैं। बहुरि पर्याप्त-मिथ्यादृष्टी-असंज्ञी विषैं कृष्णादिक च्यारि-लेश्या हैं।

बहुरि पर्याप्त-सासादन मिश्र, अपर्याप्त असंयत-संज्ञी-तिर्यंच तिसविषैं, छह अर पर्याप्त-भोगभूमि विषैं निर्वृत्त्यपर्याप्तक-असंत विषैं जघन्य-कपोत ही है। अर पर्याप्त-अवस्था विषैं मिथ्यादृष्टी वा सम्यग्दृष्टी कैं तीन शुभ-लेश्या ही हैं, जातैं तहां के उपजै जीवनि कैं शरीर-पर्याप्ति पूर्ण होतैं, तीन शुभ-लेश्या ही आगम विषैं कहीं हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि ए कहे तिर्यंच-जीव तिनविषैं वादर-सूक्ष्म पृथ्वी, अप, तेज, वायु, नित्यनिगोद, चतुर्गतिनिगोद अर प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित प्रत्येक अर वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री अर संज्ञी-असंज्ञी पंचेन्द्री— ए उगणीस प्रकार तिर्यंच लब्धि— अपर्याप्तक अर इन उगणीस प्रकार लब्धि अपर्याप्तकनि तैं वा तिर्यंच-पर्याप्तकनि तैं अर पर्याप्त वा अपर्याप्त कर्मभूमिया-मनुष्यनि तैं इन सर्व मिथ्यादृष्टीनि तैं आयकरि जे केई तीन-अशुभलेश्या सहित तिर्यंच-जीव उपजैं, ते अठाईस का बिना तेईसकानैं आदि देकरि पांचस्थाननि कौं बांधै हैं।

बहुरि तेजकाय, वातकाय के जीव तिर्यंचगतियुत ही तिन-पंचस्थाननि कौं बांधै हैं। बहुरि ते उगणीस प्रकार लब्धि-अपर्याप्त-तिर्यंच, उगणीस प्रकार पर्याप्त-तिर्यंच, दोय प्रकार मनुष्य मिलि भए चालीस प्रकार मिथ्यादृष्टि, ते अशुभ तीन-लेश्या करि मरे हुए पूर्वोक्त उगणीस प्रकार पर्याप्त-तिर्यंच मिथ्यादृष्टीनि विषैं उपजैं हैं। तहां विशेष—

जो तेजःकाय, वातकाय विषैं तौ अशुभलेश्यानि का मध्यम-अंश करि ही उपजैं हैं अर भवनत्रिक सौधर्म-द्विक के देव मिथ्यादृष्टी तेजोलेश्या का मध्यम-अंश करि अर तिर्यंच-मनुष्य अशुभ तीन-लेश्या का मध्यम-अंश करि मरे हुए केई बादर पृथ्वी, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकनि विषैं उपजै हैं। बहुरि भवनत्रिकादिक सहस्रारपर्यंत देव सर्व नारकी मिथ्यादृष्टीतिर्यंचायु का जिनकैं बंध भया ते अपनी-अपनी लेश्यानिकरि मरे हुए कर्मभूमिया-गर्भज-संज्ञी-तिर्यंचनि विषैं उपजैं हैं। तहां ते पूर्वोक्त उगणीस-प्रकार के तिर्यंच-चतुर्गति तैं आयकरि उपजे निर्वृत्त्यपर्याप्त मिथ्यादृष्टि सर्व ही अठाईस का विना तेवीसकानैं आदि देकरि पांच-स्थाननि कौं बांधै हैं।

बहुरि अनंतानुबंधी विषैं किसी एक प्रकृति का उदय तैं प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं विराधि करि सासादन होइ पूर्वैं बांधी हैं तिर्यंचायु जिनि— अैसै जीव मरिकै वा जिनकैं आयुबंध न भया ते केई, तिसही अंतकाल विषैं तिर्यंचायु कौं बांधि मरिकैं तिर्यंच विषैं उपजैं, तहां कर्मभूमियां-तिर्यंच, मनुष्य तो बादर पृथ्वी, अप्, प्रत्येक-वनस्पती, विकलत्रय, संज्ञी-असंज्ञी विषैं उपजैं।

ईशानपर्यंत देव अपनी-अपनी लेश्या सहित मरि वादर-पृथ्वी, अप, प्रत्येक-वनस्पती विषैं उपजै। भवनत्रिकादि सहस्रार पर्यंत अर छठा-नरकपर्यंत नारकी कर्मभूमिया-गर्भज-संज्ञी-तिर्यंचनि विषैं उपजैं। ते ए सासादन-तिर्यंच होंइ तिर्यंच, मनुष्यगति पर्याप्तयुत गुणतीस वा तीस का कौं बांधै हैं। बहुरि अपना-अपना सासादन का काल भएं पीछैं नियम करि मिथ्यादृष्टि होइ, यावत् शरीर पर्याप्ति पूर्ण न होइ, तावत् निर्वृत्ति-अपर्याप्तक तिर्यंच मिथ्यादृष्टि विषैं कहे तेईसकानैं आदि देकरि पांच-स्थान तिनकौं बांधै हैं।

इहां प्रश्न—

जो सासादन का तो उत्कृष्टकाल भी छह आवली प्रमाण अर आयु बंध का जघन्यकाल भी अंतर्मुहूर्तप्रमाण सो पूर्व-उत्तर दोऊ पर्यायनि विषैं सासादन कैसैं संभवै ?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताका समाधान—

जो अंतर्मुहूर्त के भेद बहुत हैं, एक आवली तैं लगाय समय-समय बधता समय-समय घाटि मूहूर्त पर्यंत अंतर्मूहूर्त के भेद हैं ; तातैं आयुबंध का काल इहां केई आवली प्रमाण ही जानना।

बहुरि तिर्यंच-असंयतविषैं पूर्वे जिनकैं तिर्यंचायु का बंध भया अैसै देवनारकी वेदक-सम्यग्दृष्टी, अपनी-अपनी लेश्या सहित मरि उपजे हैं, तहां सातवां नरकवाले नाही, जातैं इनका मरण-मिथ्यादृष्टि विषैं ही हैं। तहां उपजे तिर्यंच-असंयत-गुणस्थानवर्ती निर्वृत्त्यपर्याप्तक ते देवगतियुत अठाईस का स्थान कौं बांधै हैं। पर्याप्त पूर्ण भएं देश संयत-गुणस्थान पर्यंत प्राप्त हो हैं। तहां असंयतपर्यंत छहौं लेश्या हैं। देशसंयत विषैं तीन शुभलेश्या ही हैं।

इहां प्रश्न—

जो शुभाशुभलेश्यानि विषैं एक जीव अनुक्रम तैं परिनमैं है कि युगपत् परिनमै है ?

तहां समाधान-जो आत्मा संक्लेशता की हानिकरि तौ उत्कृष्ट कृष्णलेश्या तैं जघन्य-कपोतपर्यंत, अर संक्लेश की वृद्धि तैं जघन्य-कपोत तैं उत्कृष्ट कृष्ण पर्यंत असंख्यात-लोकप्रमाण षट्-स्थानपतित वृद्धिहानि कौं लीएं लेश्या का स्थाननि विषैं अनुकम तैं परिनमै है। बहुरि विशुद्धता की वृद्धिकरि तेजो, पद्म, शुक्ल-लेश्या का जघन्यादिक अंशनि विषैं अर विशुद्धता की हानिकरि शुक्ल, पद्म, तेजोलेश्यानि का उत्कृष्टादि अंशनि विषैं अनुक्रम तैं परिनमैं है। तिन लेश्यानि का मूल-कारण कषायनि का उदयरूप अनुभाग-स्थाननि करि अनुरंजित योगनि की प्रवृत्ति है।

तें कषाय च्यारि हैं— तिनविषैं विवक्षित क्रोध-कषाय का अनुभाग स्थान का उदय है, सो जीव कौं नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवगतिनि विषैं उपजावै हैं। तिस क्रोध की शक्ति शिलाभेद, पृथ्वीभेद, धूलिरेखा, जलरेखा समान च्यारि हैं। तहां सर्वघातिया-शक्ति सहित जे उदय-स्थान, तिनके नीचे प्रमत्तादिक संयमी जीवन विषैं ही सम्भवें ऐसी देश घातिया रूप पूर्व स्पर्धक है नाम जाका ऐसी शक्ति है। ताके नीचैं-नीचैं अपूर्व-स्पर्धक है नाम जाका वा बादरकृष्टि है नाम जाका वा लोभ-कषाय विषैं सूक्ष्मसांपराय-गुणस्थाननि विषैं सूक्ष्मकृष्टि है नाम जाका अैसी शक्ति है। अैसै समस्त क्रोध-कषाय के अनुभागरूप उदयस्थान असंख्यात-लोक मात्र षट्स्थानपतित-हानि कौं लीएं असंख्यात-लोकप्रमाण है।

तिनकौं यथायोग्य असंख्यात-लोक का भाग दीजिए, तहां एक-भाग बिना बहुभाग प्रमाण तौ संक्लेश-स्थान हैं। एक भाग प्रमाण विशुद्धिस्थान हैं। तिनविषैं लेश्यापद चौदह हैं। लेश्यानि के अंश छवीस हैं, तिनविषैं मध्य के आठ-अंश आयु के बंध कौं कारण हैं। इहां संदृष्टि-यंत्र आदि विशेष पूर्वे जीवकांड विषैं कषायमार्गणा-अधिकार विषैं कह्या है सो जानना।

ते मध्यम-अंश तेजोलेश्या का जघन्यस्थान के अनंतरि अपना अनंतगुणवृद्धिरूप मध्यम-स्थानस्यों लगाय कपोतलेश्या का जघन्य-स्थान के अनंतरि अनंतगुणवृद्धि कौं लीएं उस ही का मध्यम-स्थान पर्यंत अथवा कपोत-लेश्या का जघन्यस्थान के अनंतर-अनंतगुणवृद्धिरूप

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिस ही कपोत का मध्यम-स्थान तैं लगाय तेजोलेश्या का जघन्य-स्थान के अनंतर-अनंतगुणवृद्धिरूप जो तेजोलेश्या का मध्यम-स्थान, तहां पर्यंत पद्म, शुक्ल, कृष्ण, नील इनका जघन्य-अंश अर च्यारिगति संबंधी आयु के कारण वा नरक बिना तीन-आयु के वा नरक, तिर्यंच बिना दोय आयु के वा केवल देव-आयु कै बंध कै कारण च्यारि अंश— ऐसैं आठ मध्यम-अंश आयु के बंध कौं कारण हैं।

इहां प्रश्न– जो पद्म, शुक्ल, कृष्ण, नील लेश्या का जघन्य-अंशनि कौं मध्यम-अंश कैसें कहिए ?

ताका समाधान– जो शुभ-अशुभ लेश्या का भेद की अपेक्षा ए वीचि के अंश हैं; तातैं इनिकौं मध्यम-अंश कहिए।

बहुरि अवशेष कृष्णादिक के जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट भेद तैं अठारह-अंश, ते च्यारि-गति के गमन कौं कारण हैं। मरण इन अठारहौं-अंशनि विषैं हो है। तिनविषैं तीन अशुभ-लेश्यानि के नव-अंश तौ नरकगति तिर्यंचगतिविषैं उपजावनहारे हैं। अर अगले शुभ-अशुभ लेश्यानि के अंश तिर्यंच, मनुष्य, देवगति विषैं गमन कौं कारण है।

बहुरि लेश्यानि का संक्रमण कहिए है–

संक्रमण नाम स्थान तैं अन्य-स्थान प्राप्त होने का है। सो वृद्धि करि कृष्ण और शुक्ललेश्या का अपने स्थानक विषैं ही हैं, जातैं संक्लेश वा विशुद्धता की वृद्धि होतैं कृष्ण वा शुक्ललेश्या कौं छोडि कोई अन्य लेश्या कौं प्राप्त न होई। बहुरि हानि विषैं अपने उत्कृष्ट-अंश तैं जघन्य-अंशपर्यंत स्वस्थान विषैं अर कृष्ण के नील, कपोत, तेज, पद्म, शुक्ल का उत्कृष्ट पर्यंत अर शुक्ल के पद्म, तेज, कपोत, नील कृष्ण का उत्कृष्ट पर्यंत परस्थान विषैं संक्रमण हो हैं।

बहुरि अवशेष लेश्यानि कैं संक्लेश वा विशुद्धता की हानि विषैं अपने-अपने उत्कृष्ट तैं अपने-अपने जघन्य पर्यंत तौ स्वस्थान-संक्रमण है अर नील, कपोत कैं अपने-अपने जघन्य तैं शुक्ल के उत्कृष्ट पर्यंत अर पद्म, तेज कैं अपने-अपने जघन्य तैं कृष्ण का उत्कृष्ट पर्यंत परस्थान संक्रमण है।

बहुरि वृद्धि विषैं अपने-अपने जघन्य तैं अपने-अपने उत्कृष्ट पर्यंत तो स्वस्थान-संक्रमण है अर नील, कपोत कैं अपने-अपने उत्कृष्ट तैं कृष्ण कैं उत्कृष्ट पर्यंत अर पद्म, तेज कैं अपने-अपने उत्कृष्ट तैं शुक्ल का उत्कृष्ट पर्यंत परस्थान-संक्रमण है।

बहुरि स्वस्थान विषैं परस्थानवत् अन्य लेश्या कैं समान शक्तिरूप स्थान कौं न प्राप्त हो हैं। जातैं अपना-अपना लक्षण कौं छोडैं नाही। बहुरि स्वस्थान-संक्रमण विषैं सर्व लेश्यानि के उत्कृष्ट तैं अनंतर अपना-अपना मध्यम-स्थान विषैं कृष्णादिक तीन विषैं संक्लेश की अर पीतादिक तीन विषैं विशुद्धता की हानि अनंत-भाग पाइए है, जातैं-लेश्यानि का उत्कृष्ट-स्थान

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

है, सो अपने अनंतरवर्ती मध्यम-स्थान तैं उर्वक कहिए-अनंत-भागरूप कह्या है। बहुरि तिन लेश्यानि के जघन्य के अनंतर अपना मध्यम-स्थान विषैं वृद्धि अनंतभागरूप ही है, जातैं तिन लेश्यानि का जघन्य-स्थान है, सो अष्टांक कहिए अपना अनंतरवर्ती स्थान तैं अनंत-गुणरूप है। बहुरि परस्थान-संक्रमण विषैं तिन लेश्यानि कैं जघन्य तैं अनंत गुणहानि पाइए है, जातैं अन्य लेश्या की अपेक्षा जघन्य कैं अष्टांक कहिए अनंत गुणपणा पाइए है।

अैसें ए लेश्या पाइए हैं, सो कथन जीवकांड विषैं लेश्या-अधिकार विषैं विशेष कह्या है सो जानना।

सो तिर्यंच-मिथ्यादृष्टि विषैं तौ मिथ्यात्व सहित अनंतानुबंधी आदि सर्वघातिया-क्रोध का चतुष्क व मान का चतुष्क व माया का चतुष्क व लोभ का चतुष्क उदयरूप हो है। बहुरि सासादन विषैं मिथ्यात्व बिना उदय हो है। बहुरि मिश्र विषैं अनंतानुबंधी बिना जुदी ही जाति का सर्वघातिया-सम्यग्मिथ्यात्व सहित उदय हो है। बहुरि असंयत विषैं सम्यग्मिथ्यात्व बिना दर्शन-मोह का क्षयोपशम विषैं देशघातिया सम्यक्त्व-मोहनी सहित अर उपशम, क्षय विषैं सम्यक्त्व-मोहनी रहित उदय हो है।

बहुरि देश-संयत विषैं अप्रत्याख्यान रहित दर्शनमोह का क्षयोपशम विषैं सम्यक्त्वमोहनी सहित अर उपशम विषैं सम्यक्त्व-मोहनी रहित उदय हो है। तिर्यंच देशसंयत विषैं संक्लेशी हानि तैं भए तीन-शुभलेश्या कौं कारण कषायनि के उदयस्थान ते सर्व-कषायनि के उदयस्थान के असंख्यातवैंभागप्रमाण हैं, तौ भी असंख्यात-लोकप्रमाण हैं।

बहुरि अवशेष बहुभाग प्रमाण छह-लेश्या कौं कारण उदयस्थान हैं, तैं मिथ्यादृष्ट्यादिक च्यारि-गुणस्थाननि विषैं हो हैं। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं तेईसकानैं आदि दैकरि छह-स्थान बंधै हैं। सासादन विषैं अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन-स्थान बंधै हैं। मिश्रादिक तीन गुणस्थाननि विषैं अठाईस का कौं ही बांधै हैं।

बहुरि मुनष्य पूर्वभव विषैं दान योग्य द्रव्य कौं दाता का गुणसहित होइ तीनप्रकार पात्र कौं दान दीया वा अनुमोदना करी अर तिर्यंच-अनुमोदना ही करी तिसकरि मिथ्यादृष्टिपण तैं तिर्यंचायु कौं बांधि तीन अशुभलेश्या सहित मरण करि भोगभूमि विषैं तिर्यंच-मिथ्यादृष्टी होइ, सो अपर्याप्त-दशा विषैं तिर्यंचगतियुक्त गुणतीस वा तीस का अर मनुष्यगतियुत गुणतीस का स्थान कौं बांधै हैं।

बहुरि जाकैं तिर्यंचायु का बंध भया अर मरणदशा विषैं प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं पाय अनंतानुबंधी के उदय तैं विराधना करि तिर्यंच वा मनुष्य तौं भोगभूमि विषैं अर नारकादिक कर्मभूमि विषैं तीन अशुभ-लेश्यासहित सासादन होइ करि तिर्यंच उपज्या, तहां तिर्यंच वा मनुष्य सहित गुणतीस अर तीस कौं ही बांधै हैं, जातैं "मिच्छदुगे देवचऊ तित्थं णहि" इस वचन तैं देवगतियुत अठाईस के का बंध पर्याप्त विषैं ही है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि कर्मभूमि का तिर्यंच, मनुष्य वेदक-सम्यग्दृष्टी वा मनुष्य-क्षायिक-सम्यग्दृष्टी पूर्वैं जाकै तिर्यंचायु का बंध भया, सो तीनप्रकार पात्र दानकरि वा दान की अनुमोदना करि तीन, दोय, एक पल्य प्रमाण आयु धारैं तीन-भोगभूमि विषैं कपोतलेश्या का जघन्य-अंश सहित उपजि करि वेदक-सम्यग्दृष्टी वा कृतकृत्य-वेदक-सम्यग्दृष्टी वा क्षायिक-सम्यग्दृष्टी तिस अपर्याप्त-दशा विषैं देवगतियुत अठाईस का स्थान कौं ही बांधैं हैं, 'भोगे सुरट्ठवीसं सम्मो' इति वचन तैं जानना।

बहुरि पर्याप्त-दशा के ऊपरि च्यारयों गुणस्थानवर्ती भोगभूमिया तीन शुभलेश्या संयुक्त ही हैं। तहां मिथ्यादृष्टि अर सासादन तौ देवगतियुत अठाईस का वा तिर्यंच, मनुष्ययुत गुणतीस का वा उद्योतयुत तीस का इन तीन-स्थाननि कौं बांधै हैं। बहुरि मिश्र असंयत है, सो देवगतियुत अठाईस का स्थान कौं ही बांधै है, जातैं तिर्यंत, मनुष्यगतियुत स्थाननि का सासादन ही विषैं व्युच्छेद भया।

अैसैं लेश्यासहित तिर्यंचनि विषैं बंधस्थान कहे।

अब मनुष्यगति विषैं कहिए हैं—

लब्धि-अपर्याप्तक-मनुष्य विषैं तौं तीन अशुभ-लेश्या ही हैं। निवृत्ति-अपर्याप्तक कैं छहौं लेश्या हैं, सो मिथ्यादृष्टि विषैं तो तेवीस, पचीस, छव्वीस, गुणतीस, तीस के पाँच स्थान बंधैं हैं। सासादन विषैं गुणतीस, तीस के दोय स्थान बंधैं हैं। असंयत विषैं देवगति युत अठाईस का वा देव, तीर्थयुत गुणतीस का बंधैं हैं।

बहुरि पर्याप्त-दशा विषैं छहौं लेश्या पाइए, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं तेईसकानैं आदि दैकरि छह-स्थान बंधै हैं। सासादन विषैं अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन देव २८ तिर्यंच, मनुष्य २९, तिर्यंच-उद्योत ३० बंधै हैं। बहुरि मिश्र विषैं देवयुत अठाईस का ही बंधैं हैं। असंयत विषैं वा तीन शुभलेश्या सहित देश-संयत वा प्रमत्त विषैं देवयुत अठाईस, देव, तीर्थयुत गुणतीस का बंधै हैं।

अप्रमत्त विषैं ते दोन्यूं अर आहारक सहित तीस, इकतीस के— अैसैं च्यारि बंधै हैं। अपूर्वकरण विषैं शुक्ल लेश्या ही है, तहां ते च्यार्यों अर अंत-भाग विषैं एक का— ऐसैं पाँच बंधै हैं। वादर अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय विषैं एक का ही बंधै हैं। उपशांतादिक विषैं बंध का अभाव है। बहुरि भोगभूमि विषैं भोगभूमियां-तिर्यंचवत् बंध जानना।

अब देवगति विषैं कहिए हैं—

भवनत्रिक-अपर्याप्त विषैं तीन-अशुभलेश्या ही हैं। पर्याप्त विषैं तेज का जघन्य-अंश है। पर्याप्त, अपर्याप्त वैमानिक देवनि विषैं सौधर्म-युगल का प्रथम-इंद्रक-श्रेणीबद्ध प्रकीर्णकनि विषैं तौं तेज का जघन्य-अंश है। द्वितीय-इंद्रक तैं सनत्कुमारद्विक का षष्ठम-इंद्रक पर्यंत मध्यम-अंश

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

है। सातवां-इन्द्रक-श्रेणीबद्धनि विषैं तेज का उत्कृष्ट, पद्म का जघन्य-अंश है। ब्रह्मद्विक का च्यारि इन्द्रक, लांतवद्विक का दोय इन्द्रक, शुक्रद्विक का एक इन्द्रक— इनविषैं पद्म का मध्यम अंश है। शतार-युगल का एक इन्द्रक विषैं पद्म का उत्कृष्ट, शुक्ल का जघन्य-अंश है। आनत-चतुष्क का छह इन्द्रक, नवग्रैवेयकनि का नव अनुदिशनि का एक इन्द्रक वा अनुत्तरनि का श्रेणीबद्धनि विषैं शुक्ल का मध्यम-अंश है। सर्वार्थसिद्धि विषैं उत्कृष्ट-अंश है।

जहां देवनि का जन्म होइ असैं आवास, ते वैमानिक-देवनि के तौ तरेसठि-पटल हैं। भवनवासीनि के रत्नप्रभा-पृथ्वी का खर-भाग, पंक-भाग विषैं सात कोडि बहत्तरि लाख भवन हैं। व्यंतरनि के असंख्यात द्वीप-समुद्र हैं। ज्योतिषीनि कैं सुदर्शन-मेरु तैं ग्यारहसै इकईस योजन उरै पृथ्वी तैं सातसै निवै योजन ऊपरि नवसै पर्यंत एकसै दश योजन की मोटाई में लोक पर्यंत पण्णट्ठी प्रमाण प्रतरांगुल करि भाजित जगत्प्रतर प्रमाण विमान हैं।

तहां मिथ्यादृष्टी कर्मभूमियां मनुष्य-संज्ञी-गर्भज-तिर्यंच तौ कृष्णादिक च्यारि लेश्यावाले भवनत्रिक मैं उपजे हैं। गर्भज-असंज्ञी तेजो लेश्यावाले भवनवासी व्यंतर ही विषैं उपजैं हैं, जातैं असंज्ञी कैं उत्कृष्ट देवायु का स्थिति बंध पल्य के असंख्यात वैं भाग प्रमाण ही हैं। बहुरि तिर्यंच संबंधी मानुषोत्तर स्वयं-प्रभाचल के वीचि जघन्य-भोगभूमि, तीनप्रकार मनुष्य भोगभूमि, छिनवै कुभोगभूमि के उपजै तेजो-लेश्यावाले जीव भवनत्रिक विषैं उपजैं हैं। सम्यग्दृष्टि-भवनत्रिक विषैं नाहीं उपजैं हैं।

बहुरि जिनकैं देवायु बंध भया असैं तिर्यंच-मनुष्य सो प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं अनंतानुबंधी एक-प्रकृति का उदय तैं घात करि च्यारूं लेश्यानि करि तहां सासादन विषैं उपजैं हैं, ते भवनित्रिक निर्वृत्त्यपर्याप्तक मिथ्यादृष्टी तौ अठाईस का बिना पचीसकानै आदि देकरि च्यारि-स्थान बांधै हैं ए प २५, प २६, ति म २९, ति उ ३०। बहुरि सासादन गुणतीस, तीस के दोय बांधै हैं (ति म २९, ति उ ३०)। बहुरि मनुष्य वा तिर्यंग लोक संबंधी कर्मभूमियां तिर्यंच वा नागा-संन्यासी इत्यादिक वा जिनद्रव्यलिंगी आदि तेजो-लेश्या करि सौधर्मद्विक विषैं मिथ्यादृष्टी उपजैं हैं, ते निर्वृत्त्यपर्याप्तक देव पचीस, छवीस, गुणतीस, तीस के स्थाननि कौं बांधै हैं। (एप २५ एप २६ आउ तिम २९ तिउ ३०)।

बहुरि देश-संयतपर्यंत तौ तिर्यंच प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं अर प्रमत्तपर्यंत मनुष्य प्रथम-द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व कौं विराधि देवायु का जिनकैं बंध भया, ते तेजो लेश्या करि सौधर्मद्विक विषैं सासादन विषैं उपजैं है। तहां निर्वृत्ति-अपर्याप्तक विषैं गुणतीस, तीस के दोय स्थाननि कौं बांधे है (तिम २९ ति उ ३०)।

बहुरि सर्वभोगभूमिया-वेदक-क्षायिक सम्यग्दृष्टी अर कर्मभूमिया वेदकसम्यग्दृष्टी अर कर्म-भूमिया देशसंयत पर्यंत तिर्यंच अर तीर्थंकर सत्त्व सहित वा रहित अप्रमत्त पर्यंत मनुष्य देवायु बंध संयुक्त, ते तेजो-लेश्या करि सौधर्मद्विक विषैं उपजैं, तहां असंयत-गुणस्थानवर्ती

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

निर्वृत्ति-अपर्याप्त विषैं तीर्थंकर सत्त्व सहित तौ तीर्थयुत तीस के कौं अर तीर्थंकर सत्त्व रहित मनुष्यगति युत गुणतीस के कौं बांधै हैं।

पद्म, शुक्ल संयुक्त भोगभूमिया असंयत वा पद्म, शुक्लवाले और असंयतादिक वा शुक्ल-लेश्यावाले अपूर्वकरणादिक भी मरण समय के नीचैं गुणस्थाननि विषैं तेजो-लेश्या कौं पाइकरि ही सौधर्मद्विक विषैं उपजै हैं। तहां उत्तरदिशा के श्रेणीबद्ध अर वायु-ईशान कौण के प्रकीर्णकविमान तौ उत्तरदिशानि विषैं ईशान-इन्द्र संबंधी हैं, अवशेष दक्षिण-दिशा का सौधर्म इन्द्र सम्बन्धी हैं, इतना ही सौधर्म-ईशान विषैं भेद है। बहुरि सानत्कुमार-युगल विषैं चक्र-इन्द्रक श्रेणीबद्ध पर्यंत तेजो-लेश्या है, तथापि तहां भोगभूमिया उपजै नाहीं, अवशेष उपजै हैं, ते निर्वृत्त्यपर्याप्तक मिथ्यादृष्टि, सासादन तो तिर्यंच, मनुष्य गतियुत गुणतीस, तीस के स्थाननि को बांधै हैं (तिम २९ तिउ ३०)।

बहुरि असंयत-मनुष्यगतियुत गुणतीस अर मनुष्य, तीर्थयुत तीस का बांधै हैं। बहुरि ऊपरि अष्ट-स्वर्गनि विषैं नागा इत्यादिक कर्मभूमियां तिर्यंच, मनुष्य, देवायु बंध सहित , ते पद्मलेश्या करि उपजै हैं, ते भी तैसैं ही मिथ्यादृष्टि, सासादन, तिर्यंच-मनुष्य युत दोय अर असंयत-मनुष्य, तीर्थयुत दोय स्थाननि को बांधै हैं।

बहुरि आनतादिक च्यारि स्वर्ग, नव ग्रैवेयक विषैं शुक्ललेश्या हैं, तहां मिथ्यादृष्टि, सासादन विषैं मनुष्यगतियुत गुणतीस अर तहां के असंयत अर अनुदिश, अनुत्तर के वासी असंयत, ते मनुष्ययुत गुणतीस का वा मनुष्य, तीर्थयुत तीस का स्थान कौं बांधै हैं। इहां प्रासंगिक गाथा कहिए हैं—

णरतिरियदेशअयदा उक्कस्सेणच्चुदोत्तिणिग्गंथा।
णरअयददेसमिच्छा गेवेज्जंतोत्ति गच्छंति॥ १ ॥ ५४५ ॥ त्रिलोकसार ॥

मनुष्य, तिर्यंच देशव्रती वा असंयत उत्कृष्ट अच्युत-स्वर्गपर्यंत उपजै हैं। द्रव्य, निर्ग्रन्थ, भाव, असंयत, देश-संयत, मिथ्यादृष्टि ऊपरि ग्रैवेयक पर्यंत उपजै हैं।

सव्वट्ठोत्ति सुदिट्ठी महव्वई भोगभूमिजा सम्मा।
सोहम्मदुगं मिच्छा भवणतियं तावसा य वरं॥ २ ॥ ५४६ ॥ त्रिलोकसार ॥

सर्वार्थसिद्धिपर्यंत सम्यग्दृष्टी-महाव्रती उपजैं हैं, भोगभूमिया सम्यग्दृष्टी तौ सौधर्म-युगल विषैं मिथ्यादृष्टी भवनत्रिक विषैं उपजैं हैं। तापसी उत्कृष्टपनैं भवनत्रिक विषैं उपजैं हैं।

चरियाय परिव्वाजा बम्होत्तरचुदपदोत्ति आजीवा।
अणुदिसअणुत्तरादो चुदा ण केसवपदं जंति॥ ३ ॥ ५४७ ॥ त्रिलोकसार ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नागा संन्यासी ब्रह्मोत्तर पर्यंत उपजै हैं। कांजीभिक्षु अच्युतपर्यंत उपजै हैं। अनुदिश अनुत्तर विमान तैं चए जीव नारायण, प्रति नारायण न हो हैं।

सोहम्मोवरदेवी सलोगपालाय दक्खिणमरिंदा।

लोयंतिय सव्वट्ठा चुदा तदो णिव्वुदिं जंति॥ ४॥ ५४८॥ त्रिलोकसार॥

सौधर्मदेव की शची नामा पट्टदेवी अर लोकपालनि करि सहित सौधर्मादिक दक्षिण-दिशा के इन्द्र अर लौकांतिक देव, सर्वार्थसिद्धिवासी देव– ए चय करि मनुष्य होंइ निर्वाण ही कौं पावैं हैं।

णरतिरियगदीहिंतो भवणतियादो य णिग्गया जीवा।

ण लहंते ते पदवीं तेसट्ठिसलागपुरिसाणं॥ ५॥ ५४९॥ त्रिलोकसार॥

मनुष्य, तिर्यंच-गति तैं वा भवनत्रिक तैं च्युत भए जीव ते तरेसठि-शलाका पुरुषनि की पदवी को न प्राप्त हो हैं।

सुहसयणंगो देवा जायंते दिणयरोव्व पुव्वणगे।

अंते मुहुत्तपुण्णा सुगंधिसुहफाससुचिदेहा॥ ६॥ ५५०॥ त्रिलोकसार॥

शुभ-शय्या, स्थान विषैं प्राप्त भए देव उदयाचल विषैं सूर्यवत् जन्म कौं धारैं हैं, ते अंतर्मुहूर्त विषैं संपूर्ण सुगंध, शुभ स्पर्श पवित्र देहयुक्त हो हैं।

आणंदतूरजयथुदिरवेण जम्मं विचुज्झ सं पत्तं।

दट्ठूण सपरिवारं गयजम्मं ओहिणाणं च॥ ७॥ ५५१॥ त्रिलोक.।

आनंद के वाजित्र, जयकार, स्तुति शब्द करि अपने पाए जन्म कौं जानि, परिवार सहित सर्व कौं देखि, अवधिज्ञान कौं प्राप्त होइ।

धम्मं पसंसिदूणं ण्हादूण दहेभिसेयलंकारं।

लद्धा जिणाभिसेयं पूजं कुव्वंति सद्दिट्ठी॥ ८॥ ५५२॥ त्रिलोक.।

धर्म की प्रशंसा करि, द्रह विषैं स्नानकरि, अति उज्जल शरीर, अलंकार सहित होइ, जिन-प्रतिमा का अभिषेक वा पूजन कौं सम्यग्दृष्टि करैं हैं।

सुरबोहियावि मिच्छा पच्छा जिणपूजणं पकुव्वंति।

सुहसायरमज्झगया देवा ण विदंति गयकालं॥ ९॥ ५५३॥ त्रिलोक.।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिथ्यादृष्टि हैं ते और देवनि करि संबोधे हुए पीछैं जिन पूजन करैं हैं।

ते देव सुख-सागर में मग्न भए, गये काल कौं न जानैं हैं।

महपूजासु जिणाणं कल्लाणेसु य पजांति कप्पसुरा।

अहमिंदा तत्थविया णमंति मणिमौलिघडिदकरा॥ १० ॥ ५५४ ॥ त्रिलोक.।

महापूजा, इन्द्रध्वज, अष्टाह्निकादि विषैं वा तीर्थंकर के कल्याणनि विषैं कल्पवासी देव जावैं हैं। अहमिंद्र अपने स्थान तिष्ठते ही मणि मुकटनि तैं हस्त लगाय नमस्कार करैं हैं।

विविहतवयरणभूसा णाणसुचीसीलवत्थसोम्मंगा।

जो तेसिमेव वस्सा सुरलच्छी सिद्धिलच्छी य॥ ११ ॥ ५५५ ॥ त्रिलोकसार।

जे विविधतपश्चरण करि आभूषित हैं। ज्ञान करि पवित्र हैं। शीलरूपी वस्त्र धरैं हैं। सौम्य अंग लीए हैं, तिन ही कैं देव-लक्ष्मी वा मुक्तिलक्ष्मी वश्य हो है।

ऐसैं देव कहे, तहां लेश्या का वर्णनकरि बंध-स्थान कहे।

या प्रकार कही थीं असंयत विषैं छह लेश्या, देशविरतादि तीन विषैं तीन शुभ-लेश्या, ऊपरि शुक्ल लेश्या, अयोगी लेश्या रहित है। तहां तीन अशुभ-लेश्यानि विषैं तेईसकानैं आदि दैकरि छह बंध-स्थान हैं। तेजो-लेश्या विषैं पचीसकानैं आदि देकरि छह-स्थान हैं। पद्मलेश्या विषैं अठाईसकानैं आदि देकरि च्यारि-स्थान हैं। शुक्ललेश्या विषैं अठाईसकानैं आदि देकरि पंच-स्थान हैं, ते सूक्ष्म-सांपराय पर्यंत यथा-संभव जानने ॥ ५४९ ॥

भव्वे सव्वभव्वे, किण्हं वा उवसमम्मि खइए य ।

सुक्कं वा पम्मं वा, वेदगसम्मत्तठाणाणि ॥ ५५० ॥

भव्ये सर्वमभव्ये, कृष्णा वा उपशमे क्षायिक च ।

शुक्लं वा पद्मं वा, वेदकसम्यक्त्वस्थानानि ॥ ५५० ॥

टीका — भव्य-मार्गणा विषैं सर्व बंध-स्थान हैं, जातैं ताकें सर्व गुणस्थान संभवैं हैं । बहुरि अभव्य विषैं कृष्णलेश्यावत् चतुर्गतिसहित तेईसकानैं आदि दैकरि छह-स्थान मिथ्यादृष्टि संबंधी ही संभवै हैं ।

बहुरि सम्यक्त्व-मार्गणा-विषैं उपशम, क्षायिक-विषैं तौ शुक्ल-लेश्यावत् अठाईसकानैं आदि दैकरि पंच- स्थान हैं । वेदक विषैं पद्मलेश्यावत् अठाईसकानैं आदि दैकरि च्यारि-स्थान हैं । तहां सम्यक् का जो भाव सो सम्यक्त्व है, सो संसार के नाश कौं कारण जे जीवादिक पदार्थनि का यथार्थ -प्रतीति श्रद्धान, सो है लक्षण जाका, ऐसा भव्य जीव का परिणामविशेष, सो सम्यक्त्व कहिए । सो सम्यक्त्व तीन प्रकार है— औपशमिक, क्षायिक, वेदक तहां औपशमिक दोय प्रकार है— प्रथमोपशम-सम्यक्त्व, द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व । तहां—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दंसणमोहक्खवणा, खवगा चडमाण पढमपुव्वाय।

पढमुवसम्मा तमतम, गुणपडिवण्णा य ण मरंति॥ ५६० ॥ गाथा॥ गो. कर्म.।

दर्शन-मोह की क्षपणा करनेवाले वा क्षपक-श्रेणीवाले वा चढ़तैं अपूर्व-करण का प्रथम भाग विषैं उपशम-श्रेणीवाले वा प्रथमोपशम-सम्यक्त्व के धारी वा तमतम-सातवां-नरक विषैं सासादनादि गुण के धारी– ए मरैं नाहीं ; तातैं तिन दोऊनि विषैं प्रथमोपशम-सम्यक्त्व है, सो च्यार्यों गति के पर्याप्त विषैं ही होइ अपर्याप्त विषैं न होइ। बहुरि द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व पर्याप्त-मनुष्य वा निर्वृत्यपर्याप्त वैमानिक-देवनि विषैं होइ। बहुरि क्षायिक-सम्यक्त्व धर्मानारकी, भोगभूमिया तिर्यंच, भोगभूमिया-कर्मभूमिया मनुष्य, वैमानिक-देव इनकैं पर्याप्त वा अपर्याप्त दशा विषैं हो है। बहुरि वेदक-सम्यक्त्व च्यारिगति के पर्याप्तक वा निर्वृत्यपर्याप्तक-जीवनि कैं हो है। तहां प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कैसे जीव कैं होइ है ? सो कहैं हैं–

चदुगदि मिच्छो सण्णी, पुण्णो गब्भज विसुद्धसागारो।

पढमुवसम्मं गेण्हदि, पंचमवरलद्धिचरिमम्मि॥ लब्धिसार॥ २ गाथा॥

च्यारि-गति का मिथ्यादृष्टि, सो भी सैनी ही होइ, असैनी न होइ, सो भी लब्धि-अपर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक नहोइ, पर्याप्तक ही होइ, सो भी सन्मूर्छन न होइ, गर्भज वा उपपादज ही होइ, सो भी संक्लेशी न होइ, विशुद्ध-परिणामी होइ। सो भी अनाकार-दर्शनोपयोग युक्त न होइ, विशेष ग्रहणरूप साकारोपयोग का धारी होइ तहां भी–

चत्तारिवि खेत्ताइं आउगबंधेण होदि सम्मत्तं।

अणुवदमहव्वयाइं ण लहइ देवाउगं मोत्तुं॥ ५॥ ३३४ गाथा॥ गो. कर्म.।

च्यारिगति का आयु पूर्वैं बांध्या होइ, तौ भी सम्यक्त्व होइ दोष नाहीं। बहुरि अणुव्रत, महाव्रत, देवायु बिना और आयु का बंध जाकै भया होइ, ताकै न होइ इस वचन तैं बद्धायु हो वा अबद्धायु हो, सौ भी सादि-मिथ्यादृष्टी होइ वां अनादि मिथ्यादृष्टि होइ, तहां सादि-मिथ्यादृष्टि कैं जो सम्यक्त्व-मोहनी, मिश्र-मोहनी का सत्त्व पाइए है, तौ ताकै तीन दर्शन-मोह, च्यारि अनंतानुबंधी– ए सात प्रकृति हैं अर जो सम्यक्त्व-मोहनी मिश्रमोहनी का सत्त्व नाही है, तो पंच-प्रकृति हैं अर अनादि-मिथ्यादृष्टि कैं पांच ही प्रकृति हैं।

सो क्षयोपशम, विशुद्धि, देशना, प्रायोग्यता, करण, लब्धि के परिणामनि करि प्रशस्तोपशमन-विधान करि तिनि प्रकृतिनि कौं युगपत् उपशमाइ अंतर्मुहूर्त कालपर्यंत प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं अंगीकार करता कोई जीव, अप्रत्याख्यान कषाय के उदय तैं इकतालीस

१- यह गाथा प्रथम पाद भिन्नता सहित उपलब्ध है। ५६० गाथा कर्म. में प्रथम पाद में 'मिस्सा आहारध्याय है। प्रथम पद का भाव ५६१ गाथा के तृतीयपाद "किदकरणिज्जं जाव दु"

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पाप-प्रकृतिनि का बंध कौं निवारता असंयत हो है। वा कोई जीव प्रत्याख्यान के उदय तैं इकावन-प्रकृति के बंध कौं दूरि करता देश-संयत हो हैं। वा कोई जीव संज्वलन के उदय तैं इकसठि-प्रकृतिनि के बंध कौं दूरि करता अप्रमत्त हो है, सो अप्रमत्त, संख्यात हजारां बार अप्रमत्त तैं प्रमत्त विषैं, प्रमत्त तैं अप्रमत्त विषैं आवै जाय हैं।

सो तिस प्रथमापेशम-सम्यक्त्व के ग्रहण के प्रथम समय तैं गुण-संक्रमणकरि तिस सम्यक्त्व के परिणाम तैं जैसे घरटीकरि कोदों नाज तीन भाग कीजिये, तैसें मिथ्यात्व-द्रव्य कौं मिथ्यात्व, मिश्र, सम्यक्त्व भेदकरि तीन प्रकार करै हैं।

तहां नारकी तौ असंयत ही हो है, सो मनुष्य युत गुणतीस का वा मनुष्य तीर्थयुत तीस का इन दोऊनि कौं तो धर्मादिक-तीन विषैं बांधै हैं। अवशेष पृथ्वीनि विषैं मनुष्य युत गुणतीस के कौं ही बांधै हैं।

इहां प्रश्न– "अविरदादि चत्तारि तित्थयरबंधपारंभया णरा केवलिदुगंते" इस वचन तैं अविरतादि च्यारि गुणस्थानवाले मनुष्य ही केवली-द्विक कैं निकटि तीर्थंकर-बंध के प्रारंभक कहे, नरक विषैं कैसे तीर्थंकर का बंध है ?

तहां समाधान–

जिनकैं पूर्वै नरकायु बंध भया होइ, पीछै प्रथमोपशम वा वेदक-सम्यक्त्व विषैं तीर्थंकर-बंध का प्रारंभ मनुष्य करैं पीछै मरण समय मिथ्यादृष्टि होइ तृतीय पृथ्वी पर्यंत उपजैं। तहां शरीर-पर्याप्ति पूर्ण भए पीछै तिन दोऊनि मैंस्यौं किसी सम्यक्त्व कौं पाइ समय-प्रबद्ध विषैं तीर्थंकर का भी बंध करै हैं।

तहां प्रश्न– जो प्रथमोपशम-सम्यक्त्व की प्राप्ति विषैं साकारोपयोग कह्या है सो नरक विषैं कैसैं संभवै ?

ताका समाधान–तीसरी पृथ्वीपर्यंत देव का संबोधन तैं वा निसर्ग-सहज स्वभाव तैं, तहां भी साकारोपयोग हो है।

इहां प्रश्न– जो निसर्ग विषैं पदार्थनि का अवबोध है कि नाहीं। जौ है तौ वह भी अधिगमज हीभया अर नहीं है तौ तत्त्वज्ञान बिना सम्यक्त्व कैसैं नाम पाया ?

ताका समाधान– दोऊनि विषैं अंतरंगकारण दर्शनमोह का उपशम, क्षय, क्षयोपशम की समानता है, ताकौं होतैं जहां आचार्यादिक का उपेदश करि तत्त्वज्ञान होइ सो अधिगमज है, तीहिं बिना होइ सो निसर्गज है।

बहुरि प्रथमोपशम सम्यग्दृष्टी तिर्यंच असंयत वा देशसंयत होइ, सो देवगतियुत अठाईस के स्थान कौं ही बांधैं है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि प्रथमोपशम-सम्यग्दृष्टि मनुष्य सो असंयत वा देशसंयत वा प्रमत्त तौ देवगतियुत अठाईस का देव तीर्थ सहित गुणतीस का स्थान कौं बांधै हैं। जातैं इस सम्यक्त्व विषैं भी तीर्थंकर-बंध का प्रारम्भ हो हैं।

बहुरि अप्रमत्त ते दोन्यों अर आहारकयुत तीस वा इकतीस— अैसैं च्यारि-स्थान बांधै है। बहुरि प्रथमोपशम-सम्यक्त्वी देश-असंयत ही है, सो उपरिम-ग्रैवेयक पर्यंत ही है, सो मनुष्यगतियुत गुणतीस कौं ही बांधै हैं। तीर्थंकर सहित तीस बांधै नाही, जातैं देवायु का बंध सहित तीर्थंकर-बंधवाले कैं जैसें सम्यक्त्व तैं भ्रष्टता न होइ, तैसैं अबद्धायु-देव कैं भी न होइ। अर सम्यक्त्व तैं भ्रष्ट होइ मिथ्यादृष्टि विषैं प्राप्त भएं बिना प्रथमोपशम-सम्यक्त्व की प्राप्ति नाहीं।

बहुरि द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व कौं वेदक-सम्यग्दृष्टी अप्रमत्त ही तीन-करण के परिणामनि करि सातौं प्रकृतिनि कौं उपशमाय ग्रहण करै है। तिस द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का अंतर्मुहूर्त-काल का प्रथम-समय विषैं देवगतियुत अठाईसकानैं आदि देकरि च्यारि कौं बांधै है, सो यहु उपशम-श्रेणी के चढ़ने कौं तीन-करण करता अधःप्रवृत्तकरण कौं तो सातिशय-अप्रमत्त ही करैं है, सो समय-समय अनंतगुणी विशुद्धता को धारता सातादिक प्रशस्त — प्रकृतिनि कौं गुड, खंड, शर्करा, अमृतरूप च्यारि प्रकार अनुभाग-बंध कौं समय-समय प्रति अनंतगुणा बधावता असाता आदि अप्रशस्त-प्रकृतिनि का अनुभाग-बंध कौं समय-समय अनंतगुणा घटावता निंब, कांजीररूप दोयप्रकार बांधता, बहुरि सर्व प्रकृतीनि का स्थितिबंध कौं घटावता अपूर्वकरण गुणस्थान कौं प्राप्त हो है। ताका प्रथम-समय तैं लगाय छठा-भाग पर्यंत तिनही च्यारि बंधस्थानकनि बांधता, सातवां-भाग विषैं वा अनिवृत्तिकरण विषैं वा सूक्ष्मसांपराय विषैं एक का कौं बांधै है।

बहुरि उपशांत-कषाय विषैं अंत-समय पर्यंत नाम-कर्म कौं न बांधता अनुक्रम तैं उतरि अप्रमत्त-गुणस्थान कौं प्राप्त भया, तहां अप्रमत्त तैं प्रमत्त विषैं प्रमत्त तैं अप्रमत्त विषैं हजारां वार गमनागमन करै, पीछैं प्रमत्त तैं संक्लेश का वश करि प्रत्याख्यानावरण के उदय तैं देशसंयत होइ करि वा अप्रत्याख्यान के उदय तैं असयंत होइ करि प्रमत्तवत् दोय स्थाननि कौं बांधै, अैसैं द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व विषैं आठ गुणस्थान हैं।

बहुरि सो देवायु का बंध सहित जीव चढ़तैं अपूर्वकरण का प्रथम-भाग विना अन्यत्र अर उतर तैं सर्वत्र कहीं जो मरण होइ तौ वैमानिक-देव विषैं यथासंभव उपजै, तहां निर्वृत्ति-अपर्याप्त अवस्था विषैं मनुष्ययुत गुणतीस का वा मनुष्य, तीर्थयुत तीस का स्थान कौं बांधै है।

अैसैं उपशम-सम्यक्त्व कह्या।

बहुरि दोऊ प्रकार के उपशम-सम्यक्त्व विषैं इकतीस-प्रकृतिरूप जो नाम-कर्म का बंधस्थान, ताका सत्त्व सहित प्रमत्त तींहविषैं मिथ्यात्व का उदय न होइ। इकतीस के बंधस्थान की प्रकृतिनि का सत्त्व जाकैं पाइए, सो प्रमत्त तैं मिथ्यादृष्टि विषैं न आवै।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि तीर्थ-सत्त्व, आहारक-सत्त्व लीएं असंयतादिक तीन विषैं अनंतानुबंधी का उदय न होइ ; तातैं तहां तैं तिस सत्त्ववाला सासादन विषैं न आवै। बहुरि तीर्थंकर का सत्त्व होतैं मिश्रमोहनी उदय न हो हैं ; तातैं तहां तैं तिस सत्त्ववाला मिश्रगुणस्थान विषैं न आवै है, जातैं तिस-तिस कर्म का सत्त्वयुक्त जीवनि कैं सो-सो गुणस्थान नाहीं संभवै है। एक जीव कैं तीर्थंकर अर आहारक का सत्त्व होतैं मिथ्यादृष्टि-गुणस्थान न हो है। आहारक का सत्त्व होतैं सासादन न हो है। तीर्थंकर का सत्त्व होतैं मिश्र न हो हैं— असैं जानना।

आगै क्षायिक-सम्यक्त्व का विधान कहिए है— प्रासंगिक गाथा—

दंसणमोहक्खवणापट्ठवगो कम्मभूमिजो मणुजो।
तित्थयरपादमूले केवलिसुदकेवलीमूले॥ ११० ॥ लब्धिसार।
णिट्ठवगो तट्ठाणे विमाणभोगावणीसु धम्मे य।
कदकरणिज्जो चदुसुवि गदीसु उप्पज्जदे जम्हा॥ १११ ॥ लब्धिसार।

दर्शन-मोह की क्षपणा का प्रारंभक तौ कर्मभूमिया मनुष्य तीर्थंकर वा केवली वा श्रुतकेवली के पदमूल विषैं ही हो है अर निष्ठापक तहां ही वा वैमानिक-देव वा भोगभूमिया वा घर्मा-नरकवाला हो है, जातैं कृतकृत्य-वेदक सम्यग्दृष्टी च्यार्यों गति विषैं उपजै है। सोई कहिए है—

सामग्री विशेष संयुक्त असंयतादि च्यारिगुणस्थाननि विषैं कोई गुणस्थानवर्ती जो वेदक-सम्यग्दृष्टी-जीव, सो अधःप्रवृत्तकरण का प्रथम-समय तैं लगाय पूर्वोक्त प्रकार विशुद्धता का बंधना, सातादि प्रशस्त-प्रकृतिनि का अनुभाग-बंध बधावना, असातादि अप्रशस्त-प्रकृतिनि का अनुभाग-बंध घटावना, सर्व प्रकृतिनि का स्थिति-बंध घटावना— ए च्यारि आवश्यक करता तिस अधः प्रवृत्त करण कौं पूर्ण करि अनंतर-समय विषैं अपूर्वकरण कौं प्राप्त भया। तहां तिन पूर्वोक्त च्यारि आवश्यकनि करि सहित समय-समय प्रति जो प्रथमोपशम-सम्यक्त्व की उत्पत्ति विषैं वा देशसयंत विषैं वा सकल-संयत विषैं असंख्यातगुणा, असंख्यातगुणा गुणश्रेणीरूपी द्रव्य है, तिसतैं असंख्यातगुणा अनंतानुबंधी का द्रव्य कहिये परमाणुनि का समूह ताकौं अपकर्षण करि जुदे ग्रहि करि अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण का दोऊ काल तैं इहां गुण-श्रेणी-आयाम का काल किछू अधिक है, तथापि सकल-संयम का गुण-श्रेणी का काल तैं संख्यात गुणा घाति है। तिस विषैं व्यतीत भये पीछे अवशेष जेता रहता जाय तिस गुण श्रेणी काल विषैं तिस अपकर्षण कीए हुए द्रव्य कौं देवै हैं।

भावार्थ— सत्त्वरूप मोहनीयकर्म के परमाणूनि विषैं जेते अनंतानुबंधी के परमाणू हैं, तिनविषैं पूर्वोक्त गुण श्रेणी विषै देने कौं अपकर्षण करि जेते परमाणू जुदे करे, तितने परमाणू तिस पूर्वोक्त गुणश्रेणी का काल के जितने समय होंइ, तिनविषैं समय-समय प्रति असंख्यात-असंख्यात

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणे होइ निर्जरावै है। बहुरि पूर्व तैं असंख्यातगुणा संक्रमद्रव्य कौं संक्रमावै है। अनंतानुबंधी के द्रव्य कौं अन्य-कषायनिरूप परिणमावै है। बहुरि पूर्व तैं असंख्यातगुणे आयाम जो समयनि का जो प्रमाण, ताकौं लीए संख्यात हजार कर्मनि के स्थिति कांडक का स्थान तिनिका घात करै है– पूर्वै सत्ता विषैं कर्मनि की स्थिति थी, ताकौं घटावै है। बहुरि तितने ही नए कर्मनि के स्थिति-बंध का अपसरण जो घटावना, ताकौं करै है। बहुरि एक-एक स्थिति कांडक का घात करने का काल विषैं पूर्व तैं अनंतगुणा अनुभाग के अविभाग-प्रतिच्छेदादिकरूप आयाम कौं लीए अनुभाग-कांडकनि का नाश करै है। ऐसैं करता संता अपूर्वकरण कौं पूर्ण करै है।

तिसके अनंतर-समय विषैं अनिवृत्ति-करण हो है।

अणियट्टे अद्धाए अणस्स चत्तारि होंति पव्वाणि।

सायरलक्खपुधत्तं पल्लं दूरावकिट्टिउच्छिट्ठं ॥ १ ॥ ११३ गाथा ॥ लब्धिसार।

तहां अनिवृत्तिकरण का प्रथम-समय विषैं सत्त्वरूप अनंतानुबंधी की स्थिति पृथक्त्व लक्ष-सागर प्रमाण है। ताके ऊपरि तिस अनिवृत्तिकरण के काल कौं संख्यात का भाग दीजिए, तहां एक-भाग विना अवशेष बहुभाग प्रमाणकाल कौं गएं पल्य का संख्यातवां-भाग प्रमाण एक-एक कांडक जो एक-एक बार इतनी-इतनी स्थिति घटावना, सो ऐसैं संख्यात सहस्र-स्थिति के कांडकनि करि असैनी का बंध के समान हजार सागर प्रमाण स्थिति राखै है।

बहुरि ताके ऊपरि तितने ही प्रमाण कौं लीएं, तितने ही कांडकनि करि चौंद्री का बंध के समान सौ सागर की स्थिति राखै हैं। बहुरि ताके ऊपर तितने प्रमाण कौं लीएं, तितने ही कांडकनि करि तेंद्री का बंध समान पचास-सागर की स्थिति राखै है। बहुरि ताके ऊपरि तितने आयाम कौं लीएं तितने ही कांडकनि करि वेंद्री का बंध समान पचीस सागर की स्थिति राखै है। बहुरि ताके ऊपर तितने आयाम कौं लीएं, तितने ही कांडकनि करि घटाइ एकेंद्री का बंध समान एक सागर स्थिति राखै हैं। बहुरि ताके ऊपरि तितने आयाम कौं लीएं, तितने ही कांडकनि करि घटाइ पल्यप्रमाण स्थिति राखै है।

बहुरि ताके उपरि पल्य का असंख्यातवां-भाग मध्ये एक-भाग बिना बहु-भाग प्रमाण आयाम कौं लीएं, तितने ही कांडकनि करि स्थिति कौं घटाइ दूरापकृष्टि है नाम जाका, ऐसी पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थिति राखै है। बहुरि ताके ऊपरि तितने ही आयाम कौ लीएं, तितने ही कांडकनि करि उच्छिष्टावली है नाम जाका, ऐसी आवलीप्रमाण स्थिति राखै है। इतनीस्थिति अवशेष रहैं विसंयोजन वा उपशमन वा क्षपणा क्रिया न होइ सके ; तातैं याकौं उच्छिष्टावली कहिए, ते अवशेष रहे आवलीकाल के निषेक तिस आवली-कालविषैं एक-एक निषेक करि अन्य-प्रकृतिरूप परिणमि करि गलैं हैं।

ऐसैं अनंतानुबंधी-चतुष्क है, सो तिस उच्छिष्टावली का अंत-समय विषैं विसंयोजनरूप कीया हुवा अन्य बारह-कषाय वा नव नो कषायरूप प्राप्त कीया।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंतो मुहुत्तकालं विस्समिय पुणोवि तिकरणं किरिय।
अणियट्टीए मिच्छं मिस्सं सम्मं कमेण णासेई।। १ ।।११७ गाथा ।। लब्धिसार।

बहुरि ताके अनंतरि अंतर्मुहूर्त विश्राम लेइकरि अनंतानुबंधी का विसंयोजन कीएं पीछै अंतर्मुहूर्त भया तब, बहुरि तीन-करण करै, तहां अनिवृत्तिकरण का काल का संख्यातभागनि में एक-भाग बिना बहुभाग गएं एक-भाग अवशेष रहैं पहिलैं मिथ्यात्व कौं, पीछैं सम्यग्मिथ्यात्व कौं, पीछै सम्यक्त्व-प्रकृति कौं अनुक्रम तैं क्षय करै है।

तहां दर्शन-मोह की क्षपणा का प्रारंभ का प्रथम-समय विषैं स्थायी जो सम्यक्त्वमोहनी की प्रथम स्थिति, ताका काल विषैं अंतर्मुहूर्त अवशेष रहै तहां का अंतसमय पर्यंत तौ प्रस्थापक कहिए। बहुरि तिसके अनंतरि समय तैं प्रथम-स्थिति का अंत निषेक पर्यंत निष्ठापक कहिए, सो प्रस्थापक तौं असंयतादि च्यारि-गुणस्थाननि विषैं कोई गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही है। बहुरि निष्ठापकबद्धायु की अपेक्षा वैमानिक-देव वा घर्मा-नारक वा भोगभूमिया-तिर्यंच वा मनुष्य-निर्वृत्त्यपर्याप्तक भी हो है अर अबद्धायु की अपेक्षा मनुष्य निष्ठापक हो है।

बहुरि कृतकृत्य-वेदक का काल अंतर्मुहूर्त गए पीछैं जीव क्षायिक-सम्यग्दृष्टी हो है। सो यहु क्षायिक-सम्यग्दृष्टी कोई कर्मभूमि का मनुष्य तीर्थबंध का प्रारंभ करि वा न प्रारंभकरि चरम-शरीरी तिस ही भव विषैं क्षपकश्रेणी चढि घातियाकर्महनि सातिशय वा निरतिशय-केवली हो है। अर जो तीसरा-भव विषैं मुक्त होना होइ, तौ देवायु ही कौं बांधि वैमानिक-देवनि ही विषैं उपजि दिव्यभोगनि कौं भोगि चय करि पंद्रह-कर्मभूमिनि विषैं उत्तम-संहनन का धारी होइ घातिकर्मनि कौं नष्ट करै है।

ए क्षायिक-सम्यग्दृष्टी यथासंभव अठाईसका कौं आदि दैकरि पांच-स्थान बांधै हैं।

आगै वेदक विषैं कहिए हैं—

असंयतादिक च्यारि-गुणस्थानवर्ती मनुष्य द्वितीयोपशम-सम्यग्दृष्टी केई मरि वैमानिक-देवनि विषैं असंयत भए ते वेदक-सम्यग्दृष्टि हो हैं। बहुरि कर्मभूमिया मनुष्य प्रथमोपशम-सम्यग्दृष्टी ते अपने अपने उपशम-सम्यक्त्व का अंतर्मुहूर्तकाल गए पीछैं, सम्यक्त्व-मोहनी के उदय तैं वेदक-सम्यग्दृष्टी हो हैं। बहुरिं कर्मभूमियां-मनुष्य सादि-मिथ्यादृष्टि ते सम्यक्त्व-मोहनी के उदय तैं मिथ्यात्व का उदयरूप निषेकनि का अभावकरि असंयतादिक च्यारि-गुण-स्थाननि विषैं मिथ्यात्व तैं वेदक-सम्यग्दृष्टी होइ, तीर्थंकर-प्रकृति कौं बांधै वा कोई जीव न बांधैं, सो ए वेदक-सम्यक्त्वी अर कृतकृत्य-वेदक-सम्यक्त्वी हैं।

ते असंयतादिक तीन तौ अठाईस, गुणतीस के दोय अर अप्रमत्त अठाईसकानैं आदि देकरि च्यारि-स्थानकनि कौं बांधै हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि नरक-गति विषैं प्रथमोपशम-सम्यग्दृष्टी अपने काल के अनंतर-समय कौं प्राप्त होइ करि मिश्रगुणस्थानी वा सादि-मिथ्यादृष्टी होंहिं ते मिश्र-प्रकृति वा मिथ्यात्व-प्रकृति के उदय निषेकनि कौं मिटाइ सम्यक्त्व-प्रकृति के उदय तैं वेदक-सम्यग्दृष्टी होइ करि घर्मादिक तीन विषैं तो तीर्थंकर रहित वा सहित गुणतीस, तीस के स्थाननि कौं बांधै है। शेष पृथ्वीनि विषैं मनुष्यगति सहित गुणतीस के कौं ही बांधै हैं।

बहुरि कर्मभूमिया वा भोगभूमिया तिर्यंच अर भोगभूमियां मनुष्य ते प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कौं छोडि सादि-मिथ्यादृष्टी होइ, ते मिथ्यात्व के उदय निषेकनि कौं मिटाइ सम्यक्त्व-मोहनी के उदय तैं वेदक-सम्यग्दृष्टी होहिं, ते जीव अर भोगभूमियां कृतकृत्य-वेदक-सम्यग्दृष्टी ते देवगति युत अठाईस के कौं ही बांधै हैं।

बहुरि देव कृतकृत्यवेदक-सम्यग्दृष्टी गुणतीसकानै आदि दैकरि दोय-स्थान बांधै हैं।
मनु मती। अर प्रथमोपशम-सम्यग्दृष्टी देव वा देव पर्याय ही विषैं जिनके वेदक-सम्यकत्व
२९ ३०
भया— अैसैं देव हैं, ते मनुष्य युत गुणतीस के कौं ही बांधै हैं। बहुरि भवनत्रिकादिक उपरिम-ग्रैवेयक पर्यंत सादि-मिथ्यादृष्टी जीव तीन करणनि कौ बिना कीएं यथा संभव सम्यक्त्व-मोहनी के उदय तैं मिथ्यात्व कौं छोडि वेदक-सम्यग्दृष्टी होइ मनुष्यगतियुत गुणतीस के कौं ही बांधै है ॥ ५५० ॥

अडवीसतिय दु साणे, मिस्से मिच्छे दु किण्हलेस्सं वा।
सण्णीआहारिदरे, सव्वं तेवीसछक्कं तु ॥ ५५१ ॥

अष्टविंशत्रयं तु साने, मिश्रे मिथ्ये तु कृष्णलेश्या वा।
संज्ञ्याहारेतरयोः, सर्व त्रयोविंशषट्कं तु ॥ ५५१ ॥

टीका – सासादन-सम्यक्त्व विषैं अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन कौं बांधै हैं। तहां निर्वृत्त्यपर्याप्तक वादर-पृथ्वी, अप, प्रत्येक-वनस्पती, वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, सैनी-असैनी तिर्यंच, मनुष्यनि विषैं वा पर्याप्त नारकीनि विषैं वा पर्याप्त-अपर्याप्त भवनत्रिकादि सहस्रार पर्यंत देवनि विषैं गुणतीसकानैं आदि दैकरि दोय ही बांधै हैं। तिम तिउ। बहुरि पर्याप्त-संज्ञी-तिर्यंच, मनुष्य
२९ ३०
विषैं देवगतियुत अठाईस कानैं आदि दैकरि तीन बांधै हैं— दे तिम तिउ। बहुरि पर्याप्त-
२८ २९ ३०
अपर्याप्त आनतादि उपरिम-ग्रैवेयक पर्यंत मनुष्यगति युत गुणतीस के कौं ही बांधै हैं।

बहुरि अनुदिश, अनुत्तरनि विषैं सासादन है नाही।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मिश्ररुचि विषैं अठाईसकानैं आदि दैकरि दोय ही बांधै है। तहां पर्याप्त देव, नारकीनि विषैं मनुष्ययुत गुणतीस के कौं ही बांधै हैं। तिर्यंच, मनुष्य विषैं देवगतियुत अठाईस के कौं ही बांधै हैं। अनुदिश, अनुत्तर विषैं मिश्र है नाहीं।

बहुरि मिथ्यारुचि विषैं कृष्णलेश्यावत् तेईसकानैं आदि दैकरि छह-स्थाननि कौं बांधै है। तहां निर्वृत्त्यपर्याप्त, पर्याप्त-नारकीनि विषैं छह-पृथ्वीनि विषैं तिर्यंच मनुष्यगतियुत गुणतीस, तीस के कौं बांधै है। सातवी-पृथ्वी विषैं तिर्यंचगतियुत ही दोऊनि कौं बांधै है। बहुरि तिर्यंचगति विषैं लब्धि-अपर्याप्त, निर्वृत्त्यपर्याप्तक वादर-सूक्ष्म पृथ्वी, अप, तेज, वायु, साधारण-प्रत्येक वनस्पती, वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री, असैनी-सैनी तिर्यंच अर मनुष्यनि विषैं अठाईस का विना तेईसकानैं आदि दैकरि पंचस्थान बांधै हैं।

तहां विशेष– जो तेज, वायु विषैं मनुष्यगतियुत पचीस, गुणतीस का नाहीं बंधै हैं। बहुरि-पर्याप्त-असंज्ञी-संज्ञी तिर्यंच वा मनुष्यनि विषैं तेईसकानैं आदि दैकरि छह बांधै। बहुरि लब्धि-अपर्याप्त निर्वृत्त्यपर्याप्तक मनुष्यनि विषैं अठाईस का बिना पांच ही बांधैं हैं । बहुरि देवगति विषैं निर्वृत्त्यपर्याप्तक वा पर्याप्त विषैं भवनत्रिकादिक ईशान पर्यंत तौ पचीस, छब्बीस, गुणतीस, तीस के च्यारि बांधै हैं। अर सनत्कुमारादि दश स्वर्गनि विषैं गुणतीसकानैं आदि दैकरि दोय बांधै हैं। आनतादि उपरिम-ग्रैवेयक पर्यंतनि विषैं गुणतीस का ही बांधैं है। अनुदिश, अनुत्तरनि विषैं मिथ्यादृष्टि है नाहीं। इहां प्रासंगिक-गाथा कहिए है–

चदुरेक्कदुपण पंच य छत्तिगठाणाणि अप्पमत्तंता।
तिण्गुवसमगे संते त्तियतियतियदोण्णि गच्छंति॥ १॥ ५५६ कर्मकाण्ड।

निज गुणस्थान कौं छांडि अनंतर समय विषैं किस-किस गुणस्थान कौं प्राप्त होइ ? सो कहिए है– मिथ्यादृष्टी है सो सासादन, प्रमत्त विना अप्रमत्तपर्यंत च्यारि गुणस्थाननि कौं प्राप्त हो है। सासादन है सो एक मिथ्यादृष्टि को ही प्राप्त हो है। मिश्र है सो मिथ्यादृष्टि अर असंयत इन दोय कौं प्राप्त हो है। असंयत अर देशसंयत ए दोऊ हैं, ते प्रमत्त विना अप्रमत्तपर्यंत पांच, पांच कौं प्राप्त हो हैं। प्रमत्त है सो अप्रमत्त पर्यंत छह कौं प्राप्त हो है। अप्रमत्त वा अपूर्वकरणादि तीन उपशम-श्रेणीवाले आप तैं ऊपरले-गुणस्थान चढ़ैं वा नीचले गुणस्थान उतरैं, मरण होइ तौ देव पर्यायरूप असंयत होइ, ऐसैं तीन-तीन कौं प्राप्त हो हैं। उपशांत-कषाय उतरै तौ सूक्ष्मसांपराय विषैं आवै, मरण होइ तौ देव असंयत होइ– ऐसैं दोय कौं प्राप्त हो है।

तहां गति अपेक्षा नारकी-मिथ्यादृष्टी है सो मिश्र, असंयत कौं, सासादन है, सो मिथ्यादृष्टि ही कौं, मिश्र है सो मिथ्यादृष्टि, असंयत कौ, असंयत है सो मिश्रपर्यंत तीन कौं प्राप्त हो है।

बहुरि तिर्यंच मिथ्यादृष्टि है, सो मिश्रादि देशसंयत पर्यंत तीन कौं, सासादन है, सो मिथ्यादृष्टि ही कौं, मिश्र है सो मिथ्यादृष्टी असंयत कौं, असंयत है सो देश-संयतपर्यंत च्यारि कौं, देशसंयत है सो असंयत पर्यंत च्यारि कौं प्राप्त हो है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मनुष्य-मिथ्यादृष्टि है, सो सासादन, प्रमत्त विना अप्रमत्त पर्यंत च्यारि कौं, सासादन है सो मिथ्यादृष्टी ही कौं, मिश्र है सो मिथ्यादृष्टि वा असंयत कौं, असंयत है, सो प्रमत्त विना अप्रमत्त पर्यंत पांच कौं, देशसंयत है, सो भी प्रमत्त बिना अप्रमत्त पर्यंत पांच कौं, प्रमत्त है सो अप्रमत्त पर्यंत छह कौं, अप्रमत्त है सो प्रमत्त वा अपूर्वकरण वा मरण भएं देव-असयंत कौं, अपूर्वकरण है सो चढने विषैं अनिवृत्तिकरण कौं उतरतैं अप्रमत्त कौं मरण भएं देव-असंयत कौं, अनिवृत्तिकरण है, सो चढने विषैं सूक्ष्मसांपराय कौं, उतरने विषैं अपूर्वकरण कौं, मरण भएं देव-असंयत कौं, सूक्ष्मसांपराय है, सो चढने विषैं उपशांत-कषाय कौं, उतरने विषैं अनिवृत्तिकरण कौं, मरण भएं देव-असंयत कौं, उपशांत-कषाय है, सो उतरने विषैं सूक्ष्मसांपराय कौं, मरण भएं देव-असंयत कौं प्राप्त हो है।

बहुरि क्षपकश्रेणी विषैं चढना ही है उतरना नाहीं ; तातैं अपूर्वकरण-अनिवृत्तिकरण कौं, अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसांपराय कौं सूक्ष्मसांपराय क्षीणकषाय कौं, क्षीणकषाय-सयोगी कौं, सयोगी-अयोगी कौं, अयोगी-सिद्धपद कौं प्राप्त हो है।

बहुरि देव-मिथ्यादृष्टि है, सो मिश्र अर असंयत कौं, सासादन है सो मिथ्यादृष्टि कौं, मिश्र है सो मिथ्यादृष्टि अर असंयत कौं, असंयत है सो मिश्रपर्यंत तीन कौं प्राप्त हो है।

बहुरि संज्ञी अर आहारमार्गणा विषैं नामकर्म के सर्व बंधस्थान हैं। असंज्ञी-अनाहारक विषैं तेवीसकानैं आदि देकरि छह ही हैं, तहां संज्ञी विषैं नारकी विषैं तौं, गुणतीस, तीस के दोय हैं, तिम तिउमती बहुरि तिर्यंच विषैं तीर्थंकर, आहारक-वर्जित छह-स्थान हैं। बहुरि मनुष्य विषैं

२९ ३०

सर्व-स्थान हैं। देवविषैं अठाईस का बिना पचीसकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं ए प २५ ए प २६ आउ तिम २९ तिउ मती ३०।

बहुरि असंज्ञी-मार्गणा विषैं लब्धि-अपर्याप्त, निर्वृत्त्यपर्याप्त, पर्याप्त, वादर-सूक्ष्म-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, साधारण, प्रत्येक, वेन्द्री, तेन्द्री, चौंद्री, पंचेन्द्रीनि विषैं तीर्थंकर, आहारक-रहित छह-स्थान हैं।

बहुरि आहार-मार्गणा विषैं देवनरक विषैं गुणतीस, तीस के तिर्यंच विषैं तेईसकानै आदि दैकरि छह, मनुष्य विषैं सर्व-स्थान हैं। अनाहार-मार्गणा विषैं विग्रहगति विषैं देवनरक विषैं गुणतीस, तीस के दोय, पूर्वोक्त गुणतीस प्रकार तिर्यंचनि विषैं तेईसकानैं आदि दैकरि छह तिनविषैं देवयुत अठाईस का असंयत ही विषैं संभवै है।

मनुष्यविषैं तेईसकानैं आदि दैकरि छह— ए अ २३ ए प वि ति च प म २५ ए प अ उ २६ दे २८ वि ति च प म दे ती २९ वि ति च पं उ इहां ३० सैनानीनि विषैं विशेषनि का आदि-अक्षर जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अैसैं नामकर्म के बंधस्थान मार्गणानि विषैं जानने, जातैं तत्त्वरुचि-सम्यक्त्व है। तत्त्वनि का सम्यग्ज्ञान बोध है। तिन सहित जीवनि का न विराधना चारित्र है– सोई मोक्षमार्ग है ॥ ५५१ ॥

आगैं पुनरुक्त-भंगनि कौं कहैं हैं–

णिरयादिजुदट्ठाणे, भंगेणप्पप्पणम्मि ठाणम्मि।
ठविदूणमिच्छभंगे, सासणभंगा हु अत्थित्ति॥ ५५२ ॥
अविरदभंगे मिस्सय, देसपमत्ताण सव्वभंगा हु।
अत्थित्ति ते दु अवणिय, मिच्छाविरदापमादेसु॥ ५५३ ॥ जुम्मं॥

निरयादियुतस्थाने, भंगेनात्मात्मनि स्थाने।
स्थापयित्वा मिथ्यभंगे, सासनभंगा हि अस्तीति॥ ५५२ ॥
अविरतभंगे मिश्रक, देशप्रमत्तानां सर्वभंगा हि।
अस्तीति तांस्तु अपनीय, मिथ्याविरताप्रमादेषु॥ ५५३ ॥ जुम्मं॥

टीका – नरक आदि गतियुत स्थान, तिनकौं अपने-अपने भंगनि करि सहित अपने-अपने गुणस्थाननि विषैं स्थापने। तहां मिथ्यादृष्टि के बंधस्थाननि के भंगनि विषैं सासादन के बंधस्थाननि के भंग आयगए अर असंयत के बंधस्थाननि के भंगनि विषैं मिश्र, देशसंयत, प्रमत्त के बंधस्थाननि के भंग आय गए, जातैं इनिके भंगनि कैं परस्पर समानता पाइए है ; तातैं सासादनि के भंगनि कौं घटाइकरि अर मिश्र, देशसंयत, प्रमत्त के भंग घटाइ करि मिथ्यादृष्टि असंयत, अप्रमत्त विषैं बंधस्थाननि के भंग हो हैं।

तहां मिथ्यादृष्टि विषैं नरकयुत अठाईस का स्थान विषैं भंग एक है। तिर्यंच-गतियुत तेईस का विषैं एक, पचीस का विषैं आठ, छब्बीस का विषैं आठ, गुणतीस का विषैं छियालीससैं आठ, तीस का विषैं छियालीससै आठ भंग हैं। मनुष्ययुत पचीस का विषैं एक गुणतीस का विषैं छियालीससै आठ-भंग हैं। देवगतियुत अठाईस का विषैं आठ-भंग हैं।

बहुरि सासादन विषैं नरक-गतियुत नाहीं है। तिर्यंचगतियुत गुणतीस का विषैं बत्तीससै, तीस का विषैं बत्तीससै, मनुष्यगतियुत गुणतीस का विषैं बत्तीससै, देवगतियुत अठाईस का विषैं आठ भंग हैं।

बहुरि मिश्र, असंयत विषैं नरक, तिर्यंच-गतियुत स्थान नाही हैं ; तातैं मिश्र विषैं मनुष्यगतियुत गुणतीस का विषैं "च्यारि भंग हैं। देवयुत अठाईस का विषैं आठ हैं। बहुरि असंयत विषैं मनुष्ययुत गुणतीस, तीस का ; देवयुत अठाईस, गुणतीस, का इन च्यारयों विषैं आठ-आठ भंग हैं।" देश-संयत, प्रमत्त विषैं देवयुत अठाईस, गुणतीस का विषैं आठ-आठ भंग हैं॥ ५५२-५५३ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भुजगारा अप्पदरा, अवट्ठिदावि य सभंगसंजुत्ता।
सव्वपरट्ठाणेण य, णेदव्वा ठाणबंधम्मि॥ ५५४॥

भुजाकारा अल्पतरा, अवस्थिता अपि च स्वभंगसंयुक्ताः।
सर्वपरस्थानेन च, नेतव्याः स्थानबंधे॥ ५५४॥

टीका – ते पूर्वोक्त बंध हैं, ते भुजाकार अल्पतर अवस्थित, चकार तैं अवक्तव्य– अैसैं च्यारि-प्रकार हैं। ते अपने-अपने भंगनिकरि संयुक्त नामकर्म के बंधस्थाननि विषैं स्वस्थान वा परस्थान वा सर्वपरस्थान करि सहित ल्यावने॥ ५५४॥

तिन स्वस्थानादिकनि का लक्षण कहैं हैं–

अप्पपरोभयठाणे, बंधट्ठाणाण जो दु बंधस्स।
सट्ठाण परट्ठाणं, सव्वपरट्ठाणमिदि सण्णा॥ ५५५॥

आत्मपरोभयस्थानानि, बंधस्थानानां यत्तु बंधस्य।
स्वस्थानं परस्थानं, सर्वपरस्थानमिति संज्ञा॥ ५५५॥

टीका – आत्मस्थान कहिए विवक्षित निज-गुणस्थान अर परस्थान कहिए तिस विवक्षित-गुणस्थान तैं अन्य-गुणस्थान अर उभयस्थान कहिए अन्य ही गति अर अन्य ही गुणस्थान, सो इन तीनौं विषैं मिथ्यादृष्टि, असंयत, अप्रमत्त के बंधस्थान संबंधी भुजाकारादिक-बंध, सो अनुक्रम तैं स्वस्थानभुजाकारादिक, परस्थान-भुजाकारादिक, सर्व परस्थान भुजाकारादिक अैसी तीन संज्ञा-धारक हो हैं॥ ५५५॥

चदुरेक्कदुपण पंच य, छत्तिगठाणाणि अप्पमत्तंता।
तिसु उवसमगे संते, त्ति य तियतिय दोण्णि गच्छंति॥ ५५६॥

चतुरेकद्विपंच पंचच, षट्त्रिकस्थानान्यप्रमत्तातांः।
त्रिषु उपशामके शांत, इति च त्रिकत्रिकं द्वे गच्छंति॥ ५५६॥

टीका – मिथ्यादृष्ट्यादिक निज-निज गुणस्थान कौं छोडैं अनुक्रम तैं च्यारि, एक दोय, पाँच, पाँच, छह, तीन, गुणस्थानकनि कौं अप्रमत्तपर्यंतवाले प्राप्त हो हैं। बहुरि अपूर्वकरणादिक तीन उपशमवाले तीन, तीन कौं, उपशांत-कषायवाले दोय गुणस्थानकनि कौं प्राप्त हो हैं॥ ५५६॥

ते गुणस्थान कौंन ? सो कहैं हैं–

सासणपमत्तवज्जं, अपमत्तंतं समल्लियइ मिच्छो।
मिच्छत्तं बिदियगुणो, मिस्सो पढमं चउत्थं च॥ ५५७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अविरदसम्मो देसो, पमत्तपरिहीणमप्पमत्तंतं।
छट्ठाणाणि पमत्तो, छट्ठगुणं अप्पमत्तो दु ॥ ५५८ ॥ जुम्मं।

सासनप्रमत्तवर्ज्यं, मप्रमत्तांतं समाश्रयति मिथ्यः।
मिथ्यात्वं द्वितीयगुणो, मिश्रः प्रथमं चतुर्थं च ॥ ५५७ ॥
अविरतसम्यो देशः, प्रमत्तपरिहीनमप्रमत्तांतं।
षट्स्थानानि प्रमत्तः, षष्ठगुणमप्रमत्तस्तु ॥ ५५८ ॥ युग्मम्।

टीका – मिथ्यादृष्टी है सो सासादन, प्रमत्त कौं वर्जि करि मिश्रादिक अप्रमत्त पर्यंत च्यारि-गुणस्थाननि कौं प्राप्त हो हैं। बहुरि दूसरा सासादन-गुणस्थानवर्ती, सो मिथ्यादृष्टि ही कौं प्राप्त हो है। बहुरि मिश्र है, सो पहिला अर चौथा गुणस्थाननि कौं प्राप्त होहै। बहुरि असंयत, देशसंयत है, सो प्रमत्त बिना अप्रमत्तपर्यंत पांच-पांच गुणस्थाननि कौं प्राप्त हो है। बहुरि प्रमत्त है, सो अप्रमत्त पर्यंत छह कौं प्राप्त हो है। बहुरि अप्रमत्त, छठे गुणस्थान कौं अर 'तु' शब्द तैं उपशमक-क्षपक अपूर्वकरण कौं वा मरण भएं देव-असंयत को प्राप्त हो है ॥ ५५७-५५८ ।।

उवसामगा दु सेढिं, आरोहंति य पडंति य कमेण।
उवसामगेसु मरिदो, देवतमत्तं समल्लियई ॥ ५५९ ॥

उपशामकास्तु श्रेणि, मारोहयंति च पतंति च क्रमेण।
उपशामकेषु मृतो, देवतमत्वं समाश्रति ॥ ५५९ ॥

टीका – अपूर्वकरणादिक उपशमश्रेणीवाले उपशमश्रेणी कौं अनुक्रम तैं चढै हैं अर अनुक्रम तैं ही उतरैं हैं। बहुरि उपशम-श्रेणी विषैं मरे हुए महर्द्धिक देव हो हैं। "तहां एक ऊपरला-गुणस्थान चढने का, एक नीचला गुणस्थान उतरने का, मरण भएं एक देव-असंयत– ऐसैं तीन-तीन स्थाननि कौं अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय प्राप्त हो हैं। उपशांत-कषाय तैं चढै नाही ; तातैं एक पडने का सूक्ष्मसांपराय अर मरण भएं देव-असंयत इन दोय ही कौं प्राप्त हो हैं" ॥ ५५९ ॥

उपशम-श्रेणी विषैं मरण कहाँ हो है ? सो कहने के अर्थि सूत्र कहैं हैं–

"मिस्सा आहारस्स य, खवगा चडमाणपढमपुव्वा य।
पढमुवसम्मा तमतम, गुणपडिवण्णा य ण मरंति ॥ ५६० ॥

मिश्राहाराश्रयकाः, क्षपकाः चटमानप्रथमापूर्वाश्च।
प्रथमोपशमसम्यक्त्वास्त, मस्तमोगुणप्रतिपन्नाश्च न मरंति ॥ ५६० ॥

टीका – मिश्र गुणस्थानवर्ती अर निर्वृत्त्यपर्याप्त अवस्थारूप मिश्रकाययोगी अर क्षपकश्रेणीवाले अर चढतैं अपूर्वकरण, उपशमक का प्रथमभागवाले अर प्रथमोपशम-सम्यक्त्व

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

के धारक अर महातमप्रभा पृथ्वी के सासादन, मिश्र, असंयत-नारकी ए मरण कौं प्राप्त न हो हैं ॥ ५६० ॥

अणसंजोजिदमिच्छे, मुहुत्तअंतं तु णत्थि मरणं तु।

किदकरणिज्जं जाव दु, सव्वपरट्ठाण अट्ठपदा॥ ५६१ ॥"

अनसंयोगे मिथ्ये, मुहूर्तांतरिति नास्ति मरणं तु।

कृतकरणीय यावत्तु, सर्वपरस्थानान्यष्टपदानि॥ ५६१ ॥

टीका – अनंतानुबंधी का विसंयोजन करि जो मिथ्यात्व कौं प्राप्त होय, ताका अंतर्मुहूर्त पर्यंत मरण नाहीं है। बहुरि दर्शनमोह का क्षय करनेवाला है, सो यावत् कृतकृत्यपणा होय तावत् मरै नाहीं ॥ ५६१ ॥

कृतकृत्यपणां भएं पीछैं मरै, सो बद्धायु-कृतकृत्य प्रति पूर्वोक्त तीन-स्थाननि विषैं सर्वपरस्थाननि का अर्थवान पद हैं। तिनकौं कहै हैं–

देवेसु देवमणुवे, सुरणरतिरिये चउग्गईसुंपि।

कदकरणिज्जुप्पत्ती, कमसो अंतोमुहुत्तेण॥ ५६२ ॥

देवेषु देवमनुष्ये, सुरनरतिरश्चि चतुर्गतिष्वपि।

कृतकरणीयोत्पत्तिः, क्रमशोऽतर्मुहूर्तेन॥ ५६२ ॥

टीका – कृतकृत्यवेदक-काल अंतर्मुहूर्त है, ताका च्यारि-भाग कीजिए, तहां क्रम तैं प्रथम-भाग का अंतर्मुहूर्त करि मरया हूवा देव विषैं उपजै है। दूसरा का देव विषैं वा मनुष्य विषैं, तीसरा का देव वा मनुष्य वा तिर्यंच विषैं, चौथा भाग का देव वा मनुष्य वा तिर्यंच वा नरकनि विषैं एक विषैं उपजै हैं ॥ ५६२ ॥

तिविहो दु ठाणबंधो, भुजगारप्पदरवट्ठिदो पढमो।

अप्पं बंधंतो बहु,बंधे बिदियो दु विवरीयो॥ ५६३ ॥

तदियो सणामसिद्धो, सव्वे अविरुद्धठाणबंधभवा।

ताणुप्पत्तिं कमसो, भंगेण समं तु वोच्छामि॥ ५६४ ॥ जुम्मं।

त्रिविधस्तु स्थानबंधो, भुजाकारात्पतरावस्थितः प्रथमः।

अल्प बध्नन् बहुबंधे द्वितीयस्तु विपरीतः॥ ५६३ ॥

तृतीयः स्वनामसिद्धः, सर्वे अविरुद्धस्थाबंधभवाः।

तेषामुत्पत्तिं क्रमशो, भंगेन समं तु वक्ष्यामि॥ ५६४ ॥

टीका – बहुरि नामकर्म के बंधस्थान तीन प्रकार है– भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित, तहां पहिलैं थोरी प्रकृतिनि कौं बांधे ता पीछैं बहुत प्रकृतिनि कौं बांधें तहां पहिला भुजाकार-बंध

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कहिए। बहुरि पहलैं बहुत प्रकृतिनि कौं बांधै ता पीछैं थोरी प्रकृतिनि कौं बांधै, तहां दूसरा अल्पतर-बंध कहिए है। बहुरि तीसरा अपने नाम ही तैं सिद्ध है, जितनी प्रकृति का पूर्व समय विषैं बंध होइ, तितनी का ही पीछैं अनंतर-समय विषैं होइ, तहां अवस्थित कहिए। ते सर्व भुजाकारादिक हैं, ते अविरुद्ध-बंधस्थाननि करि उपजै हैं। तिनकी उत्पत्ति कौं क्रम तैं भंगनि करि सहित कहौं हौं ॥ ५६३-५६४ ॥

सो कहिए हैं—

भूबादरतेवीसं, बंधंतो सव्वमेव पणुवीसं।
बंधदि मिच्छाइट्ठी, एवं सेसाणमाणेज्जो ॥ ५६५ ॥

भूवादरत्रयोविंशं, बध्नन् सर्वमेव पंचविंशतिं।
बध्नाति मिथ्यादृष्टिः, एवं शेषाणामानेयः ॥ ५६५ ॥

टीका – वादर-पृथ्वी-कायादिक इकतालीस पद पूर्वैं कहे थे, तिनविषैं भंगनि सहित स्थान कहिए हैं। तहां अपर्याप्त-पृथ्वी, अप, तेज, वायु साधारण इनके सूक्ष्म-वादर अर प्रत्येक— अैसें एकेन्द्री के ग्यारह भेदनि करि तेईस का बंध-स्थान ग्यारह प्रकार है। तहां भंग एक-एक ही हैं; तातैं ग्यारह भए। बहुरि पचीस का स्थान विषैं वादर-पर्याप्त-पृथ्वी, अप, तेज, वायु प्रत्येक भेदरूप पंच तिन विषैं तौ स्थिर, शुभ, यश-युगल तैं भए आठ-आठ भंग पाइए, तिनके चालीस भए।

बहुरि पर्याप्त, वादर, साधारण अर सूक्ष्म पृथ्वी, अप तेज, वायु, साधारण इन रूप छह विषैं स्थिर शुभ युगल तैं च्यारि-च्यारि भंग पाइए, तिनके चौईस भए। बहुरि अपर्याप्त वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री, असंज्ञी-संज्ञी पंचेन्द्री तिर्यंच अर मनुष्य इन रूप छह विषैं अप्रशस्तनि का ही बंध हैं; तातैं एक-एक ही भंग हैं, तिनके छह भए।

अैसें सर्व पचीस का स्थान विषैं सत्तरि भेद भए।

बहुरि छब्बीस का स्थान विषैं वादर-पृथ्वी-काय-आताप युत अर उद्योतयुत दोय तौ ए अर उद्योतयुत अप्-काय, वनस्पतीकाय इन च्यारिरूप विषैं स्थिर, शुभ, यश युगल तैं आठ-आठ भंग हैं, तिनकें सर्व छबीस के स्थान विषैं बत्तीस भेद भए।

बहुरि अठाईस का स्थान विषैं देवगतियुत विषैं तौ तिन तीन युगलनि तैं आठ-भंग पाइए अर नरकगतियुत विषैं अप्रशस्तनि ही का बंध है; तातैं एक ही भंग पाइए। अैसै अठाईस के स्थान विषैं नव-भेद जानने।

बहुरि गुणतीस के स्थान विषैं पर्याप्त-वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री, पंचेन्द्रीरूप च्यारि विषैं तौ तिनही तीन युगलनि तैं आठ-आठ भंग, तिनके बत्तीस अर तिर्यंचगतियुत, मनुष्यगतियुत— इन दोय विषैं प्रत्येक संस्थान, संहनन, सप्त युगलनि तैं छियालीससै आठ भंग, तिनके वाणवैसै सोला— अैसैं गुणतीस के स्थान विषैं वाणवैसै अडतालीस भेद भए।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि तीस के विषैं उद्योतयुत पर्याप्त वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री, पंचेन्द्रीयुत च्यारि विषैं तौ तिनही तीन युगलनि तैं आठ-आठ भंग, तिनके बत्तीस अर संज्ञी-तिर्यंच-उद्योतयुत एक विषैं छियालीससै आठ भंग– अैसैं तीस के स्थान विषैं छियालीससै चालीस भेद भए।

ए मिथ्यादृष्टि-गुणस्थान विषैं बंधस्थान हैं, सो इनतैं भुजाकारादिक नानाकाल की अपेक्षा कहिए है–

सो पहिलैं तेईस का स्थान कौं बांधता था, पीछै पचीसकानैं आदि दैकरि बांधै, तहां भुजाकार-बंध होइ। तहां वादर-पृथ्वी-काययुत तेवीस के एक भेद कौं बांधता, पीछै पचीसकानैं आदि दैकरि स्थाननि के सर्व-भेदनि कौं बांधै तेवीसके ग्यारह-भेदनि कौं बांधता कितने भेदनि कौं बांधै ? अैसैं पंच-त्रैराशिक करने तिन पंच-त्रैराशिकनि विषैं प्रमाणराशि तौ तेवीसका का एक ही भेद सर्वत्र जानना। बहुरि फलराशि अनुक्रम तैं पचीसके के सत्तरि भेद, छबीसके के बत्तीस भेद, अठाईसके के नव भेद, गुणतीसके के वाणवैसै अडतालीस भेद, तीसके के छियालीससै चालीस भेद। बहुरि इच्छाराशि सर्वत्र तेवीस के ग्यारह भेद।

सो फल कौं इच्छाकरि गुणैं प्रमाण का भाग दीएं ए सब भेदनि का प्रमाण हो है, सो सर्व इच्छाराशि ग्यारह ही है, तातैं सर्व फलराशि ७० । ३२ । ९ । ९ । २४८ । ४६४० । का जोड दीएं तेरह हजार नवसै निन्याणवै गुण्य भए, तिनकौं इच्छाराशिरूप ग्यारह गुणकारकरि गुणिए तब एकलाख तरेपन हजार नवसै निवासी (१५३९८९) भेद भए। प्रमाणराशि एक ही है, तिसका भाग दीएं भी तितने ही रहैं, सो इतने तौ तेईस के भुजाकार भए।

बहुरि पचीस का बंध करि ता पीछैं छबीस कानैं आदि दैकरि बांधैं, तब भुजाकार होइ, सो एक भेदरूप पचीसका का बंधकरि छबीस आदि सवनिके सर्वभेदनि का बंध होइ, तौ पचीसके के सत्तरि-भेदनि करि कितने बंध हो है ? अैसैं च्यारि-त्रैराशिक करने। तिनविषैं प्रमाणराशि सर्वत्र पचीसके का एक भेद, फलराशि क्रम तैं छबीसके के बत्तीस भेद, अठाईसके के नव भेद, गुणतीसके के वाणवैसे अडतालीस भेद, तीसके के छियालीससे चालीस भेद इच्छाराशि सर्वत्र पचीसके के सत्तरि भेद। सो सर्व फलराशि का जोड दीएं ३२ । ९ । ९ । ९२४८ । ४६४० । तेरह हजार नवसै गुणतीस भए। तिनकौ इच्छाराशि सत्तरिकरि गुणिए तब नव लाख पिचहत्तरि हजार तीस भए, सो इतने पचीसके के भुजाकार जानने।

बहुरि छबीसका का बंध कर ता पीछैं अठाईस आदिक का बंध करै, तब भुजाकार होय सो छव्वीसके का एक भेद का बन्ध कर सर्व अट्ठाइस का आदि सबनि के सब भेदन का बंध करै तो छबीसके के बत्तीस-भेदनिकरि कितने बंध भेद होइ ? अैसैं इहां तीन-त्रैराशिक करने। तिनविषैं प्रमाणराशि तौ सर्वत्र छबीसके का एक भेद, फलराशि क्रम तैं अठाईसके का नव भेद, गुणतीसके का वाणवैसै अठतालीस भेद तीसके का छियालीससै चालीस भेद इच्छाराशि सर्वत्र छबीस के बत्तीस भेद। सो सर्व फलराशि का जोड दीएं ९ । ९२४८ । ४६४० । तेरह हजार आठसै सित्याणवै होंइ, तिनकौं इच्छाराशि बत्तीस करि गुणैं च्यारि लाख चवालीस हजार सातसै च्यारि होइ। सो इतने छबीस के भुजाकार जानने।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि अठाईसके का बंध कर तापीछैं गुणतीस, तीस का बंध करै तब भुजाकार होइ, सो एक प्रकार अठाईसके का बंध करि गुणतीस, तीस के सब भेदनि का बंध करै, तब नवप्रकार अठाईस के करि कितने बंध भेद होंइ ? ऐसैं दोय त्रैराशिक करने।

तिनविषैं प्रमाणराशि सर्वत्र अठाईसके का एक भेद, फलराशि क्रम तैं गुणतीसके का बाणवैसे अठतालीस भेद, तीसके का छियालीससै चालीस भेद, इच्छाराशि सर्वत्र अठाईसके का नव भेद, सो फलराशि का जोड दीएं ९२४८। ४६४०। तेरह हजार आठसै अठ्यासी तिनकौं इच्छाराशि नवकरि गुणैं एक लाख चौइस हजार नवसै वाणवै होंइ, सो इतने अठाईसके के भुजाकार हैं।

बहुरि गुणतीसके का बंध कर ता पीछैं तीसके का बंध करैं, तब भुजाकार होइ, सो गुणतीसके के एक भेद कौं बंध करता तीसके के सर्व भेदनि कौं बंध करै, तौ गुणतीसके के वाणवैसै अठतालीस भेदनि करि केते बंध भेद होंइ ? ऐसैं एक त्रैराशिक भया। तिसविषैं प्रमाणराशि गुणतीसके का एक भेद, फलराशि तीसके के छियालीससै चालीस भेद, इच्छाराशि गुणतीसके के बाणवैसे अठतालीस भेद, सो फलराशि छियालीससै चालीस कौं इच्छाराशि वाणवैसे अठतालीस करि गुणिए, तब च्यारि कोडि गुणतीस लाख दश हजार सातसै बीस भेद होंइ, सो इतने गुणतीसके के भुजाकार भए॥ ५६५ ॥

नाम-कर्म के स्थाननि का भुजाकार-बंध ल्यावने कौ त्रैराशिक-यंत्र

२३ १	३० ४६४०	२३ ११	२५ १	३० ४६४०	२५ ७०	२६ १	३० ४६४०	२६ ३२	२८ १	३० ४६४०	२८ ९	२९ १	३० ४६४०	२९ ९२४८
२३ १	२९ ९२४८	२३ ११	२५ १	२९ ९२४८	२५ ७०	२६ १	२९ ९२४८	२६ ३२	२८ १	२९ ९२४८	२८ ९	प्रमाण	फल	इच्छा
२३ १	२८ ९	२३ ११	२५ १	२८ ९	२५ ७०	२६ १	२८ ९	२६ ३२	प्रमाण	फल	इच्छा			
२३ १	२६ ३२	२३ ११	२५ १	२६ ३२	२५ ७०	प्रमाण	फल	इच्छा						
२३ १	२५ ७०	२३ ११	प्रमाण	फल	इच्छा									
प्रमाण	फल	इच्छा												

तेवीसट्ठाणादो, मिच्छत्तीसोत्ति बंधगो मिच्छो।
णवरि हु अट्ठावीसं, पंचिंदियपुण्णगो चेव॥ ५६६ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

त्रयोविंशतिस्थानान्मिथ्यात्वत्रिंशदिति बंधको मिथ्यः ।
नवरि हि अष्टाविंशं, पंचेन्द्रियपूर्णकश्चैव ॥ ५६६ ॥

टीका – ए तेवीस का आदि तैं लगाय मिथ्यादृष्टि विषैं बंध-योग्य तीस के स्थानपर्यंतनि के कहे भुजाकार, तिन कूं मिथ्यादृष्टी-जीव बांधै है । संदृष्टि– २३ २५ २६ २८ २९

१५३९८९ ९७५०३० ४४४७०४ १२४९९२ ४२९१०७२०

तहां विशेष जो अठाईसके कौं पर्याप्त-पंचेन्द्री ही बांधै है ॥ ५६६ ॥

तथा भोगभूमिया कैं तिनकौं कहैं हैं–

भोगे सुरट्ठवीसं, सम्मो मिच्छो य मिच्छगअपुण्णे ।
तिरिउगतीसं तीसं, णरउगुतीसं च बंधदि हु ॥ ५६७ ॥

भोगे सुराष्टविंशं, सम्यो मिथ्यश्च मिथ्यकापूर्णे ।
तिर्यगेकोनत्रिंशत् नरैकोनत्रिंशच्च बध्नाति हि ॥ ५६७ ॥

टीका – भोगभूमिया विषैं पर्याप्त-पंचेन्द्री सम्यग्दृष्टी वा मिथ्यादृष्टी चकार तैं निर्वृत्त्यपर्याप्त-सम्यग्दृष्टी है, सो देवगतियुत अठाईस के कौं ही बांधै है । बहुरि निर्वृत्त्यपर्याप्तक मिथ्यादृष्टी-तिर्यंचगतियुत गुणतीस, तीस कौं अर मनुष्यगतियुत गुणतीस के कौं बांधै है ॥ ५६७ ॥

मिच्छस्स ठाणभंगा, एयारं सदरि दुगुणसोल णवं ।
अडदालं बाणउदी, सदाण छादाल चत्तधियं ॥ ५६८ ॥

मिथ्यस्य स्थानभंगा, एकादश सप्ततिः द्विगुणषोडश नव ।
अष्टचत्वारिंशद्द्वानवतिः, शतानां षट्चत्वारिंशच्चत्वारिंशदधिकं ॥ ५६८ ॥

टीका – पूर्वोक्तप्रकार मिथ्यादृष्टी के स्थान-भेद तेवीसके के ग्यारह, पचीसके के सत्तरि, छबीसके के दूणे सोला ताके बत्तीस, अठावीसके के नव, गुणतीसके के वाणवैसै अडतालीस, तीसके के छियालीससै चालीस जानने ॥ ५६८ ॥

आगैं अल्पतर-भंगनि कौं कहै हैं–

गाथा ५६८ के आधार से

३०	४६४०
२९	९२४८
२८	०००९
२६	००३२
२५	००७०
२३	००११

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विवरीयेणप्पदरा, होंति हु तेरासिएण भंगा हु।
पुव्वपरट्ठाणाणं, भंगा इच्छा फलं कमसो॥ ५६९ ॥

विपरीतेनाल्पतरा, भवंति हि त्रैराशिकेन भंगा हि।
पूर्वापरस्थानानां, भंगा इच्छा फलं क्रमशः॥ ५६९ ॥

३०	४३४७६८००
२९	११२८२५६
२८	१०१७
२६	२५९२
२५	७७०

टीका – भुजाकार-भंगनि के निमित्त जे त्रैराशिक कीए थे, तिनकौं विपरीत त्रैराशिक कीएं अल्पतर-भंग हो हैं, जातैं पहले-स्थानरूप भंगनि कौं इच्छाराशि कीएं पिछले-स्थाननि के भंगनि कौं फलराशि कीएं अनुक्रम तैं भेद हो हैं। सो कहिए है–

तीस का बंध करता था, सो गुणतीस आदिक का बंध करै, तब अल्पतर होइ। तहां तीसके का एक भेद का बंध करि गुणतीस आदिक के सब भेदनि का बंध करै तौ छियालीससै चालीस, तीस के भेदनि करि केते बंध होइ ? इहां पंच त्रैराशिक करने, तिनविषैं प्रमाणराशि सर्वत्र तीसके का एक भेद, फलराशि क्रम तैं गुणतीसके का वाणवैसै अठतालीस, अठाईसके का नव, छबीसके का बत्तीस, पचीसके का सत्तरि, तेवीसके का ग्यारह, इच्छाराशि सर्वत्र तीसके के छियालीससै चालीस भेद, सो फलराशि का जोड़ दीएं तरेणवैसे सत्तरि गुण्य होंइ, तिनकौं इच्छारूप छियालीससै चालीस करि गुणिए तब च्यारि कोडि चौंतीस लाख छिहंतरि हजार आठसै भए, सो इतने तौ तीसके के अल्पतर हैं।

बहुरि गुणतीसके का बंध करि तापीछैं अठाईस आदि का बंध करै, तब अल्पतर होंइ, सो गुणतीसके का एक का बंधकरि सर्व अठाईसके का आदि के भेद बंधै, तौ वाणवैसै अठतालीस भेदरूप गुणतीसके के बंध करि केते भेद होइ ? इहां च्यारि-त्रैराशिक होंइ, तिनविषैं प्रमाणराशि सर्वत्र गुणतीसके का एक भेद, फलराशि क्रम तैं अठाईसके का नव, छबीसके का बत्तीस, पचीसके का सत्तरि, तेवीसके के ग्यारह, इच्छाराशि सर्वत्र गुणतीसके के वाणवैसै अठतालीस भेद सो फलराशि का जोड दीएं एकसौ बाईस, तिनकौं इच्छाराशि वाणवैसै अठतालीस करि गुणैं ग्यारह लाख अठाईस हजार दोयसै छप्पन भेद हो हैं। सो इतने गुणतीसके के अल्पतर हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि अठाईस के का बंधकरि तापीछैं छबीस के का आदि का बंध करै तब अल्पतर होंइ, सो अठाईस का एक भेद का बंधकरि सर्व छबीस आदिक के भेदनि का बंध करैं, तौ अठाईस के के नव भेदनिकरि केते बंध होइ ? इहां तीन-त्रैराशिक, तिनविषैं प्रमाणराशि सर्वत्र अठाईस के का एक भेद, फलराशि क्रम तैं छबीसके का बत्तीस, पचीसके के सत्तरि, तेवीसके के ग्यारह, इंच्छाराशि सर्वत्र अठाईसके के नव, तहां फलराशि का जोड, दीएं एकसौ तेरह, इनकौं इच्छाराशि नवकरि गुणें एक हजार सतरह हो हैं सो इतने अठाईसके के अल्पतर हैं।

बहुरि छबीसके का बंधकर ता पीछैं पचीस तेवीसके का बंध करै तब अल्पतर होंइ, सो छबीसके का एक भेद का बंधकरि पचीस, तेवीस के सर्व-भेदनि कौं बांधें तौऊ छबीस के बत्तीस भेदनिकरि केते बंध भेद होंइ ? सो इहां दोय त्रैराशिक, तिनविषैं सर्वत्र प्रमाणराशि छबीस का एक भेद, फलराशि क्रमतैं पचीसके के सत्तरि, तेवीसके के ग्यारह, इच्छाराशि सर्वत्र छबीसके के बत्तीस। तहां फलराशि का जोंड इक्यासी कौं इच्छा बत्तीसकरि गुणै पचीससै वाणवै होंइ, सो इतने छबीसके के अल्पतर हैं।

बहुरि पचीस कौं बांधता पीछैं तेवीस कौं बांधै तब अल्पतर होइ, सो पचीस का एक भेद बांधकरि तेवीस के ग्यारह-भेदनि कौं बांधै तौ सर्व पचीसके के सत्तरि-भेदनि करि केते बंध भेद होइ ? इहां एक-त्रैराशिक तिसविषैं प्रमाणराशि पचीस के के एक भेद, फलराशि तेवीसके के ग्यारह-भेद, इच्छाराशि पचीसके के सत्तरि-भेद। सो फल सत्तरि कौं इच्छा ग्यारह करि गुणैं सातसै-सत्तरि होंइ, सो इतने पचीसके के अल्पतर जानने ॥ ५६९ ॥

नामकर्म के बंध-स्थाननि के अल्पतर भंग ल्यावने कौ त्रैराशिक का यंत्र–

प्रमाण	फल	इच्छा												
३० १	२३ ११	३० ४६४०	प्रमाण	फल	इच्छा									
३० १	२५ ७०	३० ४६४०	२९ १	२३ ११	२९ ९२४८	प्रमाण	फल	इच्छा						
३० १	२६ ३२	३० ४६४०	२९ १	२५ ७०	२९ ९२४८	२८ १	२३ ११	२८ ९	प्रमाण	फल	इच्छा			
३० १	२८ ९	३० ४६४०	२९ १	२६ ३२	२९ ९२४८	२८ १	२५ ७०	२८ ९	२६ १	२३ ११	२६ ३२	प्रमाण	फल	इच्छा
३० १	२९ ९२४८	३० ४६४०	२९ १	२८ ९	२९ ९२४८	२८ १	२६ ३२	२८ ९	२६ १	२५ ७०	२६ ३२	२५ १	२३ ११	२५ ७०

आगै ए कहै- भेद तिनका त्रैराशिकादिक बिना थोरे में ज्ञान होइ अैसा विधान कहैं हैं–

लघुकरणं इच्छंतो, एयारादीहिं उवरिमं जोग्गं।
संगुणिदे भुजगारा, उवरीदो होंति अप्पदरा ।। ५७० ।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लघुकरणमिच्छत, एकदशादिभिरूपरिमं योग्यं।
संगुणिते भुजाकारा, उपरितो भवंत्यल्पतराः ॥ ५७० ॥

टीका – थोरे मैं ज्ञान होइ अैसा लघुकरण कौं बांधता विवेकी है सो ग्यारह आदि अंकनि करि ऊपरि के अंक मिलाएं जो प्रमाण होइ, ताकौं गुणैं भुजाकार हो है अैसा जानहु। तहां सत्तरि, बत्तीस, नव, बाणवैसै अठतालीस, छियालीससे चालीस का, (७० । ३२ । ९ । ९२४८ । ४६४०) जोड देय १३९९९ । ग्यारह करि गुणैं तेवीस के भुजाकार १५३९८१ हो हैं। बत्तीस आदि का ३२ । ९ । ९२४८ । ४६४० । जोड देय १३९२९ सत्तरि करि गुणै पचीसके के ९७५०३० हो हैं। नव आदिक का ९ । ९२४८ ।४६४० । जोड देय १३८९७ बत्तीस करि गुणैं छबीसके के ४४४७०४ हो है। ऊपरि के दोय-स्थाननि के भंग ९२४८ । ४६४० । तिनिका जोड देय १३८८८ । नव करि गुणै अठाईसके के १२४९९२ हो हैं। ऊपरि का छियालीससै चालीस कौं बाणवैसे अठतालीस करि गुणैं गुणतीसके के ४२९१०७२० हो हैं। ए सर्व मिलि मिथ्यादृष्टि के भुजाकार-भंग हो हैं। बहुरि अल्पतर-भंग ल्यावने कौं ऊपरि का तीस आदि का स्थान का भंगनि करि नीचे के सर्व भंगनि कौं जोडि गुणैं अल्पतर हो हैं। सो कथन ऊपरि करि आए हैं, सो जानि लेना।

यहु अल्पतर-भंगनि का यंत्र

गुण्य	गुणकार	सर्वभंग
९३७०	४६४०	४३४७६८००
१२२	९२४८	११२८२५६
११३	९	१०१७
८१	३२	२५९२
११	७०	७७०

सो इन अल्पतरनि का जोड दीएं सर्व-मिथ्यादृष्टि के अल्पतर हो हैं। बहुरि भुजाकार, अल्पतर दोऊनि कौं मिलाएं जो प्रमाण होइ, तितने मिथ्यादृष्टि के अवस्थित-भंग हैं ॥ ५७० ॥

ते कितने भए ? सो कहैं हैं–

भुजगारप्पदराणं, भंगसमासो समो हु मिच्छस्स।
पणतीसं चउणउदी, सट्ठी चोदालमंककमे ॥ ५७१ ॥

भुजकाराल्पतरयो, र्भंगसमासो समो हि मिथ्यस्य।
पंचत्रिंशत् चतुर्नवतिः, षष्टिः चतुश्चत्वारिंशदंकक्रमेण ॥ ५७१ ॥

टीका – मिथ्यादृष्टि विषैं कहे भुजाकार अर अल्पतर तिन दोऊनि की संख्या समान है। सो कितनी है ?– पैंतीस, चौराणवै, साठि, चवालीस इतने अंक क्रम तैं मांडैं च्यारि कोडि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

छियालीस लाख नव हजार च्यारिसे पैंतीस हो है, सो इतनी संख्या है ४४६० ९४३५ । इतने ही भुजाकार हैं। इतने ही अल्पतर हैं। तिन दोऊनि कौं मिलाएं आठ कोडि वाणवै लाख अठारह हजार आठसै सत्तरि (८९२१८८७०) होइ इतने अवस्थित-भंग हैं। जातैं भुजाकार वा अल्पतर-भंगनि विषैं जिस-जिस प्रकृति-भंग का बंध होइ तिस ही का बंध द्वितीयादिक समय विषैं जहां होइ, तहां अवस्थित-बंध हो है। इहां परस्पर भंगनि कौं गुणि भुजाकारादिक-भंग ल्यावने का अभिप्राय यहु है, जो एक-एक भंगकरि अन्य-भंगनि की अपेक्षा भुजाकारादिक जानने। ५७१ ॥

आगैं असंयत विषैं तिनकौं कहैं हैं—

देवट्ठवीस णरदेवुगुतीस मणुस्सतीस बंधयदे।
तिछणवणवदुगभंगा, तित्थविहीणा हु पुणरुत्ता ॥ ५७२ ॥

देवाष्टविंशं नरदेवैकोनत्रिंशत् मनुष्यत्रिंशत् बंधोऽयते।
त्रिषट्नवनवद्विकभंगा, स्तीर्थविहीना हि पुनरुक्ताः ॥ ५७२ ॥

टीका — देवगतियुत अठाईस का विषैं वा मनुष्ययुत गुणतीस का विषैं वा-देवयुत गुणतीस का विषैं वा मनुष्ययुत तीस का विषैं तीन, छह, नव, नव दोय इन अंकनिकरि छत्तीस हजार नवसै वाणवै भुजाकार हो हैं ॥ ५७२ ॥

इन विषैं तीर्थंकर रहित भंग हैं, ते पुनरुक्त हैं, मिथ्यादृष्टि के भंग विषैं आयगये। सोई कहिए है—

देवट्ठवीसबंधे, देवुगुतीसम्मि भंग चउसट्ठी।
देवुगुतीसे बंधे, मणुवत्तीसेवि चउसट्ठी ॥ ५७३ ॥

देवाष्टविंशबंधे, देवैकोनत्रिंशति भंगाः चतुष्षष्टिः।
देवैकोनत्रिंशति, बंधे मानवत्रिंशत्यपि चतुष्षष्टिः ॥ ५७३ ॥

टीका – देवयुत अठाईस कौं बांधि मनुष्य-असंयत तीर्थंकर-बंध का प्रारंभ करै, तब तीर्थ सहित गुणतीस कौं बांधै, तब दोऊनि के आठ-आठ भंगनि कौं परस्पर गुणैं चौसठि भंग भए, बहुरि तीर्थ, देवसहित गुणतीस कौं बांधि मनुष्य-असंयत पीछैं देव वा नारकी असंयत होइ, तहां तीर्थ, मनुष्ययुत तीस कौं बांधै। तहां भी दोऊनि के आठ-आठ भंगनि कौं परस्पर गुणैं चौसठि हो हैं ॥ ५७३ ॥

तित्थयरसत्तणारय, मिच्छो णरऊणतीसबंधो जो।
सम्मम्मि तीसबंधो, तियछक्कडछक्कचउभंगा ॥ ५७४ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तीर्थंकरसत्त्वनारकमिथ्यो नरैकोनत्रिंशबंधो यः ।
सम्यंचि त्रिंशबंधः, त्रिकषट्काष्टषट्कचतुर्भंगाः ॥ ५७४ ॥

टीका – तीर्थंकर का सत्त्वसंयुक्त नारकी-मिथ्यादृष्टी, सो अपर्याप्त-अवस्था विषैं छियालीससै आठ भंगनिकरि मनुष्ययुत गुणतीस कौं बांधै, पीछैं शरीर-पर्याप्ति पूर्ण भएं सम्यक्त्व कौं पाइ तीर्थ,मनुष्य सहित तीस कौं बांधै, ताके आठ-भंग, सो इनि भंगनि कौं परस्पर गुणैं छत्तीस हजार आठसै चौसठि होंइ । इनविषैं पूर्वोक्त एकसौ अठाईस मिलाएं छत्तीस हजार नवसै वाणवै असंयत विषैं भुजाकार हो है ॥ ५७४ ॥

आगैं असंयत विषैं अल्पतर-भंगनि कौं कहै हैं–

बावत्तरि अप्पदरा, देवुगुतीसा दु णिरयअडवीसं ।
बंधंत मिच्छभंगे, णवगयतित्था हु पुणरुत्ता ॥ ५७५ ॥

द्वासप्ततिरल्पतरा, देवैकोनत्रिंशत्तु निरयाष्टाविंशतिः ।
बध्नन् मिथ्यभंगेनापगततीर्था हि पुनरुक्ताः ॥ ५७५ ॥

टीका – पूर्वैं नारकायु जाकैं बंध्या ऐसा मनुष्य-असंयत सो तीर्थंकर का प्रारंभ करि तीर्थ, देव सहित गुणतीस कौं बांधै, ताके आठ-भंग, बहुरि पीछैं मरण-समय नरक कौं सन्मुख भया, तहां अंतर्मुहूर्त मिथ्यादृष्टी होइ नरकगतियुत अठाईस कौं बांधै, ताका एक-भंग, इनकौं परस्पर गुणै आठ भंग भए । बहुरि देव, नारक असंयत तीर्थ, मनुष्ययुत तीसके कौं बांधै ताके आठ-भंग, पीछैं मरि तीर्थंकर पदवीरूप माता का गर्भ विषैं अवतरै, तहां, तीर्थ, देवसहित गुणतीसके कौं बांधै, ताके भी आठ-भंग । इनकौं परस्पर गुणैं चौसठि, इनकौं जोडै बहत्तरि अल्पतर-भंग असंयत विषैं हो हैं ।तीर्थंकर रहित मनुष्यगतियुत गुणतीस कौं बांधि, पीछैं देवयुत अठाईस कौं बांधै, ताके चौसठि-भंग पुनरुक्त हैं । पूर्वैं मिथ्यादृष्टि के भंगनि विषैं आयगये ; तातैं न कहे ॥ ५७५ ॥

आगैं अप्रमत्तादिक विषैं भुजाकार-भंगनि कौं कहैं हैं–

देवजुदेक्कट्ठाणे, णरतीसे अप्पमत्तभुजयारा ।
पणदालिगिहारुभये, भंगा पुणरुत्तगा होंति ॥ ५७६ ॥

देवयुतैकस्थाने, नरत्रिंशति अप्रमत्तभुजाकाराः ।
पंचचत्वारिंशदेका, हारोभयेषु भंगाः पुनरुक्तका भवंति ॥ ५७६ ॥

टीका – देवगतियुत एक स्थान विषैं वा मनुष्यगतियुत, तीर्थंकरयुत तीस का स्थान विषैं अप्रमत्त-गुणस्थान विषैं पैंतालीस-भुजाकार हो हैं । बहुरि तीर्थंकर सहित अर आहारक सहित अर तीर्थ, आहार के दोऊ युक्त तीन स्थाननि विषैं जे भंग हैं, ते पुनरुक्त हैं ॥ ५७६ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिन पैंतालीस भुजाकारनि का विधान कहैं हैं—

इगि अड अट्ठिगि अट्ठिगि, भेदड अट्ठड दुणव य वीस तीसेक्के।
अडिगिगि अडिगिगि बिहि उण, खिगि इगिइगितीस देवचउ कमसो ।।५७७ ।।

एकमष्ट अष्टैकमष्टैक, भेदमष्टाष्टाष्ट द्विनव च विंशतित्रिंशदेकान्।
अष्टैकमेकमष्टैकैकं द्वाभ्यामेकोन, खैकैकैकत्रिंशद्देवचतुष्कं क्रमशः ।। ५७७ ।।

टीका — नीचली-पंक्ति के एक, आठ, आठ, एक, आठ, एक, एक, एक, एक, एक भंगनि करि सहित अठाईस, अठाईस, अठाईस, गुणतीस, गुणतीस, तीस, इकतीस, इकतीस, इकतीस, इकतीस, रूप स्थानकनि विषैं ऊपरि—पंक्ति के आठ, एक, एक, आठ, एक, एक, एक, एक, एक, एक भंगनि करि सहित गुणतीस, तीस, इकतीस, तीस इकतीस, इकतीस अर देवयुत च्यारि-स्थाननि कौं क्रम तैं बांधैं। ऐसैं नीचली-पंक्ति विषैं कहे, तिनकौं बांधता था, पीछैं ऊपरि की पंक्ति के बंधस्थाननि कौं बांधै, सो एक-एक ऊपरली पंक्ति का स्थान-भंगनि तैं एक-एक नीचली-पंक्ति का स्थान-भंगनि कौं गुणैं सर्व पैंतालीस-भुजाकार हो हैं। सोई कहिए हैं—

अप्रमत्त-गुणस्थानीय एक-भंग सहित देवगति अठाईस का कौं बांधता था, पीछैं प्रमत्त विषैं जाय तीर्थंकर का प्रारंभ करि तीर्थ, देवयुत गुणतीसका कौं आठ-भंगनि करि सहित बांधैं, तिन दोऊनि के भंगनि कौं परस्पर गुणैं आठ भए। बहुरि प्रमत्त आठ-भंगनि करि देवयुत अठाईस का कौं बांधता था, पीछैं अप्रमत्त होइ आहारक-द्विकसहित तीसका कौं एक-भंग करि बांधै— ऐसैं आठ ए भए। बहुरि प्रमत्त आठ भंगनि करि अठाईसका कौं बांधता था, पीछै अप्रमत्त होइ तीर्थ, आहारक सहित इकतीसका कौं एक भंग करि सहित बांधै— ऐसैं आठ ए भए।

बहुरि अप्रमत्त तीर्थ, देव सहित गुणतीसका कौं एक भंगनि करि बांधता मरि देव-असंयत होइ, आठ-भंगनि करि मनुष्य, तीर्थ सहित तीसका कौं बांधै— ऐसैं आठ ए भए। बहुरि प्रमत्त देवगति युत गुणतीसका कौं आठ भंगनि करि बांधता अप्रमत्त होइ तीर्थ, आहारक सहित इकतीसका कौं एक भंग करि बांधै— ऐसैं ए आठ भए। बहुरि अप्रमत्त एक भंग करि आहारक सहित तीसका कौं एक-भंगकरि बांधता, तीर्थ-बंध प्रारंभ करि एक-भंग करि इकतीसका कौं बांधै, ऐसैं एक यहु भया।

बहुरि उतरनेवाला अपूर्वकरण सातवां-भंग विषैं एक-भंग लीएं एक-प्रकृतिरूप एकका कौं बांधता नीचैं आइ देवगतियुत अठाईसका कौं वा देव, तीर्थयुत गुणतीसका कौं वा देव, आहारकयुत तीसका कौं वा देव, आहारक, तीर्थ युत इकतीसका कौं एक एक भंग करि बांधै— तिनके च्यारि भए। ऐसैं पैंतालीस-भुजाकार होइ हैं ॥ ५७७ ॥

आगैं अप्रमत्तनि के अल्पतर-भंग कहैं हैं—

इगिविहिगिगिखखतीसे, दस णव णवडधियवीसमट्ठविहं।
देवचउक्केक्केक्के, अपमत्तप्पदरछत्तीसा ।। ५७८ ।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एकविधिकमेकखखत्रिंशत्, दशनव नवाष्टाधिकविंशमष्टविधं।
देवचतुष्कमेकैकेन, अप्रमत्ताल्पतरषट्त्रिंशत्॥ ५७८॥

टीका – एक-एक भंग सहित एक, एक, शून्य, शून्य अधिक तीस प्रकृतिरूप स्थानकनि कौं बांधता आठ-आठ भंगनि करि दश, नव, नव, आठ अधिक बीस प्रकृतिरूप स्थान अर एक-एक भंगकरि देवगतियुत च्यारि स्थाननि कौं बांधै–अैसै अप्रमत्त विषैं छत्तीस अल्पतर हो हैं। सोई कहिए हैं–

अप्रमादाल्पतर								अवक्तव्यभंग	
म ३० ८	प्र २९ ८	प्र २९ ८	प्र २८ ८	१ १	१ १	१ १	१ १	१ म म १ २९ ३० ८ ८	अल्पतर ३६
अ ३१ १	अ ३१ १	अ ३० १	अ ३० १	२८ १	२९ १	३० १	३१ १	० ० ०	अवक्तव्य १७

अप्रमत्त देवगति, आहारक, तीर्थसहित इकतीस का एक भंग करि बांधता मरि करि देव-असंयत होइ आठ-भंगनि करि मनुष्य, तीर्थ सहित तीसका कौं बांधै– अैसैं आठ भए। बहुरि अप्रमत्त एक प्रकार इकतीसका कौं बांधता प्रमत्त होइ आठभंगनि करि देव, तीर्थयुत गुणतीसका कौं बांधैं– अैसैं ए आठ भए। बहुरि अप्रमत्त एक भंग करि देव, आहारकयुत तीसका कौं बांधता तीर्थ के बंध का प्रारंभ करि आठ-भंगनि करि देवगति, तीर्थ सहित गुणतीसका कौं बांधै– अैसैं आठ ए भए।

बहुरि अप्रमत्त एक-भंग करि आहारक, देवयुत तीसका कौं बांधता प्रमत्त होइ आठ-भंगनि करि देवगतियुत अठाईसका कौं बांधै अैसैं आठ भए। बहुरि अपूर्वकरण है, सो चढने विषैं एक-एक भंग सहित देवयुत अठाईस देव, तीर्थयुत गुणतीस; देव आहारकयुत तीस, देव-आहारक, तीर्थयुत इकतीस के स्थाननि कौं बांधता सप्तम-भाग विषें एक-भंग सहित एक प्रकृतिरूप स्थान कौं बांधै, तहां च्यारि-भंग भए– अैसै छत्तीस अल्पतर जानने॥ ५७८॥

आगैं भुजाकारादिकनि कौं एकठे करैं हैं–

सव्वपरट्ठाणेण य, अयदपमत्तिदरसव्वभंगा हु।
मिच्छस्स भंगमज्झे, मिलिदे सव्वे हवे भंगा॥ ५७९॥

सर्वपरस्थानेन च, अयतप्रमत्तेतरसर्वभंगा हि।
मिथ्यस्य भंगमध्ये, मिलिते सर्वे भवंति भंगाः॥ ५७९॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

टीका– सर्व परस्थाननि करि वा स्वस्थाननि करि वा स्वपरस्थाननि करि संयुक्त जे असंयत अप्रमत्तादिक के सर्व भुजाकारादिक भंग, तिनकौं मिथ्यादृष्टि कै भुजाकारादिक-भंगनि विषैं मिलाएं नामकर्म के सर्व भुजाकारादिक बंध हो हैं ॥ ५७९ ॥

सर्व नामबंधस्थाननि के भंगनि का यंत्र

भुजाकार मिथ्यादृष्टि ४४६०९४३५ असंयत ३६९९२ अप्रमत्त ४५	अल्पतर मिथ्यादृष्टि ४४६०९४३५ असंयत ७२ अप्रमत्त ३६	अवस्थित मिथ्यादृष्टि ८९२१८८७० असंयत ३७०६४ अप्रमत्त ८१ उपशांतमोइ १७	अवक्तव्य उपशांत-कषायविषैं १७
जोड ४४६४६४७२	जोड ४४६०९५४३	जोड ८९२५६०३२	जोड १७

आगैं तिन भंगनि की प्राप्ति का साधारण-उपाय गाथा दोयकरि कहैं हैं–

भुजगारा अप्पदरा, हवंति पुव्ववरठाणसंताणे।
पयडिसमोऽसंताणोऽपुणरुत्तेत्ति य समुद्दिट्ठो ॥ ५८० ॥

भुजकारा अल्पतरा, भवंति पूर्वापरस्थानसंताने।
प्रकृतिसमः असंतानो, ऽपुनरुक्तेत्ति च समुद्दिष्टः ॥ ५८० ॥

टीका – पहिला स्थान थोरी-प्रकृतिरूप, ताकौं बहुत प्रकृतिरूप स्थानकनि करि यथा संभव लगाएं भुजाकार हो हैं। बहुरि पिछले स्थान बहुत-प्रकृतिरूप, तिनकौं थोरी-प्रकृतिरूप स्थाननि करि यथासंभव लगाएं अल्पतर हो है। बहुरि प्रकृतिनि की समान संख्या होतैं भी 'असंतानः' कहिए प्रकृति का समुदाय प्रकृति भेदकरि संयुक्त होय तौं अपुनरुक्त ही कहिए, जैसें तीर्थ बिना संहनन सहित भी गुणतीस का बंध है अर तीर्थसहित संहनन बिना भी गुणतीस का है, सो इनविषैं गुणतीस की समानता होतैं भी तीर्थंकर अर संहनन-प्रकृति के भेद तैं अपुनरुक्तपणां कहिए, ऐसा कह्या है ॥ ५८० ॥

भुजगारे अप्पदरे, ऽवत्तव्वे ठाइदूण समबंधो।
होदि अवट्ठिदबंधो, तब्भंगा तस्स भंगा हु ॥ ५८१ ॥

भुजकारानल्पतरानवक्तव्यान् स्थापयित्वा समबंधः।
भवति अवस्थितबंधः, तद्भंगास्तस्य भंगा हि ॥ ५८१ ॥

टीका – भुजाकार, अल्पतर, अवक्तव्य इन भंगनि कौं स्थापि करि जिन-जिन भंगसहित प्रकृतिनि का तिनविषैं एक समय बंध होइ करि तिनही भंग सहित प्रकृतिनि का जहां द्वितीयादिक

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

समयनि विषैं समान बंध होइ, तब अवस्थित-बंध कहिए; तातैं तिन तीन के जितने भंग, तितने अवस्थित के भंग जानने ॥ ५८१ ॥

आगैं तिन अवक्तव्य-भंगनि कौं कहै हैं–

पडिय मरियेक्कमेक्कू, णतीस तीसं च बंधगुवसंते।
बंधो दु अवत्तव्वो, अवट्ठिदो बिदियसमयादी ॥ ५८२ ॥

पतित्वा मृत्वैकमेको, नत्रिंशत्रिंशच्च बंधकोपशांते।
बंधस्तु अवक्तव्यो, ऽवस्थितो द्वितीयसमयादिः ॥ ५८२ ॥

टीका – उपशांत-कषाय विषैं किसी भी नाम-कर्म-प्रकृति कौं न बांधता पीछै सूक्ष्म-सांपराय कौं प्राप्त होइ एकका कौं बांधै सो एक तो यहु। बहुरि मरण भएं देव-असंयत होइ आठ-आठ भंगनि करि मनुष्ययुत गुणतीसका कौं वा मनुष्य, तीर्थ सहित तीसका कौं बांधै सो दोऊनि के सोलह भए– ऐसैं सतरह अवक्त्व्य-बंध के भंग जानने। अर तिनही के समान बंध द्वितीयादिक समय विषैं होंइ, तहां अवस्थित भी इतने ही जानने।

दोहा– जे तरंग भव उदधि के, नाम-बंध के थान।
तीन जगत के जीव सब, तिनकरि वेष्ठित जान ॥ १ ॥

आगैं नामकर्म के उदयस्थाननि कौं बाईस-गाथानि करि कहै हैं–

विग्गहकम्मसरीरे, सरीरमिस्से सरीरपज्जत्ते।
आणावचिपज्जत्ते, कमेण पंचोदये काला ॥ ५८३ ॥

विग्रहकार्मशरीरे, शरीरमिश्रे शरीरपर्याप्ते।
आनवचः पर्याप्ते, क्रमेण पंचोदये कालाः ॥ ५८३ ॥

टीका – ते नामकर्म के उदयस्थान जिस-जिस काल विषैं उदय-योग्य हैं, तहां ही होंइ; तातैं नियतकाल है। ते काल विग्रहगति वा कार्माण शरीर विषैं मिश्र-शरीर विषैं, शरीरपर्याप्ति विषैं, आनपान-पर्याप्ति विषैं, भाषा-पर्याप्ति विषैं अनुक्रम तैं पांच जानने। कार्माण-शरीर जहां पाइए, सो कार्माण- काल; यावत् शरीर पर्याप्ति पूर्ण न होइ, तावत् शरीर मिश्रकाल; शरीरपर्याप्ति पूर्ण भएं यावत् सासोसास-पर्याप्ति पूर्ण न होइ, तावत् शरीरपर्याप्तिकाल; सासोसास पर्याप्ति पूर्ण भएं यावत् भाषापर्याप्ति पूर्ण न होइ, तावत् आनपान-पर्याप्तिकाल, भाषा-पर्याप्ति पूर्ण भए पीछैं सर्व अवशेष आयुप्रमाण भाषापर्याप्ति-काल कहिए। इहां विग्रहगति अर कार्माण दोय विशेषण कीए सो समुद्घात केवली का कार्माण ग्रहण के निमित्त कहे हैं–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक्कं व दो व तिण्णि व, समया अंतोमुहुत्तयं तिसुवि।
हेट्ठिमकालूणाओ, चरिमस्स य उदयकालो दु ॥ ५८४ ॥

एको वा द्वौवा त्रयो वा, समया अंतर्मुहूर्तकास्त्रिष्वपि।
अधस्तनकालोनः, चरमस्य चौदयकालस्तु ॥ ५८४ ॥

टीका – तिन पंच कालनि का प्रमाण क्रम तैं विग्रहगति का कार्माण-शरीर विषैं एक समय वा दोय समय वा तीन समय है। अपर्याप्तिरूप मिश्रशरीर विषैं अर शरीर-पर्याप्ति विषैं अर उस्वास-निश्वास-पर्याप्ति विषैं अंतर्मुहूर्त-अंतर्मुहूर्तकाल है। भाषा-पर्याप्ति विषैं पूर्वोक्त च्यारि कालनि का प्रमाण घटाएं अवशेष सर्व भुज्यमान-आयु प्रमाण काल जानना ॥ ५८४ ॥

तिन पंच-कालनि कौं जीव-समासनि विषैं कहैं हैं–

सव्वापज्जत्ताणं, दोण्णिवि काला चउक्कमेयक्खे।
पंचवि होंति तसाणं, आहारस्सुवरिमचउक्कं ॥ ५८५ ॥

सर्वापर्याप्तानां, द्वावपि कालौ चतुष्कमेकाक्षे।
पंचापि भवंति त्रसाना, माहारस्योपरिमचतुष्कं ॥ ५८५ ॥

टीका – ते काल सर्व ही लब्धि-अपर्याप्तकनि विषैं आदि के दोय ही हैं। बहुरि एकेन्द्री विषैं आदि के च्यारि हैं। त्रस विषैं पांचौ हैं। आहारक-शरीर विषैं पहले बिना ऊपरि के च्यारि-काल हैं ॥ ५८५ ॥

कम्मोरालियमिस्सं, ओरालुस्सासभास इदि कमसो।
काला हु समुग्घादे, उवसंहरमाणगे पंच ॥ ५८६ ॥

कार्मौरालिकमिश्र, मौरालोच्छ्वासभाषेति क्रमशः।
काला हि समुदघाते, उपसंहरमाणके पंच ॥ ५८६ ॥

टीका – समुदघात-केवली विषैं कार्माण औदारिकमिश्र, औदारिक-शरीरपर्याप्ति, उश्वास-निश्वास पर्याप्ति, भाषा-पर्याप्ति– असैं पंच-काल अनुक्रम तैं हो हैं। ते ए पांचौं-काल प्रदेशनि कौं समेटतैं ही हैं, फैलावतैं तीन ही काल हैं ॥ ५८६ ॥

सोई कहिए हैं–

ओरालं दंडदुगे, कवाडजुगले य तस्स मिस्सं तु।
पदरे य लोगपूरे, कम्मे व य होदि णायव्वो ॥ ५८७ ॥

औराल दंडद्विके, कपाटयुगले च तस्य मिश्रं तु।
प्रतरे च लोकपूरे, कर्मणि वा च भवंति ज्ञातव्यः ॥ ५८७ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – दंड का करनै वा समेटनेरूप युगल विषैं औदारिक-शरीरपर्याप्ति काल है। कपाट का करने, समेटनेरूप युगल विषैं औदारिकमिश्र शरीर-काल है। प्रतर का करना वा समेटन विषैं अर लोकपूर्ण विषैं कार्माण-काल है– अैसै विस्तार करतैं तौ तीन ही काल हैं, अर समेटतैं मूलशरीर विषैं प्रवेश करने का प्रथम-समयतैं लगाय संज्ञी-पंचेन्द्रीवत् अनुक्रम तैं पर्याप्त पूर्ण करै है ; तातैं पांचौं-काल संभवै हैं ॥ ५८७ ॥

आगैं नामकर्म के उदयस्थाननि का क्रम तैं उपजने का विधान च्यारि-गाथानि करि कहैं हैं–

णामधुवोदयबारस, गइजाईणं च तसतिजुम्माणं।
सुभगोदज्जजसाणं, जुम्मेक्कं विग्गहे वाणू॥ ५८८॥

नामध्रुवोदयद्वादश, गतिजातीनां च त्रसत्रियुग्मानां।
सुभगोदययशसां, युग्मैकं विग्रहे वानुः॥ ५८८॥

टीका – तैजस, कार्माण, वर्णादिक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अगुरुलघु, निर्माण– ए बारह ध्रुवोदयी हैं। सबिन कैं निरंतर-उदय इनका पाइए है। बहुरि च्यारि-गति विषैं, पांच-जाति विषैं, त्रसस्थावर विषैं, वादर-सूक्ष्म विषैं, पर्याप्त-अपर्याप्ति विषैं, सुभग-दुर्भग विषैं, आदेय-अनादेय विषैं, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति विषैं, च्यारि आनुपूर्वी विषैं एक-एक का उदय होय। ऐसे इकईस प्रकृति रूप इकईस का स्थान विग्रह गति ही विषैं उदय हो हैं, जातैं इकईस विषैं आनुपूर्वी कही है, सो आनुपूर्वी का उदय विग्रहगति विषैं ही है। ऋजुगति विषैं इकईस के स्थान का उदय नाहीं, चौबीस का आदि का ही उदय है॥ ५८८॥

मिस्सम्मि तिअंगाणं, संठाणाण च एकगदरगं तु।
पत्तेयदुगाणेक्को, उवघादो होदि उदयगदो॥ ५८९॥

मिश्रे त्रयंगानां, संख्यानानां चैकतरंक तु।
प्रत्येकद्विकयोरेक, उपघातो भवत्युदयगतः॥ ५८९॥

टीका – बहुरि तिस इकईस का स्थान विषैं आनुपूर्वी घटाइए अर औदारिककादिक तीन शरीरनि विषैं एक, छह-संस्थाननि विषैं एक, प्रत्येक-साधरण विषैं एक, अर उपघात– ए च्यारि मिलाइए, तब चौबीस का स्थान हो है, सो यहु त्रस वा स्थावर के शरीर का मिश्रकाल विषैं उदय हो हैं॥ ५८९॥

तसमिस्से ताणि पुणो, अंगोवंगाणमेगदरगं तु।
छण्हं सहंडणाणं, एगदरो उदयगो होदि॥ ५९०॥
परघादमंगपुण्णे, आदावदुगं विहायमविरुद्धे।
सासवची तप्पुण्णे, कमेण तित्थं च केवलिणि॥ ५९१॥ जुम्मं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

त्रसमिश्रे तानि पुनः, अंगोपांगानामेकतरकं तु।
षण्णां संहनाना, मेकतरमुदयकं भवति ॥ ५९० ॥
परघातमंगपूर्णे, आतापद्विकं विहायोऽविरुद्धे।
श्वासवचसी तत्पूर्णे, क्रमेण तीर्थं च केवलिनि ॥ ५९१ ॥ युग्मम्

टीका – ते पूर्वोक्त च्यारि, अर तीन अंगोपांग विषैं एक, छह-संहनन विषैं एक– ऐसैं छह, मिश्रशरीरी-त्रस विषैं उदय योग्य हैं। बहुरि परघात है, सो त्रसस्थावरनि के शरीर-पर्याप्ति विषैं ही उदय हो है। बहुरि आतप-उद्योत वा प्रशस्त-अप्रशस्त विहायोगति सो अविरुद्ध-योग्य व स्थावरनि कैं पर्याप्त-प्रकृति-कालविषैं ही उदय हो है। बहुरि उश्वास अर स्वरद्विक ए अपने-अपने पर्याप्ति-काल विषैं ही उदय हो हैं। तीर्थंकर-प्रकृति केवली विषैं ही उदय हो है ॥ ५९०-५९१ ॥

आगैं एक-एक जीव विषैं, एक-एक समय विषैं जे-जे संभवै ऐसे नामकर्म के उदयस्थान नाना जीवनि प्रति कहे तिनही कौं कहैं हैं–

वीसं इगिचउवीसं, तत्तो इगितीसओत्ति एयधियं।
उदयट्ठाणा एवं, णव अट्ठ य होंति णामस्स ॥ ५९२ ॥

विंशमेकचतुर्विंशं, तत एकत्रिंशदिति एकाधिकं।
उदयस्थानान्येवं, नवाष्ट च भवंति नाम्नः ॥ ५९२ ॥

टीका – वीस का, इकवीस का, चौबीस का इसतैं एक-एक अधिक इकतीस का पर्यंत अर नव का आठ का– ए बारह नामकर्म के उदय स्थान हैं ॥ ५९२ ॥

चदुगदिया एइंदी, विसेसमणुदेवणिरयएइंदी।
इगिबितिचपसामण्णा, विसेससुरणारगेइंदी ॥ ५९३ ॥
सामण्णसयलवियलवि, सेसमणुस्ससुरणारया दोण्हं।
सयलवियलसामण्णा, सजोगपंचक्खवियलया सामी ॥ ५९४ ॥ जुम्मं।

चतुर्गतिका एकेन्द्रिया, विशेषमनुदेवनिरयैकेन्द्रियाः।
एकद्वित्रिचपसामान्या, विशेषसुरनारकैकेन्द्रियाः ॥ ५९३ ॥
सामान्यसकलविकलवि, शेषमनुष्यसुरनार का द्वयोः।
सकलविकलसामान्याः, सयोगपंचाक्षविकलकाः स्वामिनः ॥ ५९४ ॥ युग्मम्।

टीका – तिन स्थाननि का स्वामी कहिए है– इकईस के स्थान के चतुर्गति के जीव स्वामी हैं। चौबीसके के एकेन्द्री-स्वामी हैं। पचीसके के विशेष मनुष्य, देव, नारकी, एकेन्द्री स्वामी हैं। छबीसके के एकेन्द्री, वेन्द्री, तेन्द्री, चौंद्री, पंचेन्द्री सामान्य-जीव स्वामी हैं। सताईसके के विशेष मनुष्य वा देव, नारकी, एकेन्द्री स्वामी हैं। अठाईस, गुणतीसके के सामान्य-पुरुष सकलेन्द्री,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विकलेन्द्री, विशेष पुरुष, देव, नारकी स्वामी हैं। तीसके के सकलेन्द्री-विकलेन्द्री सामान्य पुरुष स्वामी हैं। इकतीसके के सयोगकेवली वा पंचेन्द्री, वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री स्वामी हैं। नवके के अर आठके के अयोग-केवली स्वामी हैं।

जिस स्थान का जो स्वामी कह्या तिसकैं तक स्थान संबंधी प्रकृतिनि का उदय जानना। सो इहां इन स्थाननि का प्रगट कथन कीजिए है—

ध्रुवोदयीं बारह, च्यारिगति विषैं एक, पंच-जाति विषैं एक, त्रस-वादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति अर इनका प्रतिपक्षीरूप छह-युगल, तिनविषैं एक-एक, च्यारि आनुपूर्वी विषैं एक— अैसें इकईस-प्रकृतिरूप स्थान हैं। सो याका उदय कार्माण शरीर सहित च्यारयों गतिसंबंधी वक्र गमनरूप जो विग्रहगति, तिसही विषैं हो है, अन्यत्र नाहीं, जातैं यहु स्थान आनुपूर्वी सहित हैं। बहुरि इसविषैं आनुपूर्वी कौं घटाइए अर औदारिक तीन शरीरनि विषैं एक, छह-संस्थाननि विषैं एक, प्रत्येक-साधारण विषैं एक, अर उपघात— इनि च्यारयों कौं मिलाएं चौबीस-प्रकृतिरूप स्थान हो है सो यहु एकेन्द्री कैं अपर्याप्त विषैं शरीर-मिश्रयोग होतैं ही उदय हो है अन्यत्र नाहीं ; जातैं इसविषैं अंगोपांग वा संहनन नाहीं है।

बहुरि इसविषैं परघात मिलैं एकेन्द्री का शरीर-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य पचीस का स्थान हो है अथवा आहारक-अंगोपांग मिलैं विशेष-मनुष्य कैं आहारक-शरीर का मिश्रकाल विषैं उदय-योग्य पचीस का स्थान हो है। अथवा वैक्रियिक-अंगोपांग मिलैं देव, नारकी कैं शरीर-मिश्रकाल विषैं उदय-योग्य पचीस का स्थान हो है— अैसें तीन पचीस के स्थान भए।

बहुरि एकेंद्री कैं उदय-योग्य पचीस का स्थान विषैं आतप वा उद्योत विषैं एक कौं मिलैं एकेंद्री का शरीर-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य छबीस का स्थान हो है। अथवा तिस एकेन्द्री का पचीस का स्थान विषैं उश्वास मिलैं एकेन्द्री के उश्वास-निश्वास पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य छबीस का स्थान हो है। अथवा चौबीस का स्थान विषैं औदारिक-अंगोपांग अर एक संहनन मिलैं वेंद्री, तेन्द्री, चौंद्री, पंचेंद्री सामान्य-मनुष्य नितिशय-केवली का कपाट युगल इनका औदारिक-मिश्रकाल विषैं उदय-योग्य छबीस का स्थान हो है— अैसें तीन छबीस के स्थान भए।

बहुरि चौबीस का स्थान विषैं आहारक-अंगोपांग, परघात, प्रशस्तविहायोगति— ए तीन मिलैं प्रमत्त-गुणस्थानी कैं आहारक-शरीर पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य सताईस का स्थान हो है। अथवा पूर्वोक्त समुद्घात-केवली का छबीस का स्थान विषैं तीर्थंकर-प्रकृति मिलैं तीर्थंकर-समुद्घात-केवली कै उदय-योग्य सताईस का स्थान हो है। अथवा पूर्वोक्त चौबीस का स्थान विषैं वैक्रियिक-अंगोपांग, परघात अर नारकी कैं अप्रशस्तविहायोगति, देव कैं प्रशस्तविहायोगति— अैसें तीन मिलैं देव, नारकी कैं शरीर-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य सताईस का स्थान हो है अथवा पूर्वोक्त चौबीस का स्थान विषैं परघात अर आतप, उद्योत विषैं एक अर उश्वास इन तीनों कौं मिलैं एकेन्द्री कैं उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य सत्ताईस का स्थान हो है— अैसें च्यारि सत्ताईस के स्थान भए।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि तिस चौबीस के स्थान विषैं औदारिक-अंगोपांग, एक-संहनन, परघात, यथायोग्य विहायोगति इन च्यारि कौं मिलैं सामान्य-मनुष्य वा मूलशरीर विषैं प्रवेश करता समुद्घातरूप सामान्य-केवली वा वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री इनकैं शरीर-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य अठाईस का स्थान हो है। अथवा चौबीस का विषैं आहारक-अंगोपांग, परघात, प्रशस्तविहायोगति, उश्वास— ए च्यारि मिलैं आहारक-संयुक्त कैं आहारक-शरीर का उश्वास सपर्याप्त विषैं उदय-योग्य अठाईस का स्थान हो है। अथवा चौबीस का विषैं वैक्रियिक-अंगोपांग, परघात, यथासंभव विहायोगति, उश्वास इन च्यारि कौं मिलैं देव, नारकी कैं उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य अठाईस का स्थान उदय हो है—ऐसे तीन अठाईस के स्थान भए।

बहुरि सामान्य-मनुष्य वा समुद्घात-केवली का अठाईस का स्थान विषैं उश्वास-प्रकृति मिलैं सामान्य-मनुष्य का वा मूल-शरीर विषैं प्रवेश करता समुद्घात-केवली का उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय योग्य गुणतीस का स्थान हो है।

अथवा चौबीस का विषैं औदारिक-अंगोपांग, एक-संहनन, परघात, एक-विहायोगति, उद्योत मिलैं वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री का शरीर-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य गुणतीस का स्थान हो है। अथवा पूर्वोक्त चौबीस का विषैं एक अंगोपांग, एक-संहनन, परघात, एक-विहायोगति, उश्वास मिलैं वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री का उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य गुणतीस का स्थान हो है। अथवा चौबीस का विषैं औदारिक-अंगोपांग, संहनन, परघात, प्रशस्तविहायोगति, तीर्थंकर मिलैं समुद्घात-तीर्थंकर-केवली का शरीरपर्याप्तिनि विषैं उदय-योग्य गुणतीस का स्थान हो है।

अथवा चौबीस का विषैं आहारक-अंगोपांग, परघात, प्रशस्तविहायोगति, उश्वास, सुस्वर मिलैं प्रमत्त का आहारक-शरीर का भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य गुणतीस का स्थान हो है। अथवा देव, नारक का अठाईस का स्थान विषैं देव कैं सुस्वर, नारकी कैं दुस्वर मिलैं देव, नारकी कै भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य गुणतीस का स्थान हो है— ऐसैं गुणतीस के छह स्थान भए।

बहुरि चौबीस का विषैं अंगोपांग, संहनन, परघात, विहायोगति, उच्छ्वास मिलैं गुणतीस होइ इनविषैं उद्योत मिलैं वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री का उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय योग्य तीस का हो है। वा दोय स्वर विषैं एक मिलैं सामान्य-मनुष्य वा पंचेन्द्री वा विकलत्रय कैं भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य तीस का हो है। अथवा चौबीस विषैं औदारिक-अंगोपांग, वज्रवृषभ संहनन, परघात, प्रशस्तविहायोगति, उश्वास मिलैं गुणतीस होइ। तिनविषैं तीर्थंकर-प्रकृति मिलाएं समुद्घात-तीर्थंकर-केवली का उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य तीस का स्थान हो है वा दोयस्वर विषैं एक मिलैं सामान्य-समुद्घात-केवली का भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य तीस का हो है— ऐसैं तीस के स्थान च्यारि कहे।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि सामान्य-सयोग-केवली का भाषापर्याप्ति संबंधी तीस का विषैं तीर्थंकर-प्रकृति मिलाएं तीर्थंकर-केवली का भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य इकतीस का स्थान हो है अथवा पूर्वोक्त चौईस का विषैं अंगोपांग, संहनन, परघात, उद्योत, विहायोगति, उश्वास-सुस्वर-दुःस्वर विषैं एक— अैसैं सात मिलैं वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री का भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य इकतीस का हो है।

अैसैं इकतीस के स्थान दोय कहे, या प्रकार एक-जीव के एककाल विषैं उदय के स्थान कहे ॥ ५९३-५९४ ॥

एगे इगिवीसपणं, इगिछव्वीसट्ठवीसतिण्णि णरे।
सयले वियलेवि तहा, इगितीसं चावि वचिठाणे॥ ५९५ ॥
सुरणिरयविसेसणरे, इगिपणसगवीसतिण्णि समुघादे।
मणुसं वा इगिवीसे, वीसं रूवाहियं तित्थं॥ ५९६ ॥
वीसदु चउवीसचऊ, पणछव्वीसादिपंचयं दोसु।
उगुतीसति पणकाले, गयजोगे होंति णव अट्ठं॥ ५९७ ॥ विसेसयं।

एकस्मिन्नेकविंशति, पंच एकषड्विंशाष्टविंशत्रीणि नरे।
सकलविकलेऽपि तथा, एकत्रिंशच्चापि वचः स्थाने॥ ५९५ ॥
सुरनिरयविशेषनरे, एकपंचसप्तविंशत्रीणि समुद्धाते।
मनुष्यं वा एकविंशे, विंशं रूपाधिकं तीर्थं॥ ५९६ ॥
विंशद्विकं चतुर्विंशचतुष्कं पंचषड्विंशादिपंचकं द्वयोः।
एकोनत्रिंशत्त्रिकं पंचकालेषु, गतयोगे भवंति नवाष्ट॥ ५९७ ॥ विशेषकं।

टीका — पूर्वोक्त पंचकालनि विषैं यथासंभव अनुक्रम तैं एकेन्द्री विषैं उदय-योग्य इकईस का आदि पांच-स्थान हैं। बहुरि मनुष्य विषैं उदय-योग्य इकईस का, छबीस का अर अठाईस का आदि तीन— अैसैं पंच-स्थान हैं। बहुरि सकलेंद्री, विकलेंद्री, तिर्यंच विषैं उदय-योग्य इकईस का, छबीस का अर अठाईस का आदि तीन अर भाषापर्याप्ति विषैं इकतीस का— अैसैं छह स्थान हैं। बहुरि देव, नारकी अर आहारक वा केवल सहित विशेष मनुष्य— इनविषैं उदय-योग्य इकईस का पचीस का अर अठाईस का आदि तीन— अैसैं पांच-स्थान हैं। तहां समुद्घात-केवली का कार्माणकाल विषैं इकवीस का स्थान विषैं आनुपूर्वी बिना सामान्य-केवली कैं बीस का ही उदय-स्थान है। तीर्थंकर-केवली के तीर्थंकर-प्रकृति सहित इकईस का उदय-स्थान है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

॥ नामकर्म के उदय स्थाननि का यंत्र ॥

बीस का स्थान एक ॥ १ ॥

समुद्घातकेवली का कार्माण विषैं उदययोग्य ॥ २० ॥

इकईस के स्थान ॥ २ ॥

चार्‌योगति के विग्रहगति विषैं उदययोग्य ॥ २१ ॥

तीर्थंकरकेवली का कार्माण विषैं उदय योग्य ॥ २१ ॥

चौबीस का स्थान एक ॥ १ ॥

एकेंद्री का मिश्रशरीर विषैं उदय-योग्य ॥ २४ ॥

पचीस का स्थान तीन ॥ ३ ॥

एकेंद्री का शरीरपर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ २५ ॥

आहारक का शरीरमिश्रकाल विषैं उदय-योग्य ॥ २५ ॥

देवनारक कैं, शरीरमिश्रकाल विषैं उदय-योग्य ॥ २५ ॥

छबीस के स्थान तीन ॥ ३ ॥

एकेंद्री का शरीरपर्याप्तिकाल विषैं उदय योग्य ॥ २६ ॥

एकेंद्री का उश्वासपर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ २६ ॥

वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री, सामान्य मनुष्य निरतिशयकेवली का औदारिक-मिश्रकाल विषैं उदय-योग्य ॥ २६ ॥

सत्ताईस के स्थान च्यारि ॥ ४ ॥

आहारक-शरीरपर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ २७ ॥

तीर्थंकर-समुद्घातकेवली कैं उदय-योग्य ॥ २७ ॥

देव नारकी का शरीरपर्याप्ति विषैं उदय योग्य ॥ २७ ॥

एकेंद्री का उश्वास पर्याप्ति विषैं उदय योग्य ॥ २७ ॥

अठाईस के स्थान तीन ॥ ३ ॥

सामान्य मनुष्य सामान्यकेवली, वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री कैं शरीरपर्याप्ति विषैं उदय योग्य ॥२८ ॥

आहारक का उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ २८ ॥

देव नारकी का उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय योग्य ॥ २८ ॥

गुणतीस के स्थान छह ॥ ६ ॥

समुद्घात केवली का उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय योग्य ॥ २९ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री का शरीरपर्याप्ति विषें उदय-योग्य ॥ २९ ॥
वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री का उश्वास-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ २९ ॥
समुद्घात-तीर्थंकर का शरीर-पर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ २९ ॥
आहारक-शरीर भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ २९ ॥
देव, नारक का भाषापर्याप्ति विषैं उदय योग्य ॥ २९ ॥
तीस के स्थान च्यारि ॥ ४ ॥
वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, विकलत्रय कैं भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ ३० ॥
सामान्य मनुष्य, पंचेन्द्री, विकलत्रय कैं भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ ३० ॥
तीर्थंकर-समुद्घात-केवली का उश्वासपर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ ३० ॥
सामान्य समुद्घात-केवली का भाषापयाप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ ३० ॥
इकतीस के स्थान ॥ २ ॥
तीर्थंकर-केवली का भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ ३१ ॥
वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री का भाषापर्याप्ति विषैं उदय-योग्य ॥ ३१ ॥
नव का स्थान एक । १ । अयोग केवली कैं उदय-योग्य ॥ ९ ॥
आठ का स्थान । १ । अयोग केवली कैं उदय-योग्य ॥ ८ ॥

अैसैं केवली का कार्माण विषैं तो बीस, इकवीस के दोय-स्थान हैं। अर विग्रहगति का कार्माण विषैं इकवीस का ही है। शरीर-मिश्रकाल विषैं चौवीस का आदि च्यारि-स्थान हैं। शरीर पर्याप्तिकाल विषैं पचीस का आदि पंच-स्थान हैं। आनपान-पर्याप्ति विषैं छवीस का आदि पंच-स्थान हें। भाषापर्याप्तिकाल विषैं गुणतीस का आदि तीन-स्थान हैं। अयोगी विषैं तीर्थंकर कैं नव का अर सामान्य कैं आठ का उदय जानना ॥ ५९५-५९७ ॥

नामकर्म के उदय-स्थान जैसैं संभवै तिनिका-यंत्र

जिनके पाइए तिनका नाम	एकेन्द्री	देव	नारक	तिर्यंच	मनुष्य	सामान्य केवली	तीर्थंकर केवली	विशेष मनुष्य
भाषापर्याप्ति विषैं	०	२९	२९	३० ३१	३०	३०	३१	२९
आनपानविषैं	२७ २६	२८	२८	३० २९	२९	२९	३०	२८
शरीरपर्याप्ति विषैं	२६ २५	२७	२७	२९ २८	२८	२८	२९	२७
शरीरमिश्रविषैं	२४	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२५
कार्माणविषैं	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२१	०

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अयोगी-गुणस्थाननि के दोय-स्थाननि का स्वरूप कहैं हैं—

गयजोगस्स य बारे, तदियाउगगोद इदि विहीणेसु।
णामस्स य णव उदया, अट्ठेव य तित्थहीणेसु॥ ५९८ ॥

गतयोगस्य च द्वादश, तृतीयायुष्कगोत्रमिति विहीनेषु।
नाम्नश्च नव उदया, अष्टैव च तीर्थहीनेषु॥ ५९८॥

टीका – अयोग-केवली कैं बारह उदय-प्रकृति हैं। तिनविषैं वेदनीय, आयु, गोत्र की तीन-प्रकृति बिना नव-प्रकृति नामकर्म की का उदय जानना। तीर्थंकर बिना आठ का जानना। अैसैं नव का, आठ का उदय जानना॥ ५९८॥

आगैं नाम के उदयस्थाननि विषैं भंग कहिए हैं—

संठाणे संहडणे, विहायजुम्मे य चरिमचदुजुम्मे।
अविरुद्धेक्कदरादो, उदयट्ठाणेसु भंगा हु॥ ५९९॥

संस्थाने संहनने, विहायोयुग्मे च चरमचतुर्युग्मे।
अविरुद्धैकतरस्मात्, उदयस्थानेषु भंगा हि॥ ५९९॥

या	अ ११
आ	अ ११
सु	अ ११
सु	दु ११
प्र	प्र ११
सं	१११११११
सं	१११११११
युति : ११५२	

टीका — छह-संस्थान, छह-संहनन, दोय-विहायोगति, सुभग-युगल, स्वरयुगल, आदेय-युगल, यशस्कीर्ति-युगल, इनविषैं अविरुद्ध एक-एक का ग्रहण करतैं भंग हो हैं। जैसैं संस्थान विषैं समचतुरस्र की अपेक्षा उदयस्थान कह्या, वाकौं पलटि न्यग्रौध-परिमंडल की अपेक्षा कह्या। अैसैं सबनि विषैं अक्ष-संचार विधान तैं भंग हो हैं सो छह-संस्थानादिक कौं ६, ६, २, २, २, २, २ परस्पर गुणैं ग्यारहसै बावन-भंग हो है॥ ५९९॥

तिनविषैं नारकादि इकतालीस-जीव-पदनि विषैं भंग संभवै, तिनकौं तीन गाथानि करि कहैं हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तत्थासत्था णारय, साहारणसुहुमगे अपुण्णे य।
सेसेगविगलऽसण्णी, जुदठाणे जसजुगे भंगा॥ ६०० ॥

तत्राशस्ता नारक, साधारणसूक्ष्मके अपूर्णे च।
शेषैकविकलासंज्ञि, युतस्थाने यशायुग्मे भंगाः॥ ६०० ॥

टीका – तिन उदय-प्रकृतिनि विषैं नारकी अर साधारण-वनस्पती अर सर्व ही सूक्ष्म अर सर्व ही लब्धि-अपर्याप्तक, इनविषैं अप्रशस्त-प्रकृतिनि ही का उदय है ; तातैं तिनकें पंच कालसंबंधी सर्व उदय-स्थाननि विषैं एक-एक भंग है। बहुरि अवशेष एकेंद्री, विकलेंद्री, असैनी-पंचेन्द्री इनविषैं और तो अप्रशस्त-प्रकृतिनि ही का उदय है अर यशस्कीर्ति, अयशस्कीर्ति इनि दोऊनि विषैं एक किसी का उदय है ; तातैं तिनके उदय-स्थाननि विषैं दोय-दोय भंग जानने– एक यशस्कीर्ति सहित उदय-स्थान, एक अयशस्कीर्ति सहित उदयस्थान– ऐसैं दोय जानने ॥ ६०० ॥

सण्णिम्मि मणुस्सम्मि य, ओघेक्कदरं तु केवले वज्जं।
सुभगादेज्जजसाणि य, तित्थजुदे सत्थमेदीदि॥ ६०१ ॥

संज्ञिनि मनुष्ये च, ओघैकतरं तु केवले वज्रं।
सुभगादेययशांसि च, तीर्थयुते शस्तमेतीति॥ ६०१ ॥

टीका – संज्ञी-जीव विषैं मनुष्य विषैं छह-संस्थान, छह-संहनन, विहायोगति आदि पंच-युगल, इनविषैं एक-एक का उदय पाइए; तातैं सामान्यवत् ग्यारहसै बावन-भंग मनुष्य के उदयस्थाननि विषैं यथासंभव जानने। बहुरि केवलज्ञान विषैं वज्रवृषभ-नाराच, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति इनही का उदय पाइए; तातैं केवलज्ञान संबंधी स्थाननि विषैं छह-संस्थान, दोय-युगल इनविषैं एक-एक का उदय की अपेक्षा चौईस-चौईस ही भंग जानने। बहुरि तीर्थंकर-केवली कैं अंत के पंच-स्थान अप्रशस्तविहायोगति, दुःस्वर इनिका भी उदय नाहीं। सर्व प्रशस्तप्रकृतिनि ही का उदय है; तातैं ताके उदयस्थाननि विषैं एक-एक ही भंग है॥ ६०१ ॥

देवाहारे सत्थं, कालवियप्पेसु भंगमाणेज्जो।
वोच्छिण्णं जाणित्ता, गुणपडिवण्णेसु सव्वेसु॥ ६०२ ॥

देवाहारे शस्तं, कालविकल्पेषु भंग आनेयः।
व्युच्छिन्नं ज्ञात्वा, गुणप्रतिपन्नेषु सर्वेषु॥ ६०२ ॥

टीका – च्यारि प्रकार देवनि विषैं वा आहारक सहित प्रमत्त विषैं प्रशस्त-प्रकृतिनि ही का उदय है; तातैं तिन के सर्वकाल संबंधी उदय-स्थान विषैं एक-एक ही भंग है। बहुरि सासादनादिक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणस्थान कौं प्राप्त भए, तिनविषैं वा विग्रहगति का कार्माणादिक कालनि विषैं व्युच्छित्ति भई प्रकृतिनि कौं जानि, अवशेष प्रकृतिनि के यथासंभव भंग जानने ॥ ६०२ ॥

वीसादीणं भंगा, इगिदालपदेसु संभवा कमसो।
एक्कं सट्ठी चेव य, सत्तावीसं च उगुवीसं॥ ६०३ ॥
वीसुत्तरछच्चसया, बारस पण्णत्तरीहिं संजुत्ता।
एक्कारससयसंखा, सत्तरससयाहिया सट्ठी॥ ६०४ ॥
ऊणत्तीससयाहिय, एक्कावीसा तदोवि एकट्ठी।
एक्कारससयसहिया, एक्केक्क विसरिसगा भंगा॥ ६०५ ॥विसेसयं।

विंशादीनां भंगा, एकचत्वारिंशत्पदेषु संभवाः क्रमशः।
एकः षष्टिः चैव च, सप्तविंश च एकोनविंशं॥ ६०३ ॥
विंशोत्तरषट् च शतानि, द्वादश पंचसप्ततिभिः संयुक्ता।
एकादशशतसंख्या, सप्तदशशताधिकाः षष्टि॥ ६०४ ॥
एकोनत्रिंशच्छताधि, कैकविंशं ततोऽपि एकषष्टिः।
एकादशशतसहिता, एकैकं विसदृश का भंगाः॥ ६०५ ॥ विशेषकं।

टीका – बीसकानैं आदि दैकरि जे स्थान कहे तिनिवषैं इकतालीस-जीवपदनि की अपेक्षा भंग संभवै, ते अनुक्रम तैं कहिए हैं–

तहां बीस का उदय सामान्य-समुद्घात-केवली कैं प्रतर,लोक-पूरण का कार्माणकाल विषैं है। तिसविषैं एक ही भंग है। बहुरि इकवीस के भंग कहिए है– देवगति का विग्रहगतिरूप कार्माण विषैं एक ही भंग है। तीर्थंकर कैं समुद्घात संबंधी कार्माण विषैं एक ही भंग है। मनुष्यगति का विग्रहगतिसंबंधी कार्माण विषैं सुभग आदेय यशस्कीर्ति इन तीन युगलनि विषैं एक एक के उदय तैं आठ भंग हैं। संज्ञी पंचेन्द्री का कार्माण विषैं भी तैसैं ही आठ भंग है। वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी इनके कार्माण विषैं यशस्कीर्ति के युगल तैं भए दोय भंग हैं ,तिनके आठ भए वादर-पृथ्वी अप, तेज, वायु, प्रत्येक-वनस्पती– इन पंचनि के कार्माण विषैं भी यशस्कीर्ति के युगल तैं भए दोय-दोय भंग हैं, तिनके दश भए। सूक्ष्म-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, सूक्ष्म-बादर-साधारण– इन छहौं के कार्माण विषैं एक-एक ही भंग हैं, तिनके छह-भंग भए। नारकी कैं कार्माण विषैं एक ही भंग है। लब्धि-अपर्याप्तक-सूक्ष्म-पृथ्वीकायादिक भेद तैं सतरह प्रकार तिनके कार्माण विषैं एक-एक ही भंग है, तिनके सतरह भए।

अैसैं इकईस के स्थान विषैं साठि-भंग हैं।

बहुरि चौबीस के स्थाननि विषैं भंग कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताका उदय पर्याप्तजीवनि का शरीर-मिश्रकाल विषैं हैं। तहां बादर-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, प्रत्येक— इन पंचनि विषैं यशस्कीर्ति युगल तैं भए दोय-भंगनि तैं दशभए। सूक्ष्म-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वादर-सूक्ष्म-साधारण इनविषैं एक-एक भंग तैं छह भए। बहुरि लब्धि— अपर्याप्तक ग्यारह, तिनकैं शरीर-मिश्रकालविषैं उदय है, तहां एक-एक ही भंग है, तिनके ग्यारह भए।

अैसैं चौबीस का स्थान विषैं सत्ताईस-भंग हैं।

बहुरि पचीस का विषैं देव, आहारक, नारकी इनकैं तौ एक-एक भंग तैं तीन भए। बहुरि शरीर-पर्याप्ति विषैं बादर-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, प्रत्येकनि के दोय-दोय भंग तैं दश भए। सूक्ष्म-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, सूक्ष्म—बादर-साधारण इनकैं एक-एक भंग तैं छह भए।

अैसैं पचीस के स्थान विषैं उगणीस-भंग हैं।

बहुरि छबीस का स्थान विषैं शरीरमिश्रकाल विषैं वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञीनि कैं यशस्कीर्ति युग्म तैं भए दोय-दोय भंगनि करि आठ हो हैं। संज्ञी-तिर्यंच अर मनुष्य इनि विषैं छह-संहनन, छह-संस्थान, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति युगल इनकरि दोयसै अठ्यासी-दोयसै अठ्यासी-भंग भए। तिनके पांचसै छिहतरि हो है(५७६)। तीर्थ रहित सामान्य-समुद्घात-केवली कैं छह-संस्थाननि के बदलने तैं छह-भंग हो हैं। बहुरि लब्धि-अपर्याप्तक छह, तिनके एक-एक भंग तैं छह-भंग हो है। बहुरि शरीर-पर्याप्ति काल विषैं बादर-पृथ्वीकाय के आतप, उद्योत सहितपने तैं दोयस्थान तिनविषैं यश-युग्म तैं दोय-दोय भंग, तिनके च्यारि भए। बहुरि बादर-अपकाय, प्रत्येक-वनस्पती इनविषैं भी दोय-दोय भंग तैं च्यारि भए। बहुरि उश्वास-पर्याप्तिकाल विषैं वादर-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, प्रत्येक इनविषैं यश-युग्म तैं दोय-दोय भंगनि तैं दश भए। सूक्ष्म-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, सूक्ष्म-वादर-साधारण, इनविषैं एक-एक भंग तैं छह भए।

अैसैं छबीस के स्थान विषैं छसै बीस-भंग हैं।

बहुरि सत्ताईस के स्थान विषैं तीर्थंकर-समुद्घात-केवली का शरीर-मिश्रकाल विषैं एक भंग है। देव, आहारक, नारकीनि का शरीर-पर्याप्ति काल विषैं एक-एक भंग, तिनके तीन भए। उश्वास-पर्याप्तिकाल विषैं बादर-पृथ्वीकाय के आतप, उद्योत तैं दोय-स्थान, तिनविषैं दोय-दोय भंग तैं च्यारि भए। बादर-अप, प्रत्येक के दोय-दोय भंग तैं च्यारि भए— अैसैं सत्ताईस के स्थान विषैं बारह-भंग हैं।

बुहरि अठाईस के स्थान विषैं शरीर-पर्याप्तिकाल विषैं निरतिशय-समुद्घात-केवली कैं विहायोगति-युगल, छह-संस्थान करि बारह-भंग हो हैं। मनुष्य अर संज्ञी-तिर्यंच विषैं सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति, विहायोगति कै युगल, छह-संस्थान, छह-संहनन इनकरि प्रत्येक पांचसै छिहंतरि भंग होंइ, तिनके ग्यारहसे बावन भए (११५२)। वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी विषैं यश-युग्म तैं दोय-दोय भंग हैं, तिनके आठ भए। देव, नारकी, आहारक— इनका आनपान-पर्याप्तिकाल विषैं एक-एक भंग, तिनके तीन भए।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अैसैं अठाईस के स्थान विषैं ग्यारहसै-पिचहत्तरि भंग हैं (११७५)।

बहुरि गुणतीस के स्थान विषैं शरीर-पर्याप्तिकाल विषैं तीर्थंकर-समुद्घात-केवली कैं एक-भंग है। संज्ञी-तिर्यंच-उद्योत सहित ताकैं पूर्वोक्त प्रकार पांचसै छिहंतरि भंग हैं (५७६)। वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी-उद्योत सहित, तिनकैं दोय-दोय भंग तैं आठ-आठ भंग हैं। बहुरि उश्वास-पर्याप्ति विषैं निरतिशय-समुद्घात-केवली कैं संस्थान-छह, विहायोगति युगल करि बारह-भंग हैं। मनुष्य विषैं वा संज्ञी-पंचेन्द्री विषैं पूर्वोक्त प्रकार प्रत्येक पांचसै छिहंतरि भंग हैं, तिनके ग्यारहसै बावन भए (११५२)। वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी, उद्योत रहित, तिनके दोय-दोय भंग करि आठ भंग हैं। बहुरि भाषा-पर्याप्तिकाल विषैं देव, आहारक, नारकी कैं एक-एक भंग करि तीन भए।

अैसैं गुणतीस के स्थान विषैं सतरहसै साठि-भंग हैं।

बहुरि तीस के स्थान विषैं उश्वास-पर्याप्तिकाल विषैं तीर्थंकर-समुद्घात-केवली कैं एक-भंग हैं। उद्योत सहित संज्ञा कैं पूर्वोक्त प्रकार पांचसै छिहंतरि भंग हैं (५७६)। उद्योत सहित वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, पंचेंद्री कैं दोय-दोय भंग तैं आठ भंग हैं। बहुरि भाषा-पर्याप्तिकाल विषैं तीर्थरहित सामान्यकेवली कैं छह-संस्थान, विहायोगति युगल, स्वरयुगल करि चौबीस-भंग हैं। मनुष्य विषैं छह-संस्थान, छह-संहनन, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति, विहायोगति, स्वर के युगल इनिकरि ग्यारहसै बावन भंग हैं (११५२)। उद्योतरहित संज्ञी-पंचेन्द्री-तिर्यंच विषैं भी तैसैं ही ग्यारहसै बावन-भंग हैं (११५२)। वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी कैं दोय-दोय भंगकरि आठ-भंग हैं।

अैसैं तीस के स्थान विषैं गुणतीससै इकईस-भंग हैं (२९२१)।

बहुरि तीर्थरहित-समुद्घात-केवली कैं भाषापर्याप्तिकाल विषैं चौईस-भंग हैं, ते पुनरुक्त हैं, जातैं पूर्वैं कहे तिनविषैं अर इनविषैं किछू विशेष नाहीं। बहुरि इकतीस के स्थान विषैं भाषा-पर्याप्ति विषैं तीर्थंकर-केवली कैं एक भंग है। उद्योत सहित संज्ञी-पंचेन्द्री विषैं पूर्वोक्त प्रकार ग्यारहसै बावन भंग हैं (११५२)। उद्योत सहित वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी-पंचेन्द्री के दोय-दोय भंगनि तैं आठ भए— अैसैं इकतीस के स्थान विषैं ग्यारहसै इकसठि-भंग हैं (११६१)।

तीर्थसहित-समुद्घात-केवली विषैं एक-भंग है, सो पुनुरुक्त है। अयोग-केवली विषैं तीर्थंकर सहित नव का, ताका एक-भंग है। बहुरि तीर्थंकर रहित आठ ताका एक-भंग।

अैसैं सर्व मिलि सात हजार सातसै अठावन (७७५८) भंग भए॥ ६०३-६०५॥

तिन पुनुरुक्त-भंगनि कौं कहैं हैं—

सामण्णकेवलिस्स स, मुग्घादगदस्स तस्स वचि भंगा।
तित्थस्सवि सगभंगा, समेदि तत्थेक्कमवणिज्जो॥ ६०६॥

सामान्यकेवलिनः, समुद्घातगतस्य तस्य वचसि भंगाः।
तीर्थस्यापि स्वकभंगाः, समा इति तत्रैकोपनेयः॥ ६०६॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – भाषा-पर्याप्तिकाल विषैं सामान्यकेवली वा समुद्घात सहित सामान्यकेवली कैं तीस के स्थान विषैं चौईस-चौईस भंग समान हैं। बहुरि तीर्थंकर-केवली कैं वा समुद्घात-तीर्थंकर-केवली कैं इकतीस के स्थान विषैं एक-एक भंग है, सो समान है ; तातैं ए पचीस भंग पुनरुक्त हैं, ते ग्रहण न करने ॥ ६०६ ॥

आगैं गुणस्थान विषैं तिन-भंगनि कौं कहैं हैं–

णारयसण्णिमणुस्ससुराणं उवरिमगुणाण भंगा जे।
पुणरुत्ता इदि अवणिय, भणिया मिच्छस्स भंगेसु ॥ ६०७ ॥

नारकसंज्ञिमनुष्यसुराणामुपरितनगुणानां भंगा ये।
पुनरुक्ता इत्यपनीय, भणिता भंगेषु ॥ ६०७ ॥

टीका – नारकी, संज्ञी-तिर्यंच, मनुष्य, देव इनकैं ऊपरि के सासादनादिक गुणस्थाननि विषैं जे भंग हैं, ते मिथ्यादृष्टि के भंगनि के समान हैं ; तातैं तिन पुनरुक्त-भंगनि कौं दूरिकरि एक मिथ्यादृष्टि ही का भंगनि विषैं ते भी कहे, सोई कहिए है–

मिथ्यादृष्टि विषैं इकईसके के साठि-भंगनि विषैं तीर्थंकर संबंधी एक बिना गुणसठि भंग हैं। चौबीसके के सत्ताईस-भंग हैं। पचीसके के उगणीस विषैं आहारक-शरीर-मिश्र संबंधी एक बिना अठारह-भंग हैं। छब्बीसके के छसै बीस विषैं सामान्य समुद्घात-केवली के छह-भंग बिना छहसै चौदह भंग हैं। सत्ताईसके के बारह विषैं आहारक, तीर्थंकर के दोय बिना दश-भंग हैं। अठाईस के ग्यारहसै पिचहत्तरि भंगनि विषैं सामान्य-समुद्घात-केवली के बारह, आहारक का एक, इन तेरह बिना ग्यारहसै बासठि-भंग हैं। गुणतीस के सतरहसै साठि-भंगनि विषैं सामान्य-समुद्घात-केवली के बारह, तीर्थंकर-समुद्घात-केवली का एक, आहारक का, एक इन चौदह बिना सतरैसै छियालीस-भंग हैं। तीसके के गुणतीससै इकईस-भंगनि विषैं सामान्य-केवली के चौईस, तीर्थंकर-केवली का एक, इन पचीस विना अठाईससै छिनवै-भंग हैं। इकतीसके के ग्यारहसै इकसठि-भंगनि विषैं तीर्थंकर का एक बिना ग्यारहसै साठि-भंग है।

बहुरि सासादन-गुणस्थान विषैं इकईसके के बादर-पृथ्वी, अप, प्रत्येक के छह ; वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी के आठ, संज्ञी आठ ; मनुष्य के आठ ; देव का एक– अैसैं इकतीस-भंग हैं। चौबीसके के बादर-पृथ्वी, अप, प्रत्येक के ही छह-भंग हैं। पचीसके का देवगति का एक-भंग है। छब्बीसके के वेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी के आठ, संज्ञी-पंचेंद्री के दोयसै अठ्यासी, मनुष्य के दोयसै अठ्यासी– अैसैं पांचसै चौरासी-भंग हैं। इस गुणस्थान विषैं सत्ताईस, अठ्ठाईस का उदय नाहीं है, जातैं शरीर-पर्याप्ति आदि कालनि विषैं एकेंद्रियादिक कैं मिथ्यादृष्टिपनां ही संभवै है। बहुरि गुणतीसके के देव, नारकी का एक-एक तैं दोय-भंग हैं। तीसके का भाषापर्याप्ति विषैं संज्ञी-तिर्यंच के ग्यारहसै बावन, मनुष्य के ग्यारहसै बावन– अैसैं तेईससै च्यारि-भंग हैं। इकतीसके का संज्ञी का भाषापर्याप्ति विषैं उद्योत सहित स्थान का ग्यारासै बावन-भंग हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मिश्रगुणस्थान विषैं गुणतीसके का देवनारकी का भाषापर्याप्ति विषैं एक-एक करि दोय-भंग हैं। तीसके के संज्ञी अर मनुष्य का मिलाएं तेईससै च्यारि-भंग हैं। इकतीसके के उद्योत सहित संज्ञी के ग्यारहसै बावन-भंग हैं।

बहुरि असंयत-गुणस्थान विषैं इकवीसके के च्यार्यौं गति का एक-एक भंग करि च्यारि-भंग हैं। पचीसके के घर्मा-नारक, वैमानिक-देव कैं एक-एक करि दोय-भंग हैं। छबीसके का भोगभूमिया-तिर्यंच कैं शुभ ही का उदय है; तातैं एक अर कर्मभूमियां-संज्ञी-तिर्यंच कैं छह-संस्थान, छह-संहनन तैं छत्तीस— ऐसैं सैंतीस-भंग हैं। सत्ताईसके कैं घर्मानारक, वैमानिक-देव का एक-एक करि दोय-भंग हैं। अठाईसके कैं भोगभूमियां-तिर्यंच, घर्मा-नारकी, वैमानिक देव इनिके उश्वास-पर्याप्ति विषैं एक-एक करि तीन, मनुष्य के छह-संस्थान, छह-संहनन, विहायोगति-युगल तैं बहत्तरि— ऐसैं पिचहत्तरि-भंग हैं।

गुणतीसके के भोगभूमियां-तिर्यंच, मनुष्य के प्रशस्त ही का उदय है ; तातैं एक-एक भंग करि तिनके आनपान-पर्याप्ति विषैं दोय अर देव, नारकी का भाषापर्याप्ति विषैं एक-एक भंग करि दोय अर कर्म-भूमिया-मनुष्य का आनपान-पर्याप्ति विषैं पूर्वोक्त प्रकार बहत्तरि— ऐसैं छिहंत्तरि-भंग हैं। तीसके के भोगभूमियां-तिर्यंच-उद्योत सहित, ताका आनपान-पर्याप्ति विषैं एक अर संज्ञी-तिर्यंच वा मनुष्य-कर्मभूमिया, तिन दोऊनि के मिलाएं तेईससै च्यारि— ऐसैं तेईससै पांच-भंग हैं। इकतीसके के संज्ञी-तिर्यंच के ही ग्यारहसै बावन-भंग हैं।

बहुरि देशसंयत-गुणस्थान विषैं तीसके के संज्ञी-तिर्यंच के संस्थान-छह, संहनन-छह, विहायोगति युगल, स्वरयुगल तैं एकसौ चवालीस, ऐसैं ही मनुष्य के एकसौ चवालीस— ऐसै दोयसै अठ्यासी भंग हैं। उद्योत सहित इकतीसके के संज्ञी-पंचेन्द्री का पूर्वोक्त प्रकार एकसौ चवालीस-भंग हैं।

बहुरि प्रमत्त विषैं आहारक का शरीर-मिश्र विषैं पचीसके का एक, शरीर-पर्याप्ति विषैं सत्ताईसके का एक, आनपानपर्याप्ति विषैं अठाईसका का एक, भाषापर्याप्ति विषैं गुणतीसका का एक-भंग है। औदारिक-शरीर का भाषापर्याप्ति संबंधी तीसके के छह-संस्थान, छह-संहनन, विहायोगति-युगल, स्वर-युगल तैं भए एकसौ चवालीस भंग हैं।

बहुरि अप्रमत्त विषैं तीसके के तैसैं ही एकसौ चवालीस भंग हैं।

बहुरि उपशम-श्रेणीवाले च्यारि-गुणस्थाननि विषैं प्रत्येक छह-संस्थान, तीन-संहनन, स्वर-युगल, बिहायोगति-युगल तैं बहत्तरि-बहत्तरि भंग हैं।

बहुरि क्षपकश्रेणी वाले आदि-गुणस्थाननि विषैं छह-संस्थान, एक-संहनन, विहायोगतियुगल, स्वयुगल ये चौईस-चौईस भंग हैं।

बहरि सयोगी विषैं समुद्घातरूप कार्माण विषैं वीसका एक-भंग हैं। तीर्थ सहित इकवीसका

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का एक-भंग हैं। औदारिक-मिश्र विषैं छबीस के छह-संस्थाननि करि छह-भंग हैं। तीर्थसहित सत्ताईसका का एक-भंग है। अठाईसका का मूल-शरीर विषैं प्रवेश करता शरीर-पर्याप्ति विषैं छह-संस्थान, विहायोगति के युगल तैं बारह-भंग हैं। तीर्थ-सहित गुणतीसका का एक, सामान्य-केवली का आनपान-पर्याप्ति विषैं बारह– ऐसैं तेरह-भंग हैं। तीर्थ-सहित तीसका का एक, भाषापर्याप्ति विषैं सामान्यकेवली का छह-संस्थान, स्वर-विहायोगति युगल तैं चौईस– ऐसैं पचीस-भंग हैं। तीर्थ सहित इकतीस का एक-भंग है।

बहुरि अयोगी विषैं नव का एक-भंग है। अष्ट का एक-भंग है ॥ ६०७ ॥

अडवण्णा सत्तसया, सत्तसहस्सा य होंति पिंडेण।
उदयट्ठाणे भंगा, असहायपरक्कमुद्दिट्ठा ॥ ६०८ ॥

अष्टपंचाशत्सप्तशतानि, सप्तसहस्राणि च भवंति पिंडेन।
उदयस्थाने भंगा, असहायपराक्रमोद्दिष्टाः ॥ ६०८ ॥

टीका – सहाय-रहित-पराक्रम के धारी वर्धमान-स्वामी, तिन बीस का आदि बारह-नामकर्म के उदय-स्थान तिनविषैं अपुनरुक्त-भंग हैं ते मिलाइ करि, अठावन अधिक सातसै सहित सातहजार (७७५८) कहे हैं। इहां नारकी, संज्ञी-पंचेंद्री-तिर्यंच, मनुष्य देव– इनके मिथ्यादृष्टि-गुणस्थान विषैं जे भंग कहे, तिनके सासादनादिक विषैं जे भंग कहे, तिनस्यों जिनके समान हैं, ते सासादनादिक के भंग-पुनरुक्त जानने ॥ ६०८ ॥

आगैं नामकर्म का सत्त्वस्थान का प्रकरण उगणीस-गाथाकरि कहै हैं–

तिदुइगिणउदी णउदी, अडचउदोअहियसीदि सीदी य।
ऊणासीदट्ठत्तरि, सत्तत्तरि दस य णव सत्ता ॥ ६०९ ॥

त्रिद्व्येकनवतिः नवतिः, अष्टचतुर्द्व्यधिकाशीतिरशीतिश्च।
एकोनाशीत्यष्टसप्तती, सप्ततिः दश च नव सत्त्वानि ॥ ६०९ ॥

टीका – तरेणवै, बाणवै, इक्याणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी, अस्सी, गुण्यासी, अठहत्तरि, सतहत्तरि, दश, नव-प्रकृतिरूप नामकर्म के सत्त्वस्थान तेरह हैं ॥ ६०९ ॥

तिनका विधान कहैं हैं–

सव्वं तित्थाहारुभ, ऊणं सुरणिरयणरदुचारिदुगे।
उव्वेल्लिदे हदे चउ, तेरे जोगिस्स दसणवयं ॥ ६१० ॥

सर्वं तीर्थाहारो, भयोनं सुरनिरयनरद्विचतुर्द्विके।
उद्वेल्लिते हते चतुष्कं, त्रयोदश योगिनो दश नवकं ॥ ६१० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सर्व-नामकर्म की प्रकृतिरूप तरेणवैं का स्थान है। सर्व प्रकृतिनि मैं स्यों तीर्थंकर घटतैं बाणवै का स्थान हो है। आहारक-द्विक घटैं इक्याणवै का हो है। तीर्थंकर, आहारक-द्विक दोन्यों घटैं निवै का हो है। बहुरि तिस निवै के स्थान विषैं देवगति वा आनुपूर्वी की उद्वेलना भएं अठ्यासी का हो है। इसविषैं भी नारकचतुष्टक की उद्वेलना भएं चउरासी का हो है। इसविषैं भी मनुष्द्विक की उद्वेलना भएं बियासी का हो है। बहुरि "णिरयतिरक्ख दु वियलं" इत्यादि गाथोक्त अनिवृत्तिकरण विषैं क्षय गई तेरह-प्रकृति ते तरेणवै मै स्यों घटैं अस्सी का हो है। बाणवै मै स्यों घटैं गुण्यासी का हो हैं। इक्याणवै मैं स्यों घटैं अठहत्तरि का हो है। निवै मैं स्यों घटैं सतहत्तरि का हो है। बहुरि अयोगकेवली विषैं दश का अर नव का स्थान है। असैं– सर्व नाम-कर्म के सत्त्वस्थान जानने ॥ ६१० ॥

नामकर्म के सत्त्व-स्थाननि का यंत्र

१ तरेणवै का स्थान सर्व-प्रकृतिरूप	१ बाणवै का स्थान तीर्थंकररहित
१ इक्याणवै का स्थान आहारक-द्विकरहित	१ निवै का स्थान तीर्थंकर, आहारक-द्विकरहित
१ अठ्यासी का स्थान तीर्थंकर, आहारक- द्विक, देवद्विक करि रहित	१ चौरासी का स्थान तीर्थंकर, आहारकद्विक, देवद्विक, नरकचतुष्क करि रहित
१ बियासी का स्थान तीर्थंकर, आहारकद्विक, देवाद्विक, नरकचतुष्क, मनुष्यद्विक करि भी रहित	१ अस्सी का स्थान अनिवृत्तिकरण विषैं तेरह क्षयगई तिनकरि रहित
१ गुण्यासी का स्थान तेरह अर तीर्थंकर-रहित	१ अठहत्तरि का स्थान तेरह अर आहाराद्विक रहित
१ सतहत्तरि का स्थान तेरह अर तीर्थंकर, आहारक-द्विक रहित	१ दश का स्थान तीर्थंकर-अयोगी कै अंतसमय सत्तारूप
१ नव का स्थान सामान्य-अयोग-केवली कैं अंतसमय सत्तारूप	

तिन दश का नव का स्थाननि विषैं प्रकृतिनि कौं कहै हैं–

गयजोगस्स दु तेरे, तदियाउगगोदइदि विहीणेसु।
दस णामस्स य सत्ता, णव चेव य तित्थहीणेसु॥ ६११ ॥

गतयोगस्य तु त्रयोदशसु, तृतीयायुष्कगोत्रेति विहीनेषु।
दश नाम्नश्च सत्ता, नव चैव च तीर्थहीनेषु॥ ६११ ॥

टीका – बहुरि अयोगकेवली विषैं सत्त्वप्रकृति 'उदयगवारणराणू' इत्यादि गाथा, सोई कहिए तेरह है, तिनविषैं वेदनीय, मनुष्यायु, उच्चगोत्र घटाएं, नामकी दश-प्रकृति के तीर्थंकर-प्रकृति बिना नव का हो है॥ ६११ ॥

.-भागप्रमाण कांडक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आगैं उद्वेलन के स्थाननि का विशेष कहैं हैं–

गुणसंजादप्पयडिं, मिच्छे बंधुदयगंधहीणम्मि।
सेसुव्वेल्लणपयडिं, णियमेणुव्वेल्लदे जीवो॥ ६१२॥

गुणसंजातप्रकृतिं, मिथ्ये बंधोदयगंधहीने।
शेषोद्वेल्लनप्रकृतिं, नियमेनोद्वेल्लयति जीवः॥ ६१२॥

टीका – मिथ्यादृष्टि विषैं जिनि प्रकृतिनि के बंध का वा उदय का गंध कहिए बासनामात्र, सोभी नाहीं अैसी सम्यक्त्वादि-गुण तैं उपजीं सम्यक्त्व-मोहनी, मिश्रमोहनी, आहारकद्विक – इनि च्यारि-प्रकृतिनि का, बहुरि अवशेष-उद्वेलन-प्रकृतिनि के उद्वेलन मिथ्यादृष्टि ही विषैं हो हैं॥६१२॥

ताका अनुक्रम कहैं हैं–

सत्थत्तादाहारं, पुव्वं उव्वेल्लदे तदो सम्मं।
सम्मामिच्छं तु तदो, एगो विगलो य सगलोय॥ ६१३॥

शस्तत्वादाहारं, पूर्वमुद्वेल्लयति ततः सम्यक्।
सम्यग्मिथ्यं तु तत, एको विकलश्च सकलश्च॥ ६१३॥

टीका– आहारकद्विक प्रशस्त-प्रकृति है; तातैं च्यार्योंगति का मिथ्यादृष्टि-जीव पहिलें आहारकद्विक की उद्वेलना करै, तहां पीछै सम्यक्त्वमोहनी, ता पीछें सम्यग्मिथ्यात्व-मोहनी की करैं, तहां पीछैं अवशेष देवद्विकादिक की एकेंद्री वा विकलेंद्री वा पंचेंद्री उद्वेलना करै है॥ ६१३॥

तिस उद्वेलना के अवसर का काल कहैं हैं–

वेदगजोग्गे काले, आहारं उवसमस्स सम्मत्तं।
सम्मामिच्छं चेगे, वियलि वेगुव्वछक्कं तु॥ ६१४॥

वेदकयोग्ये काले, आहारमुपशमस्य सम्यक्त्वं।
सम्यग्मिथ्यं चैकस्मिन् विकले वैगूर्वषट्कं तु॥ ६१४॥

उव्वा– वेदक-योग्य-काल विषैं तो आहारक-द्विक की उद्वेलना करै है अर उपशमकाल -प्रकृति वा सम्यग्मिथ्यात्व-प्रकृति की अर एकेंद्री, विकलेंद्री जीव वैक्रियिक-षट्क है॥ ६१४॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिन दोऊ कालनि का लक्षण कहैं हैं—

उदधिपुधत्तं तु तसे, पल्लासंखूणमेगमेयक्खे।
जावय सम्मं मिस्सं, वेदगजोग्गो य उवसमस्स तदो॥ ६१५॥

उदधिपृथक्त्वं तु त्रसे, पल्यासंख्योनमेकमेकाक्षे।
यावच्च सम्यं मिश्रं, वेदकयोग्यश्च उपशमस्य ततः॥ ६१५॥

टीका – सम्यक्त्व-मोहनी अर मिश्रमोहनी— इनकी जो पूर्वै स्थितिबंधी थी, सो वह सत्तारूप स्थिति त्रस कैं तौ पृथक्त्व-सागर प्रमाण अवशेष रहै अर एकेंद्री कैं पल्य का असंख्यातवां-भाग करि हीन एक-सागर प्रमाण अवशेष रहै, तावत्काल तौ वेदक-योग्य काल कहिए। बहुरि ताके ऊपरि जो तिसतैं भी सत्तारूप स्थिति घाटि होइ, तहां उपशम-काल कहिए॥ ६१५॥

आगैं तेज, बातकायिक कैं उद्वेलन-प्रकृतिनि कौं कहैं हैं—

तेउदुगे मणुवदुगं, उच्चं उव्वेल्लदे जहण्णिदरं।
पल्लासंखेज्जदिमं, उव्वेल्लणकालपरिमाणं॥ ६१६॥

तेजोद्विके मनुष्यद्विकमुच्चमुद्वेल्ल्यते जघन्येतरत्।
पल्यासंख्येयिम, मुद्वेल्लनकालपरिमाणं॥ ६१६॥

टीका – तेजकायिक, बात-कायिक विषैं मनुष्यद्विक, उच्चगोत्र— ए तीन उद्वेलनरूप हो हैं। तिस उद्वेलन करने के काल का प्रमाण जघन्य वा उत्कृष्ट पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना। इतने कालकरि तिनकी सर्व-स्थिति के निषेकनि कौं उद्वेलना रूप करै हैं॥ ६१६॥

सोई कहिए है—

पल्लासंखेज्जदिमं, ठिदिमुव्वेल्लदि मुहुत्तअंतेण।
संखेज्जसायरठिदिं, पल्लासंखेज्जकालेण॥ ६१७॥

पल्यासंख्येयिमां, स्थितिमुद्वेल्लयति मुहूर्तांतरेण।
संख्येयसागरस्थितिं, पल्यासंख्येयकालेन॥ ६१७॥

टीका – पूर्वै जो बंधी थी— ऐसी सत्तारूप स्थिति तामैं पल्य का असंख्यातवां-भाग प्रमाण स्थिति कौं एक-अंतर्मुहूर्त-काल विषैं उद्वेलना करै, तौ संख्यात-सागर प्रमाण मनुष्यद्विकादिक की सत्तारूप स्थिति कौं कितने काल विषैं उद्वेलना करैं ? यहु प्रश्न होतैं, तहां उत्तर ऐसा कि— पल्य का असंख्यातवां-भाग प्रमाणकाल विषैं तिस सर्व-स्थिति की उद्वेलना करैं, सोई कहिए है—

इस स्थिति का अग्रतन-भाग विषैं पल्य के अर्धच्छेदनि के असंख्यातवैं-भागप्रमाण कांडक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अधोगलन रूप अंतर्मुहूर्त करि अधिक, सो याकौं तौ प्रमाण-राशि करिए। बहुरि तिस-कांडक का पडना-उद्वेलनारूप होना, ताका काल-अंतर्मुहूर्त है, याकौं फलराशि करिए। बहुरि सर्वस्थिति संख्यात-सागर प्रमाण, याकौं इच्छाराशि करिए। फल कौं इच्छा करि गुणैं प्रमाण का भाग दीएं पल्य का असंख्यातवांभाग ही लब्धि-राशि का प्रमाण हो है। इहां अंतर्मुहूर्त विषैं जितनी स्थिति के निषेक उद्वेलना रूप कीए, ताका ही नाम कांडक जानना ॥ ६१७ ॥

आगैं सम्यक्त्वादिक की विराधना केती बार होइ ? सो कहैं हैं—

सम्मत्तं देसजमं, अणसंजोजणविहिं च उक्कस्सं।
पल्लासंखेज्जदिमं, वारं पडिवज्जदे जीवो ॥ ६१८ ॥

सम्यक्त्वं देशसंयत, मनसंयोजनविधि चोत्कृष्टं।
पल्यासंख्येयं वारं, प्रतिपद्यते जीवः ॥ ६१८ ॥

टीका — प्रथमोपशम-सम्यक्त्व अर वेदक-सम्यक्त्व अर देशसंयम अर अनंतानुबंधी का विसंयोजन का विधान इन च्यारि कौं उत्कृष्टपनैं जीव पल्य का असंख्यातवांभाग का जितने समय होंहि, तितनी बार छोडि ग्रहण करै है, पीछैं नियम करि सिद्धि पद ही कौं पावै है ॥ ६१८ ॥

चत्तारि वारमुवसम, सेढिं समरुहदि खविदकम्मंसो।
वत्तीसं वाराइं, संजममुवलहिय णिव्वादि ॥ ६१९ ॥

चतुरोवारानुपशम, श्रेणिं समारोहति क्षपतिकर्मांशः।
द्वात्रिंशद्वारान्, संयम, मुपलभ्य निर्वाति ॥ ६१९ ॥

टीका — उत्कृष्टपनैं उपशम-श्रेणी कौं च्यारि-बार ही चढै, पीछै क्षय किए हैं, कर्म का अंश जाने— ऐसा होइ क्षपक-श्रेणी ही चढै। बहुरि सकल-संयम कौं उत्कृष्टपनैं वत्तीसवार ही धारै, पीछैं निर्वाण ही कौं पावै ॥ ६१९ ॥

तित्थाहाराणुभयं, सव्वं तित्थं ण मिच्छगादितिये।
तस्सत्तकम्मियाणं, तग्गुणठाणं ण संभवई ॥ १ ॥ ३३३ कर्मकाण्ड।

तीर्थाहारोभयं, सर्वं तीर्थं न मिथ्यकादित्रये।
तत्सत्त्वकर्मकाणां, तद्गुणस्थानं न संभवति ॥ १ ॥

टीका — मिथ्यादृष्टि विषैं एक-जीव अपेक्षा तीर्थंकर, आहारकद्विक इनि दोऊनि करि सहित स्थान न पाइए हैं। कै तो तीर्थंकर ही का सत्त्व होइ, कै आहारक-द्विक ही का सत्त्व होइ, अर नाना-जीव अपेक्षा दोऊनि का सत्त्व मिथ्यादृष्टि विषैं है। बहुरि सासादन विषैं नानाजीव अपेक्षा भी आहारक, तीर्थंकर सहित सत्त्वस्थान नाही है। बहुरि मिश्र विषैं तीर्थंकर सहित सत्त्वस्थान

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नाही है, आहारक-सहित है ; जातैं तिनकर्मनि की सत्तासहित जीवनि कै सो गुणस्थान न संभवै है। सोई कहिए है—

तीर्थंकर, आहारक दोऊ का सत्त्व होतैं मिथ्यात्व का उदय होइ नाहीं। तीर्थंकर वा आहारक विषैं एक का भी सत्त्व होतैं मिथ्यात्व-रहित अनंतानुबंधी का उदय होइ नाहीं। तीर्थंकर का सत्त्व होतैं मिश्रमोहनी का उदय होइ नाहीं, आहारकद्विक का सत्त्व होतैं मिश्र-मोहनी का उदय होइ ॥ ६१९ ॥

आगैं च्यारि-गति की विवक्षा करि गुणस्थान विषैं नामकर्म के सत्त्वस्थान लगावै हैं—

सुरणरसम्मे पढमो, सासणहीणेसु होदि बाणउदी।
सुरसम्मे णरणारय, सम्मे मिच्छे य इगिणउदी ॥ ६२० ॥

सुरनरसम्ये प्रथमं, सासनहीनेषु भवति द्वानवतिः।
सुरसम्ये नरनारक, सम्ये मिथ्ये चैकनवतिः ॥ ६२० ॥

टीका — तरेणवै का सत्त्वस्थान देव-असंयत-सम्यग्दृष्टी विषैं वा मनुष्य-असंयतादिक, सम्यग्दृष्टी विषैं संभवै है। बहुरि बाणवै का स्थान सासादन रहित च्यांर्यो गति के जीवनि विषैं संभवै है। बहुरि इक्याणवै का स्थान देव-सम्यग्दृष्टी विषैं अर मनुष्य, नारकी-सम्यग्दृष्टी वा मिथ्यादृष्टी विषैं संभवै ॥ ६२० ॥

णउदी चदुग्गदिम्मि य, तेरसखवगोत्ति तिरियणरमिच्छे।
अडचउसीदी सत्ता, तिरिक्खमिच्छम्मि वासीदी ॥ ६२१ ॥

नवतिः चतुर्गतौ च, त्रयोदशक्षपक इति तिर्यग्नरमिथ्ये।
अष्टचतुरशीतिः सत्ता, तिर्यग्मिथ्ये द्व्यशीतिः ॥ ६२१ ॥

टीका – बहुरि निवै का स्थान अनिवृत्तिकरण विषैं तेरह-प्रकृति क्षय हो हैं, तिसतैं नीचैं सर्वत्र च्यार्योंगति के जीवनि विषैं संभवै है। बहुरि अट्ठासी, चौरासी के दोऊ-स्थान तिर्यंच वा मनुष्य मिथ्यादृष्टि विषैं ही संभवै है, जातैं 'सपदे उप्पण्णठाणेवि' इस गाथा तैं एकेंद्रीयादिक विषैं, जहां देवद्विकादिक की उद्वेलना होइ, तहां भी ऐसी सत्ता पाइए। बहुरि सो जीव मरि तिर्यंच विषैं वा मनुष्य विषैं जहां उपजैं, तहां भी अेसी सत्ता पाइए। बहुरि बियासी का स्थान मिथ्यादृष्टी-तिर्यंच विषैं ही संभवै है, जातैं मनुष्यद्विक की उद्वेलना तेज, बातकायिक कैं होइ, तहां अैसी सत्ता होइ, बहुरि वह मरिकरि भी तिर्यंच ही विषैं उपजैं, अन्यत्र नाही तहां अैसी सत्ता होइ ॥ ६२१ ॥

३३३वीं गाथा में प्रथम पाद में 'णुभयं' के स्थान पर 'जुगवं' है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सीदादिचउट्ठाणा, तेरसखवगादु अणुवसमगेसु।
गयजोगस्स दुचरिमं, जाव य चरिमम्हि दसणवयं॥ ६२२॥

अशीत्यादिकचतुः स्थानानि, त्रयोदशक्षपकादनुपशामकेषु।
गतायोगस्य द्विचरमं, यावच्च चरमे दशनवकं॥ ६२२॥

टीका – असीकानैं आदि देकरि च्यारि-स्थान तेरह-प्रकृति क्षयसहित अनिवृत्तिकरण तैं लगाय अयोगी का द्विचरमसमयपर्यंत जानने दश का नव का सत्त्व अयोगी का अंतसमय विषैं बहुरि संभवै है॥ ६२२॥

आगैं इकतालीस जीव-पदनि विषैं कहै हैं–

णिरये वा इगिणउदी, उणदी भूआदिसव्वतिरियेसु।
बाणउदी णउदी अडचउ, बासीदी य होंति सत्ताणि॥ ६२३॥

निरये द्वयेकनवतिर्न, वतिर्भ्वादिसर्वतिर्यक्षु।
द्वानवतिर्नवतिरष्टच, तुद्वर्यशीतिश्च भवंति सत्त्वानि॥ ६२३॥

टीका – नाम-कर्म के सत्त्वस्थान नारकीनि विषैं बाणवै, इक्याणवै, निवै के– ए तीनू हैं। पृथ्वीकायिकादिक सर्व तिर्यंचनि विषैं बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, वियासी के पांच-पांच स्थान हैं॥ ६२३॥

बासीदिं वज्जित्ता, बारसठाणाणि होंति मणुवेसु।
सीदादिचदट्ठाणा, छट्ठाणा केवलिदुगेसु॥ ६२४॥

द्वयशीतिं वर्जयित्वा, द्वादशस्थानानि भवंति मानवेषु।
अशीत्यादिचतुःस्थानानि, षट्स्थानानि केवलिद्विकयोः॥ ६२४॥

टीका – मनुष्य विषैं वियासी का बिना अवशेष बारह-सत्त्वस्थान हैं। सयोग-केवली विषैं अस्सी का आदि च्यारि-स्थान हैं। अयोगी विषैं असी का आदि छह-स्थान हैं।। ६२४॥

समविसमट्ठाणाणि य, कमेण तित्थिदरकेवलीसु हवे।
तिदुणवदी आहारे, देवे आदिमचउक्कं तु॥ ६२५॥

समविषमस्थानानि च, क्रमेण तीर्थंतरकेवलिनोर्भवेयुः।
त्रिद्विनवतिराहारे, देवे आदिमचतुष्कं तु॥ ६२५॥

टीका – केवली विषैं स्थान कहे सयोगी विषैं च्यारि, अयोगी विषैं छह तिनविषैं तीर्थंकर सहित विषैं समरूप, तीर्थंकर-रहित विषैं विषमरूप प्रकृति जाननी। सयोगी विषैं असी, अठहत्तरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

के, अयोगी विषैं ते दोय अर दश का— ऐसैं ए स्थान सम गिणती कौं धरैं तीर्थंकर के सत्त्वसहित हैं। बहुरि सयोगी विषैं गुण्यासी, सतहत्तरि के, अयोगी विषैं ते दोय अर नव का— ए स्थान गिणती कौं धरैं सामान्य-केवली के सत्त्वरूप हैं। बहुरि आहारक विषैं तरेणवै, बाणवै के दोय सत्त्वस्थान हैं। बहुरि वैमानिक-देवनि विषैं आदि के च्यारि-स्थान हैं ॥ ६२५ ॥

बाणउदिणउदिसत्ता, भवणतियाणं च भोगभूमीणं।
हेट्ठिमपुढविचउक्क भ, वाणं च य सासणे णउदी ॥ ६२६ ॥

द्वानवतिनवतिसत्ता, भवनत्रिकाणां च भोगभूमीनां।
अधस्तनपृथिवीचतुष्कभ, वानां च च सासने नवतिः ॥ ६२६ ॥

टीका – भवनत्रिक-देवनि कैं सर्व भोगभूमिया मनुष्य-तिर्यंचनि कैं अंजनादिक च्यारि नीचली पृथ्वी के नारकीनि कैं बाणवै, निवै के दोय ही सत्त्वस्थान हैं। बहुरि सर्व ही सासादनवर्ती जीवनि कैं निवै का ही एक स्थान है ॥ ६२६ ॥

मूलुत्तरपयडीणं, बंधोदयसत्तठाणभंगा हु।
भणिदा हु तिसंजोगे, एत्तो भंगे परूवेमो ॥ ६२७ ॥

मूलोत्तरप्रकृतीनां, बंधोदयसत्त्वस्थानभंगा हि।
भणिता हि त्रिसंयोगे, इतो भंगान् प्ररूपयामः ॥ ६२७ ॥

टीका – मूल-प्रकृति वा उत्तर प्रकृति तिनके बंध, उदय, सत्त्वरूप स्थान वा भंग कहे। इहां तैं आगैं बंध, उदय, सत्ता इनिका त्रिसंयोग विषैं स्थान वा भंगनि कौं हम प्ररूपण करैं हैं ॥ ६२७ ॥

सोई कहिए हैं—

अट्ठविहसत्तछब्बं, धगेसु अट्ठेव उदयकम्मंसा।
एयविहे तिवियप्पो, एयवियप्पो अबंधम्मि ॥ ६२८ ॥

अष्टविधसप्तषट्बं, धकेषु अष्टैव उदयकर्मांशाः।
एकविधं त्रिविकल्प, एकविकल्पोबंधे ॥ ६२८ ॥

टीका – मूल प्रकृति ज्ञानावरणादि भेद तैं आठ प्रकार हैं तहां जिस जीव के आठप्रकार वा सात प्रकार वा छह प्रकार मूल-प्रकृतिनि का बंध होइ, ताकैं उदय अर सत्त्व आठ-आठ प्रकार ही का जानना। बहुरि जाकैं एकप्रकार मूल-प्रकृति का बंध है, ताकैं उदय सात प्रकार, सत्त्व आठप्रकार अथवा उदय अर सत्त्व दोन्यूं सात-सात प्रकार वा उदय अर सत्त्व दोन्यूं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

च्यारि-च्यारि प्रकार पाइए है। बहुरि जाकैं एक भी मूल-प्रकृति का बंध नाहीं, ताकैं उदय वा सत्त्व दोन्यूं च्यारि-च्यारि का ही है ॥ ६२८ ॥

ब	८	७	६	१	१	१	०
उ	८	८	८	७	७	४	४
स	८	८	८	८	७	४	४

आगैं इनिकौं गुणस्थाननि विषैं जोडे हैं—

मिस्से अपुव्वजुगले, विदियं अपमत्तओत्ति पढमदुगं।
सुहुमादिसु तदियादी, बंधोदयसत्तभंगेसु ॥ ६२९ ॥

मिश्रेऽपूर्वयुगले, द्वितीयमप्रमत्त इति प्रथमद्विकं।
सूक्ष्मादिषु तृतीयादि बंधोदयसत्त्वभंगेषु ॥ ६२९ ॥

टीका – तिन बंध, उदय, सत्त्व के भंगनि विषैं गुणस्थानकनि प्रति मिश्र विषैं अर अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण विषैं सात मूल-प्रकृतिनि का बंध अर आठ का उदय, आठ का सत्त्व ऐसा दूसरा ही भंग पाइए है। बहुरि मिश्र विना अवशेष मिथ्यादृष्ट्यादि अप्रमत्त पर्यंत छह विषैं आठ-आठ ही का बंध, उदय, सत्तारूप प्रथम-भंग अर सात का बंध आठ-आठ का उदय वा सत्त्व अैसा दूसरा-भंग पाइए है। बहुरि सूक्ष्म-सांपराय, अयोगी पर्यंतनि विषैं क्रम तैं तीसरा-भंग नें आदि दैकरि छह का बंध आठ-आठ का उदय, सत्त्व, अर एक का बंध, सात का उदय, आठ का सत्त्व अर एक का बंध, सात-सात का उदय-सत्त्व, अर एक का बंध च्यारि-च्यारि का उदय-सत्त्व, अर बंध का अभाव च्यारि-च्यारि का उदय-सत्त्व—अैसैं यथासंभव भंग पाइए हैं ॥ ६२९ ॥

मि	सासा	मि	असं	देश	प्रमत्त	अप्रमत्त	अपू	अनि	सू	उप	क्षीण	सयो.	अयो.
बं ८ । ७	बं ८ । ७	बं ७	बं ८ । ७	बं ८ । ७	बं ८ । ७	बं ८ । ७	बं ७	बं ७	बं ६	बं १	बं १	बं १	बं ०
उ ८ । ८	उ ८ । ८	उ ८	उ ८ । ८	उ ८ । ८	उ ८ । ८	उ ८ । ८	उ ८	उ ८	उ ८	उ ७	उ ७	उ ४	उ ४
स ८ । ८	स ८ । ८	स ८	स ८ । ८	स ८ । ८	स ८ । ८	स ८ । ८	स ८	स ८	स ८	स ८	स ७	स ४	स ४

आगैं उत्तर-प्रकृतिनि विषैं कहैं हैं—

बंधोदयकम्मंसा, णाणावरणांतरायिए पंच।
बंधोपरेमेवि तहा, उदयंसा होंति पंचेव ॥ ६३० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

बंधोदयकर्मांशा, ज्ञानावरणांतराययोः पंच।
बंधोपरमेऽपि तथा, उदयांशा भवंति पंचैव॥ ६३०॥

टीका – ज्ञानावरण अर अंतराय इनकी पांच-पांच प्रकृति सूक्ष्म-सांपराय पर्यंत बंध, उदय, सत्त्वरूप हैं। बंध का अभाव भएं उपशांत-मोह, क्षीण-मोह विषैं उदय अर सत्त्वरूप ही पांच-पांच प्रकृति हैं। इहां अंश नाम सत्त्व का जानना॥ ६३०॥

बिदियाबरणे णवबंधगेसु चदुपंचउदय णवसत्ता।
छब्बंधगेसु एवं, तह चदुबंधे छडंसा य॥ ६३१॥
उवरदबंधे चदुपंचउदय णव छच्च सत्त चदु जुगलं।
तदियं गोदं आउं, विभज्ज मोहं परं वोच्छं॥ ६३२॥ जुम्मं।

द्वितीयावरणे नवबंधकेषु चतुःपंचोदयः नवसत्ता।
षड्बंधकेषु एवं, तथा चतुर्बंधे षडंशाश्च॥ ६३१॥
उपरतबंधे चतुःपंचोदयो नव षट् च सत्त्व चतुष्कं युगलं।
तृतीयं गोत्रमायुर्विभज्य मोहं परं वक्ष्ये॥ ६३२॥ युग्मं।

ज्ञानावरणांतरायगुणस्थानेषु तत्त्रिसंयागरचना–

मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५

टीका – दूसरा दर्शनावरण विषैं नव का जिनकैं बंध– अैसैं मिथ्यादृष्टि-सासादन, तिनकें उदय पांच का वा च्यारि का अर सत्त्व नव ही का जाननां। बहुरि छह का जिनके बंध पाइए– अैसै मिश्रादिक दोऊ श्रेणीरूप अपूर्वकरण का प्रथम-भागपर्यंत, तिनकैं भी अैसैं ही उदय-च्यारि का वा पांच का सत्त्व नव का है। बहुरि च्यारि का जिनकैं बंध– अैसैं अपूर्वकरण के दूसरे-भाग तैं लगाय उपशमक-सूक्ष्म-सांपराय पर्यंत वा सोलह-प्रकृति का क्षय करनेवाला क्षपक-अनिवृत्ति-करण पर्यंत विषैं, उदय तैसें ही च्यारि वा पांच का है। सत्त्व नव का है अर सोलह-प्रकृति क्षपक तैं ऊपरि सूक्ष्म-सांपराय पर्यंत उदय तौ तैसैं ही अर सत्त्व-छह का है। बहुरि जिनके बंध का अभाव भया, तिनकैं उदय तैसैं ही च्यारि वा पांच का है। सत्त्व

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उपशांत-कषाय विषैं नव का, क्षीणकषाय विषैं द्विचरम-समय पर्यंत छह का है। बहुरि क्षीणकषाय का अंतसमय विषैं उदय वा सत्त्व दोन्यूं ही च्यारि-च्यारि का है। बहुरि वेदनीय, गोत्र, आयु के त्रिसंयोग-भंगनि का विभाग करि गुणस्थाननि विषैं लगाइ आगै मोहनीय के कहोंगा ॥६३१-६३२ ॥

मि	सा	मि	असं	देश	प्र	अप्र	अपू	उ क्ष	अनि	उ क्ष	सू	उ क्ष	उ	क्षी
बं९	९	६	६	६	६	६	६ । ४	६ । ५	४	४	४	४	०	० । ०
उ ।४५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५	४ । ५ । ४
स९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९ । ६	९	६	९	६ । ४

सादासादेक्कदरं, बंधुदया होंति संभवट्ठाणे।
दोसत्तं जोगित्ति य, चरिमे उदयागदं सत्तं॥ ६३३ ॥
छट्ठोत्ति चारि भंगा, दो भंगा होंति जाव जोगिजिणे।
चउभंगाऽजोगिजिणे, ठाणं पडि वेयणीयस्स॥ ६३४ ॥ जुम्मं।

सातासातैकतरं, बंधोदयौ भवतः संभवस्थाने।
द्विसत्वं योगीति च, चरमे उदयागतं सत्त्वं॥ ६३३ ॥
षष्ठ इति चत्वारो भंगा, द्वौ भंगौ भवतो यावद्योगिजिनं।
चतुर्भंगा अयोगिजिने, स्थानं प्रति वेदनीयस्य॥ ६३४ ॥ युग्मं।

टीका – साता वा असाता विषैं एक ही का बंध वा उदय, योग्य-स्थान विषैं हो है। बहुरि सत्त्व है सो सयोगी पर्यंत दोय-दोय ही का है। अयोगी विषैं उदय जाका होइ, तिसही का सत्त्व है; तातैं वेदनीय के गुणस्थान प्रतिभंग-छठा प्रमत्तपर्यंत तौ साता का बंध वा उदय, सत्त्व दोऊनि का अथवा साता का बंध असाता का उदय, सत्त्व दोऊनि का अथवा असाता का बंध, साता का उदय, सत्त्व दोऊनि का अथवा असाता ही का बंध वा उदय अर सत्त्व दोऊनि का— अैसैं च्यारि-भंग हैं। बहुरि ऊपरि सयोगी पर्यंत केवल साता ही का बंध है; तातैं साता ही का बंध वा उदय अर सत्त्व-दोऊनि का अथवा साता का बंध, असाता का उदय, सत्त्व दोऊनि का— ऐसैं दोय ही भंग हैं। बहुरि अयोगी विषैं बंध का तौ अभाव है; तातैं साता का उदय, सत्त्व दोऊनि का अथवा असाता का उदय, सत्त्व दोऊनि का अथवा साता ही का उदय, साता ही का सत्त्व अथवा असाता ही का उदय असाता ही का सत्त्व— अैसैं च्यारि-भंग हैं॥ ६३३-६३४ ॥

आगैं गोत्र के कहैं हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

णीचुच्चाणेकदरं, बंधुदया होंति संभवट्ठाणे।
दोसत्ताजोगित्ति य, चरिमे उच्चं हवे सत्तं॥ ६३५ ॥

नीचोच्चयोरेकतरं, बंधोदयौ भवतः संभवस्थाने।
द्विसत्त्वमयोगीति च, चरमे उच्चं भवेत्सत्त्वं॥ ६३५ ॥

टीका – गोत्रिद्विक का बंधरूप यथासंभव स्थान विषैं उच्च वा नीच विषैं एक ही का बंध वा उदय हो है। बहुरि सत्त्व अयोगी का द्विचरम समय पर्यंत दोऊनि का है। ऊपरि एक उच्च ही का है॥ ६३५ ॥

बं	नी	ना	उ	उ	नी	०	०
उ	नी	उ	उ	नी	नी	उ	उ
स	उ	२	२	२	नी	उ	उ

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ, वाउम्मि य णीचमेव सत्तं तु।
सेसिगिवियले सयले, णीचं च दुगं च सत्तं तु॥ ६३६ ॥

उच्चोद्वेल्लिततेजसि, वायौ च नीचमेव सत्त्वं तु।
शेषैकविकले सकले, नीचं च द्विकं च सत्त्वं तु॥ ६३६ ॥

टीका – उच्चगोत्र की उद्वेलना जिनकैं भई– ऐसैं तेजकायिक-बातकायिक, तिनकैं नीचगोत्र ही का सत्त्व है। बहुरि अवशेष एकेंद्री, विकलेंद्री, सकलेंद्री कैं सत्त्व नीच ही का वा दोऊनि का है॥ ६३६ ॥

सोई कहिए है–

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ, वाऊ सेसे य वियलसयलेसु।
उप्पण्णपढमकाले, णीचं एयं हवे सत्तं॥ ६३७ ॥

उच्चोद्वेल्लिततेजसि, वायौ शेषे च विकलसकलेषु।
उत्पन्नप्रथमकाले, नीचमेकं भवेत्सत्त्वं॥ ६३७ ॥

टीका – उच्चगोत्र की उद्वेलना संयुक्त तेजकायिक, बातकायिक विषैं एक नीच गोत्र ही का सत्त्व है। बहुरि तेज, बातकायिक मरि जहां उपजैं ऐसै एकेंद्री, विकलेंद्री, सकलेंद्री-तिर्यंच, तिनविषैं उपजने तैं अंतर्मुहूर्त पर्यंत पहिले-काल विषैं एक नीच ही का सत्त्व है। पीछैं उच्च कौं बांधैं, तब तिनके दोऊनि का सत्त्व हो है॥ ६३७ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिच्छादिगोदभंगा, पण चदु तिसु दोण्णि अट्ठठाणेसु।
एक्केक्का जोगिजिणे, दो भंगा होंति णियमेण॥ ६३८ ॥

मिथ्यादौ गोत्रभंगाः, पंच चत्वारः त्रिषु द्वौ अष्टस्थानेषु।
एकैकोऽयोगिजिने, द्वौ भंगो भवंति नियमेन॥ ६३८ ॥

टीका – नियम करि गोत्र के भंग गुणस्थाननि विषैं कहिए हैं– मिथ्यादृष्टि विषैं नीच का बंध अर उदय, सत्त्व दोऊनि का अथवा नीच का बंध, उच्च का उदय, सत्त्व-दोऊनि का अथवा उच्च का बंध अर, उदय, सत्त्व-दोऊनि का अथवा उच्च का बंध, नीच का उदय, सत्त्व दोऊनि का अथवा नीच ही का बंध, उदय, सत्त्व– अैसैं पंच-भंग हैं। बहुरि सासादन विषैं अंत का नीच ही का बंध, उदय, सत्त्वरूप भंग नाहीं, अवशेष च्यारि हैं ; जातैं तेजोद्विक विषैं सासादन नाहीं है। बहुरि मिश्रादिक तीन विषैं उच्च का बंध अर उदय, सत्त्व दोऊनि का अथवा उच्च का बंध, नीच का उदय, सत्त्व दोऊनि का– अैसैं दोय-दोय भंग हैं।

बहुरि प्रमत्तादि सूक्ष्मसांपराय पर्यंत विषैं उच्च ही का बंध उच्च ही का उदय, सत्त्व दोऊनि का एक-एक ही भंग है। ऊपरि सयोगी पर्यंत बंध का अभाव, उच्च का उदय, सत्त्व-दोऊनि का– अैसा ही एक-भंग है। अयोगि विषैं उच्च का उदय, सत्त्व दोऊनि का वा उच्च ही का उदय अर सत्त्व– अैसैं दोय-भंग हैं॥ ६३८ ॥

आगैं आयु के बंध-तेरह गाथा सूत्रनि करि कहै हैं–

सुरणिरया णरतिरियं, छम्मासवसिट्ठगे सगाउस्स।
णरतिरिया सव्वाउं, तिभागसेसम्मि उक्कस्सं॥ ६३९ ॥
भोगभुमा देवाउं, छम्मासवसिट्ठगे य बंधंति।
इगिविगला णरतिरियं, तेउदुगा सत्तगा तिरियं॥ ६४० ॥ जुम्मं।

सुरनिरया नरतिर्यंच, षण्मासावशिष्टके स्वकायुषः।
नरतिर्यंचः सर्वायूंषि, त्रिभागशेषे उत्कृष्टं॥ ६३९ ॥
भोगभूमा देवायुः, षण्मासावशिष्ट के च बंध्नंति।
एकविकला नरतिर्यंचं, तेजोद्विकौ सप्तकाः तिर्यंचं॥ ६४० ॥ युग्मं।

टीका – जिस उदयागत-आयु कौं भोगवै है, तिस भुज्यमान-आयु के उत्कृष्ट छहमास अवशेष रहैं देवनारकी हैं, ते मनुष्यायु वा तिर्यंचायु कौं बांधै हैं। तिस काल विषैं बंधयोग्य हो हैं। बहुरि मनुष्य, तिर्यंच भुज्यमान-आयु का तीसरा-भाग अवशेष रहैं, च्यार्यों आयु कौं बांधै हैं। बहुरि भोगभूमियां छह-मास अवशेष रहैं देवायु ही कौं बांधैं। बहुरि एकेंद्री वा विकलेंद्री है, सो मनुष्यायु वा तिर्यंचायु ही कौं बांधै। बहुरि तेजकायिक वा बातकायिक वा सप्तम-पृथ्वी के नारकी तिर्यंचायु ही कौं बांधैं॥ ६३९-६४० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

अैसें आयु का बंधविधान कहि उदय, सत्त्व का विधान कहैं हैं–

सगसगगदीणमाउं, उदेदि बंधे उदिण्णगेण समं।
दो सत्ता हु अबंधे, एक्कं उदयागदं सत्तं॥ ६४१ ॥

स्वकस्वकगतीनामायुरुदेति बंधे उदीर्णकेन समं।
द्वे सत्त्वे हि अबंधे, एकमुदयागतं सत्त्वं॥ ६४१ ॥

टीका – नरकादिकनि कैं अपनी-अपनी गति संबंधी ही एक आयु उदय हो है। बहुरि सत्त्व परभव की आयु का बंध भएं उदयागत-आयु सहित दोय आयु का है। एक बध्यमान, एक भुज्यमान। बहुरि अबद्धायु कैं एक उदय आया, भुज्यमान-आयु ही का सत्त्व है॥ ६४१ ॥

एक्के एक्कं आऊ, एक्कभवे बंधमेदि जोग्गपदे।
अडवारं वा तत्थवि, तिभागसेसे व सव्वत्थ॥ ६४२ ॥

एकस्मिन्नेकमायु, रेकभवे बंधमेति योग्यपदे।
अष्टवारं वा तत्रापि, त्रिभागशेषे एवं सर्वत्र॥ ६४२ ॥

टीका – एक जीव एक-भव विषैं एक ही आयु कौं बांधै, सोभी योग्यकाल विषैं आठ बार ही बांधैं, तहां सर्वत्र तीसरा-तीसरा भाग अवशेष रहैं बांधै है॥ ६४२ ॥

इगिवारं वज्जित्ता, वड्ढी हाणी अवट्ठिदी होदी।
ओवट्टणघादो पुण, परिणामवसेण जीवाणं॥ ६४३ ॥

एकवारं वर्जयित्वा, वृद्धिर्हानिरवस्थितिर्भवति।
अपवर्तनघातः पुनः, परिणामवशेन जीवानां॥ ६४३ ॥

टीका – आठ अपकर्षनि विषैं पहिलीवार बिना, द्वितीयादिक बार विषैं पूर्वैं जो आयु बांध्या था, तिसकी स्थिति की वृद्धि वा हानि वा अवस्थिति हो है।

भावार्थ – पहलैं आयु की स्थिति जो बांधी थी, पीछैं दूसरीवार वा तीसरीवार इत्यादिक बांधै, तब पहिली स्थितिस्यों अधिक वा हीन वा जेती की तेती स्थिति बांधैं। तहां जो वृद्धि होइ, तौ पीछै जो अधिक स्थिति बंधी तिसही की प्रधानता जाननी। बहुरि जो हानि होइ तौ पहिली अधिक स्थिति बंधी थी, ताकी प्रधानता जाननी। बहुरि आयु के बंध को करते जीव, तिनके परिणामनि के वश तैं अपवर्तन भी हो है।

अपवर्तन नाम घटने का है, सो याकौं अपवर्तनघात कहिए, जातैं उदय आया आयु के अपवर्तन का नाम कदलीघात है। बहुरि तीसराभाग-तीसराभाग अवशेष रहैं, आयु बंधै ही बंधै,

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अैसा एकांत नियम नाहीं। तिस काल विषैं आयु के बंध होने की योग्यता हो है, तहां आयु बंधै वा न बंधै, अर अन्यकाल विषैं आयु का बंध होइ ही नाहीं, यहु नियम है। अपकर्षनि का वर्णन पूर्वै करि आए हैं ; तातैं इहां नाहीं कीया है ॥ ६४३ ॥

एवमबंधे बंधे, उवरदबंधेवि होंति भंगा हु।
एक्कस्सेक्कम्मि भवे, एक्काउं पडि तये णियमा॥ ६४४ ॥

एवमबंधे बंधे, उपरतबंधेऽपि भवंति भंगा हि।
एकस्यैकस्मिन् भवे, एकायुः प्रति त्रयो नियमात्॥ ६४४ ॥

टीका – अैसै पूर्वोक्त रीति करि बंध वा अबंध वा उपरत-बंधकरि एक जीव कैं एक पर्याय विषैं एक-आयु प्रति तीन-भंग नियम तैं हो हैं। तहां वर्तमान-काल विषैं जहां परभव संबंधी आगामी-आयु का बंध होइ, तहां बंध-आगामी-आयु एक, उदय भुज्यमान-आयु एक, सत्त्व-भुज्यमान-बध्यमान आयु दोय पाइए, तहां बंध कहिए। बहुरि जे आगामी-आयु का अतीतकाल विषैं बंध न भया, वर्तमान-काल विषैं भी न हो है, तहां बंध का अभाव अर उदय, सत्त्व एक भुज्यमान-आयु पाइए तहां अबंध कहिए। बहुरि जहां आगामी-आयु का पूर्वै बंध भया होइ अर वर्तमान-काल विषैं बंध न होता होइ, तहां बंध का अभाव अर उदय भुज्यमान-आयु एक का अर सत्त्व पूर्वबद्ध वा भुज्यमान-आयु दोय का होइ, तहां उपरत-बंध कहिए– अैसैं एक-एक आयु प्रति तीन-तीन भंग जानने ॥ ६४४ ॥

एक्काउस्स तिभंगा, संभवआऊहिं ताडिदे णाणा।
जीवे इगिभवभंगा, रूऊणगुणूणमसरित्थे॥ ६४५ ॥

एकायुषस्त्रिभंगाः, संभवायुर्भिस्ताडिते नाना।
जीवेषु एकभवभंगा, रूपोनगुणोनमसदृशे॥ ६४५ ॥

टीका – ते एक-एक आयु के तीन-तीन भंग, तिनकी विवक्षित-गति विषैं जेता आगामी-आयु का बंध संभवै, तीहिं संख्याकरि गुणैं जो-जो प्रमाण होइ, तितने नाना-जीव अपेक्षा एक-एक भवसंबंधी भंग हो हैं। सो नरक, देव-गति विषैं तो तिर्यंच-मनुष्य दोय आयु ही का बंध संभवै है। सो दोयकरि उन तीन-भंगनि कौ गुणैं छह-छह भंग हो हैं। बहुरि मनुष्य, तिर्यंच-गति विषैं च्यार्यों आयु का बंध संभवै है ; तातैं च्यारि करि उन तीनों-भंगनि कौं गुणैं बारह-बारह भंग हो हैं।

बहुरि असदृश कहिए अपुनरुक्त-भंग की विवक्षा लीजिये, तब बध्यमान-आयु की संख्यारूप जो गुणकार कह्या था, तिसमें एक घटाएं जो प्रमाण रहै, तितना पूर्वोक्त-भंगनि मैस्यौं घटाएं अपुनरुक्त-भंग हो हैं, सो देव, नरकगति विषैं बध्यमान-आयु दोय का गुणकार था, तामैं एक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घटाएं एक रह्या, सो एक-एक पूर्वोक्त छह-छह भंगनि मैंस्यों घटाएं पांच-पांच अपुनरुक्त-भंग हो हैं। ते कहिए है–

नरक-गति विषैं बंध एक मनुष्यायु, उदय एक नरकायु, सत्ता दोय-मनुष्य-आयु नरकायु अथवा बंध एक तिर्यंचायु, उदय एक नरकायु, सत्ता दोय-तिर्यंच आयु, नरक आयु। ऐसैं बंध अपेक्षा तौ दोय भंग हैं। ऐसैं ही देवगति विषैं नरकायु की जायगा देवायु कहना। बहुरि अबंध की अपेक्षा मनुष्य, तिर्यंचायु का बंध नाहीं– ऐसैं दोय-भंग हैं, परि दोऊ समान हैं। जातैं दोऊनि विषैं बंध का अभाव, उदय स्वकीय-भुज्यमान-आयु, सत्ता एक स्वकीय-भुज्यमान-आयु ; तातैं इनि दोऊनि विषैं एक ही भंग ग्रह्या। बहुरि उपरत-बंध की अपेक्षा मनुष्य, तिर्यंच-आयु का बंध पूर्वें भया, ताकी अपेक्षा दोय-दोय भंग हैं। दोऊनि विषैं बंध का अभाव, उदय एक स्वकीय भुज्यमान-आयु, सत्ता– एक भंग विषैं स्वकीय भुज्यमान-आयु अर मनुष्यायु, दूसरा-भंग विषैं स्वकीय-भुज्यमान-आयु अर तिर्यंचायु– ऐसैं दोय-भंग भए।

ऐसैं देव वा नारक विषैं पांच-पांच अपुनरुक्त-भंग जानने।

याही प्रकार मनुष्य, तिर्यंच-गति विषैं बध्यमान-आयु का प्रमाणरूप च्यारि का गुणकार था, तिनमें एक घटाएं तीन रहै सो पूर्वोक्त बारह-बारह भंगनि मैं तीन-तीन घटाएं नव-नव अपुनरुक्त-भंग हो हैं, तहां आयुबंध की अपेक्षा नरक-तिर्यंच, मनुष्य, देव के बंधकरि च्यारि-भंग हैं तिनविषैं बंधतौं क्रम तैं नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवायु का जानना। उदय तिर्यंच-गति विषैं तिर्यंचायु का, मनुष्यगति विषैं मनुष्यायु का जानना। सत्ता– एक भुज्यमान-आयु, एक बध्यमान-आयु– ऐसैं दोय-दोय की जाननी तिनविषैं भी जो आयु भुज्यमान होइ सोई बध्यमान होइ, तहां एक आयु ही की सत्ता जाननी– ऐसैं च्यारि-भंग हैं।

बहुरि आयु का अबंध विषैं च्यारि-गति का बंध नाहीं, इस अपेक्षा च्यारि-भंग होइ ; परंतु ये च्यारूं समान हैं ; जातैं सवनि विषैं बंध का अभाव उदय वा सत्ता भुज्यमान स्वकीय-आयु एक ; तातैं च्यार्यों विषैं एक ही ग्रह्या। बहुरि उपरत बंध की अपेक्षा भी च्यारि आयुकरि च्यारि-भंग हैं। तिनविषैं बंध का अभाव, उदय वा सत्ता जैसैं बंध अपेक्षा करि कहीं, तैसैं जाननी। ऐसैं च्यारि-भंग हैं।

या प्रकार मनुष्य-तिर्यंच विषैं अपुनरुक्त नव-नव भंग जानने ॥ ६४५ ॥

पण णव-णव पण भंगा, आउचउक्केसु होंति मिच्छम्मि।
णिरयाउबंधभंगेणूणा ते चेव बिदियेगुणे ॥ ६४६ ॥

पंच नव नव पंच भंगा, आयुश्चतुष्केषु भवंति मिथ्ये।
निरयायुर्बंधभंगे, नोनास्ते चैव द्वितीयगुणे ॥ ६४६ ॥

टीका – ते अपुनरुक्त-भंग मिथ्यादृष्टि विषैं तौ नरकादिक-गति विषैं क्रम तैं पंच, नव, नव,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पांच जानने। बहुरि दूसरा सासादन-गुणस्थान विषैं मनुष्य-तिर्यंच विषैं जे आयुबंध की अपेक्षा च्यारि-भंग कहे थे, तिनमैं नरकायु का बंधरूप भंग इहां नाहीं ; तातैं नरकादिक-गति विषैं क्रम तैं पांच, आठ, आठ, पांच भंग जानने ॥ ६४६ ॥

ना	ति	मा	दे
५ । ५	८ । ९	८ । ९	८ । ९

सव्वाउबंधभंगे, णूणा मिस्सिम्मि अयदसुरणिरये।
णरतिरिये तिरियाऊ, तिण्णाउगबंधभंगूणा ॥ ६४७ ॥

सर्वायुर्बंधभंगे, नोना मिश्रे अयतसुरनिरये।
नरतिरश्चि तिर्यगायु, स्त्रिकायुष्कबंधभंगोना: ॥ ६४७ ॥

टीका – मिश्र विषैं जे आयुबंध की अपेक्षा भंग कहे थे, ते सर्व घटाएं नरकादिक-गति विषैं क्रम तैं तीन, पांच, पांच, तीन भंग हैं। बहुरि असंयत विषैं देवनारक-गति विषैं आयुबंध की अपेक्षा तिर्यंचायु का बंधरूप भंग नाहीं ; तातैं च्यारि-च्यारि भंग हैं। बहुरि मनुष्य, तिर्यंच-गति विषैं आयु-बंध की अपेक्षा नरक, तिर्यंच, मनुष्यायु का बंधरूप तीन भंग नाहीं, तातैं छह-छह भंग हैं, जातैं इनके बंध का सासादन विषैं ही व्युच्छेद भया ॥ ६४७ ॥

देस णरे तिरिये तिय, तियभंगा होंति छट्ठसत्तमगे।
तियभंगा उवसमगे, दो द्दो खवगेसु एक्केक्को ॥ ६४८ ॥

देशे नरे तिरश्चि, त्रिक त्रिक भंगा भवंति षष्ठसप्तमके।
त्रिभंगा उपशमके, द्वौ द्वौ क्षपकेष्वेकैक: ॥ ६४८ ॥

टीका – देश-संयत विषैं तिर्यंच, मनुष्य विषैं बंध, अबंध, उपरत-बंध की अपेक्षा एक देवायु करि तीन-तीन भंग हैं। बहुरि छठे, सातवें गुणस्थान मनुष्य विषैं ही बंध, अबंध, उपरतबंध की अपेक्षा एक देवायु ही करि तीन-तीन भंग हैं। बहुरि उपशमश्रेणी विषैं देवायु का बंध भी नाहीं ; तातैं देवायु का बंध वा उपरत-बंध की अपेक्षा दोय-दोय भंग हैं। बहुरि क्षपक-श्रेणी विषैं उपरत-बंध भी नाहीं ; तातैं अबंध अपेक्षा करि एक-एक ही भंग है ॥ ६४८ ॥

आगैं गुणस्थाननि विषैं कहे जे सर्वगति संबंधी आयु के भंग तिन्कि जोड़ कहैं हैं–

अडछव्वीसं सोलस, वीसं छत्तिगतिगं च चदुसु दुगं।
असरिसभंगा तत्तो, अजोगिअंतेसु एक्केक्को ॥ ६४९ ॥

अष्टषड्विंशति: षोडश, विंशति: षट् त्रिकत्रिकं च चतुर्षु द्विकं।
असदृशभंगास्ततो, ऽयोग्यंतेष्वेकैक: ॥ ६४९ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – मिलि करि असदृश कहिए अपनुरुक्त-भंग मिथ्यादृष्टि विषैं अट्ठाईस, सासादन विषैं छबीस, मिश्र विषें सोलह, असंयत विषैं बीस, देश-संयत विषैं छह, प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं तीन-तीन; उपशम-श्रेणीवालौं विषैं दोय-दोय; क्षपक-श्रेणीवाले अयोगी पर्यंत तिन विषैं एक-एक जानने ॥ ६४९ ॥

आगैं वेदनीय, गोत्र, आयु इनके मिथ्यादृष्टि आदि सर्व गुणस्थाननि विषैं केते-केते भंग भए, सो कहैं हैं–

बादालं पणुवीसं, सोलसअहियं सयं च वेयणिये।
गोदे आउम्मि हवे, मिच्छादिअजोगिणो भंगा॥ ६५० ॥

द्वाचत्वारिंशत् , पंचविंशतिः, षोडशाधिकं शतं च वेदनीये।
गोत्रे आयुषि भवेयुर्मिथ्याद्ययोगिनो भंगाः ॥ ६५० ॥

टीका – पूर्वैं मिथ्यादृष्ट्यादि अयोगीपर्यंत गुणस्थाननि विषैं जे भंग कहे, तिनका जोडदीएं वेदनीय के वियालीस, गोत्र के पचीस, आयु के एकसौ सोलह भंग हो हैं ॥ ६५० ॥

आगैं पूर्वैं कहे वेदनीय, गोत्र, आयु के सामान्यपनैं मूलभंग-तिनकी संख्या कहैं हैं–

वेयणिये अडभंगा, गोदे सत्तेव होंति भंगा हु।
पण णव णव पण भंगा, आउचउक्केसु विसरित्था॥ ६५१ ॥

वेदनीय अष्ट भंगा, गोत्रे सप्तैव भवंति भंगा हि।
पंच नव नव पंच भंगा, आयुश्चतुष्केषु विसदृशाः ॥ ६५१ ॥

टीका – तिन पूर्वोक्त भंगनि विषैं अपुनरुक्त मूल-भंग वेदनीय विषैं आठ, गोत्र विषैं सात, च्यार्यों-आयु विषैं क्रम तैं पांच, नव, नव पांच जानने ॥ ६५१ ॥

आगैं मोहनीय के त्रिसंयोगरूप भंगनि कौं कहैं हैं–

मोहस्स य बंधोदय, सत्तट्ठाणाण सव्वभंगा हु।
पत्तेउत्तं व हवे, तियसंजोगेवि सव्वत्थ॥ ६५२ ॥

मोहस्य च बंधोदयसत्त्वस्थानानां सर्वभंगा हि।
प्रत्येकोक्तं व भवंति, त्रिकसंयोगेऽपि सर्वत्र॥ ६५२ ॥

टीका – मोहनीय के बंध, उदय, सत्त्व-स्थाननि विषैं सर्व-भंग जैसैं पूर्वैं जुदा-जुदा बंध, उदय, सत्त्व का कथन करते कहे थे, तैसै ही बंध, उदय, सत्त्व इनिका संयोगरूप त्रिसंयोग विषैं भी भंग हो हैं ॥ ६५२ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आगैं गुणस्थाननि विषैं मोह के स्थाननि की संख्या कहैं हैं—

अट्ठसु एक्को बंधो, उदया चदु ति दुसु चउसु चत्तारि।
तिण्णि य कमसो सत्तं, तिण्णेगदु चउसु पणग तियं॥ ६५३॥
अणियट्टीबंधतियं, पणदुगएक्कारसुहुमउदयंसा।
इगि चत्तारि य संते, सत्तं तिण्णेव मोहस्स॥ ६५४॥ जुम्मं।

अष्टसु एको बंध, उदयाः चत्वारस्त्रयः द्वयोश्चतुर्षु चत्वारः।
त्रीणी च कंमशः सत्त्वं त्रयेकद्विकं पंचकं त्रिकं॥ ६५३॥
अनिवृत्तिबंधत्रिकं, पंचद्विकैकादश सूक्ष्मोदयांशाः।
एकश्वत्वारश्च शांते, सत्त्वं त्रीण्येव मोहस्य॥ ६५४॥ युग्मं।

टीका – पूर्वै जे मोहनीय के— बंध के उदय के सत्त्व के स्थान कहे थे, तिनविषैं आदि के आठ गुणस्थाननि विषैं यथासंभव बंधस्थान तो एक-एक ही है। बहुरि उदयस्थान आदि के गुणस्थाननि विषैं च्यारि, ताके ऊपरि दोय विषें तीन-तीन, च्यारि विषैं च्यारि-च्यारि, एक विषैं तीन जानने। बहुरि सत्त्वस्थान क्रम तैं मिथ्यादृष्टि विषैं तीन, सासादन विषैं एक, मिश्र विषैं दोय, ऊपरि च्यारि-गुणस्थाननि विषैं पांच-पांच, एक विषैं तीन जानने। बहुरि अनिवृत्ति-करण विषैं बंध, उदय, सत्त्वस्थान अनुक्रम तैं पांच, दोय, ग्यारह जानने। सूक्ष्म-सांपराय विषैं बंधस्थान का अभाव, उदयस्थान एक, सत्त्वस्थान च्यारि जानने। बहुरि उपशांत-मोह विषैं बंध-उदय-स्थान नाहीं, सत्त्वस्थान ही तीन पाइए हैं॥ ६५३-६५४॥

तें स्थान कौन ? सो कहैं हैं—

बावीसं दसयचऊ, अडवीसतियं च मिच्छबंधादी।
इगिवीसं णवयतियं, अट्ठावीसे च बिदियगुणे॥ ६५५॥

द्वाविंशतिः दशकचतुष्क, मष्टाविंशति त्रिकं च मित्ये बंधादिः।
एकविंशतिर्नवकत्रिक, मष्टाविंशतिश्च द्वितीयगुणे॥ ६५५॥

टीका – मिथ्यादृष्टि विषैं बंधस्थान एक वाईस का ही है। उदय-स्थान दशकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। सत्त्वस्थान अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन हैं। बहुरि सासादन विषैं बंधस्थान एक इकवीस का ही है। उदयस्थान नवकानैं आदि दैकरि तीन हैं। सत्त्वस्थान अठाईस ही का है॥ ६५५॥

सत्तरसं णवयतियं, अडचउवीसं पुणोवि सत्तरसं।
णवचउ अडचउवीस य, तिवीसतियमंसयं चउसु॥ ६५६॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सप्तदश नवकत्रय, मष्टचतुर्विंशं पुनरपि सप्तदश।
नवचतुष्कमष्टचतुर्विंशं, च त्रयोविंशत्रयमेशकं चतुर्षु॥ ६५६॥

टीका – मिश्र विषें बंधस्थान एक सतरह ही का है। उदयस्थान नवकानैं आदि दैकरि तीन हैं। सत्त्वस्थान अठाईस का वा चौईस का दोय हैं। बहुरि असंयत विषैं बंधस्थान सतरह का एक ही है। उदयस्थान नवकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। सत्त्वस्थान अठाईस, चौईस के दोय अर तेईसकानैं आदि दैकरि तीन– अैसैं पांच हैं। एई पंच-सत्त्वस्थान अप्रमत्त पर्यंत जानने। ६५६॥

तेरट्ठचऊ देसे, पमदिदरे णव सगादिचत्तारि।
तो णवगं छादितियं, अडचउरिगिवीसयं च बंधतियं॥ ६५७॥

त्रयोदशाष्टचतुष्कं देशे, प्रमत्तेतरयोर्नव सप्तकादिचत्वारि।
अतो नवकं षडादित्रय, मष्टचतुरेकविंशकं च बंधत्रयं॥ ६५७॥

टीका – देश-संयत विषैं बंधस्थान तेरह का एक ही है। उदयस्थान आठकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। सत्त्वस्थान पांच है। बहुरि प्रमत्त, अप्रमत्त विषैं बंधस्थान एक नव का ही है। उदयस्थान सातकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। सत्त्वस्थान पांच हैं। बहुरि अपूर्वकरण विषैं बंधस्थान नव का एक ही है, उदयस्थान छहकानैं आदि दैकरि तीन हैं। सत्त्वस्थान अठाईस, चौइस, इकईस कै तीन हैं। क्षपक विषैं इकईस ही का है॥ ६५७॥

पंचादिपंचबंधो, णवमगुणे दोण्णि एक्कमुदयो दु।
अट्ठचदुरेक्कवीसं, तेरादीअट्ठयं सत्तं॥ ६५८॥

पंचादिपंचबंधो, नवमगुणे द्वौ एक उदयस्तु।
अष्टचतुरेकविंशं, त्रयोदशाद्यष्टकं सत्त्वं॥ ६५८॥

टीका – नवमां-गुणस्थान विषैं बंधस्थान पांचकानैं आदि दैकरि पांच हैं। उदयस्थान दोय अर एक प्रकृतिरूप दोय हैं। सत्त्वस्थान अठाईस, चौईस, इकईस के तीन हैं। क्षपकश्रेणीवाले कैं तेरहकानैं आदि दैकरि आठ सत्त्व-स्थान पाइए हैं। ऊपरि मोह के बंध का अभाव है; तातैं उदय, सत्त्व दोय ही कहने॥ ६५८॥

लोहेक्कुदओ सुहुमे, अडचउरिगिवीसमेक्कयं सत्तं।
अडचउरिगिवीसंसा, संते मोहस्स गुणठाणे॥ ६५९॥

लोभैकोदयः सूक्ष्मे, अष्टवतुरेकविंशमेकं सत्त्वं।
अष्टचतुरेकविंशांशाः, शांते मोहस्य गुणस्थाने॥ ६५९॥

टीका – सूक्ष्मसांपराय विषैं उदय-स्थान एक-सूक्ष्म-लोभरूप ही है। सत्त्वस्थान अठाईस,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चौईस, इकईस के तीन वा क्षपकवाले कें एक प्रकृतिरूप एक है। ऊपरि मोह का उदय नाहीं सत्त्व ही है। बहुरि उपशांतकषाय विषैं सत्वस्थान ही अठाईस, चौईस, इकईस— ए तीन जानने। ऊपरि मोह का सत्त्व नाहीं ॥ ६५९ ॥

आगैं मोहनीय के बंध, उदय, सत्त्वस्थान— तिनके त्रिसंयोग विषैं विशेष कहै हैं—

बंधपदे उदयंसा, उदयट्ठाणेवि बंध सत्तं च।
सत्ते बंधुदयपदं, इगिअधिकरणे दुगाधेज्जं ॥ ६६० ॥

बंधपदे उदयांशा, उदयस्थानेऽपि बंधः सत्त्वं च।
सत्त्वे बंधोदयपदमेकाधि, करणे द्विकाधेयं ॥ ६६० ॥

टीका - बंधस्थान विषैं उदयस्थान, सत्त्वस्थान ए दोय। बहुरि उदयस्थान विषैं बंधस्थान, सत्त्वस्थान— दोय। बहुरि सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान, उदयस्थान— ए दोय— अैसैं एक अधिकरण विषैं दोय आधेय हो हैं।

जिसविषैं कहिए ताकौं अधिकरण वा आधार कहिए। बहुरि तिस अधिकरण विषैं जाकौं कहिए, ताकौं आधेय कहिए।

सो जहां इतनी प्रकृति का बंध होइ, तहां उदय इतनी-इतनी प्रकृतिनि का हो है वा सत्त्व इतनी-इतनी प्रकृनि का होइ, अैसा जहां कहना, तहां बंध तौ अधिकरण भया अर उदय-सत्त्व आधेय भए। अैसैं ही उदयस्थान विषैं जहां बंधस्थान, सत्त्वस्थान कहिए तहां उदयस्थान तौ अधिकरण अर बंधस्थान, सत्त्वस्थान आधेय जानने। बहुरि सत्त्वस्थान विषैं जहां बंधस्थान, उदयस्थान कहिए, तहां सत्त्वस्थान अधिकरण अर बंधस्थान, उदयस्थान आधेय जानने ॥ ६६० ॥

बावीसयादिबंधे, सुदयंसा चदुतितिगिचऊपंच।
तिसु इगि छद्दो अट्ठ य, एक्कं पंचेव तिट्ठाणे ॥ ६६१ ॥

द्वाविंशकादिबंधे, षूदयांशश्चतुस्त्रित्रिकैकचतुः पंच।
त्रिष्वेकः षट् द्वौ अष्ट च, एकः पंचैव त्रिस्थाने ॥ ६६१ ॥

टीका - तहां प्रथम ही बंधस्थान विषैं उदय, सत्त्वस्थान कहैं हैं, सो वाईसकानैं आदि दैकरि बंधस्थाननि विषैं पहिला-वाईस का स्थान विषैं उदयस्थान च्यारि, सत्त्वस्थान तीन हैं। दूसरा बंधस्थान विषैं उदयस्थान-तीन, सत्त्वस्थान एक है। ऊपरि तीन बंध-स्थाननि विषैं उदयस्थान च्यारि-च्यारि, सत्त्वस्थान पांच-पांच हैं। ऊपरि एक-बंध-स्थान विषैं उदय-स्थान-एक, सत्त्वस्थान-छह हैं। अन्य एक-बंधस्थान विषैं उदयस्थान दोय, सत्त्वस्थान आठ हैं। तीन बंध - स्थान विषैं उदयस्थान-एक, सत्त्वस्थान-पांच हैं ॥ ६६१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दसयचऊ पढमतियं, णवतियमडवीसयं णवादिचऊ।
अडचदुतिदुइगिवीसं, अडचदु पुव्वं व सत्तं तु॥ ६६२॥

दशकचतुष्कं प्रथमत्रिकं, नवत्रिकमष्टाविंशकं नवादिचतुष्कं।
अष्टचतुस्त्रिद्वयेकविंशं, मष्टचतुष्कं पूर्वं व सत्त्वं तु॥ ६६२॥

टीका – तहां बाईस का बंधस्थान विषैं उदयस्थान दशकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। सत्त्वस्थान अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन हैं।

भावार्थ–जिस जीव कैं जिसकाल विषैं बाईस का बंध है, ताकैं उदय-दश का पाइए वा नव का वा आठ का सात का भी पाइए। बहुरि सत्त्व-अठाईस का वा सताईस का वा छवीस का पाइए- ऐसैं ही आगैं भी कथन जानि लेना।

बहुरि इकईस का बंधस्थान विषैं उदयस्थान नवकानैं आदि दैकरि तीन हैं। सत्त्वस्थान-एक-अठाईस का ही है। बहुरि सतरह का बंध-स्थान विषैं उदयस्थान नवकानें आदि देकरि चार हैं। सत्त्वस्थान अठाईस, चौईस, तेईस, बाईस, इकईस के पांच हैं। बहुरि तेरह का बंधस्थान विषैं उदयस्थान आठकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। सत्त्वस्थान पूर्वोक्त पांच हैं॥ ६६२॥

सगचउ पुव्वं वंसा, दुगमडचउरेक्कवीस तेरतियं।
दुगमेक्कं च य सत्तं, पुव्वं वा अत्थि पणगदुगं॥ ६६३॥

सप्तचतुष्कं पूर्वं वांशा, द्विकमष्टचतुरेकविंशं त्रयोदशत्रयं।
द्विकमेकं च च सत्त्वं, पूर्वं वा अस्ति पंचकद्विकं॥ ६६३॥

टीका – नव का बंधस्थान विषैं उदयस्थान सातकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। सत्त्वस्थान पूर्वोक्त पांच हैं। बहुरि पांच का बंधस्थान विषैं उदयस्थान एक– दोय ही का है। सत्त्वस्थान उपशमक कैं अठाईस, चौईस, इकईस के तीन अर क्षपक कैं तेरहनैं आदि दैकरि तीन हैं– ऐसैं छह हैं। बहुरि च्यारि का बंधस्थान विषैं उदयस्थान दोय वा एक प्रकृतिरूप दोय हैं। सत्त्वस्थान पूर्वोक्त छह, पांचकानैं आदि दैकरि दोय– ऐसैं आठ हैं॥ ६६३॥

तिसु एक्केक्कं उदओ, अडचउरिगिवीससत्तसंजुत्तं।
चदुतिदयं तिदयदुगं, दो एक्कं मोहणीयस्स॥ ६६४॥

त्रिषु एकैक उदयोऽष्टचतुरेकविंशसत्त्वसंयुक्तं।
चतुस्त्रितयं त्रितयद्विकं द्वे एकं मोहनीयस्य॥ ६६४॥

टीका – तीन, दोय, एक प्रकृतिरूप तीन-बंधस्थाननि विषैं उदयस्थान एक प्रकृतिरूप ही है। बहुरि सत्त्वस्थान अठाईस, चौईस, इकईस के तीन, तीनका बंधस्थान विषैं च्यारिका वा तीन

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का सहित पांच हैं। दोय का बंधस्थान विषैं दोय का तीन का सहित पांच हैं। एक का बंधस्थान विषैं दोय का एक का सहित पांच सत्त्वस्थान हैं। यहु बंधस्थान अधिकरण अर उदय, सत्त्व आधेयरूप भंग हैं। ते गुणस्थान विवक्षाकरि कह्या है, तथापि तिन-तिन प्रकृतिनि की बंध वा उदय की व्युच्छित्ति अर क्षपणा-उद्वेलनाकरि सत्त्व की व्युच्छित्ति कौं यादिकरि जानने ॥ ६६४ ॥

आगैं उदयस्थान अधिकरण अर बंध-सत्त्व आधेय ऐसा भंग कहै हैं—

दसयादिसु बंधसा, इगितिय तियछक्क चारिसत्तं च।
पणपण तियपण दुगपण, इगितिग दुगछच्चऊणवयं॥ ६६५ ॥

दशकादिषु बंधांशा, एकत्रिकं त्रिकषट्कं चतुःसप्त च।
पंचपंच त्रिकपंच द्विकपंच, एकत्रिकं द्विकषट् चतुर्नवकं॥ ६६५ ॥

टीका – दशकानैं आदि दैकरि जे उदयस्थान, तिनविषैं अनुक्रम तैं बंधस्थान अर सत्त्वस्थान क्रमतैं एक, तीन अर तीन, छह अर च्यारि, सात, अर पांच, पांच अर तीन, पांच अर दोय, पांच अर एक, तीन अर दोय, छह अर च्यारि, नव जानने ॥ ६६५ ॥

तें कौन ? सो कहैं हैं—

पढमं पढमतिचउपण, सत्तरतिग चदुसु बंधयं कमसो।
पढमतिछस्सगमडचउ, तिदुइगिवीसंसयं दोसु॥ ६६६ ॥

प्रथमं प्रथमत्रिचतुः पंच, सप्तदशत्रिकं चतुर्षु बंधकं क्रमशः।
प्रथमत्रिषट्सप्त अष्टचतु, स्त्रिद्विकैकविंशांशकं द्वयोः॥ ६६६ ॥

टीका – दशकानैं आदि दैकरि पंच-उदयस्थान, तिनविषैं पहिला विषैं तौ बंधस्थान वाईस का है जिस जीव कैं जिसकाल दश-प्रकृतिनि का उदय है, तिसकैं तिसकाल वाईस ही का बंध है। अैसैं ही और भी जानि लेना।

बहुरि दूसरा विषैं बंधस्थान वाईसकानैं आदि दैकरि तीन हैं। तीसरा विषै वाईसकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। चौथा विषैं वाईसकानैं आदि दैकरि पांच हैं। पांचवां विषैं सतरहकानैं आदि दैकरि तीन हैं।

बहुरि सत्त्वस्थान पहिला-उदयस्थान विषैं तौ अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन हैं। जिसकाल दश का उदय है, तिसकाल कोई कैं अठाईस का, सत्ताईस का ; कोई कैं छब्बीस का सत्त्व पाइए— अैसैं अन्यत्र भी जानना दूसरा विषैं अठाईसकानैं आदि दैकरि छह हैं। तीसरा विषैं अठाईसकानैं आदि दैकरि सात हैं। चौथा-पांचवां— दोय विषैं अठाईस, चौबीस, तेवीस, बावीस, इकवीस के पंच-पंच हैं॥ ६६६ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तेरदु पुव्वं वंसा, णवमडचउरेक्कवीससत्तमदो ।
पणदुगमडचउरेक्कावीसं तेरसतियं सत्तं ॥ ६६७ ॥

त्रयोदशद्विकं पूर्वं वांशा, नवममष्टचतुरेकविंशसत्त्वमतः ।
पंचद्विकमष्टचतुरेकविंशं त्रयोदशत्रिकं सत्त्वं ॥ ६६७ ॥

टीका – पांच का उदयस्थान विषैं बंधस्थान तेरहकानैं आदि दैकरि दोय हैं, सत्त्वस्थान पूर्वोक्त पांच हैं। बहुरि च्यारि का उदयस्थान विषैं बंधस्थान नव का ही है, सत्त्वस्थान अठाईस, चौईस, इकईस के तीन हैं। बहुरि याके ऊपरि दोय का उदयस्थान विषैं बंधस्थान पांचकानैं आदि दैकरि दोय ही हैं। सत्त्वस्थान अठाईस, चौईस, इकवीस, वा तेरहनै आदि दैकरि तीन– अैसैं छह हैं ॥ ६६७ ।।

चरमे चदुतिदुगेक्कं, अट्ठयचदुरेक्कसंजुदं वीसं ।
एक्कारादीसव्वं, कमेण ते मोहणीयस्स ॥ ६६८ ॥

चरमे चतुस्त्रिद्विकैकमष्टकचतुरेकसंयुतं विंशं ।
एकादशादिसर्वं, क्रमेण तानि मोहनीयस्य ॥ ६६८ ॥

टीका – एक का उदयस्थान विषैं बंध-स्थान च्यारि, तीन, दोय, एक के च्यारि हैं। सत्त्वस्थान अठाईस, चौईस, इकवीस के अर ग्यारहकानैं आदि दैकरि सर्व छह– अैसैं नव, ते सर्व-मोहनीय के जानने ॥ ६६८ ॥

आगैं सत्त्व-अधिकरण अर बंध, उदय आधेयरूप भंग कहैं हैं–

सत्तपदे बंधुदया, दसणव इगिति दुसु अडड तिपण दुसु ।
अडसग दुगि दुसु बिबिगिगि, दुगि तिसु इगिसुण्णमेक्कं च ॥ ६६९ ॥

सत्त्वपदे बंधोदया, दशनव एकत्रिकं द्वयोरष्टाष्टत्रिपंचद्वयोः ।
अष्टसप्त द्वयेकं द्वयोर्द्विद्विकमेकैकं, द्वयेकं त्रिषु एकशून्यमेकं च ॥ ६६९ ॥

टीका – अठाईसकानैं आदि दैकरि सत्त्वस्थान तिनविषैं अनुक्रम तैं बंधस्थान अर उदयस्थान, पहला सत्त्व-स्थान विषैं दश, नव अर पीछैं दोय विषैं एक, तीन ; एक विषैं आठ, आठ ; दोय विषैं तीन, पांच ; एक विषैं आठ, सात ; दोय विषैं दोय, एक ; एक विषैं दोय, दोय ; एक विषैं एक, एक ; तीन विषैं दोय, एक ; एक विषैं एक वा शून्य अर एक है ॥ ६६९ ॥

ते कौन ? सो कहैं हैं–

स	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२१	१३	१२	११	५	४	३	२	१
बं	१०	१	१	८	३	३	८	२	२	२	१	२	२	२	१ ।०
उ	९	३	३	८	५	५	७	१	१	२	१	१	१	१	१

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सव्वं सयलं पढमं, दसतिय दुसु सत्तरादियं सव्वं।
णवयप्पहुदीसंयलं, सत्तरति णवादिपण दुपदे॥ ६७० ॥

सर्व सकलं प्रथमं, दशत्रिकं द्वयोः सप्तदशादिकं सर्वं।
नवकप्रभृति सकलं, सप्तदशत्रिकं नवादिपंच द्विपदे॥ ६७० ॥

टीका – अठावीस का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान वाईसकानैं आदि दैकरि सर्व दश हैं। जिसकैं जिसकाल अठाईस का सत्त्व है, तिसकैं तिसकाल कोई जीव कैं वाईस का, कोई जीव कैं इकईस का– अैसैं करि सर्व-स्थानरूप प्रकृतिनि का बंध पाइए। अैसैं अन्यत्र भी कथन जानना।

उदयस्थान दशकानैं आदि दैकरि सर्व नव हैं। इहां भी अठाइस का सत्त्व होतैं, कोई जीव कैं दश का कोई जीव कैं नव का इत्यादि उदय जानना। अैसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि सत्ताईस, छब्बीस का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान वाईस ही का है। उदयस्थान दशकानैं आदि दैकरि तीन हैं। बहुरि चौवीस का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान सतरहकानैं आदि दैकरि सर्व-आठ हैं। उदयस्थान नवकानैं आदि दैकरि सर्व आठ हैं। बहुरि तेवीस, बावीस का दोय-सत्त्वस्थाननि विषैं बंधस्थान सतरहकानैं आदि दैकरि तीन हैं। उदयस्थान नवकानैं आदि दैकरि पंच हैं॥ ६७० ॥

सत्तरसादि अडादीसव्वं पण चारि दोण्णि दुसु तत्तो।
पंचचउक्क दुगेक्कं, चदुरिगि चदुतिण्णि एक्कं च॥ ६७१ ॥

सप्तदशादि अष्टादि, सर्व पंच चत्वारि द्वे द्वयोस्ततः।
पंचचतुष्कं द्विकैकं, चतुरेकं चतुस्त्रीणि एकं च॥ ६७१ ॥

टीका – इकईस का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान सतरहकानैं आदि दैकरि सर्व आठ हैं। उदय-स्थान आठकानैं आदि दैकरि सर्व सात हैं। बहुरि तेरह, बारह के दोय सत्त्वस्थाननि विषैं बंधस्थान पांच च्यारि के दोय हैं। उदय दोय ही का है। बहुरि ग्यारह का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान पांच, च्यारि के दोय हैं। उदयस्थान दोय, एक के दोय हैं। बहुरि पांच का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान च्यारि का एक ही है। उदयस्थान एक का एक ही है। बहुरि च्यारि का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान च्यारि तीन के दोय हैं। उदयस्थान एक का एक ही है॥ ६७१ ॥

तत्तो तियदुगमेक्कं, दुप्पयडीएक्कमेक्कठाणं च।
इगिणभबंधो चरिमे, एउदओ मोहणीयस्स॥ ६७२ ॥

ततस्त्रिकद्विकमेकं, द्विप्रकृत्येकमेकस्थानं च।
एकन भोबंधश्चरमे, एकोदयो मोहनीयस्य॥ ६७२ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तहां पीछैं तीन का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान तीन, दोय के दोय हैं। उदयस्थान एक का एक ही है। बहुरि दोय का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान दोय, एक के दोय हैं। उदयस्थान एक का एक ही है। मोहनीय का एक का सत्त्वस्थान विषैं बंध एक का वा शून्य-बंध का अभाव है। उदयस्थान एक का एक ही है ॥ ६७२ ॥

आगैं मोहनीय के बंध, उदय, सत्त्वनि विषैं दोय आधार, एक आधेय करि कहैं हैं—

बंधुदये सत्तपदं, बंधंसे णेयमुदयठाणं च।
उदयंसे बंधपदं, दुट्ठाणाधारमेक्कमाधेज्जं ॥ ६७३ ॥

बंधोदये सत्त्व-पदं, बंधाशे ज्ञेयमुदयस्थानं च।
उदयांशे बंधपदं, द्विस्थानाधारमेकमाधेयं ॥ ६७३ ॥

टीका – बंध-उदय के स्थान विषैं सत्त्व, बहुरि बंध-सत्त्वस्थान विषैं उदय, बहुरि उदय-सत्त्वस्थान विषैं बंध— असैं दोय स्थान आधार, एक स्थान आधेय— सो तीनप्रकार जानना। तहां इतने का बंध अर इतने का उदय जिसकैं होइ, तिस किसी जीव कैं इतने का सत्त्व पाइए, किसी कैं इतने का सत्त्व पाइए— असैं कहिए। तहां बंध-उदय तौ आधार अर सत्त्व आधेय जानना। बहुरि इतने का बंध अर इतने का सत्त्व जिस जीव कैं होइ, तिस किसी जीव कैं इतने का उदय, किसी कैं इतने का उदय पाइए असैा कहिए तहां बंध सत्व-आधार उदय-आधेय जानना । बहुरि इतने का उदय इतने का सत्त्व जिस जीव कैं पाइए, तिस किसी जीव कैं इतने का बंध, किसी कैं इतने का बंध पाइए— असैा कहिए तहां उदय, सत्त्व-आधार, बंध आधेय जानना— असैं तीन प्रकार कहे ॥ ६७३ ॥

तहां पहिला प्रकार छह गाथानि करि कहै हैं—

बावीसेण णिरुद्धे, दसचउरुदये दसादिठाणतिये।
अट्ठावीसति सत्तं, सत्तुदये अट्ठवीसेव ॥ ६७४ ॥

द्वाविंशेन निरुद्धे, दशचतुष्कोदये दशादिस्थानत्रये।
अष्टाविंशत्रिकं सत्त्वं, सप्तोदयेऽष्टविंशमेव ॥ ६७४ ॥

बं। उ स	बं। स उ	उ। स बं

टीका – वाईस का बंध सहित जीव विषैं दशकानैं आदि दैकरि च्यारि उदयस्थान हैं। तिनविषैं दशकानैं आदि दैकरि तीन विषैं तौ सत्त्व अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन हैं। सात का विषैं अठाईस का ही सत्त्व है ॥ ६७४ ॥

इगिवीसेण णिरुद्धे, णवयतिये सत्तमट्ठवीसेव।
सत्तरसे णवचदुरे, अडचउतिदुगेक्कवीसंसा ॥ ६७५ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एकविंशेन निरुद्धे, नवकत्रये सत्त्वमष्टाविंशमेव।
सप्तदशे नवचतुष्के, अष्टचतुस्त्रिद्विकैकविंशांशाः ॥ ६७५ ॥

टीका – इकवीस का बंध सहित जीव विषैं नवकानैं आदि दैकरि तीन का उदय होतैं, सत्त्व अठाईस ही का है। बहुरि सतरह का बंधसहित जीवविषैं नवकानैं आदि दैकरि च्यारि का उदय होतैं, सत्त्व अठाईस, चौइस, तेईस, वाईस, इकईस के हैं ॥ ६७५ ॥

तहां इतना विशेष है–

इगिवीसं ण हि पढमे, चरिमे तिदुवीसयं ण तेरणवे।
अडचउसगचउरुदये, सत्तं सत्तरसयं व हवे॥ ६७६ ॥

एकविंशं नहि प्रथमे, चरमे त्रिद्विविंशकं न त्रयोदशनवके।
अष्टचतुः सप्तचतुरुदये, सत्त्वं सप्तदशकं व भवेत्॥ ६७६ ॥

टीका – नव का उदय होतैं इकईस का सत्त्व न हो है। वा छह का उदय होतैं तेवीस, बावीस का सत्त्व न हो है। बहुरि तेरह का बंधसहित आठकानैं आदि दैकरि च्यारि-उदयस्थान होतैं वा नव का बंध सातकानैं आदि दैकरि च्यारि उदयस्थान होतैं, सत्त्व सतरह का बंध सहित विषैं जैसैं कह्या, तैसैं जानना ॥ ६७६ ॥

इतना विशेष है–

णवरि य अपुव्वणवगे, छादितियुदयेवि णत्थि तिदुवीसा।
पणबंधे दोउदये, अडचउरिगिवीसतेरसादितियं॥ ६७७ ॥

नवरि चापूर्वनवके, षडादित्रयोदयेऽपि नास्ति त्रिद्विविंशं।
पंचबंधे द्विकोदये, अष्टचतुरेकविंशत्रयोदशादित्रयं॥ ६७७ ॥

टीका – अपूर्वकरण विषैं नव का बंध सहित छैकानैं आदि दैकरि तीन का उदय होतैं तेवीस, बावीस का सत्त्व नाहीं है, इतना विशेष है। बहुरि पांच का बंध सहित दोय का उदय होतैं, सत्त्व अठाईस, चौवीस, इकईस के वा तेरहकानैं आदि दैकरि तीन हैं ॥ ६७७ ॥

चदुबंधे दोउदये, सत्तं पुव्वं व तेण एक्कुदये।
अडचउरेक्कावीसा, एयारतिगं च सत्ताणि॥ ६७८ ॥

चतुर्बंधे द्विकोदये, सत्त्वं पूर्वं व तेन एकोदये।
अष्टचतुरेकविंशानि, एकादशत्रिकं च सत्त्वानि॥ ६७८ ॥

टीका – च्यारि का बंध सहित दोय का उदय होतैं सत्त्व, पांच का बंध सहित विषैं, जैसैं कह्या तैसैं जानना। च्यारि का बंध सहित एक का उदय होतैं सत्त्व, अठाईस, चौईस, इकवीस के ग्यारहकानैं आदि दैकरि तीन जानने ॥ ६७८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिदुइगिबंधेक्कुदये, चदुतियठाणेण तिदुगठाणेण।
दुगिठाणेण य सहिता, अडचउरिगिवीसया सत्ता।। ६७९ ।।

त्रिद्विकैकबंधे एकोदये, चतुस्त्रिस्थानेन त्रिद्विकस्थानेन।
द्विकैकस्थानेन च सहितानि, अष्टचतुरेकविंशकानि सत्त्वानि।। ६७९ ।।

टीका – तीन दोय, एक का बंध सहित एक का उदय होतैं सत्त्वस्थान-अठाईस, चौवीस, इकईस के तीन का बंध सहित विषैं तौ च्यारि, तीन का संयुक्त, दोय का बंध सहित विषैं तीन-दोय का संयुक्त, एक का बंध सहित विषैं दोय ; एक का संयुक्त पांच-पांच पाइए। इहां यहु अर्थ है—

मोहनीय की सर्व बंध-प्रकृतिनि विषैं च्यारि-गति का मिथ्यादृष्टि जीव वाईस का बंध करै। तिनकैं मिथ्यात्व सहित अर अनंतानुबंधी सहित वा रहित आठ-कूट कहे थे। तिनतैं उत्पन्न भए अैसैं अपुनरुक्त-दशकानैं आदि दैकरि च्यारि उदयस्थान एक जीव अपेक्षा तौ अनुक्रम तैं अर नानाजीव अपेक्षा युगपत् संभवै हैं। तिनविषैं तीन-विषैं तौ एक जीव अपेक्षा अनुक्रम तैं नानाजीव अपेक्षा युगपत् अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन का सत्त्व संभवै है। बहुरि सात का उदयस्थान विषैं अठाईस ही का सत्त्व है, सत्ताईस, छब्बीस का नाहीं।

काहे तैं ?—जातैं असंयतादिक च्यारि विषैं एक किसी गुणस्थान विषैं अनंतानुबंधी का विसंयोजन करि मिथ्यात्व के उदय तैं मिथ्यादृष्टि भया, तहां प्रथम-समय विषैं बाईस का बंध कीया। तहां अनंतानुबंधी का एक समय-प्रबद्ध बंध्या, तिसकी उदीरणा अचलावली कालपर्यंत न संभवै है। अर अनंतानुबंधी का उदयरहित तिस जीव कैं सम्यक्त्व-मोहनी, मिश्रमोहनी का वेदक-काल है, उपशमकाल नाहीं ; तातैं ताकैं सम्यक्त्वमोहनी, मिश्रमोहनी की उद्वेलना न होइ। पूर्वै वेदककाल उपशम-काल का लक्षण कहि आए हैं। वा वेदक-काल विषैं इनकी उद्वेलना का अभाव कहि आए हैं।

बहुरि च्यारि गति का सासादन विषैं इकईस का बंध, तहां एकजीव अपेक्षा क्रम तैं अर नानाजीव अपेक्षा युगपत् नवकानैं आदि दैकरि तीन-उदयस्थान हैं। तिनविषैं अठाईस का ही सत्त्व है, सत्ताईस, छब्बीस का नाहीं ; जातैं उपशम-सम्यक्त्व ही तैं भ्रष्ट होइ सासादन हो है। ताकी स्थिति एक समय तैं लगाय छह-आवली पर्यंत एक-एक समय बधता काल प्रमाण लीए है तातैं सम्यक्त्वमोहनी, मिश्रमोहनी की उद्वेलना का अवसर रूप जो उपशमकाल सो इहां न संभवै है। बहुरि इहां चौबीस का भी सत्त्व नाहीं, जातैं अनंतानुबंधी का विसंयोजन वेदक-सम्यग्दृष्टि ही कैं होइ, सो वेदक-सम्यग्दृष्टी सासादन विषैं आवै नाहीं।

बहुरि च्यारि-गति का मिश्र विषैं सतरह का बंध, तहां एक-जीव अपेक्षा क्रम तैं नाना-जीव अपेक्षा युगपत् नवकानैं आदि दैकरि तीन उदयस्थान हैं, तहां अठाईस वा चोईस ही का सत्त्व

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

है ; तेवीस, बावीस का नाहीं ; जातैं मिश्रमोहनी का उदय होतैं दर्शन-मोह की क्षपणा का प्रारंभ न हो है।

बहुरि च्यारि-गति का असंयतविषैं सतरह का बंध, तहां एक-जीव अपेक्षा क्रम तैं नानाजीव अपेक्षा युगपत् च्यारि-उदयस्थान हैं। तिनविषैं नव का उदय होतैं वेदक-सम्यग्दृष्टीपना है ; तातैं दर्शन-मोहनी की क्षपणा का प्रारंभ होने तैं अनंतानुबंधी, मिथ्यात्व, मिश्रमोहनी इनकरि सहित वा रहित सत्त्वस्थान संभवै हैं ; तातैं कर्मभूमिया मनुष्य विषैं एक-जीव अपेक्षा क्रम तैं, नानाजीव अपेक्षा युगपत् अठाईस, चौबीस, तेवीस, बावीस का सत्त्व संभवै है। इकईस का सत्त्व क्षायिक-सम्यग्दृष्टी ही कैं होइ ; तातैं न संभवै है। बहुरि आठ का वा सात का उदय होतैं प्रथमोपशम-सम्यक्त्व विषैं तौ अठाईस ही का सत्त्व, द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व विषैं अठाईस वा चौईस का सत्त्व वेदक-सम्यक्त्व विषैं अठाईस, चौईस, तेईस, बावीस का सत्त्व एक-जीव अपेक्षा क्रम तैं, नाना-जीव अपेक्षा युगपत् संभवै है। क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकईस ही का सत्त्व है। बहुरि छह का उदय होतैं सम्यक्त्व-मोहनीय रहितपने तैं क्षायिक-सम्यक्त्वी विषैं तौ इकईस ही का सत्त्व है। उपशम-सम्यक्त्व विषैं अठाईस वा चौईस का सत्त्व है।

बहुरि तेरह का बंध सहित देशसंयत विषैं तिर्यंच वा मनुष्य के उपशमक वा वेदक-सम्यक्त्व हो है। क्षायिक-सम्यक्त्व मनुष्य ही कैं हो है। तहां आठ का उदय होतैं सत्त्व वेदक-सम्यक्त्वी तिर्यंच विषै तो अठाईस, चौवीस, के दोय अर मनुष्य विषैं अठाईस, चौवीस के दोय अर तेवीस, बावीस के दोय– ऐसे च्यारि हैं। बहुरि सात व छह का उदय होतैं तिर्यंच, मनुष्य के उपशम-सम्यक्त्व विषैं तौं अठाईस, चौबीस के दोय, वेदक-सम्यक्त्वी तिर्यंच विषैं तेई दोय। वेदक-सम्यक्त्वी मनुष्य विषैं ते ई दोय अर तेवीस, बावीस के दोय– ऐसैं च्यारि हैं। बहुरि क्षायिक-सम्यग्दृष्टी मनुष्य ही हो हैं ; तातैं इकईस ही का सत्त्व है। बहुरि पांच का उदय होतैं उपशम-सम्यग्दृष्टी तिर्यंच, मनुष्य विषैं अठाईस वा चौईस का सत्त्व है। क्षायिक-सम्यग्दृष्टी-मनुष्य विषैं इकईस ही का सत्त्व है।

बहुरि नव का बंध सहित प्रमत्त-अप्रमत्त, तिनके च्यारि उदयस्थान। तिनविषैं सात का उदय होतैं वेदक-सम्यक्त्वी ही है ; तातैं अठाईस, चौईस, तेवीस, बावीस के च्यारि-सत्त्व हैं। बहुरि छह वा पांच का उदय होतैं, उपशम-सम्यक्त्व विषैं तो अठाईस, चौवीस का सत्त्व है। वेदक-सम्यक्त्व विषैं अठाईस, चौवीस, तेवीस, बावीस का सत्त्व है। क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकवीस ही का सत्त्व है। बहुरि च्यारि का उदय होतैं, उपशम-सम्यक्त्व विषैं अठाईस, चौबीस का सत्त्व है। क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकवीस ही का सत्त्व है।

बहुरि नव का बंध सहित अपूर्वकरण विषैं छह वा पांच वा च्यारि का उदय होतैं उपशम-सम्यक्त्व विषैं अठाईस, चौईस का सत्त्व है। क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकईस ही का सत्त्व है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि पांच, च्यारि का बंध, दोय का उदय सहित अनिवृत्तिकरण विषैं उपशम-सम्यक्त्व विषैं तौ सत्तावीस वा अठावीस वा चौबीस का क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकवीस, तेरह, बारह, ग्यारह का है। बहुरि-च्यारि का बंध एक का उदयसहित, विषैं उपशम-सम्यक्त्व विषैं अठाईस, चौईस का क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकईस, ग्यारह, पांच, च्यारि का है। बहुरि तीन का बंध ; एक का उदय सहित विषैं, उपशम-सम्यक्त्व विषैं तौ अठावीस, चौवीस का ; क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकईस, च्यारि, तीन का सत्त्व है।

बहुरि दोय का बंध ; एक का उदय सहित अनिवृत्तिकरण विषैं उपशम-सम्यक्त्व विषैं तो अठावीस, चौबीस का ; क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकवीस, तीन, दोय का सत्त्व है। बहुरि एक का बंध, एक का उदयसहित विषैं उपशम-सम्यक्त्व विषैं तौ अठाबीस, चौबीस का ; क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं इकवीस, दोय, एक का सत्त्व है। इहां क्षपक-अनिवृत्तिकरण विषैं च्यारि, तीन, दोय, एक का बंध होतैं– क्रम तैं पांच, च्यारि, च्यारि, तीन, तीन, दोय, दोय, एक का सत्त्व है। तहां पहले-पहले वेद वा कषायनि के नवक-समय-प्रबद्ध के उच्छिष्टावली मात्र निषेक अवशेष रहै हैं, तिनकी विवक्षा करि जानने ॥ ६७९ ॥

आगैं बंध, सत्त्व-आधार ; उदय-आधेय कौं पांच गाथानिकरि कहैं हैं–

बावीसे अडवीसे, दसचउरुदओ अणे ण सगवीसे।
छव्वीसे दसयतियं, इगिअडवीसे दु णवयतियं॥ ६८० ॥

द्वाविंशतौ अष्टविंशतौ, दशचतुष्कोदयः अने न सप्तविंशतौ।
षड्विंशतौ दशकत्रयमेकाष्टविंशतौ तु नवकत्रयं॥ ६८० ॥

टीका – बाईस का बंध सहित च्यारि गति का मिथ्यादृष्टी-जीव विषैं अठाईस का सत्त्व होतैं, उदय-स्थान दशकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं, जातैं इहां अनंतानुबंधी रहित भी उदयस्थान संभवै हैं। बहुरि बावीस का बंध सहित सत्ताईस, छब्बीस का सत्त्व होतैं दशकानैं आदि दैकरि तीन ही स्थाननि का उदय है, जातै इहां सम्यक्त्वमोहनी, मिश्रमोहनीय की उद्वेलना युक्तपनै तैं अनंतानुबंधी रहितपने का अभाव है। बहुरि इकईस का बंध सहित च्यारिगति का सासादनविषैं अठाईस का सत्त्व होतैं मिथ्यात्व का उदय के अभाव तैं नवकानैं आदि दैकरि तीन उदयस्थान हैं॥ ६८० ॥

सत्तरसे अडचदुवीसे णवयचदुरुदयमिगिवीसे।
णो पढमुदओ एवं, तिदुवीसे णंतिमस्सुदओ॥ ६८१ ॥

सप्तदशाष्टचतुर्विंशे नवकचतुष्कोदय एकविंशे।
नो प्रथमोदय एवं, त्रिद्विविंशे नांतिमस्योदयः॥ ६८१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सतरह का बंध सहित च्यारिगति का जीव विषैं अठाईस, चौईस का सत्त्व होतैं नवकानैं आदि दैकरि च्यारि-उदयस्थान हैं। तहां मिश्रविषैं मिश्रमोहनी संयुक्त च्यारि-कूटनि तैं उपजे तीन ही उदयस्थान हैं। असंयत विषैं सम्यक्त्वमोहनी सहित वा रहित आठ-कूटनि तैं उपजै– ऐसे च्यारि उदय-स्थान हैं। बहुरि सतरह का बंधसहित इकईस का सत्त्व होतैं, च्यारि-गति के असंयत विषैं क्षायिक-सम्यक्त्वपने तैं सम्यक्त्व-मोहनीय सहित च्यारि-कूटनि का अभाव तैं, पहिला नव का उदयस्थान नाहीं; आठकानैं आदि दैकरि तीन ही हैं। बहुरि सतरह का बंधसहित तेवीस, बावीस का सत्त्व होतैं, दर्शनमोहनीय की क्षपणासंयुक्त मनुष्य-वेदक-सम्यक्त्वी असंयत विषैं सम्यक्त्व-मोहनीय का उदय सहित ही कूट हैं; तातैं अंत का छह का उदयस्थान नाहीं, नवकानैं आदि दैकरि तीन ही हैं॥ ६८१॥

तेरणवे पुव्वंसे, अडादिचउ सगचउण्हमुदयाणं।
सत्तरसं व वियारो, पणगुवसंते सगेसु दो उदया॥ ६८२॥

त्रयोदशनवमे पूर्वांशे, अष्टादिचतुष्कं सप्तचतुष्कमुदयानां।
सप्तदशं व विचारः, पंचकोपशांते स्वकेषु द्वौ उदयौ॥ ६८२॥

टीका – तेरह का बंधसहित तिर्यंच-मनुष्य देशसंयत विषैं, बहुरि नव का बंध सहित प्रमत्त-अप्रमत्त, दोऊ श्रेणी का अपूर्वकरण विषै सतरह का बंधसहित विषैं सत्त्व कह्या। तिस सत्त्व कौं होतैं देशसंयत विषैं आठकानैं आदि दैकरि च्यारि, अवशेषनि विषैं सातकानैं आदि दैकरि च्यारि-च्यारि उदयस्थान हैं।

इतना विशेष-इकईस का सत्त्व होतैं तेरह का बंधसहित विषैं तो पहला आठ का उदयस्थान नाहीं। नव का बंध सहित विषैं सात का उदयस्थान नाहीं। बहुरि तेवीस, बावीस का सत्त्व होतैं तेरह का बंध सहित विषैं अंत का पांच का उदयस्थान नाहीं। नव का बंध सहित विषैं च्यारि का उदयस्थान नाहीं। सो यहु विशेष विचार सतरह का बंध विषैं जैसैं क्षायिक वा दर्शनमोह का क्षपक-वेदक सम्यक्त्वी की अपेक्षा कह्या तैसैं ही जानना। बहुरि उपशांत-कषाय विषैं कहे, जे अठावीस, चौबीस, इकबीस का सत्त्व, तिनकौं होतैं पंच का बंध सहित अनिवृत्तिकरण विषैं दोय का उदय है। बहुरि पांच वा च्यारि का बंध सहित विषैं भी दोय का उदय है॥ ६८२॥

सो कहिए हैं–

तेणेवं तेरतिये, चदुबंधे पुव्वसत्तगेसु तहा।
तेणुवसंतंसेयारतिए एक्को हवे उदओ॥ ६८३॥

तेनैव त्रयोदशत्रये, चतुर्बंधे पूर्वसत्त्वकेषु तथा।
तेनोपशांतांशे, एकादशत्रये एको भवेदुदयः॥ ६८३॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तीहिं पंच का बंध सहित क्षपक-अनिवृत्तिकरण विषैं तेरह, बारह, ग्यारह का सत्त्व होतैं तथा च्यारि का बंध सहित अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन वा तेरहनै आदि दैकरि तीन का सत्त्व होतैं दोय का उदय है। बहुरि च्यारि का बंध सहित उपशांतकषाय विषैं कहे– अैसे अठाईसकानैं आदि दैकरि तीन का सत्त्व होतैं वा ग्यारहनै आदि दैकरि तीन का सत्त्व होतैं, अनिवृत्तिकरण विषैं एक का उदय है ॥ ६८३ ॥

तिदुइगिबंधे अडचउरिगिवीसे चदुतिएण ति दुगेण।
दुगिसत्तेण य सहिदे, कमेण एक्को हवे उदओ॥ ६८४॥

त्रिद्वयेकबंधे अष्टचतुरेकविंशे चतुस्त्रिकेण त्रिद्विकेन।
द्वयेकसत्त्वेन च सहिते, क्रमेणैको भवेदुदयः॥ ६८४॥

टीका – तीन, दोय, एक का बंध सहित अनिवृत्तिकरण विषैं अठावीस, चौवीस, इकबीस का सत्त्व होतैं वा च्यारि, तीन का सत्त्व होतैं वा तीन, दोय का सत्त्व होतैं वा दोय, एक का क्रम तैं सत्त्व होतैं एक-एक ही का उदय है। "इहां नवक समय-प्रबद्ध की विवक्षा-अविवक्षा करि दोय, दोय प्रकार सत्त्व कहे हैं" ॥ ६८४ ॥

आगैं उदय, सत्त्व-आधार, बंध-आधेय कौं सात गाथानि करि कहैं हैं–

दसगुदये अडवीसतिसत्ते बावीसबंध णवअट्ठे।
अडवीसे बावीसतिचउबंधो सत्तवीसदुगे॥ ६८५॥

दशकोदये अष्टविंशत्रिसत्त्वे द्वाविंशबंधो नवाष्ट के।
अष्टविंशतौ द्वाविंशतित्रिचतुर्बंधः सप्तविंशद्विके॥ ६८५॥

टीका – दश का उदय सहित अठावीसकानैं आदि दैकरि तीन का सत्त्व होतैं बाईस का ही बंध है। यहु मिथ्यादृष्टी सर्व मोहनीय का सत्त्व सहित वा सम्यक्त्व-मोहनी की उद्वेलना सहित वा मिश्रमोहनी की उद्वेलना सहित जानना। बहुरि नव का उदय सहित असंयतपर्यंत वा आठ का उदय सहित देशसंयत पर्यंत विषैं अठाईस का सत्त्व होतैं अनुक्रम तैं बाईसकानैं आदि दैकरि तीन अर च्यारि बंधस्थान हैं॥ ६८५ ॥

बहुरि तिन ही विषैं सत्ताईस वा छब्बीस का सत्त्व होतैं कहैं हैं–

बावीसबंध चदुतिदुवीसंसे सत्तरसयददुगबंधो।
अट्ठुदये इगिवीसे, सत्तरबंधं विसेसं तु॥ ६८६॥

द्वाविंशबंधः चतुस्त्रिद्विविंशांशे सप्तदशायातद्विकबंधः।
अष्टोदये एकविंशे, सप्तदशबंधो विशेषस्तु॥ ६८६॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तहां बाईस ही का बंध है। बहुरि तिन पूर्वोक्त उदयसहित विषैं, मिश्रविषैं तौ चौईस का सत्त्व होतैं असंयत विषैं चौईसकानैं आदि दैकरि तीन सत्त्व होतैं सतरह का बंध है। आठ का उदय सहित चौईसकानैं आदि दैकरि तीन-सत्त्व होतैं, देश-संयत विषैं तेरह का बंध है। इकईस का सत्त्व होतैं क्षायिक-सम्यग्दृष्टी-असंयत विषैं, सतरह का बंध है, विशेषकरि॥ ६८६ ॥

सत्तुदये अडवीसे, बन्धो बावीसपंचयंतेण।
चउवीसतिगे अयदतिबंधो इगिवीसगयददुगबंधो॥ ६८७॥

सप्तोदये अष्टविंशे, बंधो द्वाविंशपंचकं तेन।
चतुर्विंशत्रिके अयतत्रिबंध एकविंशे अयतद्विकबंध:॥ ६८७॥

टीका – सात का उदय सहित अठाईस का सत्त्व होतैं बाईसकानैं आदि दैकरि पंच बंध-स्थान हैं ; जातैं अनंतानुबंधी रहित मिथ्यादृष्टि विषैं, भय-जुगुप्सारहित, सासादन विषैं, भय-जुगुप्सा विषैं एककरि सहित मिश्रविषैं, वेदक-सम्यग्दृष्टी-असयंतविषैं, वेदक-उपशम-सम्यक्त्वी देश-संयत विषैं, वेदक-सम्यक्त्वी प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं सात का उदय, अठाईस का सत्त्व संभवै है। बहुरि सात का उदय सहित चौईसकानैं आदि दैकरि तीन-सत्त्व होतैं, सतरहकानैं आदि दैकरि तीन बंध-स्थान हैं, जातैं चौबीस का सत्त्व-संयुक्त तौ भय-जुगुप्सा रहित मिश्र-असंयतविषैं, तेईस-बाईस का सत्त्व-संयुक्त दर्शन-मोहक्षपणा प्रारंभक अर चौबीस का सत्त्व संयुक्त अनंतानुबंधी का सत्त्व रहित मनुष्य-असंयतादि च्यारि गुणस्थानवर्ती, तिनविषैं सात का उदय संभवै है। बहुरि सात का उदय, इकईस का सत्त्व होतैं क्षायिक-सम्यग्दृष्टी च्यारि-गति का असंयत विषैं सतरह का बंध है। देशसंयत-मनुष्य विषैं तेरह का बंध है॥ ६८७ ॥

छप्पणउदये उवसंतंसे अयदतिगदेसदुगबंधो।
तेण तिदोवीसंसे, देसदुणवबंधयं होदि॥ ६८८॥

षट्पंचोदये उपशांतांशे अयतत्रिकदेशद्विकबंध:।
तेन त्रिद्विविंशांशे, देशद्विनवबंधकं भवति॥ ६८८॥

टीका – छह का उदय सहित अठाईस, चौईस, इकईस, का सत्त्व होतैं, सतरहनैं आदि दैकरि तीन बंधस्थान हैं। बहुरि पांच का उदयसहित तीन-तीन सत्त्व होतैं, तेरहनै आदि दैकरि दोय बंधस्थान हैं; जातैं असंयतादिक पंचनि विषैं छह का अर उपशम, क्षायिक-सम्यक्त्वी देश-संयतादिक च्यारि विषैं पांच का उदय पाइए है। बहुरि छह का उदय सहित वेदक-सम्यग्दृष्टी विषैं, मिथ्यात्व कौं खिपाइ तेवीस का सत्त्व होतैं, मिश्रमोहनी कौं खिपाइ बावीस का सत्त्व होतैं, देशसंयत विषैं तेरह का बंध है। पांच का उदय सहित प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं नव का बंध है॥ ६८८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चउरुदयुवसंतंसे, णवबंधो दोण्णिउदयपुव्वंसे।
तेरसतियसत्तेवि य, पण चउ ठाणाणि बंधस्स॥ ६८९ ॥

चतुरुदयोपशांतांशे, नवबंधो द्विकोदयपूर्वांशे।
त्रयोदशत्रिसत्त्वेऽपि च, पंचचतुः स्थानानि बंधस्य॥ ६८९ ॥

टीका – च्यारि का उदय सहित दोऊ श्रेणी के अपूर्वकरण विषैं, उपशांत-कषाय विषैं पाइए– अैसैं अठाईस, चौबीस, इकवीस, के सत्त्व होतैं नव का बंध है। बहुरि दोय का उदय सहित सवेद-अनिवृत्तिकरण विषैं तिन तीन सत्त्व होतैं पुरुष-वेद का उदय का चरमसमयपर्यंत पांच का बंध है। नपुंसक, स्त्रीवेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या, ताके तहां च्यारि का बंध हैं। बहुरि क्षपक-श्रेणी विषैं आठ-कषाय, नपुंसक, स्त्रीवेद, पुरुषवेद का क्षपणरूप भागनि विषैं इकईस, तेरह, बारह, ग्यारह का सत्त्व होतैं, पांच का बंध है। अन्य वेद का उदय सहित तेरह, बारह का सत्त्व होतैं, च्यारि का बंध है॥ ६८९ ॥

एक्कुदयुवसंतंसे, बंधो चदुरादिचारि तेणेव।
एयारदु चदुबंधो, चदुरंसे चदुतियं बंधे॥ ६९० ॥

एकोदयोपशांतांशे, बंधश्चतुरादिचत्वारस्तेनैव।
एकादशद्विके चतुर्बंधः, चतुरंशे चतुस्त्रिको बंधः॥ ६९० ॥

टीका – एक का उदयसहित अनिवृत्तिकरण-उपशमक विषैं उपशांत-कषायोक्त अठाईस, चौबीस, इकईस के सत्त्व होतै, च्यारिकानैं आदि दैकरि च्यारि-बंधस्थान हैं। बहुरि एक का उदय सहित ग्यारह, पांच का सत्त्व होतैं, च्यारि का बंध है। बहुरि एक का उदयसहित च्यारि का सत्त्व होतैं, च्यारि का वा तीन का बंध है॥ ६९० ॥

तेण तिये तिदुबंधो, दुगसत्ते दोण्णि एक्कयं बंधो।
एक्कंसे इगिबंधो, गयणं वा मोहणीयस्स॥ ६९१ ॥

तेन त्रये त्रिद्विबंधो, द्विकसत्त्वे द्वौ एको बंधः।
एकांशे एकबंधो, गगनं वा मोहनीयस्य॥ ६९१ ॥

टीका – तीहिं एक का बंधसहित अनिवृत्तिकरण विषैं तीन का सत्त्व होतैं तीन का वा दोय का बंध है। एक का उदय सहित दोय का सत्त्व होतैं दोय का बा एक का बंध हैं। एक ही का उदय वा सत्त्व होतैं एक ही का बंध है वा 'गगन' कहिए बंध का अभाव है। अैसैं मोहनीय के त्रिसंयोग-भंग कहे॥ ६९१ ॥

आगैं नाम-कर्म के स्थाननि का त्रिसंयोग कहै हैं–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

णामस्स य बंधोदयसत्तट्ठाणाण सव्वभंगा हु।
पत्तेउत्तं व हवे, तियसंजोगेवि सव्वत्थ॥ ६९२॥

नाम्नश्च बंधोदयसत्त्वस्थानानां सर्वभंगा हि।
प्रत्येकोक्तं व भवेयुस्त्रिकसंयोगेऽपि सर्वत्र॥ ६९२॥

टीका – नामकर्म के बंध, उदय, सत्त्व-स्थाननि के सर्व-भंग– जैसैं प्रत्येक जुदे-जुदे कथन विषैं पूर्वै कहे थे, तैसैं ही त्रिसंयोगी विषैं भी सर्वत्र भंग हैं, ऐसैं प्रगट जानना॥ ६९२॥

छण्णवछत्तियसगइगि, दुगतिगदुग तिण्णिअट्ठचत्तारि।
दुगदुगचदु दुगपणचदु, चदुरेयचदू पणेयचदू॥ ६९३॥
एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ चदुमट्ठ केवलिजिणाणं।
एगचदुरेगचदुरो, दोचदु दोछक्क बंधउदयंसा॥ ६९४॥ जुम्मं।

षट्नवषट् त्रिकसप्तै, कं द्विकत्रिकद्विकं त्रिकाष्टचत्वारि।
द्विकद्विकचतुष्कं द्विकपंचचतुष्कं चतुरेकचतुष्कं पंचैकचतुष्कं॥ ६९३॥
एकैकाष्ट एकैकाष्ट चतुरष्ट केवलिजिनानां।
एकचतुष्कमेकचतुष्कं, द्विचतुष्कं द्विषट्कं बंधोदयांशाः॥ ६९४॥

टीका – तिस नामकर्म के बंधस्थान, उदयस्थान, सत्त्वस्थान अनुक्रम तैं गुणस्थाननि विषैं-मिथ्यादृष्टि विषैं तौ छह, नव, छह ; सासादन विषैं तीन, सात, एक ; मिश्र विषैं दोय, तीन, दोय ; असंयत विषैं तीन, आठ, च्यारि ; देशसंयत विषैं दोय, दोय, च्यारि, प्रमत्त विषैं, दोय, पांच, च्यारि, अप्रमत्त विषैं च्यारि, एक च्यारि, अपूर्वकरण विषैं पांच, एक, च्यारि ; अनिवृत्तिकरण विषैं एक, एक, आठ ; सूक्ष्मसांपराय विषैं भी एक, एक, आठ हैं। ऊपरि बंध का तौ अभाव है। उदय, सत्त्व-स्थान ही उपशांत-कषाय विषैं एक, च्यारि ; क्षीणकषाय विषैं एक, च्यारि ; सयोगी विषैं दोय, च्यारि ; अयोगी विषैं दोय, छह जानने॥ ६९३-६९४॥

णामस्स य बंधोदयसत्ताणि गुणं पडुच्च उत्ताणि।
पत्तेयादो सव्वं, भणिदव्व अत्थजुत्तीए॥ ६९५॥

नाम्नश्च बंधोदयसत्त्वानि गुणं प्रतीत्योक्तानि।
प्रत्येकात्सर्व, भणितव्यमर्थयुक्तया॥ ६९५॥

टीका – नामकर्म के बंध, उदय, सत्त्व-स्थान गुणस्थाननि विषैं कहे, तेई प्रत्येक जुदे-जुदे अर्थ की युक्तिकरि सर्व कहिए हैं॥ ६९५॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तेवीसादी बंधा, इगिवीसादीणि उदयठाणाणि।
बाणउदादी सत्तं, बंधा पुण अट्ठवीसतियं॥ ६९६॥

त्रयोविंशादयो बंधा, एकविंशादीनि उदयस्थानानि।
द्वानवत्यादि सत्त्वं, बंधाः पुनः अष्टविंशत्रयं॥ ६९६॥

टीका – मिथ्यादृष्टि विषैं बंधस्थान तेवीसकानैं आदि दैकरि छह हैं। उदयस्थान इकवीस का आदि नव हैं अर सत्त्वस्थान बाणवै का आदि छह हैं। बहुरि सासादन विषैं बंधस्थान अठाईस का आदि तीन हैं॥ ६९६॥

इगिवीसादीएक्कत्तीसंता सत्तअट्ठवीसूणा।
उदया सत्तं णउदी, बंधा पुण अट्ठवीसदुगं॥ ६९७॥

एकविंशाद्येकत्रिंशदंताः सप्ताष्टविंशोनाः।
उदयाः सत्त्वं नवतिर्बंधाः पुनः अष्टविंशद्विकं॥ ६९७॥

टीका – उदयस्थान इकवीस का आदि सत्ताईस, अठाईस का बिना इकतीस का पर्यंत सात हैं। सत्त्वस्थान निवै का ही है। बहुरि मिश्र विषैं बंधस्थान अठाईस का आदि दोय हैं॥६९७॥

एगुणतीसत्तिदयं, उदयं बाणउदिणउदियं सत्तं।
अयदे बंधट्ठाणं, अट्ठावीसत्तियं होदि॥ ६९८॥

एकोनत्रिंशत्त्रितयमुदयो द्वानवतिनवतिकं सत्त्वं।
अयते बंधस्थानमष्टाविंशत्रयं भवति॥ ६९८॥

टीका – उदयस्थान गुणतीस का आदि तीन हैं। सत्त्वस्थान बांणवै आदि दोय हैं। बहुरि असंयत विषैं बंध-स्थान अठाईस का आदि तीन हैं॥ ६९८॥

उदया चउवीसूणा, इगिवीसप्पहुदिएक्कतीसंता।
सत्तं पढमचउक्कं, अपुव्वकरणोत्ति णायव्वं॥ ६९९॥

उदयाश्चतुर्विंशोना, एकविंशप्रभृत्येकत्रिंशदंताः।
सत्त्वं प्रथमचतुष्कमपूर्वकरण इति ज्ञातव्यं॥ ६९९॥

टीका – उदयस्थान इकवीस का आदि चौबीस के बिना इकतीसपर्यंत आठ हैं, जातैं चौबीस के स्थान का उदय एकेन्द्री ही कैं हैं। सत्त्वस्थान तरेणवै का आदि च्यारि हैं। एई च्यारि-च्यारि सत्त्वस्थान अपूर्वकरणपर्यंत जानने॥ ६९९॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अडवीसदुगं बंधो, देसे पमदे य तीसदुगमुदओ।
पणवीससत्त्वीसप्पहुदीचत्तारि ठाणाणि॥ ७०० ॥

अष्टाविंशद्विकं बंधो, देशे प्रमत्ते च त्रिंशद्विकमुदयः।
पंचविंशसप्तविंशप्रभृतिचत्वारि स्थानानि॥ ७०० ॥

टीका – देश-संयत विषैं बंधस्थान अठाईसका आदि दोय हैं। उदयस्थान तीस का आदि दोय हैं। सत्त्व-स्थान असंयतवत् च्यारि हैं। बहुरि प्रमत्त विषैं बंधस्थान देशसंयतवत् दोय हैं। उदयस्थान पचीस का अर सत्ताईसकानैं आदि दैकरि च्यारि– ऐसैं पांच हैं। सत्त्वस्थान च्यारि ही हैं॥ ७०० ॥

अपमत्ते य अपुव्वे, अडवीसादीण बंधमुदओ दु।
तीसमणियट्टिसुहुमे, जसकित्ती एक्कयं बंधो॥ ७०१ ॥

अप्रमत्ते चापूर्वे अष्टाविंशादीनां बंध उदयस्तु।
त्रिंशदनिवृत्तिसूक्ष्मयोर्यशस्कीर्तिरेका बंध ॥७०१ ॥

टीका – अप्रमत्त, अपूर्वकरण विषैं बंधस्थान अठाईसकानैं आदि दैकरि च्यारि अर पांच क्रम तैं जानने। उदयस्थान तीस ही का जानना। सत्त्वस्थान असंयतवत् च्यारि जानने। बहुरि अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म-सांपराय विषैं बंधस्थान एक यशस्कीर्ति रूप ही है॥ ७०१ ॥

उदओ तीसं सत्तं, पढमचउक्कं च सीदिचउ संत्ते।
खीणे उदओ तीसं, पढमचऊ सीदिचउ सत्तं॥ ७०२ ॥

उदयस्त्रिंशत सत्त्वं, प्रथमचतुष्कं चाशीतिचतुष्कं शांते।
क्षीणे उदयस्त्रिंशत्प्रथमचतुष्कमशीतिचतुष्कं सत्त्वं॥ ७०२ ॥

टीका – उदयस्थान तीस ही का है। सत्त्वस्थान तिरेणवैकानैं आदि दैकरि च्यारि अर असीकानैं आदि दैकरि च्यारि– ऐसैं आठ हैं। उपशांत-कषाय, क्षीणकषाय विषैं उदयस्थान तीस ही का है। सत्त्वस्थान, उपशांतकषाय विषैं तरेणवैं का आदि च्यारि अर क्षीणकषाय विषैं असी का आदि च्यारि हैं॥ ७०२ ॥

जोगिम्मि अजोगिम्मि य, तीसिगितीसं णवट्ठयं उदओ।
सीदादिचऊछक्कं, कमसो सत्तं समुद्दिट्ठं॥ ७०३ ॥

योगिन्ययोगिनि च, त्रिंशदेकत्रिंशन्नवाष्टकमुदयः।
अशीत्यादिचतुःषट्कं, क्रमशः सत्त्वं समुद्दिष्टं॥ ७०३ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सयोगी, अयोगी विषैं क्रम तैं उदयस्थान तीस, इकतीस के दोय अर नव, अष्ट के दोय जानने। सत्त्वस्थान असी का आदि च्यारि, छह जानने। सयोगी विषैं बंध ० ; उदय ३०, ३१ ; सत्त्व ८०, ७९, ७८, ७७। अयोगी विषैं बंध ०, उदय ९। ८। सत्त्व ८०, ७९, ७८, ७७, १०। ९ ॥ ७०३ ॥

आगैं चउदह-जीवसमासनि विषैं कहैं हैं–

पणदोपणगं पणचदुपणगं बंधुदयसत्त पणगं च।
पणछक्कपणगछछक्कपणगमट्ठट्ठमेयारं ॥ ७०४ ॥
सत्तेव अपज्जत्ता, सामी सुहुमो य बादरो चेव।
बियलिंदिया य तिविहा, होन्ति असण्णी कमा सण्णी ॥७०५ ॥ जुम्मं।

पंचद्विपंचकं पंचचतुः पंचकं बंधोदयसत्त्वं पंचकं च।
पंचषट्पंचकं षट्षट्पंचकमष्टाष्टैकादश ॥ ७०४ ॥
सप्तैवापर्याप्ताः, स्वामिनः सूक्ष्मश्च बादरश्चैव।
विकलेंद्रियाश्च त्रिविधा, भवंत्यसंज्ञिनः क्रमात्संज्ञिनः ॥ ७०५ ॥ युग्मम्।

टीका – अपर्याप्त सात जीवसमासनि विषैं बंध, उदय, सत्त्व-स्थान अनुक्रम तैं पांच, दोय, पांच, अर सर्व सूक्ष्म-जीवनि विषैं पांच, च्यारि, पांच अर सर्व बादर-जीवनि विषैं पांच, पांच, पांच अर विकलत्रय विषैं पांच, छह, पांच ; असंज्ञी विषैं छह, छह, पांच ; संज्ञी विषैं आठ, आठ, ग्यारह जानने ॥ ७०४-७०५ ॥

तें कौन ? सो कहै हैं–

बंधा तियपणछण्णववीसत्तीसं अपुण्णगे उदओ।
इगिचउवीसं इगिछव्वीसं थावरतसे कमसो ॥ ७०६ ॥

बंधास्त्रिकपंचषण्णव, विंशत्रिंशदपूर्णे के उदयः।
एकचतुर्विंश एकषड्विंश स्थावरत्रसे क्रमशः ॥ ७०६ ॥

टीका – अपर्याप्तक सात जीव-समासनि विषैं बंध-स्थान तेईस, पचीस, छब्बीस, गुणतीस, तीस के पंच हैं। उदय-स्थान स्थावर-लब्धि-अपर्याप्तकनि विषैं तौ इकईस, चौबीस के दोय हैं। त्रस-लब्धि-अपर्याप्तकनि विषैं इकवीस, छब्बीस के दोय हैं ॥ ७०६ ॥

बाणउदीणउदिचऊ, सत्तं एमेव बंधयं अंसा।
सुहुमिदरे वियलतिये, उदया इगिवीसयादिचउपणयं ॥ ७०७ ॥

द्वानवतिनवतिचतुष्कं, सत्त्वमेवमेव बंधकोंऽशाः।
सूक्ष्मेतरयोर्विकलत्रये, उदया एकविंशकादिचतुः पंचकं ॥ ७०७ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सत्त्वस्थान बाणवै का अर निवैकानैं आदि दैकरि च्यारि– असैं पांच हैं। बहुरि सूक्ष्म, बादर अर विकलत्रय इनिविषैं बंधस्थान अर सत्त्वस्थान तौ असैं ही अपर्याप्तवत् जानने। उदयस्थान सूक्ष्मविषैं इकईसकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। बादर विषैं पांच हैं॥ ७०७॥

इगिछक्कडणववीसत्ती, सिगितीसं च वियलठाणं वा।
बंधतियं सण्णिदरे, भेदो बंधदि हु अडवीसं॥ ७०८॥

एकषट्काष्टनवविंश, त्रिंशदेकत्रिंशच्च विकलस्थानं वा।
बंधत्रयं संज्ञीतरस्मिन्, भेदो बंध्नाति हि अष्टाविंशं॥ ७०८॥

टीका – विकलत्रय विषैं उदयस्थान इकवीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस के पांच हैं। बहुरि असंज्ञी विषैं बंध, उदय, सत्त्वस्थान विकलत्रयवत् जानने। विशेष इतना– जो असंज्ञी अठाईस के कौं भी बांधैं; तातैं बंधस्थान छह हैं॥ ७०८॥

सण्णिम्मि सव्वबंधो, इगिवीसप्पहुदिएक्कतीसंता।
चउवीसूणा उदओ, दसणवपरिहीणसव्वयं सत्तं॥ ७०९॥

संज्ञिनि सर्वबंध, एकविंशप्रभृत्येकत्रिंशदंताः।
चतुर्विंशोना उदयो, दशनवपरिहीनसर्वकं सत्त्वं॥ ७०९॥

टीका – संज्ञी विषैं बंधस्थान सर्व ही आठ हैं। उदयस्थान इकवीसकानैं आदि दैकरि चौबीस के बिना इकतीस के पर्यंत आठ हैं। सत्त्वस्थान दश का, नव का बिना सर्व ग्यारह हैं॥७०९॥

आगैं चौदह-मार्गणानि विषैं कहैं हैं–

दोछक्कट्ठचउक्कं, णिरयादिसु णामबंधठाणाणि।
पणणवएगारपणयं, तिपंचबारसचउक्कं च॥ ७१०॥

द्विषट्काष्टचतुष्कं, निरयादिषु नामबंधस्थानानि।
पंचनवैकादशपंचकं, त्रिपंचद्वादशचतुष्कं च॥ ७१०॥

टीका – नारक आदि च्यारि-गतिनि विषैं क्रम तैं नामकर्म के बंधस्थान दोय, छह, आठ, च्यारि; उदयस्थान पांच, नव, ग्यारह, पांच; सत्त्वस्थान के तीन, पांच, बारह, च्यारि जानने॥७१०॥

इंद्रियमार्गणा विषैं कहैं हैं–

एगे वियले सयले, पण पण अड पंच छक्केगार पणं।
पणतेरं बंधादी, सेसादेसेवि इदि णेयं॥ ७११॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एके विकले सकले, पंच, पंचाष्ट पंच षट्कैकादश पंच।
पंचत्रयोदश बंधादीनि, शेषादेशेऽपीति ज्ञेयं ॥ ७११ ॥

टीका – एकेन्द्री, विकलेन्द्री, पंचेन्द्री विषैं क्रम तैं बंधस्थान पंच ; पंच, आठ हैं। उदयस्थान पांच, छह, ग्यारह हैं। सत्त्वस्थान पांच-पांच, तेरह हैं। अैसें ही अवशेष कायादिक मार्गणानि विषैं जानने ॥ ७११ ॥

ते कौन ? सो कहैं हैं–

णिरयादिणामबंधा, उगुतीसं तीसमादिमं छक्कं।
सव्वं पणछक्कुत्तरवीसुगुतीसंदुगं होदि ॥ ७१२ ॥

निरयादिनामबंधा, एकोनत्रिंशत् त्रिंशदादिमं षट्कं।
सर्वं पंचषट्कोत्तर, विंशैकोनत्रिंशद्विकं भवति ॥ ७१२ ॥

टीका – नामकर्म के बंधस्थान नरकगति विषैं गुणतीस वा तीस के दोय हैं। तिर्यंचगति विषैं आदि के तेईसकानैं आदि दैकरि छह हैं। मनुष्यगति विषैं सर्व हैं। देवगति विषैं पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस के च्यारि हैं ॥ ७१२ ॥

उदया इगिपणसगअडणववीसं एक्कवीसपहुदिणवं।
चउवीसहीणसव्वं इगिपणसगअट्ठणववीसं ॥ ७१३ ॥

उदया एकपंचसप्ताष्ट, नवविंशमेकविंशप्रभृतिनव।
चतुर्विंशहीनं सर्व, मेकपंचसप्ताष्टनवविंश ॥ ७१३ ॥

टीका – उदयस्थान नरकगति विषैं इकवीस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस के पांच हैं। तिर्यंचगति विषैं इकईसकानैं आदि दैकरि नव हैं। मनुष्यगति विषैं चौवीस के बिना सर्व हैं। देवगति विषैं इकईस, पचीस, सत्ताइस, अठाईस, गुणतीस के पंच हैं ॥ ७१३ ॥

सत्ता बाणउदितियं, बाणउदीणउदिअट्ठसीदितियं।
बासीदिहीणसव्वं, तेणउदिचउक्कयं होदि ॥ ७१४ ॥

सत्ता द्वानवतित्रयं, द्वानवतिनवत्यष्टाशीतित्रयं।
द्वयशीतिहीनसर्वं, त्रिनवतिचतुष्कं भवति ॥ ७१४ ॥

टीका – सत्त्वस्थान नरकगति विषैं बाणवैकानैं आदि दैकरि तीन हैं। तिर्यंचगति विषैं बाणवै, निव्वै कै अर अठासीकानैं आदि दैकरि तीन– अैसें पांच हैं। मनुष्यगति विषैं वियासी का बिना सर्व हैं। देवगति विषैं तरेणवै का आदि च्यारि हैं ॥ ७१४ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इगिविगल बंधठाणं, अडवीसूणं तिवीसछक्कं तु।
सयलं सयले उदया, एगे इगिवीसपंचयं वियले।। ७१५ ।।

एकविकले बंधस्थान, मष्टाविंशोनं त्रयोविंशषट्कं तु।
सकलं सकले उदया, एकस्मिन्नेकविंशपंचकं विकले।। ७१५ ।।

टीका – इंद्रिय-मार्गणा विषैं बंधस्थान एकेन्द्री, विकलेन्द्री विषैं अठाईस का बिना तेवीसकानैं आदि दैकरि छह हैं। पंचेन्द्री विषैं सर्व हैं। बहुरि उदयस्थान एकेन्द्री विषैं इकईसकानैं आदि दैकरि पांच हैं ॥ ७१५ ॥

इगिछक्कडणववीसं, तीसदु चउवीसहीणसव्वुदया।
णउदिचऊ बाणउदी, एगे वियले य सव्वयं सयले।। ७१६ ।।

एकषट्काष्टनवविंशं, त्रिंशद्विकं चतुर्विंशहीनं सर्वमुदयाः।
नवतिचतुष्कं द्वानवतिः, एके विकले च सर्व सकले।। ७१६ ।।

टीका – विकलेन्द्री विषैं इकईस, छब्वीस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस के छह हैं। पंचेन्द्री विषैं चौवीस के बिना सर्व हैं। बहुरि सत्त्वस्थान एकेन्द्री, विकलत्रय विषैं बाणवै, निब्बे, अठ्ठासी, चौरासी, वियासी के हैं। पंचेन्द्री विषैं सर्व हैं ॥ ७१६ ॥

पुढवीयादीपंचसु, तसे कमा बंधउदयसत्ताणि।
एयं वा सयलं वा, तेउदुगे णत्थि सगवीसं।। ७१७ ।।

पृथिव्यादिपंचसु, त्रसे क्रमात् बंधोदयसत्त्वानि।
एकं वा सकलं वा, तेजोद्विके नास्ति सप्तविंशं।। ७१७ ।।

टीका – कायमार्गणा विषैं पृथ्वी आदि पांच स्थावरनि विषैं बंध, उदय, सत्त्वस्थान एकेन्द्रीवत् जानने। त्रस विषैं पंचेन्द्रीवत् जानने। विशेष इतना तेज, वातकायिक विषैं सत्ताईस के का उदय नाहीं ; जातैं सत्ताईस का आतप वा उद्योत सहित है, सो इनका इनकैं उदय नाहीं ॥ ७१७ ॥

मणिवचि बंधुदयंसा, सव्वं णववीसतीसइगितीसं।
दसणवदुसीदिवज्जिदसव्वं ओरालतम्मिस्से।। ७१८ ।।

मनोवचसोर्बंधोदयांशाः, सर्वं नवविंशत्रिंशदेकत्रिंशत्।
दशनवद्व्यशीतिवर्जित, सर्वमौरालतन्मिश्रे।। ७१८ ।।

टीका – योगमार्गणा विषैं मन, वचन-योग विषैं तौं प्रत्येक बंधस्थान सर्व हैं। उदयस्थान गुणतीस, तीस, इकतीस के तीन हैं। सत्त्वस्थान दश का, नव का, बियासी का बिना सर्व हैं ॥७१८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सव्वं तिवीसछक्कं, पणुवीसादेक्कतीसपेरंतं।
चउछक्कसत्तवीसं, दुसु सव्वं दसयणवहीणं॥ ७१९ ॥

सर्वं त्रयोविंशषट्कं, पंचविंशादेकत्रिंशत्पर्यंतं।
चतुःषट्कसप्तविंशं, द्वयोः सर्वं दशकनवहीनं॥ ६१९ ॥

टीका – औदारिक विषैं बंधस्थान सर्व हैं। औदारिक-मिश्र विषैं तेवीसकानैं आदि दैकरि बंधस्थान छह हैं। बहुरि उदयस्थान औदारिक विषैं पचीसकानैं आदि दैकरि इकतीस का पर्यंत सात हैं। औदारिक-मिश्र विषैं चौबीस, छब्बीस, सत्ताईस के तीन उदयस्थान हैं। सत्त्वस्थान औदारिक वा औदारिक-मिश्र विषैं दश का, नव का बिना सर्व हैं॥ ७१९ ॥

वेगुव्वे तम्मिस्से, बंधंसा सुरगदीव उदयो दु।
सगवीसतियं पणजुद, वीसं आहारतम्मिस्से॥ ७२० ॥

वैगूर्वे तन्मिश्रे, बंधांशाः सुरगतिरिवोदयस्तु।
सप्तविंशत्रयं पंच, युतविंशमाहारतन्मिश्रे॥ ७२० ॥

टीका – वैक्रियिक वा वैक्रियिक-मिश्र विषैं बंधस्थान, सत्त्वस्थान तौ देवगतिवत् जानने। बहुरि उदयस्थान सत्ताईस का आदि तीन हैं। अर मिश्र विषैं पचीस ही का है॥ ७२० ॥

बंधतियं अडवीसदु, वेगुव्वं वा तिणउदिबाणउदी।
कम्मे वीसदुगुदओ, ओरालियमिस्सयं व बंधंसा॥ ७२१ ॥

बंधत्रयमष्टाविंश, द्विकं वैगूर्वं वा त्रिनवतिद्विनवती।
कर्मणि विंशद्विकोदय, औरालिकमिश्रकं च बंधांशाः॥ ७२१ ॥

टीका – आहारक, आहारकमिश्र विषैं बंधस्थान अठाईस, गुणतीस के दोय हैं। उदयस्थान वैक्रियिकवत् सत्ताईस का आदि तीन हैं अर मिश्र विषैं पचीस का ही है अर सत्त्वस्थान तरेणवै, बाणवै के दोय हैं। बहुरि कार्माण विषैं उदयस्थान बीस, इकईस के दोय हैं। बंधस्थान, सत्त्वस्थान औदारिक-मिश्रवत् हैं॥ ७२१ ॥

वेदकसाये सव्वं, इगिवीसणवं तिणउदिएक्कारं।
थीपुरिसे चउवीसं, सीदडसदरी ण थीसंढे॥ ७२२ ॥

वेदकषाये सर्वमेकविंशनवं त्रिनवत्येकादश।
स्त्रीपुरुषे चतुर्विंशमशीत्यष्टसप्तती न स्त्रीषंढे॥ ७२२ ॥

टीका – वेद वा कषायमार्गणा विषैं बंधस्थान सर्व हैं। उदयस्थान इकवीसकानैं आदि दैकरि नव हैं। सत्त्वस्थान तरैणवैकानैं आदि दैकरि ग्यारह हैं। इतना विशेष स्त्री, पुरुष वेदविषैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चौबीस के का उदय नाहीं ; जातैं ताका एकेन्द्री विषैं ही उदय है। बहुरि स्त्री, नपुंसकवेद विषैं अस्सी, अठत्तरि के दोय सत्त्व नाहीं ; जातैं तीर्थंकर-सत्त्व का धारी पुरुषवेद सहित ही क्षपकश्रेणी चढै है ॥ ७२२ ॥

अण्णाणदुगे बंधो, आदीछ णउंसयं व उदयो दु।
सत्तं दुणउदिछक्कं, विभंगबंधा हु कुमदिं व॥ ७२३ ॥

अज्ञानद्विके बंध, आदि षट् नपुंसकं व उदयस्तु।
सत्त्वं द्विनवतिषट्कं, विभंगबंधा हि कुमतिर्व॥ ७२३ ॥

टीका – ज्ञानमार्गणा विषैं कुमति, कुश्रुति विषैं बंधस्थान तेईसकानैं आदि दैकरि छह हैं। उदयस्थान नपुंसकवेदवत् नव हैं। सत्त्वस्थान बाणवै का आदि छह हैं। बहुरि बिभंग विषैं बंधस्थान तौ कुमतिवत् हैं॥ ७२३ ॥

उदया उणतीसतियं, सत्ता णिरयं व मदिसुदोहीए।
अडवीसपंच बंधा, उदयो पुरिसं व अट्ठेव॥ ७२४ ॥

उदया एकोनत्रिंशत्त्रयं, सत्ता निरयं व मतिश्रुतावधिषु।
अष्टाविंशपंचबंधा, उदयाः पुरुषो व अष्टैव॥ ७२४ ॥

टीका – उदयस्थान गुणतीसकानैं आदि दैकरि तीन हैं। सत्त्वस्थान नरकगतिवत् हैं। बहुरि मति, श्रुत, अवधि विषैं बंध-स्थान अठाईसकानैं आदि दैकरि पांच हैं। उदयस्थान पुरुषवेदवत् आठ हैं॥ ७२४ ॥

पढमचऊसीदिचऊ, सत्तं मणपज्जवम्हि बंधंसा।
ओहिं व तीसमुदयं, ण हि बंधो केवले णाणे॥ ७२५ ॥

प्रथमचतुष्कमशीतिचतुष्कं, सत्त्वं मनःपर्यये बंधांशाः।
अवधिरिव त्रिंशदुदयो, नहि बंधः केवलेज्ञाने॥ ७२५ ॥

टीका – सत्त्वस्थान तरेणवै का आदि च्यारि, असी का आदि च्यारि– ऐसैं आठ हैं। बहुरि मनःपर्यय विषैं बंधस्थान, सत्त्वस्थान अवधिज्ञानवत् हैं। उदयस्थान तीस ही का है। बहुरि केवलज्ञान विषैं बंध नाहीं हैं॥ ७२५ ॥

उदयो सव्वं चउपण, वीसूणं सीदिछक्कयं सत्तं।
सुदमिव सामयियदुगे, उदओ पणुवीससत्तवीसचऊ॥ ७२६ ॥

उदयः सर्वं चतुःपंचविंशोनमशीतिषट्कं सत्त्वं।
श्रुतमिव सामायिकद्विके, उदयः पंचविंशसप्तविंशचतुष्कं॥ ७२६ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – उदयस्थान चौबीस, पचीस के बिना सर्व हैं। सत्त्वस्थान असी का आदि छह हैं। बहुरि संयम-मार्गणा विषैं सामायिक, छेदोपस्थापन विषैं बंधस्थान, सत्त्वस्थान श्रुतज्ञानवत् है। उदयस्थान पचीस का अर सत्ताईस का आदि च्यारि– अैसैं पांच हैं ॥ ७२६ ॥

परिहारे बंधतियं, अडवीसचऊ य तीसमादिचऊ।
सुहुमे एक्को बंधो, मणं व उदयंसठाणाणि ॥ ७२७ ॥

परिहारे बंधत्रय, मष्टाविंशचतुष्कं च त्रिंशमादिचतुष्कं।
सूक्ष्मे एको बंधो, मनो व उदयांशस्थानानि ॥ ७२७ ॥

टीका – परिहार-विशुद्धी विषैं बंध, उदय, सत्त्व, क्रम तैं अठाईसकानैं आदि दैकरि च्यारि का बंध अर उदय तीस ही का अर तरेणवै का आदि च्यारि का सत्त्व जानना। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं बंध एक का ही है। उदय, सत्त्व मन: पर्यय-ज्ञानवत् हैं ॥ ७२७ ॥

जहखादे बंधतियं, केवलयं वा तिणउदिचउ अत्थि।
देसे अडवीसदुगं, तीसदु तेणउदिचारि बंधतियं ॥ ७२८ ॥

यथाख्याते बंधत्रयं, केवलं वा त्रिनवतिचतुष्कमस्ति।
देशे अष्टाविंशद्विकं, त्रिंशद्विकं त्रिनवतिचत्वारि बंधत्रयं ॥ ७२८ ॥

टीका – यथाख्यात विषैं बंध, उदय, सत्त्व केवलज्ञानवत् हैं। विशेष इतना– सत्त्व तरेणवै का आदि च्यारि का भी पाइए है। बहुरि देशसंयत विषैं बंधादिक तीन क्रम तैं अठाईस का आदि दोय का बंध अर तीस आदि दोय का उदय अर तरेणवैं का आदि च्यारि का सत्त्व है ॥ ७२८ ॥

अविरमणे बंधुदया, कुमदिं व तिणउदिसत्तयं सत्तं।
पुरिसं वा चक्खिदरे, अत्थि अचक्खुम्मि चउवीसं ॥ ७२९ ॥

अविरमणे बंधोदया:, कुमतिर्व त्रिनवतिसप्तकं सत्त्वं।
पुरुषं वा चक्षुरितरयो, रस्ति अचक्षुषि चतुर्विंश ॥ ७२९ ॥

टीका – असंयत विषैं बंध, उदयस्थान कुमति-ज्ञानवत् है। सत्त्वस्थान तरेणवै का आदि सात हैं।

बहुरि दर्शन-मार्गणा विषैं चक्षु-अचक्षु विषैं बंध, उदय, सत्त्व पुरुषवेदवत् हैं। विशेष इतना अचक्षुदर्शन विषैं चौबीस के का भी उदय है ॥ ७२९ ॥

ओहिदुगे बंधतियं, तण्णाण वा किलिट्ठलेस्सतिये।
अविरमणं वा सुहजुग, लुदओ पुंवेदयं व हवे ॥ ७३० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अडवीसचऊ बंधा, पणछव्वीसं च अत्थि तेउम्मि।
पढमचउक्कं सत्तं, सुक्के ओहिं व वीसयं चुदओ॥ ७३१ ॥ जुम्मं।

अवधिद्विके बंधत्रयं, तज्ज्ञानं वा क्लिष्टलेश्यत्रये।
अविरमणं वा शुभयुगुलोदयः पुंवेदको व भवेत्॥ ७३० ॥
अष्टाविंशचत्वारो बंधाः, पंचषड्विंश चास्ति तेजसि।
प्रथमचतुष्कं सत्त्वं, शुक्लायामवधिर्व विंशकं चोदयः॥ ७३१ ॥ युग्मं।

टीका – अवधि वा केवल-दर्शन विषैं बंध, उदय, सत्त्व अवधि-केवलज्ञानवत् जानने।

बहुरि लेश्या-मार्गणा विषैं कृष्णादिक तीन विषैं तौ बंध, उदय, सत्त्वस्थान असंयतवत् हैं। तेजः पद्म विषैं उदयस्थान पुरुषवेदवत् हैं। बंधस्थान पद्म विषैं अठाईसकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। तेज विषैं ते च्यारि अर पचीस, छबीस के– अैसैं छह हैं। सत्त्वस्थान दोऊनि विषैं आदि के च्यारि हैं। बहुरि शुक्लेश्या विषैं बंध, उदय, सत्त्व अवधिज्ञानवत् हैं। विशेष इतना– तहां बीस के का भी उदय है॥ ७३०-७३१ ॥

भव्वे सव्वमभव्वे, बंधुदया अविरदब्व सत्तं तु।
णउदिचउ हारबंधण, दुगहीणं सुदमिवुवसमे बंधो॥ ७३२ ॥

भव्ये सर्वमभव्ये, बंधोदया अविरत इव सत्त्वं तु।
नवतिचतुष्कमाहारबंधन, द्विकहीनं श्रुतमिवोपशमे बंधः॥ ७३२ ॥

टीका – भव्य-मार्गणा विषैं बंध, उदय, सत्त्वस्थान सर्व ही हैं। अभव्य-मार्गणा विषैं बंध, उदय तौ असंयमवत् जानने। सत्त्वस्थान निवैकानैं आदि दैकरि च्यारि जानने अर बंध विषैं उद्योतसहित तीस का है, आहारक-द्विकसहित तीस का बंध नाहीं हैं– इतना विशेष है। बहुरि सम्यक्त्वमार्गणा विषै उपशम-सम्यक्त्व विषैं तौ बंधस्थान श्रुतज्ञानवत् हैं॥ ७३२ ॥

उदया इगिपणवीसं, णववीसतियं च पढमचउ सत्तं।
उवसम इव बंधंसा, वेदगसम्मे ण इगिबंधो॥ ७३३ ॥

उदया एकपंचविंशं, नवविंशत्रयं च प्रथमचतुष्कं सत्त्वं।
उपशम इव बधांशा, वेदकसम्ये नैकबंधः॥ ७३३ ॥

टीका – उदयस्थान इकईस, पचीस के अर गुणतीसकेनै आदि दैकरि तीन– अैसैं पांच हैं। सत्त्वस्थान तरेणवै का आदि च्यारि हैं। बहुरि वेदक-सम्यक्त्व विषैं बंध, सत्त्व तौ उपशमवत् हैं, विशेष इतना– एक का बंधस्थान नाहीं है॥ ७३३ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उदया मदिं व खइये, बंधादी सुदमिवत्थि चरिमदुगं।
उदयंसे वीसं च य, साणे अडवीसतियबंधो॥ ७३४॥

उदया मतिर्व क्षायिके, बंधादि श्रुतमिवास्ति चरमद्विकं।
उदयांशे विंशं च च, साने अष्टाविंशत्रिकबंधः॥ ७३४॥

टीका – उदयस्थान मतिज्ञानवत् आठ हैं। बहुरि क्षायिक विषैं बंध, उदय, सत्त्व, श्रुतज्ञानवत् पांच, आठ, आठ हैं। विशेष इतना– उदय, सत्त्व विषैं अंत के दोय, दोय भी पाइए हैं वा उदय विषैं बीस का भी स्थान पाइए हैं। बहुरि सासादनरुचि विषैं बंधस्थान अठाईस का आदि तीन हैं॥ ७३४॥

उदया इगिवीसचऊ, णववीसतियं च णउदियं सत्तं।
मिस्से अडवीसदुगं, णववीसतियं च बंधुदया॥ ७३५॥

उदया एकविंशचत्वारः, नवविंशत्रयश्च नवतिकं सत्त्वं।
मिश्रेऽष्टाविंशद्विकं, नवविंशत्रयं च बंधोदयाः॥ ७३५॥

टीका – उदयस्थान इकईस का आदि च्यारि, गुणतीस का आदि तीन– असैं सात हैं। तहां सत्ताईस, अठाईस का उदय आवने का कालपर्यंत सासादनपना एकेन्द्रियादिक कैं संभवै नाहीं; तातैं न कहे। सत्त्वस्थान निवै ही का है। बहुरि मिश्ररुचि विषैं बंधस्थान अठाईस का आदि दोय हैं। उदयस्थान गुणतीस का आदि तीन हैं॥ ७३५॥

बाणउदिणउदिसत्तं, मिच्छे कुमदिं व होदि बंधतियं।
पुरिसं वा सण्णीये, इदरे कुमदिं व णत्थि इगिणउदी॥ ७३६॥

द्वानवतिनवतिसत्त्वं, मिथ्ये कुमतिर्व भवति बंधत्रयं।
पुरुषो वा संज्ञिनि, इतरस्मिन् कुमतिर्व नास्त्येकनवतिः॥ ७३६॥

टीका – सत्त्व बाणवै, निवै के दोय हैं। बहुरि मिथ्यारुचि विषैं बंध, उदय, सत्त्वस्थान कुमतिज्ञानवत् जानना।

बहुरि संज्ञीमार्गणा विषैं बंध, उदय, सत्त्व पुरुषवेदवत् हैं। असंज्ञी विषैं कुमतिज्ञानवत् है। विशेष इतना– इक्याणवै का सत्त्व नाहीं है॥ ७३६॥

आहारे बंधुदया, संढं वा णवरि णत्थि इगिवीसं।
पुरिसं वा कम्मंसा, इदरे कम्मं व बंधतियं॥ ७३७॥

आहारे बंधोदयाः षंढो वा नवरि नास्ति एकविंशं।
पुरुषो वा कर्मांशाः, इतरस्मिन् कर्म व बंधत्रयं॥ ७३७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – आहारमार्गणा विषैं बंध, उदयस्थान तौ नपुंसकवेदवत् है। विशेष इतना– इकवीस का उदयस्थान नाहीं है। सत्त्वस्थान पुरुषवेदवत् है। बहुरि अनाहार विषैं बंध, उदय, सत्त्व कार्मणकाय योगवत् है, विशेष इतना है ॥ ७३७ ॥

अत्थि णवट्ठ य दुदओ, दसणवसत्तं च विज्जदे एत्थ।
इदि बंधुदयप्पहुदी, सुदणामे सारमादेसे ॥ ७३८ ॥

अस्ति नवाष्ट च द्व्युदयो, दशनवसत्त्वं च विद्यतेऽत्र।
इति बंधोदयप्रभृतिश्रुतनाम्नि सारमादेशे ॥ ७३८ ॥

टीका – तहां अनाहार विषैं अयोगी का उदय नव का वा आठ का है। सत्त्व दश का वा नव का है। ऐसैं बंध, उदय सत्त्व का त्रिसंयोग प्रगट नामकर्म विषैं है, सो चौदह-मार्गणा विषैं सार समीचीन कह्या है ॥ ७३८ ॥

चारुसुदंसणधरणे, कुवलयसंतोसणे समत्थेण।
माधवचंदेण महा, वीरेणत्थेण वित्थरिदो ॥ ७३९ ॥

चारुसुदर्शनधरणे, कुवलसंतोषणे समर्थेन।
माधवचंद्रेण महा, वीरेणार्थेन विस्तरितः ॥ ७३९ ॥

टीका – चारु-उत्कृष्ट सम्यग्दर्शन का धरनै विषैं अर पृथ्वीसमूह का आनंद उपजावने विषैं समर्थ ऐसा जु 'माधवचंद्र' वा 'महावीरस्वामी', तिनकरि ऐसा कथन परमार्थ तैं विस्ताररूप कीया है। इहां 'माधवचंद्र' तौ 'नेमिनाथ-तीर्थंकर' अर 'महावीर'- 'वर्धमान-तीर्थंकर' का नाम जानना। अथवा 'माधवचंद्र' अर 'वीरनंदी' दोऊ आचार्यनि के नाम जानने ॥ ७३९ ॥

आगैं इस त्रिसंयोग का एक आधार दोय आधेय कौं कहैं हैं, तहां प्रथम ही बंध आधार, उदय, सत्त्व आधेय कौं दोय गाथानि करि कहैं हैं–

णवपंचोदयसत्ता, तेवीसे पण्णुवीस छव्वीसे।
अट्ठचदुरट्ठवीसे, णवसत्तुगुतीसतीसम्मि ॥ ७४० ॥
एगेगं इगितीसे, एगे एगुदयमट्ठसत्ताणि।
उवरबंधे दस दस, उदयंसा होंति णियमेण ॥ ७४१ ॥

नवपंचोदयसत्ता, त्रयोविंशे पंचविंशे षड्विंशे।
अष्टचतुष्कमष्टाविंशे, नवसप्तैकोनत्रिंशत्रिं शतोः ॥ ७४० ॥
एकैकमेकत्रिंशतौ, एकस्मिन्नेकोदयोष्टसत्त्वानि।
उपरतबंधे दश दश, उदयांशा भवंति नियमेन ॥ ७४१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तेवीस, पचीस, छवीस, के बंधस्थाननि विषैं उदयस्थान नव अर सत्त्वस्थान पांच हैं। अठाईस का बंधस्थाननि विषैं उदयस्थान आठ, सत्त्वस्थान च्यारि हैं। गुणतीस, तीस के बंधस्थाननि विषैं उदयस्थान नव सत्त्वस्थान सात हैं। इकतीस का बंधस्थान विषैं उदयस्थान एक, सत्त्वस्थान एक है। एक का बंधस्थान विषैं उदयस्थान एक, सत्त्वस्थान आठ हैं। 'उपरतबंध' कहिए बंधरहित स्थान विषैं उदयस्थान वा सत्त्वस्थान दश-दश नियमकरि हैं।

भावार्थ–जिस जीव कैं जिस काल इतनी-इतनी प्रकृतिनि का बंध होइ, तिसिकाल तिसि किसी जीव कैं कोई, किसी कैं कोई– अैसैं नाना-जीव अपेक्षा उदयस्थान वा सत्त्वस्थान पाइए॥ ७४०-७४१ ॥

ते कौन ? सो कहैं हैं–

उदयंसट्ठाणाणि य , सामित्तादो दु जाणिदव्वाणि।
बंधुदयं च णिरुंभिय, सत्तस्स य संभवगदीए॥ १ ॥
तियपणछबीसबंधे, इगिवीसादेक्कतीसचरिमुदया।
बाणउदी णउदिचऊ, सत्तं अडवीसगे उदया॥ ७४२ ॥

त्रिकपंचषड्विंशबंधे, एकविंशादेकत्रिंशचरमोदयाः।
द्वानवतिर्नवतिचतुष्कं, सत्त्वमष्टाविंशके उदयाः॥ ७४२ ॥

टीका – तेवीस, पचीस, छवीस के बंधस्थाननि विषैं इकईसनैं आदि दैकरि, इकतीसपर्यंत उदयस्थाननव हैं। सत्त्वस्थान बाणवै का अर निवै का आदि च्यारि– अैसैं पांच हैं॥ ७४२ ॥

पुव्वं व ण चउवीसं, बाणउदिचउक्कसत्तमुगुतीसे।
तीसे पुव्वं बुदया, पढमिल्लं सत्तयं सत्तं॥ ७४३ ॥

पूर्वं व न चतुर्विंश, द्वानवतिचतुष्कसत्त्वमेकोनत्रिंशे।
त्रिंशे पूर्वं वोदयाः प्रथमाद्यं सप्तकं सत्त्वं॥ ७४३ ॥

टीका – अठाईस का बंधस्थान विषैं उदयस्थान पूर्ववत् नव विषैं चौबीस का नाहीं ; तातैं आठ हैं। सत्त्वस्थान बाणवै का आदि च्यारि हैं। बहुरि गुणतीस, तीस का बंधस्थान विषैं उदयस्थान पूर्वोक्त नव हैं अर सत्त्वस्थान तेरणवै का आदि सात हैं॥ ७४३ ॥

इगितीसे तीसुदओ, तेणउदी सत्तयं हवे एगे।
तीसुदओ पढमचऊ, सीदादिचउक्कमवि सत्तं॥ ७४४ ॥

एकत्रिंशे त्रिंशोदय, स्त्रिनवतिः सत्त्वं भवति एकस्मिन्।
त्रिंशोदयः प्रथम्चतुष्क, मशीत्यादिचतुष्कमपि सत्त्वं॥ ७४४ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका — इकतीस का बंधस्थान विषैं उदयस्थान तीस का एक है। सत्त्वस्थान तरेणवै का एक है। बहुरि एक का बंधस्थान विषैं उदयस्थान तीस का एक है। सत्त्वस्थान तरेणवै का आदि च्यारि अर असी का आदि च्यारि— अैसैं आठ हैं॥ ७४४॥

उवरदबंधेसुदया, चउपणवीसूण सव्वयं होदि।
सत्तं पढमचउक्कं, सीदादीछक्कमवि होदि॥ ७४५॥

उपरतबंधेषूदया, श्चतुःपंचविंशोनं सर्वं भवति।
सत्त्वं प्रथमचतुष्क, मशीत्यादिषट्कमपि भवति॥ ७४५॥

टीका — उपरतबंध जो बंध-रहित तीहिं विषैं उदयस्थान चौबीस, पचीस के बिना सर्व दश हैं। सत्त्वस्थान तरेणवै का आदि च्यारि, असी का आदि छह— अैसैं दश हैं। अब इनिका स्वरूप दिखाइए हैं—

तहां पहिला त्रिसंयोग विषैं बंधस्थान तेवीस का विषैं उदयस्थान नव, सत्त्वस्थान पंच कहे; सो तेवीस का बंध एकेन्द्री-अपर्याप्त सहित है; तातैं इस स्थान कौं देवनारकी बिना अन्य त्रस-स्थावर-तिर्यंच वा मनुष्य-मिथ्यादृष्टि ही बांधैं हैं। तहां एकेन्द्रियादिक सर्व तिर्यंचनि के बंध एकेन्द्री-अपर्याप्त सहित तेबीस का होइ, तहां उदय इकईस, चौईस, पचीस, छव्वीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी का है। बहुरि मनुष्य-कर्मभूमियानि कैं एकेन्द्री-अपर्याप्तयुत तेईस का बंध होइ, तहां उदय इकवीस, छव्वीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का है।

बहुरि पचीस का बंध एकेन्द्री-पर्याप्त वा त्रस-अपर्याप्त सहित है; तातैं याकौं तिर्यंच, मनुष्य, देव-मिथ्यादृष्टी ही बांधै है। तहां सर्व तिर्यंचनि के एकेन्द्री-पर्याप्त, त्रस-अपर्याप्त युत पचीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, चौबीस, पचीस, छबीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै अठ्यासी, चौरासी, बियासी का है। मनुष्यनि कैं तैसा ही बंध होइ, तहां उदय इकवीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै अठ्यासी, चौरासी का है। भवनत्रिक, सौधर्मद्विक-देवनि कैं एकेन्द्री-पर्याप्तयुत ही पचीस का बंध हैं। तहां उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस है। सत्त्व बाणवै, निवै का है।

बहुरि छबीस का बंध एकेन्द्री-पर्याप्त अर उद्योत-आतप विषैं एककरि सहित है; तातैं याकौं तिर्यंच, मनुष्य देव, विषैं मिथ्यादृष्टी ही बांधै हैं। तहां भी तेज, बात, साधारण, सूक्ष्म, अपर्याप्तनि कैं, ताका उदय नाहीं है। तहां तिर्यंचनि कैं एकेन्द्री-पर्याप्त-उद्योत वा आतप सहित छबीस का बंध होई, तहां इकईस, चौईस, पचीस, छबीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी का है। मनुष्यनि कै तैसा बंध होइ, तहां उदय

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का है।

भवनत्रिक, सौधर्मद्विक देवनि कैं तैसा ही बंध होइ, तहां उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। बहुरि अठाईस का बंध नरक, देवगति युत है ; तातैं असंज्ञी-संज्ञी तिर्यंच वा मनुष्य हैं ते विग्रहगति, मिश्र-शरीरकाल कौं उलंघि पर्याप्तकाल विषैं बांधै हैं।

तहां तिर्यंचनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं नरक, देवयुत अठाईस का बंध होइ। तहां उदय अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी का है। सासादन विषैं देवयुत ही अठाईस का बंध है। तहां सासादन विषैं उदय तीस, इकतीस का सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं उदय तीस, इकतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। असंयत विषैं उदय इकईस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। देशसंयत विषैं उदय तीस, इकतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है।

बियासी का सत्त्व सहित तेज-बातकायवाले मरि तिर्यंच विषैं उपजैं, तिनकैं विग्रहगति वा मिश्र-शरीरकाल विषैं तिर्यंचगतियुत तेवीस, पचीस, छबीस, गुणतीस का बंध होतैं, बियासी का सत्त्व संभवै है। मनुष्यद्विक सहित पचीस, गुणतीस का बंध होतैं, बियासी का सत्त्व न संभवै हैं। बहुरि चौरासी का सत्त्व एकेन्द्री, विकलेन्द्री कैं नारकचतुष्क की उद्वेलना भएं होइ, ते मरि पंचेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंचनि विषैं उपजैं, तिनके भी पूर्वोक्त दोऊकालनि विषैं चौरासी का सत्त्व संभवै है ; तातैं अठाईस का बंध होने का काल विषैं वियासी, चौरासी का सत्त्व न कह्या।

बहुरि मनुष्यनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं नरक वा देव सहित अठाईस का बंध होइ, तहां उदय अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, इक्याणवै, निवै, अठ्यासी का है। मनुष्यद्विक की उद्वेलना भएं वा न भएं, तेज, बातकायिकनि के मनुष्यायु के बंध का अभाव तैं मनुष्यनि विषैं उपजना नाहीं है ; तातैं वियासी का सत्त्व नाहीं। बहुरि नारकचतुष्क की उद्वेलना सहित एकेन्द्री, विकलेन्द्री, मनुष्य विषैं उपजै, तिनकैं विग्रहगति मिश्र-शरीर-काल विषैं अठाईस का बंध नाहीं ; तातैं चौरासी का भी सत्त्व नाहीं, शरीर-पर्याप्ति भएं नारकचतुष्क वा देवचतुष्क का बंध होइ जाइ, तहां अठ्यासी ही का सत्त्व है।

बहुरि पूर्वै नारकायु बंध सहित असंयत दूसरी, तीसरी पृथ्वी का गमन कौं सन्मुख होइ, तहां मिथ्यादृष्टी होइ नरकगति सहित अठाईस का बंध करै, तहां तीस का उदय सहित इक्याणबै का सत्त्व संभवै है। बहुरि मनुष्यनि कैं सासादनादिक विषैं देवगतिसहित ही विषैं अठाईस का बंध है। तहां सासादन विषैं उदय-तीस का, सत्त्व निवै का है अर मिश्र विषैं उदय तीस का अर

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सत्त्व बाणवै, निबै का है। असंयत विषैं उदय इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व निवै बाणबै का है। इहां इक्याणवै का सत्त्व नाहीं ; जातैं तीर्थंकर-बंध का प्रारंभ भए पीछैं, पूर्वे नरकायु-बंध बिना सम्यक्त्व तैं भ्रष्टता न होइ अर तीर्थंकर का बंध निरंतर है ; तातैं देवगति, तीर्थ सहित गुणतीस का ही बंध होइ अठाईस का न होइ। देशसंयत विषैं उदय तीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। प्रमत्त विषैं उदय पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। अप्रमत्त विषैं उदय तीस का, सत्त्व बाणवै, निवै का है। अपूर्वकरण विषैं उदय तीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है।

बहुरि गुणतीस का बंध वेन्द्रियादिक-त्रसपर्याप्त सहित वा तिर्यंचगति वा मनुष्यगति सहित वा देवगति, तीर्थंकर सहित हो है। सौ याकौं च्यार्यो-गति के जीव बांधै हैं। तहां नारकीनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्य सहित गुणतीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सत्त्व बाणवै, इक्याणवै, निबै का है। इहां इक्याणबै का सत्त्व घर्मादि तीन नरकनि विषैं अपर्याप्त-काल विषैं ही संभवै है। सासादन विषैं तैसा ही बंध होइ, तहां उदय गुणतीस का, सत्त्व बाणवै वा निवै का है। मिश्र विषैं मनुष्य सहित ही गुणतीस का बंध होइ, तहां उदय गुणतीस का ; सत्त्व बाणबै वा निवै का है। असंयत विषैं भी मनुष्य सहित ही गुणतीस का बंध होइ, तहां घर्मा-नरक विषैं तौ उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। वंशा-मेघा विषैं उदय गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। अंजनादिकनि विषैं उदय गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है।

बहुरि तिर्यंचनि कै मिथ्यादृष्टि विषैं वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री, पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्य सहित गुणतीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, चौईस, पचीस, छबीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। सत्त्व बाणबै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी का है। सासादन विषैं पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्य सहित गुणतीस का बंध होइ। तहां उदय इकईस, चौबीस, छबीस, तीस का है। सत्त्व निवै का है। इहां पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का उदय नाहीं है। बहुरि मिश्रादि तीन विषैं गुणतीस का बंध नाहीं ; जातैं तिर्यंचनि कैं तिर्यंच, मनुष्यगति की सासादन विषैं ही व्युच्छित्ति भई है। तहां देवगतियुत अठाईस का ही बंध है।

बहुरि मनुष्यनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री, पंचेन्द्री, तिर्यंच वा मनुष्यसहित गुणतीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, इक्याणवे, निबै, अठ्यासी, चौरासी का है। इहां मनुष्य विषैं तेज, वातकायिक न उपजै ; तातैं वियासी का सत्त्व न कह्या। बहुरि पूर्वे जाकैं नारकायु का बंध भया— ऐसा जीव तीर्थंकर का बंध करि नरक कौं जाता मिथ्यादृष्टी भया, तहां मनुष्यगति सहित गुणतीस का बंध करै, ताही कैं तीस का उदय सहित इक्याणवे का सत्त्व जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सासादन विषैं पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्य सहित गुणतीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, छब्बीस, तीस का ; सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं गुणतीस का बंध ही नाहीं। असंयतादिक विषैं देवगति, तीर्थंकर सहित गुणतीस का बंध है। तहां असंयत विषैं उदय इकईस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का ; सत्त्व तरेणवै, इक्याणवै का है। देशसंयत विषैं उदय तीस का ; सत्त्व तरेणवै, इक्याणवै का है। प्रमत्त विषैं उदय पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस का ; सत्त्व तरेणवै, इक्याणवै का है।

बहुरि देवनि कैं भवनत्रिकादिक सहस्रार पर्यंत मिथ्यादृष्टि विषैं संज्ञी-पंचेन्द्री-पर्याप्त-तिर्यंच वा मनुष्य सहित गुणतीस का बंध होइ। तहां उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। तहां उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का ; सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं मनुष्ययुत गुणतीस का बंध होइ। तहां उदय गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। असंयत विषैं मनुष्ययुत गुणतीस का बंध होइ।

तहां उदय भवनत्रिक कैं गुणतीस ही का, औरनि कैं इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सत्त्व सबनि कैं बाणवै, निवै का है। बहुरि आनतादिक उपरिम-ग्रैवेयक-पर्यंत कैं मनुष्ययुत ही गुणतीस का बंध है। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन विषैं उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का; सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं उदय गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। असंयत विषैं उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। बहुरि अनुदिश-अनुत्तर कैं असंयत विषैं मनुष्ययुत गुणतीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है।

बहुरि तीस का बंध त्रस-पर्याप्त-उद्योत-तिर्यंचगति सहित वा मनुष्यगति-तीर्थंकर सहित वा देवगति, आहारकद्विक सहित हो है। याकों च्यार्यो गति के जीव बांधै हैं। तहां सर्व नारकीनि कैं मिथ्यादृष्टि, सासादन विषैं पंचेन्द्री तिर्यंच, उद्योत सहित तीस का बंध होइ। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन विषैं उदय गुणतीस का ; सत्त्व, निवै का है। मिश्र विषैं तीस का बंध ही नाहीं। असंयत विषैं मनुष्य, तीर्थंकर सहित तीस का बंध होइ।

तहां धर्मा विषैं तौ उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, का ; सत्त्व इक्याणवै का है। वंशा, मेघा विषैं उदय गुणतीस का ; सत्त्व इक्याणवै का है। अंजनादिक विषैं ऐसा बंध नाहीं।

बहुरि तिर्यंचनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं तिर्यंच-उद्योत युत तीस का बंध होइ। तहां उदय इकईस,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चौबीस, पचीस, छब्बीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है ; सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, वियासी का है। सासादन विषैं पंचेन्द्री-तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का बंध होइ। तहां उदय इकईस, चौबीस, छब्बीस, तीस, इकतीस का ; सत्त्व निवै का है। मिश्रादिक विषैं अैसा बंध ही नाहीं।

बहुरि मनुष्यनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं वेन्द्री, तेन्द्री, चौन्द्री, पंचेन्द्री-तिर्यंच-उद्योत युत तीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का है। सासादन विषैं तिर्यंच-उद्योत युत तीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, छब्बीस, तीस का ; सत्त्व निवै का है। मिश्रादिक च्यारि विषैं तीस का बंध नाहीं। अप्रमत्त, अपूर्वकरण विषैं देवगति, आहारक सहित तीस का बंध होइ, तहां उदय तीस का ; सत्त्व बाणवै का है।

बहुरि देवनि कैं भवनत्रिकादिक सहस्रार पर्यंत तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का बंध होइ, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन विषैं उदय इकईस, पचीस, गुणतीस, (तीस) का ; सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं भवनत्रिक का, असंयत विषैं तीस का बंध नाहीं। मनुष्यगति युत गुणतीस ही का बंध है। बहुरि सौधर्मादिक सहस्रार पर्यंत असंयत विषैं मनुष्य तीर्थंकर सहित तीस का बंध होइ, तहां उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का ; सत्त्व तरेणवै, इक्याणवै का है। आनतादि उपरिम-ग्रैवेयक पर्यंत मिथ्यादृष्ट्यादि तीन विषैं तीस का बंध नाहीं। आनतादि सवार्थसिद्धिपर्यंत असंयत विषैं मनुष्य, तीर्थयुत तीस का बंध होइ। तहां उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, (तीस) का ; सत्त्व तरेणवै, इक्याणवै का है।

बहुरि इकतीस का बंध देवगति, आहारकद्विक, तीर्थंकर सहित हो है ;

तातैं याकौं अप्रमत्त, अपूर्वकरणवाले ही बांधै हैं, तहां उदय तीस का सत्त्व तरेणवै का। बहुरि एक ही जहां बंध पाइये, तहां अपूर्वकरण विषैं उदय तीस का, सत्त्व तरेणवै का आदि च्यारि हैं। अनिवृत्तिकरण विषैं उदय तीस का ; सत्त्व तरेणवैं का आदि च्यारि, असी का आदि च्यारि हैं। सूक्ष्मसांपराय विषैं उदय तीस का ; सत्त्व तरेणवै का आदि च्यारि, असी का आदि च्यारि हैं। बहुरि जहां बंध न पाइए तहां उपशांतकषाय विषैं उदय तीस का ; सत्त्व तरेणवै का आदि च्यारि हैं। क्षीणकषाय विषैं उदय तीस का ; सत्त्व असी का आदि च्यारि हैं। सयोगी विषैं स्वस्थानकेवली विषैं तो उदय तीस, इकतीस का ; सत्त्व असी आदि च्यारि का है। समुद्घातकेवली विषैं उदय बीस, इकईस, छब्बीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का ; सत्त्व असी आदि च्यारि हैं। अयोगी विषैं उदय तीस, इकतीस, नव, आठ का है। सत्त्व असी, गुणयासी, अठहत्तरि, सतहत्तरि, दश, नव का है ॥ ७४५ ॥

आगैं दूसरा भेद उदय-आधार, बंध-सत्त्व आधेयरूप, ताकौं कहैं हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वीसादिसु बंधंसा, णभदु छण्णव पणपणं च छसत्तं।
छण्णव छड दुसु छद्दस, अट्ठदसं छक्कछक्कं णभति दुसु॥ ७४६ ॥

विंशादिषु बंधांशा, नभोद्विकं षण्णव पंच पंच च षट्सप्त।
षण्णव षडष्ट द्वयोः षड्दश, अष्टदश षट्कषट्कं नभस्त्रिकं द्वयोः ॥ ७४६ ॥

टीका - बीसकानैं आदि दैकरि जे उदयस्थान, तिनविषैं क्रम तैं बंधस्थान, सत्त्वस्थान बीसका विषैं शून्य दोय-इकईस का विषैं छह, नव, चौवीस का विषैं पांच-पांच-पचीस का विषैं छह, सात ; छब्बीस का विषैं छह, नव ; सत्ताईस-अठाईस का विंषैं छह, आठ ; गुणतीस का विषैं छह, दश, तीस का विषैं आठ, दश, इकतीस का विषैं, छह, छह, नव ; आठ का विषैं शून्य, तीन जानने। इतनी-इतनी प्रकृतिनि का उदय हौतैं किसी जीव कैं कोई, किसी जीव कैं कोई— अैसैं बंधस्थान, सत्त्वस्थान जानने ॥ ७४६ ॥

ते कौन ? सो कहिए है—

वीसुदये बंधो ण हि, उणसीदीसत्तसत्तरी सत्तं।
इगिवीसे तेवीसप्पहुदीतीसंतया बंधा॥ ७४७ ॥

विंशोदये बंधो नहि एकोनाशीतिसप्तसप्तती सत्त्वं।
एकविंशे त्रयोविंश, प्रभृतित्रिंशांत का बंधाः ॥ ७४७ ॥

टीका - बीस का उदयस्थान विषैं बंध नाहीं। सत्त्व गुण्यासी, सतहत्तरि के दोय हैं। इकवीस का उदय विषैं बंध तेवीस का आदि तीस का पर्यंत छह हैं ॥ ७४७ ॥

सत्तं तिणउदिपहुदी, सीदंता अट्ठसत्तरी य हवे।
चउवीसे पढमतियं, णववीसं तीसयं बंधो॥ ७४८ ॥

सत्त्वं त्रिनवतिप्रभृत्य शीत्यंतानि अष्टसप्ततिश्च भवेत्।
चतुर्विंशे प्रथमत्रयं, नवविंशं त्रिंशत्कं बंधः ॥ ७४८ ॥

टीका — सत्त्व तरेणवैकानैं आदि दैकरि असी का पर्यंत अर अठहत्तरि का है। बहुरि चौबीस का उदय विषैं बंध पहिले आदि के तीन स्थान अर गुणतीस, तीस— अैसैं पांच हैं ॥ ७४८ ॥

बाणउदी णउदिचऊ, सत्तं पणछस्सगट्ठणववीसे।
बंधा आदिमछक्कं, पढमिल्लं सत्तयं सत्तं॥ ७४९ ॥

द्वानवतिर्नवतिचतुष्कं, सत्त्वं पंचषट्सप्ताष्टनवविंशे ।
बंधा आदिमषट्कं, प्रथमाद्यं सप्तकं सत्त्वं ॥ ७४९ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सत्त्व बाणवै का अर निवैकानैं आदि दैकरि च्यारि– असैं पांच हैं। बहुरि पचीस, छबीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस का उदय विषैं बंध तेवीसकानैं आदि दैकरि छह हैं। सत्त्व पचीस का उदय विषैं आदि के सात हैं ॥ ७४९ ॥

ते णवसगसदरिजुदा, आदिमछस्सीदिअट्ठसदरीहिं।
णवसत्तसत्तरीहिं, सीदिचउक्केहिं सहिदाणि ॥ ७५० ॥

तानि नवसप्तसप्ततियुतानि आदिमषडशीत्यष्टसप्ततिभिः।
नवसप्तसप्ततिभिरशीतिचतुष्कैः सहितानि ॥ ७५० ॥

टीका – छबीस का उदय विषैं सत्त्व ते आदि के सात अर गुण्यासी, सतहत्तरि के दोय– असैं नव हैं। सताईस का उदय विषैं सत्त्व आदि के छह, असी, अठहत्तरि के दोय– असैं आठ हैं। अठाईस का उदय विषैं सत्त्व आदि के छह, गुण्यासी, सतहत्तरि के दोय– ऐसैं आठ हैं। गुणतीस का उदय विषैं सत्त्व आदि के छह, असीकानैं आदि दैकरि च्यारि– असैं दश हैं ॥७५० ॥

तीसे अट्ठवि बंधो ऊणत्तीसं व होदि सत्तं तु।
इगितीसे तेवीसप्प हुदीतीसंतयं बंधो ॥ ७५१ ॥

त्रिंशे अष्टापि बंध, एकोनत्रिंशं न भवति सत्त्वं तु।
एकत्रिंशे त्रयोविंश, प्रभृतित्रिंशांत को बंधः ॥ ७५१ ॥

टीका – तीस का उदय विषैं बंधस्थान आठ, सत्त्व गुणतीस का उदयवत् दश हैं। इकतीस का उदय विषैं बंध तेवीस का आदि तीस का पर्यंत छह हैं ॥ ७५१ ॥

सत्तं दुणउदिणउदी, तिय सीदडहत्तरी य णवगट्ठे।
बंधो ण सीदिपहुदी, सुसमविसमं सत्तमुद्दिट्ठं ॥ ७५२ ॥

सत्त्वं द्विनवतिनवति, त्रिकमष्टाशीत्यष्टसप्ततिश्च नवकाष्टसु।
बंधो नाशीतिप्रभृति, सुषमविषमं सत्त्वमुद्दिष्टं ॥ ७५२ ॥

टीका – सत्त्व बाणवैं का अर निवै का आदि तीन अर असी, सतहत्तरि के दोय– असैं छह हैं। नव का, आठ का, उदय विषैं बंध नाहीं, सत्त्व असी नैं आदि दैकरि छह विषैं समरूप तौ नव का विषैं तीन अर विषमरूप आठ का विषैं तीन जानने। अब इनिका विशेष कहिए हैं–

बीस का उदय तीर्थंकर-रहित सामान्यकेवली का समुद्घात विषैं होइ, तहां बंध का अभाव, सत्त्व गुण्यासी सतहत्तरि के दोय हैं।

बहुरि इकईस का उदय तीर्थंकर का प्रतर करने समेटने विषैं बा लोक-पूरण विषैं होइ, तहां बंध नाहीं, सत्त्व असी अठहत्तरि के दोय हैं। बहुरि आनुपूर्वी सहित इकईस का उदय च्यारूं-गति

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का विग्रहगतिकाल विषैं होइ, तहां नारकीनि के घर्मादि तीन का मिथ्यादृष्टि विषैं बंध-पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का है। सत्त्व बाणवै, इक्याणवै, निवै का है। सासादन विषैं, मिश्र विषैं इकईस का उदय ही नाहीं। असंयत विषैं घर्मा नरक विषैं ही इकईस का उदय है। तहां बंध मनुष्ययुत गुणतीस वा तीर्थ-सहित तीस का है। सत्त्व बाणवैं, इक्याणवै, निवै का है। अंजनादि तीन का मिथ्यादृष्टि विषैं बंध पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच- उद्योत सहित तीस का है। सत्त्व बाणवैं, निबै का है। इहां सासादनादि विषैं इकईस का उदय नाहीं।

बहुरि तिर्यंचनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध— तेवीस, पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणबै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी का है। सासादन विषैं बंध पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्य युत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का है। सत्त्व निवै का है। मिश्र, देशसंयत विषैं इकईस का उदय नाहीं, असंयत विषैं है, तहां बंध देवयुत अठाईस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है।

बहुरि मनुष्यनि कैं इकईस का उदय होइ, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेवीस, पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणबै, निवै अठ्यासी, चौरासी का है। सासादन विषैं बंध पंचेन्द्री-तिर्यंच मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योत युत तीस का है। सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं इकईस का उदय नाहीं। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस, देव-तीर्थयुत गुणतीस का है। सत्त्व तरेणवै, बाणवै, इक्याणवै का है। देशसंयतादिक विषैं इकईस का उदय ही नाहीं।

बहुरि देवनि का भवनत्रिक देव, कल्पवासिनी-स्त्रीनि कैं इकईस का उदय होइ, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन विषैं बंध तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। सत्त्व निवै का है। मिश्र, असंयत विषैं असा उदय नाहीं है।

बहुरि सौधर्म विषैं असा उदय होइ, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन विषैं बंध-तिर्यंच, मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योत युत तीस का है। सत्त्व निवै का हैं। मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का मनुष्य, तीर्थयुत तीस का है। सत्त्व तरेणवै आदि च्यारि का है।

ऊपरि दश-स्वर्गनि विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध-तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन, अविरत विषैं सौधर्मद्विकवत् जानना। ऊपरि-ग्रैवेयक-पर्यंत मिथ्यादृष्टि विषैं बंधस्थान मनुष्ययुत गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं बंध मनुष्युत गुणतीस वा तीर्थयुत तीस का है। सत्तव तरेणवै आदि च्यारि का है। ऊपरि चौदह बिमान संबंधी असंयत विषैं भी असैं ही दोय-बंध, च्यारि-सत्त्व हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि चौबीस का उदय अपर्याप्त-एकेन्द्री-मिथ्यादृष्टि विषैं ही है। तहां लब्धि-अपर्याप्तक विषैं बंध तेवीस, पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का ; सत्त्व बाणवै, निबै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी का है। अैसें ही निवृत्ति-अपर्याप्तक विषैं हैं।

विशेष इतना—

जो तेज, बातकायिक-जीवनि कैं मनुष्यगति सहित बंध-स्थानकनि के भेद, बहुरि सर्व सूक्ष्म, अपर्याप्त, तेज, बात, साधारण सहित आतप-उद्योत युत बंध के भेद छोडि देने।

बहुरि पचीस का उदय च्यारूं-गति के जीवनि कैं अपर्याप्त-काल विषैं वा पर्याप्त-एकेन्द्री विषैं संभवे है। तहां पचीस का उदय होतैं सर्व-नारकीनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं वा घर्मा-नरक का असंयत विषैं इकईस का उदयवत् बंध वा सत्त्व जानना। नारकीनि कैं अपर्याप्त-काल विषैं अन्य गुणस्थान हैं नाहीं। बहुरि एकेन्द्री विषैं परघातयुत पचीस का उदय होय, तहां बंध तेवीस, पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी का है। त्रस विषैं पचीस का उदय नाहीं, जातैं तहां अंगोपांग, संहनन, सहित छबीस का ही उदय हो है। बहुरि मनुष्य-प्रमत्त गुणस्थानवर्ती कैं आहारक-शरीर विषैं संहनन रहित अंगोपांग सहित पचीस का उदय है। तहां बंध देवयुत अठाईस वा देव, तीर्थसहित गुणतीस का है। सत्त्व तरेणवै, बाणबै का है। बहुरि देवनि कैं पचीस का उदय होइ, तहां जैसै इकईस का उदय विषैं बंध-सत्त्व कहे, तैसैं ही बंध-सत्त्व जानने।

बहुरि छवीस का उदय त्रस-लब्धि-अपर्याप्त, निर्वृत्ति-अपर्याप्तक कैं संहनन सहित है। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंधस्थान तेबीस का आदि अठाईस का बिना तीस का पर्यंत पांच है। सत्त्वस्थान बाणबै का अर निवै का आदि च्यारि हैं। बहुरि एकेन्द्री-मिथ्यादृष्टि कैं शरीर-पर्याप्ति विषैं उद्योत वा आतप-उच्छवास सहित छब्बीस का उदय है। तहां बंध तेईस, पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी का है। सासादन विषैं छबीस का उदय नाहीं, जातैं इस उदय के होतैं पहिलैं ही सासादन कौं छांडै हैं। तहां चौबीस का ही उदय है।

बहुरि तिर्यंच-पंचेन्द्री के सासदन विषैं छब्बीस का उदय होइ, तहां बंध गुणतीस, तीस के दोय हैं। सत्त्व निवै ही का है। 'मिच्छदुगे देवचऊ ण' इस वचन तैं अठाईस का बंध नाहीं। मिश्र विषैं छबीस का उदय नाहीं। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का सत्त्व बाणवैं, निवै का है। देशसंयत विषैं छबीस का उदय नाहीं।

बहुरि मनुष्यनि कैं छबीस का उदय होइ, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेवीस, पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का है। सासादन विषैं बंध तिर्यंच, मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का ; सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं अैसा उदय नाहीं। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का, देव-तीर्थसहित गुणतीस का है। सत्त्व

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तरेणवै आदि च्यारि का है। देशसंयतादिक विषैं ऐसा उदय नाहीं। तीर्थंकर बिना सामान्य-केवली कैं कपाट विषैं छबीस का उदय होइ, तहां बंध नास्ति, उदय गुण्यासी वा सतहत्तरि का है।

बहुरि सत्ताईस का उदय च्यारूं-गति विषैं शरीरपर्याप्ति विषैं एकेन्द्री के उच्छ्वास-पर्याप्ति काल विषैं हो है। सो जहां सत्ताईस का उदय होइ, तहां नारकीनि कैं घर्मादि तीन नरकनि विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। इहां तीर्थंकर सहित सत्त्वस्थान न संभवै है; जातैं शरीर-पर्याप्ति के ऊपरि तीर्थसत्त्व सहित नारकीनि कैं सम्यक्त्व ही होइ जाइ, तब चौथा-गुणस्थान होइ। बहुरि सासादन, मिश्र विषैं अैसा उदय ही नाहीं। असंयत विषैं घर्मादि विषैं तो बंध मनुष्ययुत गुणतीस वा मनुष्य-तीर्थयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, इक्याणवै, निवै का है। बंशा, मेघा विषैं बंध मनुष्य-तीर्थसहित तीस ही का है; सत्त्व इक्याणवै का है।

बहुरि अंजनादि तीन विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। माघवी विषैं बंध तिर्यंचयुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादनादिक विषैं अैसा उदय नाहीं।

बहुरि एकेन्द्रियनि कैं उश्वास-निश्वासयुत वा आतप, उद्योत विषैं एककरियुत सत्ताईस का बंध होइ। तहां बंध तेवीस, पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का है। तेज-बात बिना अन्य एकेन्द्रियनि कैं उश्वास-पर्याप्तिकाल विषैं मनुष्यद्विक का बंध संभवै है; तातैं बियासी का सत्त्व यथासंभव जानना

बहुरि आहारक-शरीरवाले कैं सत्ताईस का उदय होइ, तहां बंध देवयुत अठाईस वा देव, तीर्थयुत गुणतीस का है। सत्त्व तरेणवै, बाणबै का है। तीर्थंकर का कपाट-समुद्घात विषैं सत्ताईस का उदय होइ, तहां बंध का अभाव; सत्त्व असी, अठहतरि का है।

बहुरि देवनि कैं भवत्रिक-देव, कल्पवासिनी-स्त्रीनि कैं तौ मिथ्यादृष्टि विषैं बंध पचीस, छबीस, तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस, तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादनादिक विषैं अैसा उदय ही नाहीं। इहां शरीरपर्याप्तिकाल विषैं सासादन छोडि मिथ्यादृष्टि होइ जाइ; तातैं सासादन भी न कह्या है।

सौधर्मद्विक का मिथ्यादृष्टि विषैं बंध वा सत्त्व भवनत्रिकवत् है। सासादन मिश्र विषैं ऐसा उदय नाहीं। असंयत विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस वा मनुष्य-तीर्थयुत तीस का है। सत्त्व तरेणवै आदि च्यारि का है। ऊपरि दश-स्वर्गनि विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तिर्यंचमनुष्ययुत गुणतीस का, तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन, मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं सौधर्मद्विकवत् बंध, सत्त्व है। उपरि ग्रैवेयक पर्यंत मिथ्यादृष्टि विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का; सत्त्व बाणवै, निवै का है। असंयत विषैं वा अनुदिश, अनुत्तर का असंयत विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस वा मनुष्य-तीर्थयुत तीस का है। सत्त्व तरेणवै आदि च्यारि का है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि अठाईस का उदय तिर्यंच-मनुष्य कैं शरीरपर्याप्तिकाल विषैं वा देव-नारकी कैं उश्वासपर्याप्तिकाल विषैं है। सो जहां अठाईस का उदय होइ, तहां नारकीनि कैं घर्मा विषैं— मिथ्यादृष्टि विषैं तौ बंध तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। इहां इक्याणवै का सत्त्व नाहीं ; जातैं तिस सत्त्ववाला घर्मा-नरक विषैं जाइ, सो सम्यक्त्व तै विषैं भ्रष्ट न होइ। सासादन-मिश्र विषैं अैसा उदय नाहीं। असंयत विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस वा मनुष्य-तीर्थयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, इक्याणवै, निवै का है।

वंशा, मेघा विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध, सत्त्व घर्मावत्। सासादन-मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं मनुष्य, तीर्थयुत तीस का ही, सत्त्व इक्याणवै ही का है। अंजनादि तीनि विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध-सत्त्व घर्मावत् है। सासादनादिक विषैं अैसा उदय ही नाहीं। माघवी विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तिर्यंचयुत गुणतीस का, तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादनादिक विषैं अैसा उदय नाहीं।

बहुरि तिर्यंचनि कैं अठाईस का उदय होतैं— मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेवीस, पचीस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का है। सासादन-मिश्र विषैं ऐसा उदय नाहीं। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। देशसंयत विषैं नाहीं।

बहुरि मनुष्यनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध, सत्त्व तिर्यंचवत्। सासादन, मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस वा देवतीर्थयुत गुणतीस का है। सत्त्व तरेणवै आदि च्यारि का है। देशसंयत विषैं नाहीं। आहारक का उश्वास-पर्याप्ति विषैं अठाईस का उदय होइ, तहां बंध देवयुत अठाईस वा देव-तीर्थयुत गुणतीस का ; सत्त्व तरेणवै, बाणवै, का है। तीर्थंकर-रहित का दंड-समुद्घात का औदारिक-योग विषैं अठाईस का उदय होइ तहां बंध का अभाव ; सत्त्व गुणयासी, सतहत्तरि का है। बहुरि देवनि कैं जैसैं सत्ताईस का उदय विषैं बंध, सत्त्व कहे, तैसैं ही अठाईस का उदय होतैं भी जानने।

बहुरि गुणतीस का उदय नारकीनि कैं भाषा-पर्याप्तिकाल विषैं दुःस्वर सहित हो है। तहां सर्व नारकीनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध मनुष्य-तिर्यंचयुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। तहां माघवी विषैं मनुष्ययुत का बंध नाहीं है। सत्त्व बाणवै, निवै का है। सासादन विषैं बंध मिथ्यादृष्टिवत् ; सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। असंयत विषैं घर्मा, वंशा, मेघा नरक विषैं तौ बंध मनुष्ययुत गुणतीस वा मनुष्य-तीर्थयुत तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै, इक्याणवै का है। अंजनादि च्यारि विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है।

बहुरि त्रस-तिर्यंचनि कैं शरीर-पर्याप्तिकाल विषैं उद्योतयुत गुणतीस का उदय होय। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेवीस, पचीस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणवै, निवै,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

अठ्यासी, चौरासी का है। सासादन, मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। देशसंयत विषैं नाही।

बहुरि मनुष्यनि कैं उश्वास-पर्याप्तिकाल विषैं उश्वासयुत गुणतीस का उदय होय। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध, सत्त्व तिर्यंचवत्। सासादन, मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस वा देव-तीर्थयुत गुणतीस का ; सत्त्व तरेणवै आदि च्यारि का है। देश-संयत विषैं नाहीं। आहारक-शरीर का भाषापर्याप्ति-काल विषैं सुस्वर सहित गुणतीस का उदय होइ, तहां बंध देवयुत अठाईस, देव-तीर्थयुत गुणतीस का ; सत्त्व तरेणवै, बाणवै का है। तीर्थंकर का दंड-समुद्घात विषैं गुणतीस उदय होइ, तहां बंध का अभाव ; सत्व असी, अठहत्तरि का है। तीर्थंकर-रहित केवली कैं मूल-शरीर विषैं प्रवेश करतां उश्वास-पर्याप्तिकाल विषैं उश्वासयुत गुणतीस का उदय होइ। तहां बंध का अभाव ; सत्त्व गुण्यासी, सतहत्तरि का है।

देवनि कैं भाषापर्याप्ति-काल विषैं सुस्वर सहित गुणतीस का उदय होइ। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं भवनत्रिक, कल्पवासिनी-स्त्री के बंध पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। बारह-स्वर्गनि विषैं तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। ऊपरि ग्रैवेयक पर्यंत मनुष्य युत गुणतीस का ही है। सत्त्व सर्वत्र, बाणवै, निवै का है। अर सासादन विषैं भवनत्रिकादि बारहवां स्वर्गपर्यंत तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का, ऊपरि-ग्रैवेयक पर्यंत मनुष्ययुत गुणतीस ही का है। सत्त्व सर्वत्र निवै का है। मिश्र विषैं सर्वत्र ऊपरि-ग्रैवेयक पर्यंत बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै, निवै का है। असंयत विषैं भवनत्रिक, कल्पबासिनी-स्त्री कैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; सत्त्व बाणवै निवै का है। सौधर्मादिक अनुत्तर-बिमान पर्यंत बंध मनुष्ययुत गुणतीस वा मनुष्य-तीर्थयुत तीस का ; सत्त्व तरेणवै, बाणवै, इक्याणवै, निवै का है।

बहुरि तीस का उदय तिर्यंच-मनुष्यनि ही कैं संहनन सहित है। तहां तिर्यंचनि कैं उश्वास-पर्याप्ति विषैं उद्योतयुत तीस का उदय होइ। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेवीस, पचीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सत्त्व बाणबै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का है। सासादन, मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का, सत्त्व बाणबै, निवै का है। देश-संयत विषैं नाहीं। बहुरि भाषापर्याप्ति विषैं उद्योत रहित अर सुस्वर-दुःस्वर विषैं एककरि सहित भी तीस का उदय तिर्यंच कैं होइ।

तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेईस, पचीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का ; सत्त्व बाणबै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का है। इहां अठ्यासी, चौरासी का सत्त्व विकलत्रय की अपेक्षा कह्या है ; जातैं विकलत्रय जीवनि कैं सुरद्विक, नारक-चतुष्क की उद्वेलना भएं पीछैं, फेरि बंध का अभाव है। बहुरि सासादन विषैं बंध तिर्यंच-मनुष्य सहित गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का है। सत्त्व निवै का है। मिश्र, असंयत, देश-संयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; सत्त्व बाणबै, निवै का है।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मनुष्यनि कैं तीर्थंकर के मूल-शरीर विषैं प्रवेश करता उश्वास सहित तीस का उदय होइ, तहां बंध का अभाव ; सत्त्व असी, अठहत्तरि का है। तीर्थंकर बिना मूल-शरीर विषैं प्रवेश करता, भाषापर्याप्ति-काल विषैं सुस्वर वा दुःस्वर युत तीस का उदय होइ, तहां बंध का अभाव ; सत्त्व गुण्यासी वा सतहत्तरि का है।

बहुरि सामान्य-मनुष्यनि कैं भाषापर्याप्ति विषैं सुस्वर वा दुःस्वर सहित तीस का उदय होइ, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेईस, पचीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का ; सत्त्व बाणबै, इक्याणबै, निवै का है। इहां इक्याणबै का सत्त्व नरक-गमन कौं सन्मुख तीर्थंकर-सत्त्ववाले की अपेक्षा है। सासादन विषैं बंध तिर्यंच-मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का है। सत्त्व निवै का है। मिश्र विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; सत्त्व बाणबै, निवै, काहै। असंयतादि अपूर्वकरण का छठा-भागपर्यंत बंध देवयुत अठाईस वा देव, तीर्थयुत गुणतीस का है ; सत्त्व तरेणवै आदि च्यारि का है। अपूर्वकरण का सातवां-भाग विषैं बंध एक का ; सत्त्व तरेणवै आदि च्यारि का है। अनिवृतिकरण, सूक्ष्म-सांपराय विषैं बंध एक का ; सत्त्व तरेणबै आदि च्यारि अर असी आदि च्यारि का है। ऊपरि बंध का अभाव है। सत्त्व उपशांत कषाय विषैं तरेणवै आदि च्यारि का है। क्षीणकषाय, सयोगी विषैं असी आदि च्यारि का है। अयोगी विषैं तीस का उदय ही नाहीं।

बहुरि इकतीस का उदय त्रस-उद्योत सहित भाषापर्याप्ति विषैं सुस्वर वा दुःस्वर विषैं एक सहित तिर्यंचनि कैं हो है। तहां जैसैं उद्योत रहित भाषापर्याप्ति विषैं तीस का उदय होता तिर्यंच कैं बंध सत्त्व कहे थे, तैसैं ही इहां जानना। मनुष्य विषैं क्षीणकषाय पर्यंत इकतीस का उदय नाहीं। तीर्थंकर के भाषापर्याप्ति विषैं उदय है। तहां बंध का अभाव ; सत्त्व असी, अठहत्तरि का है। बहुरि नव का उदय तीर्थंकर कैं अयोगी विषैं होइ, तहां सत्त्व असी, अठहत्तरि, दश का है। बहुरि तहां ही सामान्य-केवली कैं आठ का उदय होइ, तहां सत्त्व गुण्यासी, सतहत्तरि, नव का है। बंध का दोऊनि विषैं अभाव है॥ ७५२ ॥

अैसैं उदय-आधार, बंध सत्त्व आधेय का आगम अनुसारि जोडि, आगैं सत्त्वस्थान-आधार, बंध-उदय आधेय को सात गाथानि करि कहैं हैं—

सत्ते बंधुदया चदु, सग सगणव चदुसगं च सगणवयं।
छण्णव पणणव पणचदु, चदुसिगिछक्कं णभेक्क सुण्णेगं॥ ७५३ ॥

सत्त्वे बंधोदया चतुः, सप्त सप्तनव चतुःसप्त च सप्तनवकं।
षण्णव पंचनव पंचचतुष्कं, चतुर्ष्वेकषट्कं नभएकं शून्यमेकं॥ ७५३ ॥

टीका – तरेणवैकानैं आदि दैकरि जे सत्त्वस्थान, तिनविषैं बंधस्थान वा उदयस्थान अनुक्रम तैं च्यारि, सात अर सात, नव अर च्यारि, सात अर सात, नव अर छह, नव अर पांच, नव अर पांच, च्यारि, अर च्यारि सत्त्वस्थाननि विषैं एक, छह, शून्य, एक अर, शून्य, एक जानने। इहां इतने-इतने का सत्त्व होतैं कोई जीवकै कोई , कोई जीव कैं कोई— अैसैं बंध वा उदय पाइए है— अैसा कहिए है॥ ७५३ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ते कौन ? सो कहैं हैं–

तेणउदीए बंधो उगुतीसादीचउक्कमुदओ दु।
इगिपणछस्सगअट्ठय, णववीसं तीसयं णेयं॥ ७५४॥

त्रिनवत्यां बंध, एकोनत्रिंशादिचतुष्कमुदयस्तु।
एकपंचषट्सप्ताष्टक, नवविंशं त्रिंशत्को ज्ञेयः॥ ७५४॥

टीका – तरेणवै का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान गुणतीस का आदि च्यारि हैं। उदयस्थान इकईस, पचीस, छबीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस के हैं॥ ७५४॥

वाणउदीए बंधा, इगितीसूणाणि अट्ठाणाणि।
इगिवीसादीएक्क, त्तीसंता उदयठाणाणि॥ ७५५॥

द्वानवत्यां बंधा, एकत्रिंशोनान्यष्टस्थानानि।
एकविंशाद्येक, त्रिंशांतानि उदयस्थानानि॥ ७५५॥

टीका – बाणवै का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान इकतीस का बिना अवशेष सात हैं। उदयस्थान इकईस का आदि इकतीस का पर्यंत नव हैं॥ ७५५॥

इगिणवदीए बंधा, अडवीसत्तिदयमेक्कयं चुदओ।
तेणउदिं वा णउदी, बंधा बाणउदियं व हवे॥ ७५६॥

एकनवत्यां बंधा, अष्टविंशत्रितयमेकश्चोदयः।
त्रिनवतिर्वा नवतिबंधा द्वानवतिर्व भवेत्॥ ७५६॥

टीका – इक्याणवै का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान अठाईस का आदि तीन अर एक का– अैसैं च्यारि हैं। उदयस्थान तरेणवै का वत् सात हैं। बहुरि निवै का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान बाणवै का वत् सात हैं॥ ७५६॥

चरिमदुवीसूणुदयो, तिसु दुसु बंधा छ तुरियहीणं च।
बासीदी बंधुदया, पुव्वं विगिवीसचत्तारि॥ ७५७॥

चरमद्विविंशोनोदय, स्त्रिषु द्वयोर्बंधाः षट् तुरीयहीनं च।
द्वयशीत्यां बंधोदयाः, पूर्वमिवैकविंशचत्वारः॥ ७५७॥

टीका – उदयस्थान अंत के दोय अर बीस का– इन तीन बिना नव हैं। त्रिषु कहिए अठ्यासी, चौरासी का सत्त्वस्थान विषैं भी एई नव उदयस्थान हैं। अठ्यासी, चौरासी का विषैं बंधस्थान तेवीसकानैं आदि दैकरि छह अर तिनि विषैं अठाईस का बिना पांच हैं। बियासी का सत्त्वस्थान विषैं बंधस्थान चौरासी का वत् पांच हैं। उदयस्थान इकईसकानैं आदि दैकरि च्यारि हैं। सत्त्व ८२। बंध २३, २५, २६, २९, ३०। उदय २१, २४, २५, २६॥ ७५७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सीदादिचउसु बंधा, जसकित्ती समपदे हवे उदओ।
इगिसगणवधियवीसं, तीसेक्कत्तीसणवगं च॥ ७५८॥

अशीत्यादिचतुर्षु बंधो यशस्कीर्तिः समपदे भवेदुदयः।
एकसप्तनवाधिकविंशं, त्रिंशैकत्रिंशनवकं च॥ ७५८॥

टीका – असीनै आदि देकरि च्यारि सत्त्वस्थाननि विषैं बंधस्थान एक यशस्कीर्ति है। उदयस्थान असी, अठहत्तरि के समगणनारूप स्थाननि विषैं इकईस, सत्ताईस, गुणतीस, तीस, इकतीस, नव के हैं॥ ७५८॥

वीसं छडणववीसं, तीसं चट्ठं च विसमठाणुदया।
दसणवगे ण हि बंधो, कमेण णवअट्ठयं उदओ॥ ७५९॥

विंशः षडष्टनवविंशं, त्रिशच्चाष्ट च विषमस्थानोदयाः।
दशनवके न हि बंधः, क्रमेण नवाष्टक उदयः॥ ७५९॥

टीका – गुण्यासी सतहत्तरि का विषम गणनारूप सत्त्वस्थाननि विषैं बीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस, आठ के उदयस्थान हैं। दश का, नव का सत्त्वस्थाननि विषैं बंध का अभाव है। उदय क्रम तैं नव का अर आठ का है। अैसैं कह्या आधार-आधेय, ताकौं च्यार्यों गति का गुणस्थाननि विषैं लगाइए है–

तहां तरेणवै का सत्त्व कर्मभूमिया-पर्याप्त-निर्वृत्ति-अपर्याप्त-मनुष्य अर वैमानिक-देवनि कैं ही पाइए। तहां भी तित्थाहार इत्यादिक सूत्र करि मिथ्यादृष्टि आदि तीन गुणस्थाननि विषैं तरेणवै का सत्त्व न पाइए है। तहां मनुष्य कैं जहां तरेणवै का सत्त्व पाइए, तहां असंयत विषैं बंध देव-तीर्थ सहित गुणतीस का, उदय इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। देश-संयत विषैं बंध देव-तीर्थयुत गुणतीस का, उदय तीस का है। प्रमत्त विषैं बंध देव-तीर्थयुत गुणतीस का, उदय पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। अप्रमत्त विषैं बंध देव-तीर्थयुत गुणतीस वा आहारक-तीर्थयुत इकतीस का, उदय तीस का है। उपशमक-अपूर्वकरण विषैं अप्रमत्तवत् बंध, सत्त्व हैं। अर अनिवृतिकरण, सूक्ष्म-सांपराय विषैं बंध एक का, उदय तीस का है। उपशांत-कषाय विषैं बंध का अभाव, उदय तीस का है। क्षीणकषायादिक विषैं तरेणवै का सत्त्व नाहीं।

बहुरि वैमानिक-देवनि कै असंयत विषैं तरेणवै का सत्त्व होइ। तहां बंध मनुष्य-तीर्थ सहित तीस का, उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। इहां असंयतादिक विषैं अठाईस कौं न बांधै ; जातैं नरक जाने कौं सन्मुख जीव बिना अन्य जीव तीर्थंकर सत्त्ववाला, ताकैं तीर्थंकर-बंध का सर्वदा सद्भाव है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि बाणवै का सत्त्व च्यार्यों गति विषैं पाइए, तहां नारकीनि कैं जहां बाणवे का सत्त्व पाइए, तहां घर्मा विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तिर्यंच वा मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सासादन विषैं बाणवै का सत्त्व ही नाहीं। मिश्र विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का, उदय गुणतीस का है। अर असंयत विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। वंशा तैं मघवीपर्यंत मिथ्यादृष्टि विषैं घर्मावत् सासादनमिश्र विषैं अैसा सत्त्व नाहीं। असंयत विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का उदय गुणतीस का है। माघवी विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तिर्यंचयुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का ; उदय घर्मावत् है। सासादनमिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का, उदय गुणतीस का है।

बहुरि तिर्यंचनि कैं जहां बाणवे का सत्त्व पाइए, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेवीस, पचीस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। उदय इकईस, चौबीस, पचीस, छब्बीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। सासादन विषैं नाहीं। मिश्र विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय तीस-इकतीस का है। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय इकईस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। देश-संयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय तीस, इकतीस का है।

बहुरि मनुष्यनि कैं जहां बाणवै का सत्त्व पाइए, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेईस, पचीस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का ; उदय इकईस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सासादन विषैं बाणवे का सत्त्व ही नाहीं। मिश्र विषैं बंध देवयुत अठाईस का, उदय तीस का है। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय इकईस, छब्बीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। देशसंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का, उदय तीस का है। प्रमत्त विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। अप्रमत्त, अपूर्व करण विषैं बंध देवयुत अठाईस का वा देव-आहारकयुत तीस का, उदय तीस का है। अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म-सांपराय विषैं बंध एक का ; उदय तीस का है। उपशांतकषाय विषैं बंध का अभाव, उदय तीस का है। क्षीणकषायादि विषैं बाणवे का सत्त्व ही नाहीं।

बहुरि देवनि कैं जहां बाणवै का सत्त्व पाइए, तहां भवनत्रिक, सौधर्मद्विक-मिथ्यादृष्टि विषैं बंध पचीस, छब्बीस, गुणतीस, तीस का ; उदय इकईस, पचीस, सताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सासादन विषैं नाहीं। मिश्र विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का, उदय गुणतीस का है। असंयत विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; उदय भवनत्रिक कैं तौ गुणतीस ही का, सौधर्मद्विक कैं इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। बहुरि ऊपरि मिथ्यादृष्टि विषैं बंध सहस्रार पर्यंत तिर्यंच वा मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का, उपरि-ग्रैवेयक पर्यंत मनुष्ययुत गुणतीस ही का है ; उदय ग्रैवेयक-पर्यंत इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सासादन विषैं नाहीं, मिश्र विषैं उपरि-ग्रैवेयक पर्यंत बंध मनुष्ययुत गुणतीस का, उदय

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणतीस का है। असंयत विषैं अनुत्तर-विमान पर्यंत बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है।

बहुरि इक्याणवै का सत्त्व 'तिरियेण तित्थसत्तं' इस बचन तैं तिर्यंच बिना देव, नारकी, मनुष्य विषैं ही है, सो जहां इक्याणवै का सत्त्व होइ, तहां नारकीनि कैं घर्मा विषैं मिथ्यादृष्टि विषैं तो बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; उदय इकईस, पचीस का है। सत्ताईस आदिक का इहां उदय नाहीं ; जातैं शरीरपर्याप्ति के ऊपरि तीर्थसत्त्ववाला मनुष्य-सम्यग्दृष्टी ही हो है। सासादन, मिश्र विषैं इक्याणवै का सत्त्व ही नाहीं। असंयत विषैं बंध तीर्थ-मनुष्ययुत तीस का ; उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। वंशा, मेघा विषैं भी घर्मावत् है। विशेष इतना-असंयत विषैं उदय सताईस, अठाईस, गुणतीस ही का है। अंजनादिक विषैं इक्याणवै का सत्त्व ही नाहीं।

मुनष्यनि कैं इक्याणवै का सत्त्व होइ। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध नरकयुत अठाईस का वा मनुष्ययुत गुणतीस का, उदय तीस का है। सासादन, मिश्र विषैं नाहीं। असंयत विषैं बंध देव-तीर्थसहित गुणतीस का ; उदय इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस का है। देशसंयत, प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण का छठा-भाग पर्यंत बंध देव-तीर्थ सहित गुणतीस का, अपूर्वकरण का सातवां-भाग, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म-सांपराय विषैं बंध एक का, उपशांतकषाय विषैं बंध नाहीं, उदय देशसंयतादि उपशांतकषायपर्यंत तीस ही का है।

बहुरि देवनि कैं इक्याणवै का सत्त्व, भवनत्रिक-कल्पवासिनी बिना वैमानिक-देवनि कैं असंयत विषैं ही होइ। तहां बंध मनुष्य-तीर्थयुत तीस का ; उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है।

बहुरि निवै का सत्त्व नारकीनि कैं होइ। तहां सर्वनारकीनि कैं मिथ्यादृष्टि विषैं बंध— तिर्यंच वा मनुष्य सहित गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का है। तहां माघवी विषैं मनुष्ययुत का बंध नाहीं है। उदय इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सासादन विषैं बंध मिथ्यादृष्टिवत् , उदय गुणतीस का है। मिश्र विषैं बंध मनुष्ययुत गुणतीस का, उदय गुणतीस का है। असंयत विषैं बंध-मनुष्ययुत गुणतीस का है ; उदय घर्मा विषैं इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का वंशादिक विषैं गुणतीस ही का है।

बहुरि तिर्यंचनि कैं निवै का सत्त्व होइ। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेईस, पचीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। उदय इकईस, चौईस, पचीस, छबीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। सासादन विषैं बंध देवयुत अठाईस वा तिर्यंच वा मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योत युत तीस का है। उदय इकईस, चौबीस, छबीस, तीस, इकतीस का है। मिश्र विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय तीस, इकतीस का है। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। देशसंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का उदय तीस, इकतीस का है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मनुष्यनि कैं निवै का सत्त्व होइ, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं बंध तेईस, पचीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का ; उदय इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। सासादन विषैं बंध देवयुत अठाईस का वा तिर्यंच वा मनुष्ययुत गुणतीस का वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का ; उदय इकईस, छबीस, तीस का है। मिश्र विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय तीस का है। असंयत विषैं बंध देवयुत अठाईस का ; उदय इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। देशसंयत, प्रमत्त, अप्रमत्त विषैं बंध देवयुत अठाईस का, अपूर्वकरण विषैं बंध देवयुत अठाईस का वा एक का, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय विषैं बंध एक का, उपशांत-कषाय विषैं बंध का अभाव है। उदय देशसंयतादि उपशांतकषाय पर्यंत तीस ही का है।

बहुरि देवनि कैं निवै का सत्त्व होइ। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं भवनत्रिक-सौधर्मद्विक कैं तौ बंध पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का है। सहस्रार पर्यंत तिर्यंच वा मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। उपरि-ग्रैवेयक पर्यंत मनुष्ययुत गुणतीस ही का है। उदय उपरि-ग्रैवेयक पर्यंत इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है। सासादन विषैं बंध सहस्रारपर्यंत तिर्यंच वा मनुष्ययुत गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योतयुत तीस का है। उपरि-ग्रैवेयक पर्यंत मनुष्ययुत गुणतीस ही का है। उदय उपरि-ग्रैवेयक पर्यंत इकईस, पचीस, गुणतीस का है। मिश्र विषैं उपरि-ग्रैवेयक पर्यंत बंध मनुष्ययुत गुणतीस का ; उदय गुणतीस ही का है। असंयत विषैं भवनत्रिक कैं उदय गुणतीस ही का, सौधर्मादिक अनुत्तर-विमान पर्यंत इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का है।

बहुरि अठ्यासी का सत्त्व देव-द्विक की उद्वेलना भएं एकेन्द्री, विकलत्रय कैं होइ वा ते मरि जहां उपजैं, तहां भी होय। सो तिर्यंच-मनुष्य मिथ्यादृष्टि ही कैं होइ। तहां बंध तेईस, पचीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। उदय तिर्यंचनि कैं इकईस, चौबीस, पचीस, छबीस, सताईस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का है। मनुष्यनि कैं इकईस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस का है। यहु अठ्यासी का सत्त्व पंचेन्द्री-तिर्यंच ; मनुष्य-मिथ्यादृष्टी शरीर-पर्याप्तिकाल विषैं नरकगतियुत अठाईस का बंध करै वा तिर्यंच, मनुष्यगति सहित गुणतीस वा तिर्यंच-उद्योत सहित तीस का बंध करै, तब पाइए। अथवा एकेन्द्री, विकलत्रय, नारक-चतुष्क की उद्वेलना करि मरि पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्य होइ, शरीरपर्याप्ति-काल विषैं देव-चतुष्क कौं बांधै, तब पाइए है।

बहुरि चौरासी का सत्त्व नारक-चतुष्क की उद्वेलना भएं एकेन्द्री, विकलेन्द्री कैं पाइए वा ते मरि मनुष्य-तिर्यंच विषैं जहां उपजैं, तहां मिथ्यादृष्टि विषैं ही पाइए, सो तहां बंध वा उदय अठ्यासी का सत्त्व विषैं कह्या, तैसैं ही जानना। विशेष इतना– इहां अठाईस का बंध नाहीं है। यहु चौरासी का सत्त्व शरीरपर्याप्ति-कालादिक विषैं तिर्यंच-मनुष्यगति का बंध भए हो है। पंचेन्द्री-तिर्यंच वा मनुष्य कैं देव, नरक का बंध भए ऐसा सत्त्व न हो है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि बियासी का सत्त्व मनुष्यद्विक की उद्वेलना भएं तेज, वातकायिक कैं होइ वा ते मरि तिर्यंच विषैं जहां उपजै तहां होइ, तहां बंध तेईस, पचीस, छबीस, गुणतीस, तीस का ; उदय इकईस, चौबीस, पचीस, छबीस का। इहां तेज, वातकायिक विषैं आतप वा उद्योत का उदय नाहीं ; तातैं पचीस ही का उदय है। छबीस का नाहीं।

बहुरि असी का सत्त्व क्षपकश्रेणीवाला अनिवृत्तिकरणादिक कैं वा तीर्थंकर-केवली कैं हो है। तहां अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय विषैं बंध एक का, ऊपरि बंध का अभाव ; उदय क्षीणकषाय पर्यंत तीस का, सयोगी विषैं स्वस्थान-केवली कैं तीस ही का, समुद्घात-केवली कैं इकईस, सत्ताईस, गुणतीस, तीस, इकतीस का, अयोगी विषैं नव का है।

बहुरि गुण्यासी का सत्त्व तीर्थंकर-रहित है। अठहत्तरि का तीर्थंकर-सहित, आहारक-रहित है। सतहत्तरि का तीर्थंकर-आहारकद्विक रहित है। सो इन तीनूं विषैं बंध, उदय, सत्त्व क्षपक-अनिवृत्तिकरण तैं क्षीणकषाय पर्यंत तौ असी का विषैं कह्या, तैसैं ही जानना। सयोग विषैं गुण्यासी वा सतहत्तरि का सत्त्व विषैं तौ स्वस्थान-केवली कैं तीस का, समुद्घातकेवली कैं बीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस का उदय है। अठहत्तरि का सत्त्व विषैं, असी का सत्त्व विषैं कह्या, तैसैं जानना। अयोगी विषैं गुण्यासी, सतहत्तरि का सत्त्व विषैं, आठ का उदय ; अठहत्तरि का सत्त्व विषैं नव का उदय जानना। बहुरि दश का, नव का, सत्त्व अयोगी कैं चरम-समय-तीर्थसहित वा रहित है। तहां बंध का अभाव है। सत्त्व क्रम तैं नव का— आठ का जानना ॥ ७५९ ॥

अैसैं सत्त्वस्थान, आधार विषैं बंध उदय आधेयकरि व्याख्यान कीया।

आगैं बंध, उदय दोय तौ आधार अर सत्त्वस्थान एक आधेय, ताकौ नव-गाथानि करि कहैं हैं। इहां इतने का बंध, इतने का उदय होतैं, सत्त्व कितने-कितने का पाइए, अैसा कथन कहिए है—

तेवीसबंधगे इगिवीसणवुदयेसु आदिमचउक्के।
बाणउदिणउदिअडचउ, बासीदी सत्तठाणाणि॥ ७६० ॥

त्रयोविंशबंधके एकविंशनवोदयेषु आदिमचतुष्के।
द्वानवतिनवत्यष्टचतुर्द्व्यशीतिः सत्त्वस्थानानि ॥ ७६० ॥

टीका – तेवीस का बंध विषैं इकवीस का आदि नव उदयस्थान हैं। तिनविषैं आदि के च्यारि उदयस्थाननि विषैं तौ बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी, बियासी के पंच-सत्त्वस्थान हैं ॥७६० ॥

तेणुवरिमपंचुदये, ते चेवंसा विवज्ज बासीदिं।
एवं पणछव्वीसे, अडवीसे एक्कवीसुदये॥ ७६१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तेनोपरिमपंचोदये, ते चैवांशा विवर्ज्य द्व्यशीतिं।
एवं पंचषड्विंशे, अष्टविंशेन एकविंशोदये ॥ ७६१ ॥

टीका – तीहिं तेवीस का बंध सहित ऊपरि के सत्ताईसकानैं आदि देकरि पंच उदय-स्थाननि विषैं तिन पंचनि मेंस्यों बियासी का बिना च्यारि ही सत्त्वस्थान हैं। बहुरि पचीस का वा छबीस का बंध सहित उदयस्थान तेवीस का सहितवत् हैं। तिनविषैं सत्त्व भी तेवीस का सहित विषैं, जैसैं कह्या तैसैं ही हैं ॥ ७६१ ॥

बहुरि अठाईस का बंध सहित इकवीस का उदय विषैं कहै हैं–

बाणउदिणउदिसत्तं, एवं पणुवीसयादिपंचुदये।
पणसगवीसे णउदी, विगुव्वणे अत्थि णाहारे ॥ ७६२ ॥

द्वानवतिनवतिसत्त्वमेवं पंचविंशतिकादिपंचकोदये।
पंचसप्तविंशे नवतिर्विगूर्वणेऽस्ति नाहारे ॥ ७६२ ॥

टीका – बाणवै, निवै का सत्त्व है, अैसैं ही अठाईस का बंध सहित पचीस का आदि पांच, उदय विषैं सत्त्व है। इतना विशेष– जो पचीस, सताईस का उदय विषैं जो निवै का सत्त्व है, सो वैक्रियिक अपेक्षा है, आहारक अपेक्षा नाहीं है ॥ ७६२ ॥

तेण णभिगितीसुदये, बाणउदिचउक्कमेक्कतीसुदये।
णवरि ण इगिणउदिपदं, णववीसिगिवीसबंधुदये ॥ ७६३ ॥

तेन नभ एकत्रिंशोदये, द्वानवतिचतुष्कमेकत्रिंशोदये।
नवरि न एकनवतिपदं, नवविंशैकविंशबंधोदययोः ॥ ७६३ ॥

टीका – तीहिं अठाईस का बंध सहित तीस, इकतीस, का उदय होतैं बाणवै आदि च्यारि का सत्त्व है। इतना विशेष– जो इकतीस का उदय होतैं इक्याणवै का सत्त्व नाहीं है ॥ ७६३ ॥

बहुरि गुणतीस का बंध सहित इकईस का उदय विषैं कहै हैं–

तेणवदिसत्तसत्तं, एवं पणछक्कवीसठाणुदये।
चउवीसे वाणउदी, णउदिचउक्कं च सत्तपदं ॥ ७६४ ॥

त्रिनवतिसप्तसत्त्व, मेवं, पंचषट्कविंशस्थानोदये।
चतुर्विंशे द्वानवति, नवतिचतुष्कं च सत्त्वपदं ॥ ७६४ ॥

टीका – तरेणवै आदि सात का सत्त्व है। अैसैं गुणतीस का बंध सहित पचीस, छबीस का उदय होतैं भी सत्त्व है। गुणतीस का बंधसहित चौबीस का उदय विषैं बाणवै अर निवै आदि च्यारि का सत्त्व है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सगवीसचउक्कुदये, तेणउदीछक्कमेवमिगितीसे।
तिगिणउदी ण हि तीसे, इगिपणसगअट्ठणवयवीसुदये ॥ ७६५ ॥

सप्तविंशचतुष्कोदये, त्रिनवतिषट्कमेवमेकत्रिंशे।
त्रयेकनवतिर्नहित्रिंशे, एक पंचसप्ताष्टनवकविंशोदये ॥ ७६५ ॥

टीका – गुणतीस का बंध सहित सत्ताईस आदि च्यारि का उदय होतैं, तरेणवै आदि छह का सत्त्व है। ऐसै ही इकतीस का उदय विषैं भी है। विशेष इतना– इहां तरेणवै, इक्याणवै का सत्त्व नाहीं है ॥ ७६५ ॥

बहुरि तीस का बंध सहित इकईस, पंचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस का उदय होतैं कहै हैं–

तेणउदिछक्कसत्तं, इगिपणवीसेसु अत्थि बासीदी।
तेण छचउवीसुदये, बाणउदी णउदिचउसत्तं ॥ ७६६ ॥

त्रिनवतिषट्कसत्त्व, मेकपंचविंशयोरस्ति द्व्यशीतिः।
तेन षट्चतुर्विंशोदये, द्वानवतिः नवतिचतुष्कं सत्त्वं ॥ ७६६ ॥

टीका – तरेणवै आदि छह का सत्त्व हैं। इतना विशेष–बियासी का सत्त्व इकईस, पचीस का उदय होतैं ही हो है, और उदय होतैं न हो है। बहुरि तीहिं तीस का बंध सहित चौबीस, छब्बीस का उदय होतैं, बाणवै वा निवै आदि च्यारि का सत्त्व है ॥ ७६६ ॥

एवं खिगितीसे ण हि, बासीदी एक्कतीसबंधेण।
तीसुदये तेणउदी, सत्तपदं एक्कमेव हवे ॥ ७६७ ॥

एवं खेकत्रिंशे न हि द्व्यशीतिरेकत्रिंशबंधेन।
त्रिंशोदये त्रिनवतिः, सत्त्वपदमेकमेव भवेत् ॥ ७६७ ॥

टीका – तीस का बंध सहित, तीस, इकतीस का उदय होतैं, सत्त्व चौबीस का, उदय विषैं कह्या तैसै ही है। विशेष इतना– इहां बियासी का सत्त्व नाहीं है। बहुरि इकतीस का बंध सहित तीस का उदय होतैं, सत्त्व तरेणवै का एक ही है ॥ ७६७ ॥

इगिबंधट्ठाणेण दु, तीसट्ठाणोदये णिरुंधम्मि।
पढमचऊसीदिचऊ, सत्तट्ठाणाणि णामस्स ॥ ७६८ ॥

एकबंधस्थानेन तु, त्रिंशस्थानोदये निरोधे।
प्रथमचतुष्काशीति, चतुष्कं सत्त्वस्थानानि नाम्नः ॥ ७६८ ॥

टीका – एक का बंध सहित तीस ही का उदय है, तहां सत्त्व पहिलैं तरेणवै आदि च्यारि का वा असी आदि च्यारि का सत्त्वस्थान नामकर्म के हैं ॥ ७६८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आगैं बंध-सत्त्व आधार विषैं उदयस्थान कौं आधेयकरि छह गाथानि विषैं कहैं हैं, तहां इतने का बंध, इतने का सत्त्व होतैं, उदय इतने-इतने का होइ, ऐसा कथन कहिए है–

तेवीसबंधठाणे, दुखणउदडचदुरसीदिसत्तपदे।

इगिवीसादिणउदओ, बासीदे एक्कवीसचऊ ॥ ७६९ ॥

त्रयोविंशबंधस्थाने, द्विखनवत्यष्टचतुरशीतिसत्त्वपदे।

एकविंशादिनवोदयो, द्वयशीतौ एकविंशचतुष्कं ॥ ७६९ ॥

टीका – तेवीस का बंधस्थान सहित बाणवै, निवै, अठ्यासी, चौरासी का सत्त्व होतैं इकईस का आदि नव उदय-स्थान हैं। तेवीस का बंध सहित बियासी का सत्त्व विषैं इकईस का आदि च्यारि उदयस्थान हैं ॥ ७६९ ॥

एवं पणछव्वीसे, अडवीसे बंधगे दुणउदंसे।

इगिवीसादिणवुदया, चउवीसट्ठाणपरिहीणा ॥ ७७० ॥

एवं पंचषड्विंशे, अष्टविंशे बंधके तु द्वानवत्यंशे।

एकविंशादिनवोदयाश्चतुर्विंशस्थानपरिहीनाः ॥ ७७० ॥

टीका – पचीस, छबीस का बंध सहित भी सत्त्वस्थान तेवीस का सहितवत् है। तहां उदयस्थान भी तेवीस का सहित विषैं, जैसें कहे-तैसें ही हैं। बहुरि अठाईस का बंधसहित बाणवै का सत्त्व होतैं, इकईसकानैं आदि नव, चौबीस का बिना उदय-स्थान हैं ॥ ७७० ॥

इगिणउदीए तीसं, उदओ णउदीए तिरियसण्णि वा।

अडसीदीए तीसदु, णववीसे बंधगे तिणउदीए ॥ ७७१ ॥

एकनवत्यां त्रिंश, उदयो नवत्यां तिर्यक्संज्ञी वा।

अष्टाशीतौ त्रिंशद्विकं, नवविंशे बंधके त्रिनवत्यां ॥ ७७१ ॥

टीका – अठाईस का बंध सहित इक्याणवै का सत्त्व होतैं, उदय तीस का है। अठाईस का बंध सहित निवै का सत्त्व होतैं, संज्ञी-तिर्यंच विषैं कहे ऐसैं इकवीस, छबीस, अठाईस, गुणतीस, तीस, इकतीस के उदयस्थान हैं। बहुरि अठाईस का बंध, अठ्यासी का सत्त्व होतैं, इकतीस का उदय है ॥ ७७१ ॥

बहुरि गुणतीस का बंध सहित तरेणवै का सत्त्व होतैं कहै हैं–

इगिवीसादट्ठुदओ, चउवीसूणो दुणउदिणउदितिये ॥

इगिवीसणविगिणउदे, णिरयं व छवीसतीसधिया ॥ ७७२ ॥

एकविंशादष्टौदयश्चतुर्विंशोनो द्विनवतिनवतित्रये।

एकविंशनवैकनवत्यां, निरयो व षड्विंशत्रिंशाधिकाः ॥ ७७२ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका - इकवीस का आदि आठ, चौबीस का बिना उदयस्थान हैं। बहुरि गुणतीस का बंध बाणवै का वा निवै आदि तीन का सत्त्व होतैं, इकईस का आदि नव का उदय है। बहुरि गुणतीस का बंध इक्याणवै का सत्त्व होतैं नरकगति विषैं कहे अैसै इकईस, पचीस, सत्ताईस, अठाईस, गुणतीस के अर छबीस, तीस के उदय-स्थान हैं ॥ ७७२ ॥

बासीदे इगिचउपण, छव्वीसा तीसबंधतिगिणउदी।
सुरमिव दुणउदिणउदी, चउसुदओ ऊणतीसं वा॥ ७७३ ॥

द्वयशीत्यामेकचतु ; पंच, षड्विंशः त्रिंशबंधे त्रयेकनवतौ।
सुर इव द्विनवतिनवति, चतुर्षूदय एकोनत्रिंशं वा॥ ७७३ ॥

टीका - गुणतीस का बंध सहित बियासी का सत्त्व विषैं इकईस, चौबीस, पचीस, छबीस के उदयस्थान हैं। बहुरि तीस का बंध सहित तरेणवै, इक्याणवै का सत्त्व होतैं, देवगति विषैं कहे— अैसै पांच उदयस्थान हैं। बहुरि तीस का बंध सहित बाणवै का वा निवै आदि च्यारि का सत्त्व होतैं, गुणतीस का बंध संहित विषैं कहे, तैसें ही नव उदय-स्थान हैं। बहुरि तीस का बंध बियासी का सत्त्व होतैं गुणतीस का बंध सहितवत् च्यारि उदयस्थान हैं ॥ ७७३ ॥

इगितीसबंधठाणे, तेणउदे तीसमेव उदयपदं।
इगिबंध तिणउदिचऊ, सीदिचउक्केवि तीसुदओ॥ ७७४ ॥

एकत्रिंशबंधस्थाने त्रिनवत्यां त्रिंशमेव उदयपदं।
एकबंधे त्रिनवतिचतुष्के अशीतिचतुष्केऽपि त्रिंशोदयः॥ ७७४ ॥

टीका - इकतीस का बंध-स्थान सहित तरेणवै का सत्त्व होतैं तीस का ही एक उदय-स्थान है। बहुरि एक का बंध सहित तरेणवै आदि च्यारि का वा असी आदि च्यारि का सप्त विषैं भी उदयस्थान तीस ही का है। आगैं बंध का अभाव है ; तातैं दोय स्थान आधार, एक स्थान आधेय संभवै नाहीं ॥ ७७४ ॥

आगैं उदय-सत्त्व स्थान आधार, बंधस्थान आधेय अैसा दश गाथानि करि कहैं हैं। तहां इतने का उदय, इतने का सत्त्व होतैं, किसी कैं इतने का किसी के इतने का, बंध पाइए ऐसा कथन कहिए है—

इगिवीसट्ठाणुदये, तिगिणउदे णवयवीसदुगबंधो।
तेण दुखणउदिसत्ते, आदिमछक्कं हवे बंधो॥ ७७५ ॥

एकविंशस्थानोदये, त्रयेकनवत्यां नवविंशद्विकबंधः।
तेन द्विखनवतिसत्त्वे, आदिमषट्कं भवेद् बंधः॥ ७७५ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – इकईस का उदय सहित तरेणवै, इक्याणवै का सत्त्व विषैं गुणतीस, तीस के दोय बंधस्थान हैं। बहुरि इकईस का उदय बाणवै, निवै का सत्त्व होतैं आदि के छह बंधस्थान हैं ॥७७५ ॥

एवमडसीदितिदए, ण हि अडवीसं पुणोवि चउवीसे।
दुखणउदडसीदितिए, सत्ते पुव्वं व बंधपदं ॥ ७७६ ॥

एवमष्टाशीतित्रितये, न ह्यष्टविंशं पुनरपि चतुर्विंशे।
द्विखनवत्यष्टाशीतित्रये, सत्त्वे पूर्वं व बंधपदं ॥ ७७६ ॥

टीका – बहुरि इकईस का उदय सहित अठ्यासी आदि तीन का सत्त्व होतैं बंधस्थान आदि के छह तिनविषैं अठाईस का बिना पांच है। बहुरि चौबीस का उदय सहित बाणवै, निवै का, अठ्यासी आदि तीन का सत्त्व होतैं तेई पांच बंधस्थान हैं ॥ ७७६ ॥

पणवीसे तिगिणउदे, एगुणतीसं दुगं दुणउदीए।
आदिमछक्कं बंधो, णउदिचउक्केवि णडवीसं ॥ ७७७ ॥

पंचविंशे त्रयेकनवतौ, एकोनत्रिंशद्विकं द्विनवत्यां।
आदिमषट्कं बंधो, नवतिचतुष्केऽपि नाष्टाविंशं ॥ ७७७ ॥

टीका – पचीस का उदय सहित तरेणवै, इक्याणवे का सत्त्व विषैं गुणतीस, तीस के दोय बंधस्थान हैं। बहुरि पचीस का उदय, बाणवै का सत्त्व विषैं आदि के छह बंधस्थान हैं। बहुरि पचीस का उदय, निवै आदि च्यारि का सत्त्व होतैं आदि कै छह विषैं अठाईस का बिना पंच बंधस्थान हैं ॥ ७७७ ॥

छव्वीसे तिगिणउदे, उणतीसं बंध दुगखणउदीए।
आदिमछक्कं एवं, अडसीदितिए ण अडवीसं ॥ ७७८ ॥

षड्विंशे त्रयेकनवतौ, एकोनत्रिंशं बंधो द्विकखनवत्यां।
आदिमषट्कमेव मष्टाशीतित्रये नाष्टाविंशं ॥ ७७८ ॥

टीका – बहुरि छबीस का उदय सहित तरेणवै, इक्याणवै का सत्त्व होतैं गुणतीस ही का बंधस्थान है। बहुरि छबीस का उदय ; बाणवै, निवै का सत्त्व होतैं आदि के छह बंधस्थान हैं। बहुरि छबीस का उदय ; अठ्यासी आदि तीन का सत्त्व होतैं आदि के छह विषैं, अठाईस का बिना पंच बंधस्थान हैं ॥ ७७८ ॥

सगवीसे तिगिणउदे, णववीसदुबंधयं दुणउदीए।
आदिमछण्णउदितिए, एयं अडवीसयं णत्थि ॥ ७७९ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सप्तविंशे त्रयेकनवतौ, नवविंशद्विबंधको द्विनवत्यां ।
आदिमषण्णवतित्रये, एवमष्टाविंशकं नास्ति ॥ ७७९ ॥

टीका – सत्ताईस का उदय सहित तरेणवै, इक्याणवै का सत्त्व विषैं गुणतीस का आदि दोय बंधस्थान हैं । बहुरि सत्ताईस का उदय, बाणवै का सत्त्व होतैं आदि कै छह बंध-स्थान हैं । बहुरि सत्ताईस का उदय, निवै आदि तीन का सत्त्व होतैं, आदि के छह विषैं अठाईस का बिना पंच बंधस्थान हैं ॥ ७७९ ॥

अडवीसे तिगिणउदे, उणतीसदु दुजुदणउदिणउदितिये ।
बंधो सगवीसं वा, णउदीए अत्थि णडवीसं ॥ ७८० ॥

अष्टाविंशे त्रयेकनवत्यामेकोनत्रिंशद्विकं द्वियुतनवतिनवतित्रये ।
बंधः सप्तविंशं वा, नवतौ अस्ति नाष्टाविंशं ॥ ७८० ॥

टीका – अठाईस का उदय सहित तरेणवै, इक्याणवै का सत्त्व होतैं गुणतीस, तीस के दोय बंधस्थान हैं । बहुरि अठाईस का उदय, बाणवै का सत्त्व होतैं वा निवै आदि तीन का सत्त्व होतैं सताईस का उदय सहित विषैं, जैसैं कहे तैसैं ही बंधस्थान हैं । विशेष इतना–निवै का सत्त्व होतैं अठाईस का बंध नाहीं है ॥ ७८० ॥

अडवीसमिवुणतीसे, तीसे तेणउदिसत्तगे बंधो ।
णववीसेक्कत्तीसं, इगिणउदी अट्ठवीसदुगं ॥ ७८१ ॥

अष्टाविंश इवैकोनत्रिंशे, त्रिंशेत्रिनवतिसत्त्वके बंधः ।
नवविंशैकत्रिंशमेकनवत्यामष्टविंशद्विकं ॥ ७८१ ॥

टीका – गुणतीस का उदय सहित तरेणवै, इक्याणवे का सत्त्व विषैं वा बाणवै, निवै का सत्त्व विषैं वा अठ्यासी, चौरासी का सत्त्व विषैं, जैसें अठाईस का उदय सहित विषैं कहे, तैसें ही बंधस्थान हैं । बहुरि तीस का उदय सहित तरेणवै का सत्त्व विषैं गुणतीस-इकतीस के दोय बंध-स्थान हैं । बहुरि तीस का उदय इक्याणवै का सत्त्व विषैं, नरक-गमन कौं सन्मुख तीर्थंकर-सत्त्ववाला मिथ्यादृष्टी-मनुष्य कैं अठाईस वा गुणतीस का बंध है ॥ ७८१ ॥

तेण दुणउदे णउदे, अडसीदे बंधमादिमं छक्कं ।
चुलसीदेवि य एवं, णवरि ण अडवीसबंधपदं ॥ ७८२ ॥

तेन द्विनवतौ नवतौ, अष्टाशीतौ बंध आदिमषट्कं ।
चतुरशीत्यामपि च एवं, नवरि नाष्टाविंशबंधपदं ॥ ७८२ ॥

टीका – तीस का उदय सहित बाणवै, निवै, अठ्यासी का सत्त्व विषैं आदि के छह बंधस्थान हैं । बहुरि तीस का उदय, चौरासी का सत्त्व विषैं भी तेई छह, तिन विषैं अठाईस का नाहीं । अैसैं पंच बंधस्थान हैं ॥ ७८२ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तीसुदयं विगितीसे, सजोग्गबाणउदिणउदितियसत्ते।
उवसंतचउक्कुदये, सत्ते बंधस्स ण वियारो॥ ७८३॥

त्रिंशोदयं वैकत्रिंशे, स्वयोग्यद्वानवतिनवतित्रयसत्त्वे।
उपशांतचतुष्कोदये, सत्त्वे बंधस्य न विचारः॥ ७८३॥

टीका — इकतीस का उदय सहित अपने योग्य बाणवै, निवै, अठ्यासी का सत्त्व विषैं वा चौरासी का सत्त्व विषैं तीस का उदय सहित विषैं, जैसें कहे तैसें आदि के छह वा अठाईस के बिना पंच बंधस्थान हैं। बहुरि उपशांतकषायादिक च्यारि-गुणस्थानकनि विषैं उदयस्थान हैं। तिन विषैं बंधस्थान का विचार नाहीं; जातैं तिन विषैं बंध का अभाव है, उदय-सत्त्व ही हैं। तहां उपशांत-कषाय विषैं उदय तीस का, सत्त्व तरेणवै आदि च्यारि का है। क्षीणकषाय विषैं उदय तीस का, सत्त्व असी आदि च्यारि का है। सयोगी विषैं उदय तीस का वा इकतीस का, सत्त्व असी आदि च्यारि का है। अयोगी विषैं उदय नव का वा आठ का; सत्त्व असी आदि च्यारिका वा दश, नव का है॥ ७८३॥

णामस्स य बंधादिसु, दुतिसंजोगा परूविदा एवं।
सुदवणवसंतगुणगण, सायरचंदेण सम्मदिणा॥ ७८४॥

नाम्नश्च बंधादिषु, द्वित्रिसंयोगाः प्ररूपिता एवं।
श्रुतवनवसंतगुणगण सागरचंद्रेण सन्मतिना॥ ७८४॥

टीका — ऐसैं नामकर्म के बंध, उदय, सत्त्व-स्थाननि विषैं द्विसंयोग वा त्रिसंयोग प्ररूपण किए हैं। कौंन कीए हैं ? श्रुत जो जैन-सिद्धांत सोई भया वन, ताके प्रफुल्लित करने कौं वसंत-ऋतु समान अर गुणां का गण समूह, सोई भया सागर-समुद्र, ताके बधावने कूं चंद्रमा समान— ऐसा जु भलेज्ञान का धारक सन्मति-वर्धमान स्वामी, तीहिं प्ररूपणा कीए हैं। इहां द्विसंयोग, त्रिसंयोग विषैं जे बंध, उदय, सत्त्वस्थान कहे हैं, तिनका जुदा-जुदा पहिलैं कथन गुणस्थानादि विषैं किया है, ताकौं यादिकरि यथासंभव विचारने॥ ७८४॥

आस्रवाधिकारः॥ ६॥

आस्रव भाव-अभाव तैं, भए स्वभाव-स्वरूप।
नमौं सहज आनंदमय, अचलित-अमल-अनूप॥ ६॥

आगैं प्रत्यय जु है कर्म आवने कौं कारण— ऐसा आस्रव, ताका अधिकार कौं प्रारंभै हैं। तहां प्रथम ही निर्विघ्नपनैं समाप्त होने के अर्थि, अपने इष्ट-गुरु कौं नमस्कार करैं हैं—

णमिऊण अभयणंदिं, सुदसायरपारगिंदणंदिगुरुं।
वरवीरणंदिणाहं, पयडीणं पच्चयं वोच्छं॥ ७८५॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नत्वाभयनंदिं, श्रुतसागरपारगेंद्रनंदिगुरुं।
वरवीरनंदिनाथं, प्रकृतीनां प्रत्ययं वक्ष्ये॥ ७८५॥

टीका – 'अभयनंदी' नामा मुनीश्वर, बहुशास्त्र समुद्र का पारगामी 'इंद्रनंदि' नामा गुरु, बहुरि उत्कृष्ट 'वीरनंदी' नामा स्वामी– इनि अपने गुरुनि कौं नमस्कार करि, कर्म-प्रकृतिनि का प्रत्यय कहिए कारण– अैसा आस्रव, ताकौं कहोंगा॥ ७८५॥

मिच्छत्तं अविरमणं, कसायजोगा य आसवा होंति।
पण बारस पणुवीसं, पण्णरसा होंति तब्भेया॥ ७८६॥

मिथ्यात्वमविरमणं, कषाययोगौ चास्रवा भवंति।
पंच द्वादश पंचविंशं, पंचदश भवंति तद्भेदाः॥ ७८६॥

टीका – मिथ्यात्व, अविरत, कषाय, योग– ए च्यारि मूल-आस्रव हैं। आस्रवंति कहिए कार्माण-स्कंध हैं ते कर्मरूपपने कौं प्राप्त हो हैं इनकरि ; तातैं इनकौं आस्रव कहिए। तिनके भेद क्रम तैं पंच, बारह, पचीस, पंद्रह जानने। तहां एकांत, विनय, संशय, विपरीत, अज्ञान– ऐ तौ पांच-मिथ्यात्व हैं। पांच इंद्री, छठा मन का वशीभूतपना नाहीं ; पंच स्थावर, छठे त्रस की दया नाहीं– अैसैं बारह-अविरत हैं। अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन, क्रोध-मान-माया-लोभ– ए सोलह-कषाय अर हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुष, स्त्री, नपुंसक वेद– ए नव नोकषाय– अैसैं पचीस-कषाय हैं। सत्य, असत्य, उभय, अनुभयरूप च्यारि मनोयोग, सत्य, असत्य, उभय, अनुभयरूप च्यारि वचन-योग, औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, कार्माण रूप सात-काययोग– अैसैं पंद्रह योग हैं।

या प्रकार सत्तावन उत्तर-प्रत्यय हैं॥ ७८६॥

आगैं मूल-प्रत्यय कौं गुणस्थाननि विषैं कहै हैं–

चदुपच्चइगो बंधो, पढमे णंतरतिगे तिपच्चइगो।
मिस्सगबिदियं उवरिम, दुगं च देसेक्कदेसम्मि॥ ७८७॥

चतुःप्रत्ययिको बंधः, प्रथमेऽनंतरत्रिके त्रिप्रत्ययकः।
मिश्रकद्वितीय उपरिम, द्विकं च देशैकदेशे॥ ७८७॥

टीका – मिथ्यादृष्टि विषैं बंध च्यार्यो प्रत्यय तैं हैं। सासादनादि तीन विषैं मिथ्यात्व बिना तीन-प्रत्यय तैं है। देश कहिए लेश-किंचित् एक जु है असंयम, ताकौं दिशति कहिए परिहरै-त्यागै अैसा देशैकदेश कहिए देश-संयत, तिसविषैं भी तीन-प्रत्यय ही तैं बंध है। इतना विशेष–तहां अविरत है सो विरति करि मिश्ररूप है॥ ७८७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उवरिल्लपंचये पुण, दुपच्चया जोगपच्चओ तिण्हं ।
सामण्णपच्चया खलु, अट्ठण्हं होंति कम्माणं ॥ ७८८ ॥

उपरिमपंचके पुनर्द्विप्रत्ययौ योगप्रत्ययस्त्रयाणां ।
सामान्यप्रत्ययाः खलु, अष्टानां भवंति कर्मणां ॥ ७८८ ॥

टीका – बहुरि ऊपरि के पंच गुणस्थाननि विषैं दोय ही प्रत्यय हैं, ते योग अर कषाय हैं। बहुरि उपशांतकषायादि तीन विषैं योग-प्रत्यय एक ही है ।

ऐसैं सामान्य-प्रत्यय आठ कर्मनि के कारण, ते गुणस्थाननि विषैं जानने ॥ ७८ ॥

मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
४	३	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	०

आगैं उत्तर-प्रत्ययनि कौं गुणस्थाननि विषैं कहैं हैं–

पणवण्णा पण्णासा, तिदाल छादाल सत्ततीसा य ।
चदुवीसा बावीसा, बावीसमपुव्वकरणोत्ति ॥ ७८९ ॥
थूले सोलसपहुदी, एगूणं जाव होदि दसठाणं ।
सुहुमादिसु दस णवयं, णवयं जोगिम्मि सत्तेव ॥ ७९० ॥

पंचपंचाशत् पंचाशत्, त्रिचत्वारिंशत् षट्चत्वारिंशत्सप्तत्रिंशश्च ।
चतुर्विंशतिर्द्वाविंशतिः, द्वाविंशमपूर्वकरण इति ॥ ७८९ ॥
स्थूले षोडशप्रभृतय, एकोना यावद्भवति दशस्थानं ।
सूक्ष्मादिषु दश नवकं, नवकं योगिनि सप्तैव ॥ ७९० ॥

टीका– उत्तर-प्रत्यय गुणस्थाननि विषैं कहिए है । तहां मिथ्यादृष्टि विषैं आहारक-आहारकमिश्र नाहीं ; तातैं पचावन-प्रत्यय हैं । सासादन विषैं पांच-मिथ्यात्व नाहीं ; तातैं पचास हैं । मिश्र विषैं औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्माण योग, अनंतानुबंधी-चतुष्क नाहीं ; तातैं तियालीस हैं । असंयत विषैं जे मिश्र विषैं तीन-योग घटाए थे, तिनके मिलने तैं छियालीस हैं । देश-संयत विषैं ते तीन-योग अर वैक्रियिककाय-योग अर त्रस-हिंसारूप अविरति अर प्रत्याख्यान च्यारि कषाय नाहीं ; तातैं सैंतीस हैं । प्रमत्त विषैं अवशेष ग्यारह-अविरति अर अप्रत्याख्यान-चतुष्क– ए पंद्रह नाहीं अर आहारकद्विक मिलैं ; तातैं चौबीस हैं ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अप्रमत्त आदि दोय विषैं आहारकद्विक नाहीं ; तातैं बावीस हैं। स्थूल जो अनिवृत्तिकरण तीहि विषैं छह हास्यादिक नोकषाय नाहीं तब सोलह, नपुंसक-वेद नाहीं तब पंद्रह, स्त्रीवेद नाहीं तब चौदह, पुरुषवेद नाहीं तब तेरह, संज्वलन-क्रोध नाहीं तब बारह, मान नाहीं तब ग्यारह, माया नाहीं तब दश हैं। सूक्ष्मसांपराय विषैं वादर-लोभ नाहीं सूक्ष्म-लोभ है ; तातैं इहां भी दश ही हैं। उपशांतकषाय, क्षीणकषाय विषैं सो सूक्ष्मलोभ भी नाहीं ; तातैं नव-नव हैं। सयोगी विषैं सत्य-अनुभय-मन, सत्य-अनुभय-वचन, औदारिक, औदारिकमिश्र, कार्माणयोग— ए सात-प्रत्यय हैं। अयोगी विषैं शून्य-प्रत्यय का अभाव है ॥ ७८९-७९० ॥

प्रत्ययव्युच्छत्ति	मि ५	म ४	मि ०	अ ९	दे १५	प्र २	अ ०	अ ६	अ १	१	१	१	१	१	१	सू १	उ ०	क्षी ४	स ७	अ ०
प्रत्ययोदय	५५	५०	४३	४६	३७	२४	२२	२२	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	९	७	०
प्रत्ययानुदय	२	७	१४	११	२०	३३	३५	३५	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४७	४८	४८	५०	५७

आगैं प्रत्ययनि की व्युच्छित्ति वा अनुदय का वर्णन रूप छह-गाथा केशव-ब्रह्मचारीकरि कहिए है—

पण चदु सुण्णं णवयं, पण्णारस दोण्णि सुण्ण छक्कं च।
एक्केक्कं दस जाव य, एक्कं सुण्णं च चारि सग सुण्णं॥ १ ॥
दोण्णि य सत्त य चोद्दस, णुदयेवि एयार वीस तेत्तीसं।
पणतीस दुसिगिदालं, सत्तेतालद्दुदाल दुसु पण्णं॥ २ ॥

पंच चतुष्कं शून्यं नवकं, पंचदश द्वे शून्यं षट्कं च।
एकैकं दश यावच्च, एकं शून्यं च चत्वारि सप्त शून्यं॥ १ ॥
द्वौ च सप्त च चतुर्दशा, नुदयेऽपि एकादश विंशं त्रयस्त्रिंशत्।
पंचत्रिंशत् द्वयोरेकचत्वारिंशत्सप्तचत्वारिंशदष्टचत्वारिंशद् द्वयोः पंचाशत्॥ २ ॥

टीका – मिथ्यादृष्ट्यादि गुणस्थाननि विषैं क्रम तैं पांच, च्यारि, शून्य, नव, पंद्रह, दोय, शून्य, छह ; पीछैं दश आस्रव रहैं, तहां पर्यंत एक-एक। बहुरि एक, शून्य, च्यारि, सात, शून्य रूप आस्रवनि की व्युच्छित्ति है। बहुरि तिन गुणस्थाननि विषैं अनुदय जो आस्रव का अभाव, सो क्रम तैं दोय, सात, चौदह, ग्यारह, बीस, तैंतीस, पैंतीस, पैंतीस, इकतालीस, सैंतालीस, अठतालीस, अठतालीस, पचास का जानना ॥ १-२ ॥

ते व्युच्छित्ति कौन सो कहै हैं—

मिच्छे पणमिच्छत्तं, पढमकसायं तु सासणे मिस्से।
सुण्णं-अविरदसम्मे, बिदियकसायं विगुव्वदुग कम्मं॥ ३ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ओरालमिस्स तसवह, णवयं देसम्मि अविरदेक्कारा।
तदियकसायं पण्णर, पमत्तविरदम्मि हारदुगछेदो ॥ ४ ॥
सुण्णं पमादरहिदेऽपुव्वे छण्णोकसायवोच्छेदो।
अणियट्टिम्मि य कमसो, एक्केक्कं वेदतियकसायतियं ॥ ५ ॥
सुहुमे सुहुमो लोहो, सुण्णं उवसंतगेसु खीणेसु।
अलीयुभयवयणमणचउ, जोगिम्मि य सुणह वोच्छामि ॥ ६ ॥
सच्चाणुभयं वयणं, मणं च ओरालकायजोगं च।
ओरालमिस्स कम्मं, उवयारेणेव सब्भाओ ॥ ७ ॥

मिथ्ये पंचमिथ्यात्वं, प्रथमकषायस्तु सासादने मिश्रे।
शून्यमविरतसम्ये, द्वितीयकषायो वैगूर्वद्विकं कर्म ॥ ३ ॥
औरालमिश्रं त्रसबधो, नवकं देशेऽविरता एकादश।
तृतीयकषायः पंचदश, प्रमत्तविरते आहारकद्विकच्छेदः ॥ ४ ॥
शून्यं प्रमादरहिते, अपूर्वे षण्णोकषायव्युच्छेदः।
अनिवृत्तौ च क्रमश, एकैकं वेदत्रयकषायत्रयं ॥ ५ ॥
सूक्ष्मे सूक्ष्मो लोभः, शून्यमुपशांतकेषु क्षीणेषु।
अलीकोभयवचनमनश्चतुष्कं योगिनि च श्रृणुत वक्ष्यामि ॥ ६ ॥
सत्यानुभयं वचनं, मनश्च औरालकाययोगश्च।
औरालमिश्रं कार्मणमुपचारेणैव सद्भावः ॥ ७ ॥ कुलकं।

टीका – मिथ्यात्व विषैं पांच-मिथ्यात्व व्युच्छित्ति भए। ऊपरि के गुणस्थाननि विषैं नाहीं। सासादन विषैं प्रथम च्यारि-कषाय, मिश्र विषैं शून्य, अविरत विषैं दूसरा च्यारि-कषाय, वैक्रियिकद्विक, कार्माण, औदारिक-मिश्र, त्रस-हिंसा— ए नव देशसंयत विषैं अविरत-ग्यारह, तीसरा-च्यारि-कषाय—असैं पन्द्रह। प्रमत्तविरत विषैं आहारकद्विक, अप्रमत्त विषैं शून्य। अपूर्वकरण विषैं छह-नोकषाय। अनिवृत्तिकरण विषैं क्रम तैं एक-एक करि तीन वेद, तीन कषाय सूक्ष्मसांपराय विषैं सूक्ष्म-लोभ। उपशांतकषाय विषैं शून्य। क्षीणकषाय विषैं असत्य-उभय मन वा वचन— ए च्यारि व्युच्छित्ति हैं। बहुरि सयोगी विषैं कहों हों तू सुनि-सत्य-अनुभय वचन अर मन अर औदारिक, औदारिकमिश्र, कार्माण— ए सात-योग हैं। सो उपचार करि ही है ॥ ३-७ ॥

आगैं आस्रवनि के विशेष कहने कौं अधिकार कहैं हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अवरादीणं ठाणं, ठाणपयारा पयारकूडा य।
कुडुच्चारणभंगा, पंचविहा होंति इगिसमये॥ ७९१ ॥

अवरादीनां स्थानं, स्थानप्रकाराः प्रकारकूटाश्च।
कूटोच्चारणभंगाः, पंचविधा भवंति एकसमये॥ ७९१ ॥

टीका – जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट-स्थान बहुरि स्थानप्रकार, बहुरि कूट-प्रकार, बहुरि कूटोच्चारणविधान, बहुरि भंग– अैसैं प्रत्ययनि कै पांच-प्रकार हैं, ते एक काल विषैं हो हैं ॥७९१ ॥

तिन प्रकारनि कौं क्रम तैं छह-गाथानिकरि कहैं हैं–

दस अट्ठारस दसयं, सत्तर णव सोलसं च दोण्हंपि।
अट्ठ य चोद्दस, पणयं, सत्त तिये दुति दुगेगमेगमदो॥ ७९२ ॥

दश अष्टादश दशकं, सप्तदश नव षोडश च द्वयोरपि।
अष्ट च चतुर्दश पंचकं, सप्त त्रिके द्वित्रिकं द्विकैकमेकमतः ॥ ७९२ ॥

टीका – एक जीव कैं एक काल विषैं संभवै ऐसा प्रत्ययनि का समूह सो स्थान कहिए। सो गुणस्थाननि विषैं कहिए है–

मिथ्यादृष्टि विषैं जघन्य दश का, मध्यम एक-एक अधिक, यावत् उत्कृष्ट-अठारह का स्थान हो है।

भावार्थ – मिथ्यादृष्टि विषैं एक-जीव कैं, एक कालि सत्तावन-आस्रवनि विषैं, जघन्य तौ दश होंय, मध्यम-ग्यारह वा बारह वा तेरह वा चौदह वा पंद्रह वा सोलह वा सतरह होंइ। उत्कृष्ट-अठारह होइ। अैसैं ही अन्यत्र जानना। सासादन विषैं जघन्य-दश का, मध्यम तैसैं ही एक-एक अधिक, यावत् उत्कृष्ट-सतरह का स्थान है। मिश्र विषैं जघन्य-नव का, मध्यम तैसैं ही एक-एक अधिक, यावत् उत्कृष्ट-सोलह का स्थान है। 'द्वयोरपि च' इस वचन तैं अविरत विषैं भी मिश्रवत् स्थान हैं। देशसंयत विषैं जघन्य-आठ का, मध्यम तैसैं ही एक-एक अधिक, यावत् उत्कृष्ट-चौदह का स्थान हैं।

प्रमत्त आदि तीन विषैं प्रत्येक जघन्य-पांच का, मध्यम-छह का, उत्कृष्ट-सात का स्थान है। अनिवृत्तिकरण विषैं जघन्य-दोय का, मध्यम नाहीं। उत्कृष्ट-तीन का स्थान है। सूक्ष्मसांपराय विषैं जघन्यादि भेद बिना दोय का एक ही स्थान है। उपशांतकषायादि विषैं जघन्यादि भेद बिना एक का एक ही है। अयोगी विषैं शून्य है॥ ७९२ ॥

आगैं ए स्थान कहे, ते केते-केते प्रकारकरि पाइए है, ऐसा स्थान प्रकारकरि कहैं हैं–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक्कं च तिण्णि पंच य, हेट्ठुवरीदो दु मज्झिमे छक्कं।
मिच्छे ठाणपयारा, इगिदुगमिदरेसु तिण्णि देसोत्ति॥ ७९३ ॥

एकश्च त्रयः पंच च, अधस्तनोपरितस्तु मध्यमे षट्कं।
मिथ्ये स्थानप्रकाराः, एकद्विकमितरेषु त्रयोदश इति॥ ७९३ ॥

टीका– मिथ्यादृष्टि विषैं आठ-स्थान कहे, तिनविषैं दश, ग्यारह, बारह के तीन नीचले स्थान अर अठारह सतरह, सोलह के तीन ऊपरि के स्थान– इनविषैं तौ क्रम तैं एक, तीन, पांच प्रकार हैं।

भावार्थ–दश वा अठारह के स्थान तौ एक-एक प्रकारकरि ही हैं। ग्यारह, सतरह के स्थान तीन-तीन प्रकार करि हैं। बारह, सोलह के स्थान पांच-पांच प्रकारकरि हैं। अैसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि मध्य के तेरह, चौदह, पंद्रह के तीन स्थान छह-छह प्रकार हैं।

बहुरि सासादनादिक देशसंयत पर्यंत विषैं नीचला-पहिला वा दूसरा-स्थान अर ऊपरला-अंत का वा अंत तैं नीचला-स्थान सो एक, दोय प्रकार है। पहिला अर अंत का स्थान तो एक-एक प्रकार है। अर दूसरा अंत के तैं लगता ही नीचला-स्थान दोय-दोय प्रकार हैं। इनके मध्य जेते-जेते स्थान रहे, ते सर्व तीन प्रकार हैं। बहुरि प्रमत्तादिक के सर्व ही स्थान एक-एक प्रकार हैं॥ ७९३ ॥

आगैं ए कहे स्थान-प्रकार, तिनके जानने के अर्थि कूट-प्रकार कहै हैं–

मिथ्या.

१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
१	३	५	६	६	६	५	३	१

सासादन–

१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१	२	३	३	३	३	२	१

मिश्र–

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१	२	३	३	३	३	२	१

असंयत–

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१	२	३	३	३	३	२	१

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

देशसंयत—

८	९	१०	११	१२	१३	१४
१	२	३	३	३	२	१

उ.

१
१

प्रमत्त

५	६	७
१	१	१

अप्रमत्त

५	६	७
१	१	१

अपूर्व—

५	६	७
१	१	१

अनिवृ.—

२	३
१	१

सू

२
१

क्षी

१
१

स

१
१

भयदुगरहियं पढमं, एक्कदरजुदं दुसहियमिदि तिण्णं।
सामण्णा तियकूडा, मिच्छा अणहीणतिण्णिवि य॥ ७९४॥

भयद्विकरहितं प्रथममेकतरयुतं द्विसहितमिति त्रयः।
सामान्यानि त्रिकूटानि, मिथ्या अनहीनत्रीण्यपि च॥ ७९४॥

टीका — कूट के आकारि रचना करनी। तहां नीचै ही नीचै तौ पांच-मिथ्यात्व विषैं एक जीव कैं एकै कालि एक ही होइ; तातैं पंच-मिथ्यात्व बरोबरि स्थापने। तिनकी सहनानी पांच जायगा एक लिखने। बहुरि तिनके ऊपरि पांच-इन्द्रिय, एक मन— इन छहौं इंद्रियनि विषैं, एक जीव कैं एकै-कालि एक ही का विषय की प्रवृत्ति होइ, सो इनकौं स्थापने, सो इनकी सहनानी छह जायगा एक लिखने।

बहुरि तिनके ऊपरि छह-काय की हिंसा विषैं एकै जीव कैं एकै-कालि एक-काय की हिंसा होइ वा दोय काय की हिंसा होइ वा तीन की वा च्यारि की वा पांच की वा छह की हिंसा होइ, सो इनकौं स्थापने। इनकी सहनानी एक, दोय, तीन, च्यारि, पांच छह के अंक बरोबरि क्रम तैं लिखने। बहुरि तिनके ऊपरि सोलह कषायनि विषैं एक-जीव कैं एकै कालि अनंतानुबंधी आदि च्यारि-क्रोध का वा च्यारि मान का वा च्यारि माया का वा च्यारि लोभ का उदय पाइए, सो इनकौं स्थापने। इनकी सहनानी च्यारि जायगा च्यारि के अंक लिखने।

बहुरि तिनके ऊपरि तीनवेदनि विषैं एक-जीव कैं एकै कालि एक वेद ही का उदय होय, सो इनकौं स्थापने। इनकी सहनानी तीन जायगा एक का अंक लिखिए। बहुरि तिनके ऊपरि एकै जीव कैं एकै कालि हास्य-रति होइ, कै अरति-शोक होइ, सो इनकौं स्थापने। इनकी सहनानी दोय जायगा दोय का अंक लिखने। बहुरि तिनके ऊपरि पंद्रह-योगनि मैं आहारकद्विक मिथ्यादृष्टि विषैं नाहीं; तातैं तेरह-योगनि विषैं एक-जीव कैं एकै कालि एक ही योग पाइए, सो इनकौं स्थापने। इनकी सहनानी तेरह जायगा एक का अंक लिखने। सो ऐसैं-ऐसैं तीन कूट करने।

तिनविषैं पहिला-कूट भय-जुगुप्सा रहित हैं; तातैं ऊपरि ही ऊपरि विंदी लिखनी। दूसरा-कूट भय, जुगुप्सा विषैं एक करि सहित है; जातैं ऊपरि ही ऊपरि दोय जायगा एक का अंक लिखने। तीसरा कूट भय-जुगुप्सा दोऊनिकरि सहित है, तातैं ऊपरि ही ऊपरि दोय ही का अंक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक जायगा लिखना। कोई जीव कैं कोई काल विषैं भय-जुगुप्सा दोऊ न होंइ वा दोऊ विषैं एक कोई होइ वा दोऊ ही होंइ।

अनंतानुबंधी सहित मिथ्यादृष्टि के कूट ३।

०	१ १	२
१११११११११११११	१११११११११११११	१११११११११११११
२ २	२ २	२ २
१ १ १	१ १ १	१ १ १
४ ४ ४ ४	४ ४ ४ ४	४ ४ ४ ४
१ २ ३ ४ ५ ६	१ २ ३ ४ ५ ६	१ २ ३ ४ ५ ६
१ १ १ १ १ १	१ १ १ १ १ १	१ १ १ १ १ १
१ १ १ १ १	१ १ १ १ १	१ १ १ १ १

तातैं ऐसैं तीन कूट कीए, सो ए तीन तौ मूलकूट भए। बहुरि अनंतानुबंधी विसंयोजनवाला मिथ्यादृष्टी होइ, ताकैं आवलीकाल पर्यंत अनंतानुबंधी का उदय नाहीं; तातैं तीन-कूट अनंतानुबंधी रहित करने। जहां च्यारि जायगा च्यारि च्यारि कषाय लिखे हैं, तहां तीन-तीन लिखने। बहुरि यहु अनंतानुबंधी विसंयोजनवाला पर्याप्त ही है। तातैं तेरह-योगनि की जायगा दश ही योग लिखने। ऐसैं मिलि करि मिथ्यादृष्टि विषैं छह कूट भए।

बहुरि सासादन विषैं तिन तीन सामान्य-कूटनि विषैं नीचै ही नीचै पंच-मिथ्यात्व लिखे थे, तहां विंदी लिखनी— ऐसैं तीन-कूट होंइ। बहुरि मिश्र विषैं अनंतानुबंधी नाहीं; तातैं च्यारि-च्यारि कषायनि की जायगा तीन-तीन ही लिखने। अर तीन मिश्रयोग नाहीं; तातैं तेरह-योग लिखे थे, सो तहां दश ही लिखने— ऐसैं तीन-कूट ही करने। बहुरि असंयत विषैं तीन-योग मिलि गए; तातैं तेरह-योग लिखने— ऐसे तीन-कूट करने।

बहुरि देश-संयत विषैं च्यारि अप्रत्याख्यान भी नाहीं; तातैं कषायनि की जायगा दोय-दोय ही च्यार्यों जायगा कषाय लिखने अर त्रसहिंसा नाहीं; तातैं कायबध की जायगा छह का अंक न लिखना अर तीन-मिश्रयोग, एक वैक्रियिक-योग नाहीं; तातैं तेरह-योगनि की जायगा नव ही लिखने— ऐसैं तीन-कूट करने।

बहुरि प्रमत्त विषैं बारह-अविरत नाहीं; तातैं इंद्रिय वा कायबध की जायेगा सर्वत्र विंदी लिखना। प्रत्याख्यान-कषाय नाहीं; तातैं कषाय एक ही लिखना। आहारकद्विक मिलै; तातैं योग ग्यारह लिखने— ऐसैं तीन-कूट करने।

बहुरि अप्रमत्त विषैं आहारकद्विक नाहीं; तातैं नव ही योग लिखने— ऐसैं तीन-कूट करने। ऐसैं ही अपूर्वकरण विषैं तीन-कूट करने। बहुरि अनिवृत्तिकरण विषैं जिस-जिस भाग विषैं वेद वा कषाय वा हास्यादिक छह का अभाव भया होइ, तिस-तिस भाग विषैं तिस तिस जायगा विंदी लिखि, एक-एक ही कूट करना। सर्व ही कूटनि विषैं भय-जुगुप्सा का अभाव है; तातैं एक-एक ही कूट हो है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं बादर-लोभ नाहीं, सूक्ष्म-लोभ है ; तातैं सर्व कषायनि की जायगा विंदी तीन जायगा, एक जायगा एका लिखना अैसा एक-कूट करना। उपशांतकषाय, क्षीणकषाय विषैं सूक्ष्म-लोभ भी नाहीं ; तातैं सर्व कषायनि की जायगा विंदी लिखनी – अैसा एक-एक कूट करना। सयोगी विषैं असत्य वा उभय मन वा वचन नाहीं ; तातैं योग-सात ही लिखने– अैसा एक कूट करना। अयोगी विषैं सर्वत्र शून्य ही है।

अैसैं ए कहे कूट तिनविषैं अनंतानुबंधी रहित मिथ्यादृष्टि का पहिला-कूट करि मिथ्यात्वनि विषैं एक अर इंद्रयनि विषैं एक अर षट्काय-हिंसा विषैं एक पृथ्वी की हिंसा अर अनंतानुबंधी बिना क्रोधादि च्यारि-कषायनि का त्रिक विषैं एक त्रिक अर वेदनि विषैं एक अर दोऊ युगलनि विषैं एक युगल अर यह पर्याप्त ही है ; तातैं दशयोगनि विषैं एक योग– अैसैं मिलि दश का आस्रव हो है। बहुरि इनविषैं पृथ्वी की हिंसा घटाइ पृथ्वी आदि दोय की हिंसा मिलाए, ग्यारह का आस्रव हो है। बहुरि पृथ्वी आदि दोय की हिंसा कौं घटाइ पृथ्वी आदि तीन की हिंसा मिलाए, बारह का आस्रव हो है। बहुरि तीन की हिंसा कौं घटाएं पृथ्वी आदि च्यारि की हिंसा मिलाएं, तेरह का हो है। बहुरि च्यारि की हिंसा कौं घटाएं पृथ्वी आदि पांच की हिंसा मिलाएं, चौदह का हो है। बहुरि पांच की हिंसा कौं घटाइ पृथ्वी आदि छह की हिंसा मिलाएं पंद्रह का हो है।

ऐसैं अनंतानुबंधी रहित प्रथम-कूट विषैं दशकानैं आदि दैकरि छह-स्थान भए। याही प्रकार दूसरा - कूट विषैं भय-जुगुप्सा विषैं एक एक के मिलने तैं ग्यारहकानैं आदि दैकर छह-स्थान हो है। तीसरा कूटविषैं भय-जुगुप्सा दोऊनि के मिलने तैं बारहकानैं आदि दैकरि छह-स्थान हो हैं।

बहुरि अनंतानुबंधी सहित तीन-कूटनि विषैं एक अनंतानुबंधी-कषाय बधता है ; तातैं प्रथम-कूट विषैं ग्यारहकानैं आदि दैकरि छह-स्थान, दूसरा-कूट विषैं बारहकानैं आदि दैकरि छह स्थान, तीसरा कूट विषैं तेरहकानै आदि दैकरि छह आस्रव-स्थान हो हैं। अैसैं इन कूटनि विषैं दश का अर अठारह का आस्रव तौ एक-एक प्रकार ही है ; जातैं दश का आस्रव तौ अनंतानुबंधी रहित प्रथमकूट विषैं ही है अर अठारह का आस्रव अनंतानुबंधी सहित अंत का कूट विषैं ही है अन्यत्र नाहीं।

बहुरि अेसैं ही कूटनि विषैं विचारि ग्यारह, सतरह के आस्रव के स्थान तीन-तीन प्रकार हैं। बारह, सोलह के पांच-पांच प्रकार हैं। तेरह, चौदह, पंद्रह के छह-छह प्रकार हैं।

याही प्रकार सासादनादिक विषैं जे कूट कहे तिनका विचार करि आस्रवनि के स्थान वा तिन स्थाननि के प्रकार जानने। अैसैं मन में धारि आचार्य नैं पहिलैं-दोय गाथानि करि स्थान वा स्थान प्रकार का प्रतिपादन कीया है॥ ७९४॥

आगैं जे स्थान-प्रकार कहे, तिनकौं कैसे करि कहने में आवै, अैसा जानने के अर्थि कूटोच्चारण प्रकार कहैं हैं–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिच्छत्ताणण्णदरं, एक्केणक्खेण एक्ककायादी।
तत्तो कसायवेददु , जुगलाणेक्कं च जोगाणं॥ ७९५ ॥

मिथ्यात्वानामन्यतरमेकेनाक्षेण एककायादि।
ततः कषायवेदद्वि, युगलानामेक च योगानां॥ ७९५ ॥

टीका – मिथ्यात्वनि विषैं कोई एक अर छह इंद्रियनि विषैं एक , इनकरि सहित एक, दोय आदि काय की हिंसा, तहां पीछै कषायनि विषैं एक जाति अर वेदनि विषैं एक अर दोऊ युगलनि विषैं एक अर चकार तैं संभवता-स्थान विषैं भय-जुगुप्सा विषैं एक वा दोऊ अर योगनि विषैं एक कहिए– अैसैं कूटनि के उच्चारने का विधान हो है। सोई कहिए है–

जीवकांड का गुणस्थान-अधिकार विषैं विकथादिक का अक्ष-संचारादिक करि जैसैं प्रमादनि के भंग कीए हैं, तैसै पंच-मिथ्यात्वादिकनि का अक्ष-संचारादिक करि आस्रवनि के भंग जानने। तहां अनंतानुबंधी रहित प्रथम-कूट विषैं एकांत-मिथ्यात्व ; स्पर्शनइंद्री ; पृथ्वीकाय का बध ; तीन प्रकार क्रोध, नपुंसकवेद, हास्य-रति का युगल, सत्य-मनोयोग, असत्य-मनोयोग इनविषैं अक्ष कौं धारिए तब एकांत-मिथ्यादृष्टि-स्पर्शन-इंद्रिय के वशीभूत, पृथ्वीकाय का हिंसक, तीन प्रकार क्रोध का धारक, नपुंसक-वेदी, हास्य-रतिसंयुक्त, सत्य मनोयोगी अैसा जीव कै आस्रव का एक-भंग भया। बहुरि जहां पृथ्वी का हिंसक कह्या, तहां जल का कहिए वा तेज का, वायु का वा, वनस्पती का वा, त्रस का क्रम तैं कहिए– अैसैं प्रत्येक-भंग छह भए। बहुरि पृथ्वी-जल का वा पृथ्वी-अग्नि का इत्यादि दोय का संयोगरूप पंद्रह-भेदनि विषैं एक-एक का हिंसक कहैं, द्विसंयोगी-भंग पंद्रह होंइ।

बहुरि पृथ्वी, जल, अग्नि का वा पृथ्वी, जल, पवन का इत्यादि तीन का संयोगरूप बीस भेदनि विषैं एक-एक का हिंसक कहैं, त्रिसंयोगी-भंग बीस होंइ। बहुरि पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन का वा पृथ्वी जल, अग्नि, वनस्पती का इत्यादि च्यारि का संयोगरूप पंद्रह-भेदनि विषैं एक-एक का हिंसक कहैं चतुःसंयोगी-भंग पंद्रह होंइ। बहुरि पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन, वनस्पति का वा पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन, त्रस वा जल, अग्नि, पवन, वनस्पती, त्रस का इत्यादि पांच का संयोगरूप छह-भेदनि विषैं एक-एक का हिंसक कहैं, पंच-संयोगी-भंग छह होंइ। बहुरि पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन, वनस्पती, त्रस– इन छहौं का संयोगरूप एक भेद, ताका हिंसक कहैं, छह संयोगी-भंग एक होइ। अैसैं मिलिकरि सर्व तरेसठि-भंग भए।

बहुरि जहां एकांत-मिथ्यात्वी कह्या था, तहां विपरीत-मिथ्यात्वी कहिं पूर्वोक्त प्रकार तरेसठि-भंग करने। अैसैं पांच मिथ्यात्वनि करि तीन सै पंद्रह भंग भए।

बहुरि इन सबनि विषैं स्पर्शन-इंद्री के वशीभूत जहां कह्या, तहां रसना-इंद्री के वशीभूत कहना, तब तितने ही भंग होंइ। अैसैं पांच-इंद्री, छठा मनकरि अठारसै निवै भंग होइ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि इन सबनि विषैं जहां तीन प्रकार क्रोध संयुक्त कह्या था, तहां तीन प्रकार मान संयुक्त कहिए, तब भी तितने ही भंग होंइ हैं। ऐसैं लोभपर्यंत च्यारि-कषायनि करि पिचहत्तरिसै साठि-भंग होंइ।

बहुरि इन सबनि विषैं जहां नपुंसक-वेदी कह्या, तहां स्त्रीवेदी कहिए, तब तितने ही होंइ वा पुरुषवेदी कहिए, तब तितने ही होंइ। ऐसे तीन वेदनि करि बाईस हजार छसै असी-भंग भए।

बहुरि इन सर्व भेदनि विषैं जहां हास्य-रति संयुक्त कह्या, तहां अरति-शोक, संयुक्त कहिए, तब भी तितने ही भंग होंइ। ऐसैं पैंतालीस हजार तीनसै साठि-भंग भए। अर इस कूट विषैं भय-जुगुप्सा है ही नाहीं।

बहुरि इन सबनि विषैं जहां सत्य-मनोयोग कह्या, तहां असत्य-मनोयोग कहिए, तब भी तितने ही भंग होंइ। ऐसैं करि वैक्रियिक-योगपर्यंत-पर्याप्त दश योगनि करि च्यारि लाख तरेपन हजार छसै-भंग होंइ। मिथ्यात्व विषैं अनंतानुबंधी का अनुदय पर्याप्त-दशा ही विषैं होंइ; तातैं औदारिक-मिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्माण— ए तीन योग न ग्रहे।

ऐसैं अनंतानुबंधी रहित मिथ्यादृष्टि का कूट विषैं इतने भंग भए। इहां अक्ष अपने अंतपर्यंत पहुँचै, तब तिस सहित सर्व पहिलै भए अक्ष, ते आदि-स्थान विषैं प्राप्त होंइ। उत्तर-अक्ष अपने दूसरे-स्थानक कौं प्राप्त होंइ। जैसैं पांच-मिथ्यात्व का अक्ष अज्ञानपर्यंत पहुँच्या, तब पीछैं मिथ्यात्व का अक्ष तौ एकांत कौं प्राप्त भया अर उत्तर इंद्री अक्ष था, सो रसनारूप द्वितीयस्थान कौं प्राप्त भया। बहुरि तैसैं ही होतैं-होतैं सर्व अक्ष, अंत-स्थान कौं पहुँचे, तब तहां अक्ष-संचार होइ निवरै, सो अक्ष-संचार का विधान प्रमाद कथन विषैं जैसैं पूर्वैं कह्या था तैसैं इहां भी जानि लेना।

ऐसैं अनंतानुबंधी-रहित मिथ्यादृष्टि का प्रथमकूट का कूटोच्चारण-विधान पूर्ण भया।

याही प्रकार मिथ्यादृष्टि के अवशेष कूट वा सासादनादिक के कूट, तिनका भी कूटोच्चारण विधान, जितने अक्ष वा अक्षनि का प्रमाण होइ, तिनकरि जानना ॥ ७९५ ॥

आगैं इनि भंगनि का प्रमाण ल्यावने के अर्थि भंगानयन प्रकार कहैं हैं—

अणरहिदसहिदकूडे, बावत्तरिसय सयाण तेणउदी।
सट्ठी धुवा हु मिच्छे, भयदुगसंजोगजा अधुवा॥ ७९६ ॥

अनरहितसहितकूटे, द्वासप्ततिशतं शतानां त्रिनवतिः।
षष्ठिर्ध्रुवा हि मिथ्ये, भयद्विकसंयोगजा अध्रुवाः॥ ७९६ ॥

टीका – मिथ्यात्वादिकनि की संख्या कौं परस्पर गुणैं जो प्रमाण होइ, सोई अक्ष-संचार करि भंगनि का प्रमाण हो है; तातैं मिथ्यादृष्टि विषैं अनंतानुबंधी-रहित कूटनि विषैं तौ

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिथ्यात्व-पांच, इंद्री-छह, कषायत्रिक (चतुष्क) च्यारि, वेद तीन, हास्य-अरति युगल दोय, योग दश ५, ६, ४, ३, २, १० । इनकौं परस्पर गुणें बहत्तरिसै होंइ । बहुरि अनंतानुबंधी सहित कूट विषैं मिथ्यात्व-पांच, इंद्री-छह कषायचतुष्क च्यारि, वेद-तीन, हास्य-अरति युगल दोय, योग-तेरह ५, ६, ४, ३, २, १३ । इनकौं परस्पर गुणें तरेणवैसै साठि होंई । दोऊनि कौं मिलाएं सोलह हजार पांचसै साठि तौ ध्रुवगुण्य होइ ।

बहुरि एक-एक प्रति भय-जुगुप्सा रहित अर भय सहित अर जुगुप्सा सहित अर भय-जुगुप्सा सहित— ए च्यारि-भंग पाइए हैं । बहुरि कायहिंसा के तरेसठि-भंग पाइए हैं ; तातैं च्यारि अर तरेसठि-अध्रुव-गुंणकार हैं । सो तिस ध्रुव-गुण्य कौं च्यारि करि गुणिए, बहुरि तरेसठि करि गुणिये, तब सर्व प्रत्ययभंग मिथ्यादृष्टि विषैं, इकतालीस लाख तिहत्तरि हजार एकसौ बीस हो हैं । इहां मिथ्यात्वादिक विषैं तौ एक-एक ही अवश्य निश्चल होइ ; तातैं ध्रुव-संज्ञा कही । भयद्विक वा कायबध विषैं कदाचित् किछू कदाचित् किछू , चलरूप पाइए ; तातैं ध्रुव-संज्ञा न कही ।

बहुरि सासादन विषैं छह-इन्द्री, च्यार-कषाय-जाति, तीन-वेद, युगल-दोय, वैक्रियिक-मिश्र बिना बारह योग, इनिकौं परस्पर गुणैं सतरहसै अठाईस अर वैक्रियिक-मिश्र विषैं नपुंसक-वेद नाही ; तातैं इंद्री-छह, कषाय-च्यारि , वेद-दोय, योग-एक कौं परस्पर गुणैं छिनवै, मिलिकरि अठारहसै चौबीस ध्रुव-गुण्य भए । इनिकौं च्यारि अर तरेसठि अध्रुव-गुणकार करि गुणिए , तब सर्वभंग च्यारि लाख गुणसठि हजार छसै अठतालीस हो हैं ।

बहुरि मिश्रविषैं इंद्री-छह, कषाय-च्यारि, त्रेद-तीन, युगल-दोय, योग-दश, परस्पर गुणैं चौदहसै चालीस ध्रुव-गुण्य हो हैं । याकौं च्यारि अर तरेसठि अध्रुव-गुणकार करि गुणिए, तब तीन लाख बासठि हजार आठसै असी भंग होंहि ।

बहुरि असंयत विषैं इन्द्री-छह, कषाय-च्यारि, वेद-तीन, युगल-दोय, योग-पर्याप्त संबंधी दश, इनिकौं परस्पर गुणैं, चौदहसै चालीस अर वैक्रियिक-मिश्र, कार्माण विषैं स्त्रीवेद नाहीं ; तातैं इंद्री-छह, वेद-दोय, युगल-दोय, योग-दोय— इनकौं गुणै एकसौ वाणवै अर औदारिक-मिश्र विषैं एक पुरुषवेद ही है ; तातैं इंद्री-छह, कषाय-च्यारि, वेद-एक, युगल-दोय, योग-एक— इनिकौं गुणैं अठतालीस—इन सबनि कौं मिलाए ध्रुवगुण्य सोलहसै असी भए । इनकौं च्यारि अर तरेसठि अध्रुव-गुणकार करि गुणै सर्व-भंग च्यारि लाख तेवीस हजार तीनसै साठि हो हैं ।

बहुरि देशसंयत विषैं वैक्रियिक-योग भी नाहीं ; तातैं इंद्री-छह, कषाय-च्यारि, वेद-तीन, युगल-दोय, योग-नव— इनकौं परस्पर गुणैं, बारहसै छिनवै होंइ । इनिकौं च्यारि तौ भय-जुगुप्सा संबंधी अर इहां त्रसबध नाहीं ; तातैं पांच-स्थावर बध ही की अपेक्षा इक संयोगी नै आदि दैकरि इकतीस कायबधसंबंधी अध्रुव-गुणकार करि गुणैं, एक लाख साठि हजार सातसै च्यारि-भंग हो हैं ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि प्रमत्त विषैं कषाय-च्यारि, वेद-तीन, युगल-दोय, योग-नव— इनिकौं परस्पर गुणैं, दोय से सोलह अर आहारक-योग विषैं, कषाय-च्यारि, वेद-एक-पुरुष, युगल-दोय, योग-दोय— इनकौं गुणें सोलह, मिलिकरि दोयसै बत्तीस होंइ। इनकौं भय-जुगुप्सा संबंधी ही च्यारि अध्रुव गुणकार करि गुणैं, सर्व-भंग नवसै अठाईस हो हैं।

बहुरि अप्रमत्त विषैं कषाय-च्यारि, वेद-तीन, युगल-दोय, योग-नव— इनकौं गुणै दोयसे सोलह, इनकौं अध्रुव-गुणकार च्यारि करि गुणैं आठसै चौसठि-भंग हो हैं। बहुरि अपूर्वकरण विषैं भी अैसैं ही आठसै चौंसठ-भंग हो हैं।

बहुरि अनिवृत्तिकरण का वेदसहित भाग विषैं कषाय-च्यारि, वेद-तीन, योग - नव— इनिकौं परस्पर गुणैं एकसौ आठ हो हैं। इहां तैं अध्रुव-गुणकार का अभाव है। बहुरि तिस वेदसहित भाग विषैं ही कषाय-च्यारि, वेद-दोय, योग-नव गुणैं बहत्तरि हो हैं। बहुरि वेदरहित भाग विषैं कषाय-च्यारि, योग-नव गुणैं छत्तीस हो हैं। क्रोधरहित भाग विषैं कषाय-तीन, योग-नव गुणै सत्ताईस हो हैं। मानरहित भाग विषैं कषाय-दोय, योग-नव गुणैं अठारह हो हैं। मायारहित भाग विषैं कषाय-एक, योग-नव गुणैं नव होइ। सर्व मिलि अनिवृत्तिकरण विषैं दोयसै सत्तरि भंग हो हैं।

बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं कषाय-एक, योग-नव गुणैं नव-भंग हो हैं। बहुरि उपशांतकषाय विषैं नव-योग ही है ; तातैं नव-भंग हो हैं। क्षीणकषाय विषैं भी नव ही भंग हो हैं। सयोगी विषैं योगनि ही तैं सात-भंग हो हैं। अयोगी विषैं प्रत्यय का अभाव है ॥ ७९६ ॥

अैसैं कहे भंग तिनकौं कहैं हैं—

चउवीसट्ठारसयं, तालं चोद्दस असीदि सोलसयं।
छण्णउदी बारसयं, बत्तीसं बिसद सोल विसदं च॥ ७९७ ॥
सोलस बिसदं कमसो, धुवगुणगारा अपुव्वकरणोत्ति।
अद्धुवगुणिदे भंगा, धुवभंगाणं ण भेदादो॥ ७९८ ॥ जुम्मं।

चतुर्विंशाष्टदशशतं, चत्वारिंशच्चतुर्दशाशीतिः षोडशशतं।
षण्णवतिर्द्वादशशतं, द्वात्रिंशद्द्विशतं षोडशद्विशतं च॥ ७९७ ॥
षोडश द्विशतं क्रमशो, ध्रुवगुणकारा अपूर्वकरण इति।
अध्रुवगुणिते भंगा, ध्रुवभंगानां न भेदात्॥ ७९८ ॥ युग्मं।

टीका – ध्रुवगुण्य अपूर्वकरण पर्यंत क्रम तैं मिथ्यादृष्टि विषैं तौ पूर्वोक्त, सासादन विषैं अठारहसै चौबीस, मिश्र विषैं चौदहसै चालीस, असंयत विषैं सोलहसै अस्सी, देशसंयत विषैं बारहसै छिनवै, प्रमत्त विषैं दोयसै बत्तीस, अप्रमत्त विषैं दोयसै सोला, अपूर्वकरण विषैं दोयसै सोला, सो इन ध्रुव-गुण्यनि कौं अपने अध्रुवगुणकार करि गुणैं तहां-तहां भंग हो हैं। ऊपरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

केवल ध्रुव-भंग ही हैं, तहां भय-जुगुप्सा अविरतिनि का अभाव है ; तातैं अध्रुवगुणकार नाहीं है ॥ ७९७-७९८ ॥

पूर्वै प्रत्येक, द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी इत्यादि कायबध विषैं भंग कहि अक्ष-संचार कह्या, तिन भंगनि के साधने के अर्थि अन्य-उपाय कहैं हैं–

छप्पंचादेयंतं, रूवुत्तरभाजिदे कमेण हदे।
लद्धं मिच्छचउक्के, देसे संजोगगुणगारा॥ ७९९ ॥

षट्पंचादेकांतं, रूपोत्तरभाजिते क्रमेण हते।
लब्धं मिथ्यचतुष्के, देशे संयोगगुणकाराः ॥ ७९९ ॥

टीका – जहां प्रत्येक, द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी, इत्यादि भेद करने होंहि, तहां विवक्षित का जो प्रमाण होहि, तिस प्रमाण तैं लगाय, एक-एक घटता एक अंक पर्यंत अनुक्रम तैं लिखने– सो ए तौ भाज्य भए अर तिनके नीचैं एक आदि एक-एक बधता तिस प्रमाण का अंक पर्यंत अंक क्रम तैं लिखने– ए भागहार भए। सो भाज्यनि कौं अंश कहिए, भागहारनि कौं हार कहिए। सो भिन्न गणित विषैं भाग-प्रभाग विधान है, तिसकरि क्रम तैं पूर्व अंशनि करि अगले अंश कौं अर पूर्वहारनि करि अगले हार कौं गुणि जो-जो अंशनि का प्रमाण होइ, ताकौं हार प्रमाण का भाग दीएं जो-जो प्रमाण आवै, तितने-तितने तहां भंग जानने। सो इहां मिथ्यादृष्टि आदि च्यारि-गुणस्थाननि विषैं काय-बध का प्रमाण छह है, तहां छह, पांच, च्यारि, तीन, दोय एक– ए तौ अंश क्रम तैं लिखने अर तिनके नीचैं एक, दोय, तीन, च्यारि, पांच, छह– ए हार क्रमतैं लिखने–

६	५	४	३	२	१
१	२	३	४	५	६

तहां प्रथम अपने अंश छह, तिनकौं हार एक का भाग दीएं छह पाए– सो प्रत्येक-भंग तौ छह हैं। बहुरि पूर्व छह करि अगला पंच गुणै तीस-अंश भए, तिनकौं पूर्व एक करि अगला दोय गुणैं दोय हार भए, तिनका भाग दीए पंद्रह पाए– सो इतने द्विसंयोगी-भंग हैं। बहुरि पूर्व तीस करि अगिला च्यारि गुणैं एकसौ बीस अंश भए। तिनकौं पूर्व दोय करि अगला तीन गुणैं छह हार भए, तिनकौं भाग दीएं बीस पाए– सो इतने त्रिसंयोगी-भंग हैं।

बहुरि पूर्व एकसौ बीसकरि अगला तीन गुणैं तीनसै साठि अंश भए, तिनकौं पूर्व छह करि अगला च्यारि गुणैं चौईस हार भए, तिनिका भागदीए पंद्रह पाए– सो इतने चतुःसंयोगी-भंग हैं।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि पूर्व तीनसै साठि करि अगिले दोय कौं गुणै सातसै बीस अंश भए तिनकौं पूर्व चौईस करि अगिला पांच गुणैं एकसौ वीस हार भए, तिनका भाग दीए छह पाए— सो इतने पंच-सयोगी भंग हैं।

बहुरि पूर्व सातसै बीस करि अगिला एक गुणैं सातसै बीस अंश भए, तिनकौं पूर्वे एकसौ बीस करि अगिला छह गुणै सातसै बीस हार भए, तिनिका भाग दीए एक पाया—सो छह संयोगी भंग ए कहे ॥

असैं सर्व मिलि तरेसठि-भंग भए।

बहुरि देशसंयत विषैं त्रस-बध नाहीं ; तातैं पांच ही की हिंसा है। सो पांच आदि एक पर्यंत अंश क्रम तैं लिखने। तिनके नीचे एक आदि पांच पर्यंत हार क्रम तैं लिखने।

५	४	३	२	१
१	२	३	४	५

तहां पूर्वोक्त प्रकार पांच कौं एक का भाग दीए पांच पाए, सो पांच तौ प्रत्येक-भंग है। बहुरि पांच गुणा च्यारि अंश कौं, एक गुणा दोयहार का भाग दीएं दश पाए, सो इतने द्विसंयोगी-भंग हैं। बहुरि बीस गुणा तीन अंश कौं दोगुणा तीन हार का भाग दीएं दश पाए, सो इतने त्रिसंयोगी-भंग हैं। बहुरि साठि गुणा दोय अंश कौं छह गुणा च्यारि हार का भाग दीएं, पांच पाए, सो इतने चतु:संयोगी-भंग हैं। बहुरि एकसौ बीस गुणा एक अंश कौं चौईस गुणा पांच हार का भाग दीएं, एक पाया, सो पंच संयोगी-भंग एक हैं।

असैं मिलि करि देश-संयत विषैं कायबध के इकतीस-भेद भए।

सो असैं कायबधसंबंधी अध्रुव-गुणकार है, सो छह-कायहिंसा विषैं पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पती, त्रस की एक-एक की हिंसा तैं प्रत्येक भेद तौ छह भए। बहुरि पृथ्वी-अपकी, पृथ्वी-तेज की, पृथ्वी-वायु की, पृथ्वी-वनस्पती की, पृथ्वी-त्रस की, अप्-तेज की, अप्-वायु की, अप्-वनस्पती की, अप्-त्रस की, तेज-वायु की, तेज-वनस्पती की, तेज-त्रस की, वायु-वनस्पती की, वायु-त्रस की, वनस्पती-त्रस की, हिंसा के भेद तैं द्विसंयोगी पंद्रह भए— असैं ही अन्य जानिलेने ॥ ७९९ ॥

आगैं प्रत्ययनि के उदय के कार्यभूत असे जु जीव के परिणाम, तिनके ज्ञानावरणादिक कर्म के बंध का कारणभूतपना दिखावै हैं—

पडिणीगमंतराए, उवघादो तप्पदोसणिण्हवणे।

आवरणदुगं भूयो, बंधदि अच्चासणाएवि ॥ ८०० ॥

प्रत्यनीकमंतराय, उपघातस्तत्प्रदोषनिह्नवने।

आवरणद्विकं भूयो, बध्नाति अत्यासादनयापि ॥ ८०० ॥

टीका – शास्त्र वा शास्त्र के धारक इत्यादि विषैं अविनय रूप प्रवृत्तिनिस्यों प्रतिकूल होना, सो प्रत्यनीक कहिए। बहुरि ज्ञान विषैं विच्छेद करना, सो अंतराय कहिए। बहुरि मनकरि वा

१– तत्त्वप्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयो: ॥ मोक्षशास्त्र ६ अ. १० सूत्र।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वचनकरि प्रशस्तज्ञान का दोषी होना वा अभ्यासक जीवनि कौं क्षुधादिक बाधा का करना, सो उपघात कहिए। बहुरि तत्त्वज्ञान विषैं हर्ष का अभाव अथवा मोक्ष का साधनभूत तत्त्वज्ञान का उपदेश होतैं, किसी को न सुहावै, ताके अंतरंग विषैं दुष्टता, सो प्रद्वेष कहिए। बहुरि किसी कारण तैं आप जानता हुवा भी, ऐसैं नाहीं वा मैं न जानूं ऐसा कहै अथवा जिसतैं आपकौं ज्ञान प्राप्त भया अर वह जगत विषैं प्रसिद्ध नाहीं है, तिस अप्रसिद्ध-गुरु कौं छिपाइ, जगत विषैं प्रसिद्ध तीर्थंकरादि को गुरु कहना, सो निह्नव कहिए। बहुरि काय, वचन करि अनुमोदना न करनी वा काय करि, वचन करि और कार्य का प्रकाश करि ज्ञानाभ्यास का वर्जन, सो आसादन कहिए। इन छह कार्यनि कौं होत संतैं जीव है, सो ज्ञानावरणदर्शनावरण कौं भूयः कहिए स्थिति, अनुभाग की प्रचुरता लीएं बांधै है।

इहां संदेह होता कि बंध तौ समय-समय विषैं निरन्तर है— इहां इनके होतैं ही बंध कैसे कह्या ?

तातैं आचार्य ने भूयः ऐसा विशेषण कह्या, जो इनकें होतैं स्थिति-अनुभाग की बहुलता लीए बंध हो है। इनकौं न होतैं स्थिति, अनुभाग की हीनता लीए बंध हो है। ऐसैं औरनि विषैं भी जानि लेना।

बहुरि ए छहौं युगपत् ज्ञानावरण वा दर्शनावरण दोऊनि के बंध कौं कारण हैं। अथवा विषयभेद तैं आस्रव विषैं भेद है। जो ज्ञान विषैं ते छह होंइ, तौ ज्ञानावरण का बंध प्रचुर होइ अर दर्शन विषैं ते छह होंइ, तौ दर्शनावरण का बंध प्रचुर होइ॥ ८०० ॥

भूदाणुकंपवदजो, गजुंजिदो खंतिदाणगुरुभत्तो।
बंधदि भूयो सादं, विवरीयो बंधदे इदर॥ ८०१ ॥

भूतानुकंपव्रतयोगयुजितः क्षांतिदानगुरुभक्तः।
बध्नाति भूयः सातं, विपरीतो बध्नातीतरत्॥ ८०१ ॥

टीका – गति-गति विषैं कर्म के उदय तैं भवंति कहिए उपजैं ऐसे भूत कहिए प्राणी, तिनविषैं अनुकंपा, दया अर हिंसादि का त्याग रूप व्रत अर समाधि भला परिणाम, सो योग, इनकरि जो जीव संयुक्त होइ, बहुरि क्रोधादिका त्याग - रूप क्षमा अर च्यारि प्रकार दान अर पंच परमेष्ठी की भक्ति इनकरि संयुक्त होइ, सो जीव सातावेदनीय कौं तीव्र अनुभाग लीएं प्रचुर बांधै है।

१– भूतवृत्त्यनुकम्पादानसरागसंयमादियोगः क्षांतिः शौचमिति सद्वेद्यस्य॥ मोक्ष. ६-१२।

२– दुःखशोकतापाक्रन्दनबधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य॥ मोक्ष. ६-११।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां तीव्र अनुभाग ही कह्या, स्थिति न कही ; ताका हेतु यह है जो स्थिति-बंध की अधिकता विशुद्ध परिणामनि तैं न हो है।

बहुरि पूर्वोक्त तैं विपरीत अदया आदि का धारक जो जीव होइ, सो तीव्र स्थिति, अनुभाग लीएं असाता-वेदनीय कौं प्रचुर बांधै है ॥ ८०१ ॥

अरहंतसिद्ध चेदियतवसुदगरुधम्मसंघपडिणीगो।
बंधदि [१]दंसणमोहं, अणंतसंसारिओ जेण ॥ ८०२ ॥

अर्हत्सिद्धचैत्य, तपः श्रुतगुरुधर्मसंघप्रत्यनीकः।
बध्नाति दर्शनमोहमनंतसांसारिको येन ॥ ८०२ ॥

टीका – जो जीव अरहंत अर सिद्ध अर चैत्य कहिए प्रतिमा अर तपश्चरण अर जैन-शास्त्र अर निर्ग्रन्थ-गुरु अर जिन-प्रणीत-धर्म अर मुन्यादिक का समूह रूप संघ, इनस्यों प्रतिकूली होइ— इनके स्वरूप तैं विपरीत का ग्रहण करै, सो जीव दर्शन-मोह कौं बांधै है, जाके उदय करि जीव अनंत-संसारी हो है ॥ ८०२ ॥

तिव्वकसाओ बहुमोहपरिणदो रागदोससंतत्तो।
बंधदि [२]चरित्तमोहं, दुविहंपि चरित्तगुणघादी ॥ ८०३ ॥

तीव्रकषायो बहुमोह, परिणतो रागद्वेषसंतप्तः।
बध्नाति चारित्रमोहं, द्विविधमपि चारित्रगुणघाती ॥ ८०३ ॥

टीका – जो जीव तीव्रकषाय अर नोकषाय संयुक्त होइ, बहुत मोहरूप परिणमै राग-द्वेष विषैं आसक्त होइ, चारित्रगुण के नाश करने का जाका स्वभाव होइ, सो जीव कषाय, नोकषाय भेद कौं लीए दोय प्रकार चारित्र-मोह कौ बांधै हैं ॥ ८०३ ॥

मिच्छो हु महारंभो, णिस्सीलो तिव्वलोहसंजुत्तो।
[३]णिरयाउगं णिबंधइ, पावमई रुद्दपरिणामी ॥ ८०४ ॥

मिथ्यो हि महारंभो, निश्शीलः तीव्रलोभसंयुक्तः।
निरयायुष्कं निबध्नाति, पापमतिः रुद्रपरिणामी ॥ ८०४ ॥

टीका – जो जीव मिथ्यामतरूप मिथ्यादृष्टि होइ, बहुत आरंभी होइ, शीलरहित होइ, तीव्र-लोभ

१– केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥ मोक्षशास्त्र ६-१३ ॥

२– कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥ मोक्षशास्त्र ६-१४ ॥

३– बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥ मोक्षशास्त्र ६/१५ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संयुक्त होइ, रौद्र-परिणामी होइ, पापकार्य विषैं जाकी बुद्धि होइ, सो जीव नरकायु कौं बांधै है ॥ ८०४ ॥

उम्मग्गदेसगो मग्गणासगो गूढहियय माइल्लो।
सठसीलो य ससल्लो, [१]तिरियाउं बंधदे जीवो ॥ ८०५ ॥

उन्मार्गदेश कोमार्गनाशको गूढहृदयो मायावी।
शठशीलश्च सशल्यः, तिर्यगायुष्कं बध्नाति जीवः ॥ ८०५ ॥

टीका – जो जीव विपरीत-मार्ग का उपदेशक होइ, भला-मार्ग का नाशक होइ, गूढ-और के जानने में न आवै, ऐसा जाका हृदय-परिणाम होइ, मायावी-कपटी होइ अर शठ-मूर्खता संयुक्त जाका सहज होइ, शल्यकरि संयुक्त होइ, सो जीव तिर्यंच-आयु कौं बांधै है ॥ ८०५ ॥

पयडीए तणुकसाओ, दाण, रदी सीलसंजमविहीणो।
मज्झिमगुणेहिं जुत्तो, [२]मणुवाउं बंधदे जीवो ॥ ८०६ ॥

प्रकृत्या तनुकषायो, दानरतिः शीलसंयमविहीनः।
मध्यमगुणैर्युक्तो, मानवायुष्कं बध्नाति जीवः ॥ ८०६ ॥

टीका – जो जीव विचार बिना प्रकृति-स्वभाव ही करि मंद-कषायी होइ, दान विषैं प्रीतिसंयुक्त होइ, शील-संयम कर रहित होइ, न उत्कृष्ट-गुण न दोष ऐसे मध्यम-गुणनि करि संयुक्त होइ, सो जीव मनुष्यायु कौं बांधै है ॥ ८०६ ॥

अणुवदमहव्वदेहिं य, बालतवाकामणिज्जराए य।
[३] देवाउगं णिबंधइ, सम्माइट्ठी य जो जीवो ॥ ८०७ ॥

अणुव्रतमहाव्रतैश्च, बालतपोऽकामनिर्जरया च।
देवायुष्कं निबध्नाति, सम्यग्दृष्टिश्च यो जीवः ॥ ८०७ ॥

टीका– जो जीव सम्यग्दृष्टी है, सो केवल सम्यक्त्व करि वा साक्षात् अणुव्रत, महाव्रतनि करि देवायु कौं बांधैं है। बहुरि जो मिथ्यादृष्टि जीव है, सो उपचाररूप अणुव्रत, महाव्रतनि करि वा अज्ञानरूप बालतपश्चरण करि वा बिना इच्छा बंधादिक तैं भई– ऐसी अकाम-निर्जरा करि देवायु कौं बांधै है ॥ ८०७ ॥

१– मायातैर्यग्योनस्य ॥ मोक्ष शास्त्र ६-१६ ॥

२– अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥ मोक्षशास्त्र ६-१७ ॥ स्वभावमार्दवं च ॥ वहीं ६-१८ ॥

३– सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जरावालितपांसि दैवस्य मोक्ष शास्त्र - अ. ६ सू. २० ॥ सम्यक्त्वं च मोक्ष शास्त्र अ. ६ सू. २१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मणवयणकायवक्को, माइल्लो गारवेहिं पडिबद्धो।
[१]असुहं बंधदि णामं, तप्पडिवक्खेहिं [२]सुहणामं॥ ८०८॥

मनोवचनकायवक्रो, मायावी गारवैः प्रतिबद्धः।
अशुभं बध्नाति नाम, तत्प्रतिपक्षैः शुभनाम॥ ८०८॥

टीका – जो जीव मन, वचन, काय करि वक्रहोइ-सरल न होइ, मायावी-कपटी होइ, तीन प्रकार गारव-बढाई करि सहित होइ; सो जीव नरक, तिर्यंच-गति आदि अशुभ-अप्रशस्त नाम-कर्म बांधै है। बहुरि पूर्वोक्त तैं विपरीत सरल, निष्कपट, गारव रहित जो जीव होइ सो शुभ-प्रशस्त नाम-कर्म को बांधै है॥ ८०८॥

अरहंतादिसु भत्तो, सुत्तरुची पढणुमाणगुणपेही।
बंधदि [३]उच्चागोदं, विवरीओ बंधदे [४]इदरं॥ ८०९॥

अर्हदादिषु भक्तः सूत्ररुचिः पठनानुमननगुणदर्शी।
बध्नाति उच्चगोत्रं, विपरीतो बध्नातीतरत्॥ ८०९॥

टीका – जो जीव अरहंतादिक विषैं भक्तिवंत होइ, गणधरादिक कह्या शास्त्र विषैं जाकी रुचि होइ वा अध्ययन के अर्थि विचार-विनयादिक गुण का प्रेक्षक-दर्शक होइ, सो जीव उच्चगोत्र कौं बांधै है। तिस पूर्वोक्त तैं विपरीत-जीव नीचगोत्र कौं बांधै है॥ ८०९॥

पाणवधादीसु रदो, जिणपूजामोक्खमग्गविग्घयरो।
अज्जेइ [५]अंतरायं, ण लहइ जं इच्छियं जेण॥ ८१०॥

प्राणवधादिषु रतो, जिनपूजामोक्षमार्गविघ्नकरः।
अर्जयति अंतरायं, न लभते यदीप्सितं येन॥ ८१०॥

टीका – जो जीव आप करि वा अन्य करि करी एकेन्द्री आदि प्राणीनि की हिंसा, तीहिं विषैं प्रीतिवंत होइ। जिनेश्वर की पूजा अर रत्नत्रय की प्राप्ति रूप मोक्षमार्ग, तिसविषैं आपकैं वा अन्यजीव कैं विघ्न करै, सो जीव अंतराय-कर्म उपजावै है। जाके उदय आवने करि वांछित न पावै है॥ ८१०॥

एतत्विषयक विशिष्ट परिज्ञानार्थ तत्त्वार्थसार चतुर्थाधिकार १३ से ५८ श्लोक पर्यंत तथा सर्वार्थसिद्धि एवं राजवार्तिकगत षष्ठम अध्याय-१० से २७ सूत्र पर्यंत वृत्ति एवं वार्तिक देखिये।

१– योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः॥ मोक्षशास्त्र ६-२२॥

२– तद्विपरीतं शुभस्य॥ मोक्ष शास्त्र ६-२३॥

३– तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य॥ वही ६-२६॥

४– परमात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य॥ वही ६-२५॥

५– विघ्नकरणमन्तरायस्य॥ मोक्षशास्त्र ६-२७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भावचूलिकाधिकार: ॥ ७ ॥

करि अभाव भवभाव सब, सहज भाव निज पाय।
जय अपुनर्भवभावमय, भये परम शिवराय॥ १ ॥

अथ भाव-चूलिका का प्रारंभ करै हैं। तहां प्रथम निर्विघ्न समाप्त होने के अर्थि अपने इष्ट-देव कौं नमस्कार करै हैं–

गोम्मटजिणिंदचंदं, पणमिय गोम्मटपयत्थसंजुत्तं।
गोम्मटसंगहविसयं, भावगयं चूलियं वोच्छं॥ ८११ ॥

गोम्मटजिनेन्द्रचंद्रं प्रणम्य गोम्मटपदार्थसंयुक्तां।
गोम्मटसंग्रहविषयां, भावगतां चूलिकां वक्ष्ये॥ ८११ ॥

टीका – गोम्मट जिनेन्द्र कहिए वर्धमान-स्वामी वा नेमिनाथ-स्वामी का प्रतिबिंब, सो ही भया चंद्रमा, ताहि नमस्कार करि समीचीन पद, शब्द अर अर्थ करि संयुक्त वा भले पदार्थनि का वर्णन करि संयुक्त– असी जो गोम्मटसार ग्रंथ विषैं पाइए वा तीर्थंकर का शास्त्र के गोचर भावनि का कथन कौं प्राप्त भावगत-चूलिका, ताहि कहों हों॥ ८११ ॥

जेहिं दु लक्खिज्जंते, उवसमआदीसु जणिदभावेहिं।
जीवा ते गुणसण्णा, णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं॥ ८१२ ॥

यैस्तु लक्ष्यंते उपशमादिषु जनितभावैः।
जीवास्ते गुणसंज्ञा, निर्दिष्टाः सर्वदर्शिभिः॥ ८१२ ॥

टीका – जिन अपने प्रतिपक्षी-कर्मनि के उपशमादि कौं होत संतै निपजैं– ऐसे औपशमिकादि भावनि करि जीव लखेजांहि, पहिचाने जांहि ते भाव-गुण असी संज्ञा करि सर्वदर्शीनि करि कहै हैं॥ ८१२ ॥

उवसम खइओ मिस्सो, ओदयियो पारिणामियो [1]भावो।
[2]भेदा दुग णव तत्तो, दुगुणिगिवीसं तियं कमसो॥ ८१३ ॥

औपशमिकः क्षायिको मिश्र, औदयिकः पारिणामिको भावः।
भेदा द्विकं नव ततो, द्विगुणमेकविंशतिस्त्रयः क्रमशः॥ ८१३ ॥

टीका – ते मूल भाव औपशमिक, क्षायिक, मिश्र, औदयिक, पारिणामिक– ए पंच हैं। तहां पीछैं तिनके भेद अनुक्रम तैं दोय, नव, अठारह, इकईस, तीन जानने॥ ८१३ ॥

१– औपक्षमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च॥ मोक्ष शास्त्र अ. २ सू. १ ॥

२– द्विनवाष्टा दशैकविंशति-त्रि-भैदा यथाक्रमम्॥ मोक्ष शास्त्र अ. २ सू. २ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कम्मुवसमम्मि उवसमभावो खीणम्मि खइयभावो दु।
उदयो जीवस्स गुणो, खओवसमिओ हवे भावो॥ ८१४॥

कर्मोपशमे उपशमभावः क्षीणे क्षायिकभावस्तु।
उदयो जीवस्य गुणः, क्षायोपशमिको भवेत् भावः॥ ८१४॥

टीका – प्रतिपक्षी-कर्म के उपशम होतैं औपशमिक-भाव होवै। बहुरि तिस प्रतिपक्षी-कर्म के समस्त क्षय होतैं क्षायिक-भाव हो हैं। बहुरि प्रतिपक्षी-कर्म का उदय भी होय अर जीव का गुण भी जहां प्रगट होय, तहां दोऊ मिश्ररूप क्षायोपशमिक-भाव हो हैं॥ ८१४॥

कम्मुदयजकम्मिगुणो, ओदियियो तत्थ होदि भावो दु।
कारणणिरवेक्खभवो, सभावियो होदि परिणामो॥ ८१५॥

कर्मोदयजकर्मिगुण, औदयिकस्तत्र भवति भावस्तु।
कारणनिरपेक्षभवः, स्वाभाविको भवति परिणामः॥ ८१५॥

टीका – कर्म का उदय तैं निपज्या संसारी-जीव कैं गुण सो उदय, ताकौं होतैं जो भया, सो औदयिक-भाव है। बहुरि उपशम, क्षय, क्षयोपशम, उदय की अपेक्षा करि रहित— अैसा जो भाव, सो पारिणामिक-भाव है॥ ८१५॥

आगैं उत्तर-भावनि कौं कहैं हैं—

उवसमभावो उवसमसम्मं चरणं च तारिसं खइओ।
खाइय णाणं दंसण, सम्म चरित्तं च दाणादी॥ ८१६॥

उपशमभाव उपशमसम्यक्त्वं चरणं च तादृशः क्षायिकः।
क्षायिकं ज्ञानं दर्शनं, सम्यक्त्वं चारित्रं च दानादयः॥ ८१६॥

टीका – औपशमिक भाव है, सो उपशम-सम्यक्त्व, उपशम-चारित्र— अैसैं दोय प्रकार हैं। बहुरि क्षायिक-भाव है, सो क्षायिकज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य— अैसैं नवप्रकार है॥ ८१६॥

खाओवसमियभावो, चउणाण तिदंसणं तिअण्णाणं।
दाणादिपंच वेदगसरागचारित्तदेसजमं॥ ८१७॥

क्षायोपशमिकभावश्चतुर्ज्ञानं त्रिदर्शनं त्र्यज्ञानं।
दानादिपंच वेदकसरागचारित्रदेशयमं॥ ८१७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – क्षायोपशमिक भाव है सो मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय– ए च्यारि ज्ञान अर चक्षु, अचक्षु, अवधि– ए तीन दर्शन अर कुमति, कुश्रुत, विभंग– ए तीन अज्ञान अर क्षयोपशमरूप दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य– ए पंच अर वेदक-सम्यक्त्व अर सरागचारित्र अर देशसंयम– असैं अठारह प्रकार हैं। मतिज्ञानावरणादि के क्षयोपशम होतैं मतिज्ञानादिक होंय ; यातैं इनकौं क्षायोपशमिक-भाव कहै ॥ ८१७ ॥

ओदयिया पुण भावा, गदिलिंगकसाय तह य मिथ्यात्वं।
लेस्या सिद्धा संजम अण्णाणं होंति इगवीसं॥ ८१८ ॥

औदयिकाः पुनर्भावा, गतिलिंगकषायास्तथा च मिथ्यात्वं।
लेश्यासिद्धासंयमाज्ञानं भवंति एकविंशतिः ॥ ८१८ ॥

टीका – बहुरि औदयिक-भाव है, सो च्यारि-गति, तीन-वेद, च्यारि-कषाय, एक-मिथ्यात्व, छह-लेश्या ; बहुरि सामान्य-कर्म के उदयरूप सिद्ध-पद का अभाव, सो असिद्धत्व अर चारित्र-मोह का सर्व-घातिया का उदय तैं चारित्र का अभाव, सो असंयम अर ज्ञानावरण के उदय तैं जो ज्ञान प्रगट नाही, सो अज्ञान, छद्मस्थ कैं जितना ज्ञान प्रगट भया है सो क्षयोपशम रूप है अर जितना ज्ञान प्रगट नाहीं सो औदयिक अज्ञानरूप है। असैं इकईस प्रकार हैं ॥ ८१८ ॥

जीवत्तं भव्वत्तमभव्वत्तादी हवंति [१]परिणामा।
इदि मूलुत्तरभावा भंगवियप्पे बहू जाणे॥ ८१९ ॥

जीवत्वं भव्यत्वमभव्यत्वादयो भवंति परिणामाः।
इति मूलोत्तरभावाः, भंगविकल्पे बहवो जानीहि ॥ ८१९ ॥

टीका – जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व– ऐसैं पारिणामिक-भाव तीन प्रकार हैं। जीवत्व तौ द्रव्यस्वभाव है ही अर भव्यत्व, अभव्यत्व भी कोई कर्म के निमित्त तैं नाहीं, अनादि तैं, जैसैं हैं-तैसैं ही हैं ; तातैं इनकौं भी पारिणामिक कहे।

अैसैं भूलाभाव-पांच हैं। उत्तर - भाव तरेपन हैं अर भंग विकल्प करि बहुत हैं – अैसैं जानहु ॥ ८१९ ॥

ओघादेसे संभवभावं मूलुत्तरं ठवेदूण।
पत्तेये अविरुद्धे, परसगजोगेवि भंगा हु॥ ८२० ॥

१–जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥ मोक्षशास्त्र २-७ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ओघादेशे संभवभावं मूलोत्तरं स्थापयित्वा।
प्रत्येके अविरुद्धे, परस्वकयोगेऽपि भंगा हि॥ ८२०॥

टीका – ओघ कहिए गुणस्थान, आदेश कहिए मार्गणास्थान, इनविषैं संभवते अैसे जु मूलभाव अर उत्तर-भाव, तिनकौं स्थापि करि जैसैं गुणस्थानाधिकार विषैं प्रमादनि का कथन करतैं, अक्षसंचार-विधान कह्या, तैसैं ही इहां अक्ष-संचार का विधान करि भावनि के बदलने तैं प्रत्येक-भंग अर विरुद्धरहित परसंयोगी अर स्वसंयोगी विषैं भंग हो हैं। जहां जुदे-जुदे भाव कहिए तहां प्रत्येक-भंग जानने। बहुरि जहां अन्य-अन्य भाव के संयोगरूप भंग होंइ, तहां परसंयोगी कहिए।

जैसैं औदयिक का कोई भेद जहां पाइए अर तहां ही औपशमादिक का कोई भेद पाइए, तहां औदयिक, औपशमादिक का संयोगरूप परसंयोगी होइ। अैसैं ही अन्यत्र भी जानने।

बहुरि जहां निज-भाव के भेदनि का संयोगरूप ही भंग होइ, तहां स्वसंयोगी कहिए। जैसैं औदयिक का कोई भेद जहां पाइए अर तहां ही औदयिक का अन्य भेद भी पाइए, तहां औदयिक विषैं औदयिक अैसा स्वसंयोगी भंग होइ– ऐसैं ही अन्यत्र भी जानने। सो गुणस्थाननि विषैं कहिए हैं–

नानाजीव, नाना-काल अपेक्षा भाव कहना सुगम है ; जातैं पूर्वैं सबनि का कथन होइ हीं आया, तथापि मंदबुद्धिनि के समझने के निमित्त कहिए है–तहां मूलभाव मिथ्यादृष्ट्यादि तीन विषैं औदयिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक– अैसैं तीन-तीन हैं। असंयतादि आठ विषैं सर्व पांच-पांच हैं। क्षीणकषाय विषैं औपशमिक बिना च्यारि हैं। सयोगी, अयोगी विषैं औदयिक, क्षायिक, पारिणामिक– ए तीन-तीन हैं। सिद्धनि विषैं क्षायिक, पारिणामिक– ए दोय हैं।

अब उत्तर-भाव कहिए है–

मिथ्यादृष्टि विषैं औदयिक के इकईस अर तीन-अज्ञान, दोय-दर्शन, पांच-लब्धि– ए क्षायोपशमिक के दश अर तीन पारिणामिक कै– अैसैं चौंतीस-भाव हैं। बहुरि सासादन विषैं मिथ्यात्व बिना औदयिक के बीस अर तीन अज्ञान, दोय दर्शन, पांच लब्धि– ए क्षायोपशमिक के दश अर जीवत्व-भव्यत्व– ए पारिणामिक के दोय– अैसैं बत्तीस-भाव हैं। बहुरि मिश्र विषैं मिथ्यात्व बिना औदयिक के बीस अर मिश्र रूप तीन-ज्ञान, तीन-दर्शन, पांच-लब्धि– ए क्षायोपशमिक के ग्यारह अर भव्यत्व, जीवत्व– ए पारिणामिक के दोय– अैसैं तेतीस-भाव हैं। बहुरि असंयत विषैं मिथ्यात्व बिना औदयिक के बीस अर तीन-ज्ञान, तीन-दर्शन, पांच-लब्धि, एक सम्यक्त्व– ए क्षायोपशमिक के बारह अर औपशमिक-सम्यक्त्व अर, क्षायिक-सम्यक्त्व अर जीवत्व-भव्यत्व– ए पारिणामिक– अैसैं छत्तीस-भाव हैं।

बहुरि देशसंयत विषैं मनुष्य-तिर्यंच गति दोय, च्यारि-कषाय, तीन-लिंग, तीन-शुभलेश्या,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

असिद्धत्व, अज्ञान— ए औदयिक के चौदह अर तीन-ज्ञान, तीन-दर्शन, पांच-लब्धि, सम्यक्त्व, देशचारित्र— ए क्षायोपशमिक के तेरह अर औपशमिक-सम्यक्त्व अर क्षायिक-सम्यक्त्व अर जीवत्व, भव्यत्व— पारिणामिक— असैं इकतीस-भाव हैं। बहुरि इनविषैं तिर्यंच-गति, देश-चारित्र घटाइ, मनःपर्ययज्ञान, सरागचारित्र मिलाएं, प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं इकतीस-इकतीस भाव हैं। बहुरि इनविषैं पीत-पद्मलेश्या अर क्षायोपशमिक-सम्यक्त्व-चारित्र घटाइ औपशमिक-चारित्र, क्षायिक-चारित्र मिलाएं अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण विषैं, गुणतीस, गुणतीस भाव हैं। इन विषैं लोभ बिना तीन-कषाय अर तीन-लिंग घटाएं सूक्ष्म-सांपराय विषैं, तेवीस-भाव हैं। बहुरि इनविषैं लोभकषाय, क्षायिक-चारित्र घटाएं उपशांत-कषाय विषैं, इकईस-भाव हैं। बहुरि इनविषैं औपशमिक के दोय घटाइ क्षायिक-चारित्र मिलाएं, क्षीणकषाय विषैं, बीसभाव हैं। बहुरि मनुष्यगति, शुक्ललेश्या, असिद्धत्व— ए औदयिक के तीन, क्षायिक के सर्व नव, जीवत्व, भव्यत्व, पारिणामिक— असैं सयोगी विषैं चौदह-भाव हैं। बहुरि इनविषैं शुक्ललेश्या घटाएं अयोगी विषैं तेरह-भाव हैं। बहुरि सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, वीर्य— ए क्षायिक के च्यारि अर जीवत्व-पारिणामिक— असैं सिद्ध विषैं पांच-भाव हैं।

असैं नानाजीव, नानाकाल अपेक्षा जानना।

बहुरि इहां एक-जीव के एकै-कालि जितने-जितने भाव संभवै, तिस अपेक्षा कथन करिए है—

सो मिथ्यादृष्ट्यादिक तीन-गुणस्थाननि विषैं मूलभाव तीन-तीन पाइए है। तहां परसंयोग विषैं प्रत्येक-भंग तीन औदयिक, मिश्र, पारिणामिक — ए जुदे-जदे जानने। अर द्विसंयोगी भंग तीन—औदयिक-मिश्र, औदयिक-पारिणामिक, मिश्रपारिणामिक। बहुरि औदयिक, मिश्र, पारिणामिक इन तीनों का संयोग रूप त्रिसंयोगी-भंग एक। बहुरि स्वसंयोगी विषैं भंग तीन-औदयिक विषैं औदयिक, मिश्र विषैं मिश्र पारिणामिक विषैं पारिणामिक— असैं सर्व मिलि दश-भंग भए।

प्रत्येक द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी आदि भंग ल्यावने का विधान, जैसैं आस्रवाधिकार विषैं कह्या था, तैसैं जानना। विवक्षित-संख्या का प्रमाणरूप अंक तैं लगाय एक-एक घाटि संख्यारूप लिखने, ते अंश जानने। तिनके नीचै एक तैं लगाय एक-एक अधिक अंक लिखने, ते हार जानने। तहां पहिले अंशनि करि अगला अंश कौं अर पहिले हारनि करि अगिले हार कौं गुणि अंश-प्रमाण कौं हार-प्रमाण का भाग दीएं, क्रम तैं प्रत्येक, द्विसंयोगी आदि भंगनि का प्रमाण आवै है।

सो यहां मिथ्यादृष्टी आदि तीन विषैं तीन मूलभाव हैं। सो तीन तैं एक-एक घाटि करि अंक लिखने, सो तीन, दोय, एक के अंक लिखने। तिनके नीचैं एक, दोय, तीन के अंक लिखने— तहां पहिलै तीन कौं एक का भाग दीएं तीन पाए, सो तीन तौ प्रत्येक-भंग हैं। बहुरि तीन करि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दोय कौं गुणि, ताकौं एक गुणा दोय का भाग दीएं, तीन पाया, सो तीन द्विसंयोगी-भंग हैं। बहुरि छह करि एक कौं गुणि, ताकौं दोयगुणा तीन का भाग दीएं, एक पाया, सो एक त्रिसंयोगी-भंग है। इस ही विधान तैं आगैं मूलभाव, उतर-भावनि का कथन विषैं भी प्रत्येक, द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी आदि भंगनि का विधान जानना।

३	२	१
१	२	३

बहुरि असंयतादि च्यारि-गुणस्थाननि विषैं मूलभाव पांच-पांच पाइए, तहां पूर्वोक्त विधान तैं परसंयोगी विषैं प्रत्येक-भंग तौ पांच पाइए।

५	४	३	२	१
१	२	३	४	५

बहुरि द्विसंयोगी-भंग दश होंइ तिनविषैं इहां औपशमिक, क्षायिक का संयोगरूप एक भंग नाहीं ; तातैं नव ही हैं ; जातैं इहां औपशमिक का अर क्षायिक का कोई भी भेद परस्पर मिलै नाहीं।

बहुरि त्रिसंयोगी-भंग दश होंइ। तिनविषैं औपशमिक, क्षायिक अर एक औदयिक वा क्षायोपशमिक वा पारिणामिक विषैं कोई इन तीन के संयोगरूप तीन-भंग इहां नाहीं ; तातैं सात ही हैं।

बहुरि चतु:संयोगी पांच होंइ, तिनविषैं औपशमिक, क्षायिक अर दोय औदयिक-क्षायोपशमिक वा क्षायोपशमिक-पारिणामिक वा औदयिक-पारिणामिक विषैं कोई इनके संयोगरूप तीन इहां नाहीं ; तातैं दोय ही हैं। बहुरि उपशम, क्षायिक का मिलन नाहीं ; तातैं पंच-संयोगी-भंग का अभाव है।

बहुरि स्वसंयोगी-भंग मिश्र विषैं मिश्र, औदयिक विषैं औदयिक, पारिणामिक विषैं पारिणामिक— ऐसैं तीन-भंग हैं। इहां उपशम-सम्यक्त्व विषैं उपशम-चारित्र वा क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं क्षायिकचारित्रादिक संभवै नाहीं ; तातैं औपशमिक विषैं औपशमिक अर क्षायिक विषैं क्षायिक— ए दोय-भंग न कहे— ऐसै मिलिकरि छब्बीस-भंग भए।

बहुरि उपशमश्रेणी के च्यारि-गुणस्थाननि विषैं पांच-पांच मूलभाव हैं। तहां परसंयोगी विषैं प्रत्येक भंग पांच, द्विसंयोगी दश, त्रिसंयोगी दश, चतु:संयोगी पांच, पांचसंयोगी एक-भंग है। इहां क्षायिक-सम्यक्त्व होतैं उपशमचारित्र संभवै है ; तातैं उपशम, क्षायिक का भी संयोग जानना। बहुरि स्वसंयोगी विषैं क्षायिक विषैं क्षायिक नाहीं ; जातैं इहां क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं और कोई क्षायिक का चारित्रादिक भेद संभवै नाहीं ; तातैं अवशेष च्यारि भाग संबंधी च्यारि-भंग जानना। ऐसैं सर्व मिलि पैंतीस-भंग भए।

बहुरि क्षपकश्रेणी का च्यारि-गुणस्थाननि विषैं क्षायिक, मिश्र, औदयिक, पारिणामिक— ए च्यारि-च्यारि ही भाव हैं। तहां परसंयोग विषैं प्रत्येक-भंग च्यारि, द्विसंयोगी-छह, त्रिसंयोगी-च्यारि,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चतु:संयोगी एक-भंग है। बहुरि स्वसंयोगी विषैं इहां क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं क्षायिक-चारित्र भी संभवै हैं; तातैं च्यार्यों-भावनि की अपेक्षा च्यारि-भंग हैं। ऐसैं मिलि करि उगणीस-भंग भए।

बहुरि सयोगी, अयोगी विषैं क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक ए तीन-तीन भाव हैं। तहां परसंयोगी विषैं प्रत्यैक-भंग-तीन, द्विसंयोगी-तीन, त्रिसंयोगी-एक। बहुरि स्वसंयोगी तीनों भावनि की अपेक्षा तीन– ऐसैं मिलि दश-भंग भए।

बहुरि सिद्धनि विषैं क्षायिक, पारिणामिक– ए मूलभाव दोय हें, तहां प्रत्येक-भंग दोय, द्विसंयोगी एक, स्वसंयोगी दोय– ऐसैं मिलि पंच-भंग भए॥ ८२०॥

कही जो मूलभावनि की संख्या अर स्वपर का संयोगरूप संख्या, ताकौं कहैं हैं–

मिच्छतिये तिचउक्के, दोसुवि सिद्धेवि मूलभावा हु।
तिग पग पणगं चउरो, तिग दोण्णि य संभवा होंति॥ ८२१॥

मिथ्यत्रये त्रिचतुष्के द्वयोरपि सिद्धेऽपि मूलभावा हि।
त्रिकं पंच पंचकं चत्वारः त्रिकं द्वौ च संभवा भवंति॥ ८२१॥

टीका – मिथ्यादृष्ट्यादि तीन विषैं, असंयतादि च्यारि विषैं, उपशमश्रेणी के च्यारि विषैं, क्षपक-श्रेणी के च्यारि विषैं, सयोगी आदि दोय विषैं, सिद्ध विषैं अनुक्रम तैं संभवते मूलभाव तीन, पांच, पांच, च्यारि, तीन, दोय हैं॥ ८२१॥

तत्थेव मूलभंगा, दस छव्वीसं कमेण पणतीसं।
उगुवीसं दस पणगं, ठाणं पडि उत्तरं वोच्छं॥ ८२२॥

तत्रैव मूलभंगा, दश षट्विंशं क्रमेण पंचत्रिंशत्।
एकोनविंशं दश पंचकं, स्थानं प्रति उत्तर वक्ष्यामि॥ ८२२॥

टीका – तिनही पूर्वोक्त छह विषैं क्रम तैं मूलभंग दश, छवीस, पैंतीस, उगणीस, दश, पांच है॥ ८२२॥

आगैं गुणस्थाननि प्रति उत्तर-भावनि कौं कहोंगा–

उत्तरभंगा दुविहा, ठाणगया पदगयात्ति पढमम्मि।
सगजोगेण य भंगा, णयणं णत्थित्ति णिद्दिट्ठं॥ ८२३॥

उत्तरभंगा द्विविधाः, स्थानगताः पदगता इति प्रथमे।
स्वयोगेन च भंगानयनं नास्तीति निर्दिष्टं॥ ८२३॥

टीका – उत्तर-भावनि के भंग दोय प्रकार-स्थानगत अर पदगत। तहां एक-जीव कैं एकै-काल

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जितने-जितने भाव पाइए, तिनके समूह का नाम स्थान है, ताकी अपेक्षा करि जे भंग करिए, तिनकौं स्थानगत कहिए। बहुरि एक जीव के एक-कालि जे भाव पाइए, तिनकी एक-जाति का वा जुदे-जुदे का नाम पद कहिए, ताकी अपेक्षा जे भंग करिए, तिनकौं पदगत कहिए। तहां एक जीव के एक कालि, एकै स्थान विषैं अन्य कोई स्थान संभवै नाहीं ; तातैं स्थानगत भंगनि विषैं स्वसंयोगी-भंग नाहीं प्राप्त हो है। अैसा कह्या है ॥ ८२३ ॥

मिच्छदुगे मिस्सतिये, पमत्तसत्ते य मिस्सठाणाणि।
तिग दुग चउरो एक्कं, ठाणं सव्वत्थ ओदयियं॥ ८२४॥

मिथ्यद्विके मिश्रत्रये, प्रमत्तसप्त के च मिश्रस्थानानि।
त्रिकं द्विकं चत्वारि, एकं-स्थानं सर्वत्र औदयिकं॥ ८२४॥

टीका – मिथ्यादृष्ट्यादि दोय गुणस्थान विषैं अर मिश्रादि तीन विषैं अर प्रमत्तादि सात विषैं अनुक्रम तैं क्षायोपशमिकभाव के स्थान तीन, दोय, च्यारि जानने। बहुरि औदयिक-भाव का स्थान सर्व चौदह-गुणस्थाननि विषैं एक-एक ही जानना ॥ ८२४ ॥

तत्थावरणजभावा, पणछस्सत्तेव दाणपंचेव।
अयदचउक्के वेदगसम्मं देसम्मि देसजमं॥ ८२५॥

तत्रावरणजभावा, पंचषट्सप्तैव दानपंचैव।
अयतचतुष्के वेदकसम्यं देशे देशयमं॥ ८२५॥

टीका – तहां पूर्वोक्त तीन विषैं क्षायोपशमिक के ज्ञानावरण, दर्शनावरण के निमित्त तैं भए— अैसै भाव मिथ्यादृष्टि, सासादन विषैं तीन-अज्ञान, दोय-दर्शन— अैसैं पांच हैं। मिश्रादिक तीन विषैं, आदि के तीनज्ञान, तीन-दर्शन हैं। प्रमत्तादिक सात विषैं मनःपर्यय सहित च्यारि-ज्ञान, तीन-दर्शन हैं। बहुरि दानादिक पंच-भाव मिथ्यादृष्टि तैं क्षीणकषाय पर्यंत हैं। वेदक-सम्यक्त्व, असंयतादिक च्यारि विषैं है। देशसंयम, देशसंयत विषैं है ॥ ८२५ ॥

रागजमं तु पमत्ते, इदरे मिच्छादिजेट्ठाणाणि।
वेभंगेण विहीणं, चक्खुविहीणं च मिच्छदुगे॥ ८२६॥

रागयमं तु प्रमत्ते, इतरस्मिन् मिथ्यादिज्येष्ठस्थानानि।
वैभंगेन विहीनं, चक्षुर्विहीनं च मिथ्यद्विके॥ ८२६॥

टीका – बहुरि सराग-चारित्र प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं ही हैं। अैसैं यथासंभव भाव मिलाए मिथ्यादृष्ट्यादि-क्षीणकषाय पर्यंत अनुक्रम तैं क्षायोपशमिक के उत्कृष्टस्थान दश, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, चौदह, बारह, बारह, बारह, बारह, बारह रूप जानने। तहां मिथ्यादृष्टि, सासादन

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विषैं तीन-अज्ञान, दोय-दर्शन, पांच-दानादिक— अैसैं दश, दश का उत्कृष्टस्थान जानना। उत्कृष्ट इतने भाव होंइ। मिश्र विषैं तीन-ज्ञान, तीन-दर्शन, पंच-दानादिक— अैसैं ग्यारह का है। असंयत विषैं वेदक-सम्यक्त्व सहित बारह का है। देशसंयत विषैं देश-संयम सहित तेरह का है। प्रमत्त, अप्रमत्त विषैं देश-संयम बिना अर सराग-संयम, मनःपर्यय सहित चौदह का है। अपूर्वकरणादि क्षीणकषायपर्यंत च्यारि-ज्ञान, तीन-दर्शन, पंच-दानादिक— अैसैं बारह-बारह का उत्कृष्ट-स्थान है। बहुरि मिथ्यादृष्ट्यादि दोय विषैं, एक तौ दश का उत्कृष्टस्थान अर एक विभंग रहित नव का स्थान, एक चक्षुर्दर्शन करि भी रहित आठ का स्थान— अैसैं तीन-तीन स्थान हैं ॥ ८२६ ।।

अवधिदुगेण विहीणं, मिस्सतिए होदि अण्णठाणं तु।
मणणाणेणवधिदुगेणुभयेणूणं तदो अण्णे ॥ ८२७ ॥

अवधिद्विकेन विहीनं, मिश्रत्रये भवत्यन्यत्स्थानं तु।
मनोज्ञानेनावधिद्विके, नोभयेनोनं ततोऽन्यानि ॥ ८२७ ॥

टीका – मिश्रादिक तीन विषैं एक अपना-अपना उत्कृष्ट-स्थान। बहुरि अवधिज्ञान, दर्शनरहित मिश्र विषैं नव का, असंयत विषैं, दश का, देशसंयत विषैं ग्यारह का स्थान— अैसैं दोय-दोय स्थान हैं। बहुरि प्रमत्तादि सात विषैं एक-एक अपना उत्कृष्टस्थान। बहुरि एक-एक मनःपर्यय रहित अर एक-एक अवधिज्ञान, अवधिदर्शन रहित अर एक-एक अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, मनःपयर्य रहित प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं तेरह, बारह, ग्यारह के, अपूर्वकरणादि पंच विषैं ग्यारह, दश, नव के तीन-तीन स्थान— अैसैं च्यारि-च्यारि स्थान जानने।

बहुरि औदयिक के इकईसभाव तिन विषैं एक-जीव कैं एकै-कालि मिथ्यादृष्टि विषैं च्यारि-गति, तीन-वेद, च्यारिकषाय, छह-लेश्यानि विषैं एक-एक अर मिथ्यात्व, असिद्धत्व, असंयम, अज्ञान— अैसैं आठ-भाग पाइए है। बहुरि सासादनादि तीन विषैं मिथ्यात्व बिना सात-सात पाइए। बहुरि देश-संयतादि अनिवृत्तिकरण का सवेदभाग पर्यंत असंयम बिना छह-छह पाइए है। बहुरि अवेद-भाग विषैं अर सूक्ष्मसांपराय विषैं वेद बिना पांच पाइए है। बहुरि उपशांत-कषाय, क्षीणकषाय विषैं कषाय बिना च्यारि-च्यारि पाइए है। बहुरि सयोगी विषैं अज्ञान बिना तीन पाइए है। बहुरि अयोगी विषैं लेश्या बिना मनुष्यगति अर असिद्धत्व— ए दोय पाइए है ॥ ८२७ ॥

आगैं कहे औदयिक के स्थान, तिनविषैं भावनि के बदलने तैं भए जे भंग, तिनकौं गुणस्थाननि विषैं कहिए हैं—

लिंगकसाया लेस्सा, संगुणिदा चदुगदीसु अविरुद्धा।
बारस बावत्तरियं, तत्तियमेत्तं च अडदालं ॥ ८२८ ॥

लिंगकषाया लेश्याः, संगुणिताश्चतुर्गतिष्वविरुद्धाः।
द्वादश द्वासप्ततिः, तावन्मात्रं चाष्टचत्वारिंशत् ॥ ८२८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – च्यारि गतिनि विषैं अविरुद्ध यथासंभव लिंग, कषाय, लेश्यानि कौं परस्पर गुणिए। तहां नरकगति विषैं तौ नपुंसक-वेद, च्यारि-कषाय, तीन-अशुभ-लेश्या के परस्पर गुणने तैं बारह होंइ। तिर्यंच वा मनुष्यगति विषैं तीन-वेद, च्यारि-कषाय, छह-लेश्यानि कौं परस्पर गुणें बहत्तरि-बहत्तरि होंइ। देवगतिविषैं स्त्री-पुरुष दोय लिंग, च्यारि-कषाय, तीन-शुभ-लेश्या अर भवनत्रिक कैं अपर्याप्त-दशा में तीन-अशुभ-लेश्या भी होई ; तातैं छह-लेश्या, इनकौं परस्पर गुणैं अठतालीस होंइ– ऐसैं सर्व मिलि करि दोयसै च्यारि भए, सो इतने तौ मिथ्यादृष्टि अर सासादन विषैं गुण्य जानने। जाकौं गुणकार करि गुणिए, ताकौ गुण्य कहिए। सो इनका आगे गुणकार करि गुणन कीजिएग, तातैं इनकौं गुण्य कहे। इहां अक्ष-संचार करि भावनि के बदलने तैं जितने भंग होंहिं, तितने ही परस्पर गुणैं भंग होंहिं ; तातैं गुणन-विधान करि अक्ष-भंग कहे हैं॥ ८२८ ॥

णवरि विसेसं जाणे, सुर मिस्से अविरदे य सुहलेस्सा।
चदुवीस तत्थ भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा॥ ८२९ ॥

नवरि विशेष जानीहि, सुरे मिश्रेऽविरते च शुभलेश्याः।
चतुर्विंशं तत्र भंगा, असहायपराक्रमोद्दिष्टाः॥ ८२९ ॥

टीका – मिश्र विषैं अर असंयत विषैं पूर्ववत् नरकगति विषैं बारह, तिर्यंच, मनुष्य विषैं बहत्तरि-बहत्तरि। देवगति विषैं इहां तीन शुभलेश्या हैं, इतना नवीन विशेष जानहु ; जातैं भवनत्रिक का अपर्याप्तपना इहां न संभवै है ; तातैं स्त्री-पुरुषवेद, च्यारि-कषाय, तीन-शुभलेश्यानि कौं परस्पर गुणैं देवगति विषैं चौईस ही भंग भए, ऐसा असहाय, पराक्रमी श्रीवर्धमानस्वामी, तिननै कह्या है, सो ए सर्व मिलि एकसौ असी गुण्य भया।

बहुरि देशसंयत विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, तीन-शुभलेश्या कौं परस्पर गुणैं तिर्यंच वा मनुष्यगति विषैं छत्तीस-छत्तीस होंइ, मिलि करि बहत्तरि भए। बहुरि प्रमत्त वा अप्रमत्त विषैं मनुष्यगति विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, तीन-शुभलेश्यानि के गुणनि करि छत्तीस भए। बहुरि अपूर्वकरण वा सवेद-अनिवृत्तिकरण विषैं, मनुष्यगति विषैं, तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, एक-शुक्ललेश्या करि बारह भए।

बहुरि अवेद-अनिवृत्तिकरण विषैं मनुष्यगति विषैं च्यारि-कषाय, शुक्ललेश्याकरि च्यारि भए। बहुरि अनिवृत्तिकरण का मानभाग विषैं मनुष्यगति, तीन-कषाय, शुक्ललेश्याकरि तीन भए। मायाभाग विषैं मनुष्यगति, दोय-कषाय, शुक्ललेश्या करि दोय भए। लोभ-भाग विषैं मनुष्यगति, वादर-लोभ, शुक्ललेश्या करि एक ही भया। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं मनुष्यगति, सूक्ष्म-लोभ, शुक्ललेश्या करि एक ही भया। उपशांत-कषायादि तीन विषैं मनुष्यगति, कषाय का अभाव, शुक्ललेश्या करि एक भया। अयोगी विषैं मनुष्यगतिरूप एक भया।

ऐसैं ए भंग भए। तिनकौं गुण्य स्थापन करने॥ ८२९ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चक्खूण मिच्छसासणसम्मा तेरिच्छगा हवंति सदा।
चारिकसायतिलेस्साणब्भासे तत्थ भंगा हु॥ ८३०॥

चक्षुरूनं मिथ्यसासनसम्यंच तैरश्चिका भवंति सदा।
चतुःकषायत्रिलेश्यानामभ्यासे तत्र भंगा हि॥ ८३०॥

टीका – बहुरि चक्षुदर्शन रहित मिथ्यादृष्टि वा सासादन-सम्यग्दृष्टी सदा तिर्यंच ही हैं ; तातैं तहां तिर्यंचगति विषैं नपुंसकवेद, च्यारि-कषाय, तिन-अशुभलेश्यानि का परस्पर-गुणन तैं बारह-भंग प्रगटपने जानने ॥ ८३० ॥

खाइयअविरदसम्मे, चउ सोल बिहत्तरी य बारं च।
तद्देसो मणुसेव य, छत्तीसा तब्भवा भंगा॥ ८३१॥

क्षायिकाविरतसम्ये, चत्वारः षोडश द्वासप्ततिश्च द्वादश च।
तद्देशो मनुष्य एव, षट्त्रिंशत्तद्भवा भंगाः॥ ८३१॥

टीका – क्षायिक-सम्यग्दृष्टी-असंयत विषैं नारकी विषैं तौ नपुंसकवेद, च्यारि-कषाय, कपोत लेश्या करि च्यारि ही भंग हैं। तिर्यंच विषैं पुरुष-वेद, च्यारि-कषाय, च्यारि-लेश्या करि सोलह-भंग हैं। मनुष्य विषैं तीन-वेद च्यारि-कषाय छह लेश्या करि बहत्तरि-भंग हैं। देवगति विषैं पुरुषवेद, च्यारि-कषाय, तीन-शुभलेश्या करि बारह-भंग हैं– असैं मिलिकरि एकसौ च्यारि भंग भए। बहुरि क्षायिक-सम्यग्दृष्टी-देश-संयत मनुष्य ही होइ, तहां तीन-वेद, च्यारि-कषाय, तीन-शुभलेश्याकरि छत्तीस-भंग हैं॥ ८३१ ॥

परिणामो दुट्ठाणो, मिच्छे सेसेसु एक्कठाणो दु।
सम्मे अण्णं सम्मं, चारित्ते णत्थि चारित्तं॥ ८३२॥

परिणामो द्विस्थानो, मिथ्ये शेषेषु एकस्थानस्तु।
सम्ये अन्यत्सम्यं, चारित्रे नास्ति चारित्रं॥ ८३२॥

टीका – पारिणामिक-भाव का मिथ्यादृष्टि विषैं दोय-स्थान है– जीवत्व-भव्यत्व अर जीवत्व-अभव्यत्व। बहुरि अवशेष गुणस्थाननि विषैं वा सिद्ध विषैं जीवत्व-भव्यत्व असैा एक ही स्थान है। आगैं गुणस्थाननि विषैं प्रत्येक, द्विसंयोगी आदि भेद कहने के अर्थि कहैं हैं–

सम्यक्त्वसहित स्थान विषैं अन्य सम्यक्त्व न होइ। चारित्र सहित स्थान विषैं, अन्य चारित्र न होइ। जैसैं जहां उपशम-सम्यक्त्व पाइए, तहां वेदक वा क्षायिक-सम्यक्त्व न पाइए। असैं ही अन्य विषैं भी जानना॥ ८३२ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिच्छदुगयदचउक्के, अट्ठाणेण खयियठाणेण।
जुद परजोगजभंगा, पुध आणिय मेलिदव्वा हु॥ ८३३ ॥

मिथ्यद्विकायतचतुष्के, अष्टस्थानेन क्षायिकस्थानेन।
युतं परयोगजभंगाः, पृथगानीय मेलयितव्या हि॥ ८३३ ॥

टीका – मिथ्यादृष्टि, सासादन विषैं चक्षुदर्शन रहित क्षायोपशमिक आठ का स्थान, तीहिं विषैं औदयिक के भंग कहे, तिनकरि संयुक्त अर असंयतादि च्यारि विषैं क्षायिक-सम्यक्त्व का स्थान विषैं औदयिक के भंग कहे, तिनकरि संयुक्त परसंयोग करि उपजे भंग, तिनकौं जुदे-जुदे विचारि अपना-अपना राशि विषैं मिलावने ॥ ८३३ ॥

पूर्वें कहे थे गुण्य, तिनके गुणकार अर क्षेप प्रगट करैं हैं–

उदयेणक्खे चडिदे, गुणगारा एव होंति सव्वत्थ।
अवसेसभावठाणेणक्खे संचारिदे खेवा॥ ८३४ ॥

उदयेनाक्षे चटिते, गुणकारा एव भवंति सर्वत्र।
अवशेषभावस्थानेनाक्षे संचारिते क्षेपाः॥ ८३४ ॥

टीका – गुणस्थान प्रति पूर्वें कहे जे मिश्र वा औदयिक वा पारिमाणिक-भाव के स्थान, तिन स्थाननि के अक्ष-संचार-विधान करि बदलने तैं भंग उपजावने के अर्थि अनुक्रमतैं स्थापन करि, तहां औदयिक-भाव का स्थान करि अक्ष का संचार करि सर्वत्र जे भंग होंहि, ते भंग गुणकार जानने। अवशेष भावनि का स्थान विषैं अक्ष का संचार करि जे भंग होंहि, ते क्षेप जानने।

भावार्थ–भावनि के जे स्थान कहे, तिनकौं यथा-संभव जुदे-जुदे कहिए, ते प्रत्येक-भंग जानने। तहां औदयिक का स्थानरूप जो प्रत्येक-भंग, सो तौ गुणकाररूप जानना। अवशेष भाव का स्थानरूप जे प्रत्येक-भंग ते क्षेपरूप जानने। बहुरि जहां दोय, तीन आदि भावनि के स्थाननि का संयोग करिए, तहां दोय-संयोगी, तीन-संयोगी आदि भंग होंहि, तिनविषैं जहां औदायिक-भाव का संयोग सहित दोइसंयोगी आदि भंग होंइ, तै भंग तौ गुणकाररूप जानने। बहुरि जहां औदयिक-भाव का तौ संयोग न होइ, अन्य-भावनि का ही संयोग तैं दोय-संयोगी आदि भंग होंइ, ते भंग क्षेपरूप जानने। सो जिसकरि गुणिए, ताकौं गुणकार कहिए अर जिनकौं मिलाइए, तिनकौं क्षेप कहिए। सो पूर्वें जो-जो गुण्य कहा था, ताकौं इहां कहिए है–

गुणकार तीहिं-तीहिंकरि गुणिए अर गुणन कीएं जो प्रमाण होइ, तीहिविषैं जो क्षेप का प्रमाण होइ, ताकौं मिलाइए, यों करता जितने होंइ, तितने तहां भंग जानने। ऐसा विधान करतैं जितने होंहि, तितने ही यथासंभव भावनि के स्थान बदलने तैं भंग हो हैं; तातैं थोरे में आवने के अर्थि ऐसा विधान कह्या है। सोई कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिथ्यादिष्ट विषैं मिश्र के तो दश का अर नव का ऐसे दोयस्थान, औदयिक का आठ का एक स्थान, पारिणामिक के जीवत्व सहित भव्य वा अभव्यरूप दोय-स्थान–

मि	औ	पा
१०	८	भ
९	०	अ

अैसैं पांच-स्थान हैं। तथा प्रत्येक-भंग पांच, तिनविषैं औदयिक का आठ का स्थानरूप एक प्रत्येक-भंग तो गुणकार जानना। अवशेष दोय मिश्र के, दोय पारिणामिक के– अैसैं च्यारि-भंग क्षेप जानने। बहुरि दोय संयोगी-भंग विषैं औदयिक का आठ का स्थानसहित मिश्र का दश का अर नव का स्थान करि दोय-भंग अर पारिणामिक का भव्यरूप वा अभव्यरूप स्थान करि दोय भंग– अैसैं च्यारि-भंग तौ गुणकाररूप जानने।

बहुरि मिश्र का दश का स्थान सहित पारिणामिक का भव्य, अभव्य रूप दोय स्थान करि दोय-भंग अर मिश्र का नव का स्थान सहित, तिनही पारिणामिक के दोय-स्थान का संयोगरूप दोय भंग– अैसै च्यारि-भंग क्षेपरूप जानने।

बहुरि तीन संयोगी विषैं औदयिक का आठ का स्थान अर मिश्र का दश का स्थान सहित पारिणामिक के दोय-स्थाननि करि दोय-भंग भए। बहुरि औदयिक का आठ का स्थान अर मिश्र का नवस्थान सहित पारिणामिक के दोय स्थाननि करि दोय भंग– अैसैं च्यारि-भंग, गुणकाररूप जानने। इहां औदयिक का संयोग बिना त्रिसंयोगी नाहीं ; तातैं त्रिसंयोगी विषैं क्षेप नाहीं है।

अैसै सर्व मिलि नव तौ गुणकार अर आठ-क्षेप भए। तहां पूर्वैं औदयिक-भाव के भंगनि करि मिथ्यादृष्टि विषैं दोय से च्यारि गुण्य कह्या था, तिनकौं गुणकार नव करि गुणिये, तब अठारहसै छत्तीस होंइ, तिनविषैं आठ-क्षेप मिलाइए, तब अठारहसै चवालीस-भंग होंहि। बहुरि चक्षुदर्शन-रहित मिथ्यादृष्टि विषैं मिश्र का आठ ही का एक स्थान औदायिक का आठ का एक स्थान, पारिणामिक का भव्य-अभव्यरूप दोय स्थान–

मि	औ	पा
८	८	भ
		अ

अैसैं च्यारि स्थान हैं। इहां प्रत्येक-भंग च्यारि, तिनविषें एक मिश्र का आठ का स्थान रूप ही प्रत्येक-भंग ग्रहण करना ; जातैं अन्य-तीन प्रत्येक-भंग पुनरुक्त हैं। चक्षुदर्शन सहित मिथ्यादृष्टि विषैं पूर्वैं कहे तिनके समान हैं ; तातैं एक ही ग्रह्या, सो क्षेपरूप है।

बहुरि दोय-संयोगी विषैं मिश्र का आठ का स्थान अर औदयिक का आठ का स्थान, इन दोऊनि का संयोगरूप एक-भंग गुणकार जानना। बहुरि औदयिक का स्थान अर भव्य-अभव्य का स्थान के संयोग तैं जे द्विसंयोगी होंहि, ते पुनरुक्त हैं ; तातैं न ग्रहे। बहुरि मिश्र का आठ का स्थान अर भव्यत्व-अभव्यत्वरूप पारिणामिक के दोयस्थान, तिनके संयोग तैं, जे दोय संयोगी-भंग, दोय होंहि, ते क्षेपरूप जानने। बहुरि तीन संयोगी विषैं, मिश्र का आठ का स्थान, औदयिक का आठ का स्थान, तिनकै भव्य वा अभव्यरूप दोय स्थाननि के संयोग तैं दोय-भंग भए, ते गुणकाररूप हैं। अैसैं चक्षुदर्शन-रहित मिथ्यादृष्टि कैं पूर्वैं जे बारह-गुण्य कहे थे, तिनके

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिलिकरि तीन-गुणकार अर तीन-क्षेप भए। तहां गुण्य कौं गुणकार करि गुणैं, क्षेप कौं मिलाए, गुणतालीस-भंग भए।

अैसे चक्षुदर्शन सहित वा रहित मिथ्यादृष्टि कैं सर्वभंग मिलाएं अठारहसै तियासी-भंग भए।

बहुरि याही प्रकार सासादनादि विषैं भी जितने-भावनि के स्थान पाइए, तितने तौ प्रत्येक-भंग जानने। तहां औदयिक का जो स्थान होइ, सो गुणकार जानना। अन्य भावनि के जे स्थान होंहि, ते क्षेपरूप जानने। बहुरि जे दोय, तीन आदि भावनि के संयोग तैं भंग होंहि, ते दोय-संयोगी, तीन-संयोगी आदि जानने। तहां औदयिक-भाव अर अन्य कोई भाव के संयोग तैं जे दोयसंयोगी आदि भंग होंहि, ते गुणकाररूप जानने अर औदयिक-भाव बिना अन्य ही भावनि के संयोग तैं, जे दोय-संयोगी आदि भंग होंहि, ते क्षेपरूप जानने। तहां पहले जिन भंगनि कौं कहि आए अर तिनही के समान पीछे जे भंग होंहि, ते पुनरुक्त जानने। तिनका ग्रहण न करना। अैसैं करतैं जे गुणकार होंहि, तिनकौं मिलाएं जो प्रमाण होइ, ताकरि पूर्वै जो गुण्य कहि आए थे, ताकौं गुणिए जो प्रमाण होइ, तिसविषैं क्षेप कौं जोडैं, जो प्रमाण होइ, ताकौं मिलाइए। यों करते जो प्रमाण होइ, तितने भंग जानने।

सो सासादन विषैं मिश्र के दश का, नव का, दोय-स्थान, औदयिक का सात का एक-स्थान, पारिणामिक का भव्यरूप एक-स्थान— अैसैं च्यारि-स्थान हैं। तहां प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-तीन अर दोय-संयोगी विषैं गुणकार-तीन, क्षेप-दोय ; बहुरि तीन-संयोगी विषैं गुणकार-दोय मिलिकरि गुणकार-छह, क्षेप-पांच। तहां गुण्य दोयसै च्यारि कौं यथोक्त करतैं बारहसै गुणतीस-भंग भए।

बहुरि चक्षुदर्शन रहित सासादन विषैं मिश्र का आठ का स्थान, औदायिक का सात का स्थान पारिणामिक का भव्य-स्थान— अैसै तीन स्थान। तहां प्रत्येक-भंग विषैं क्षेप-एक, अन्य पुनरुक्त हैं। दोय संयोगी विषैं गुणकार-एक, क्षेप-एक, त्रिसंयोगी विषैं, गुणकार-एक मिलिकरि गुणकार-दोय, क्षेप-दोय। तहां पूर्वोक्त गुण्य-बारह यथोक्त करतैं सर्व-भंग छब्बीस भए।

दोऊ मिलाएं सासादन विषैं सर्व भंग बारहसै पचावन हो हैं।

बहुरि मिश्र-गुणस्थान विषैं मिश्र के ग्यारह-नव के दोय, औदयिक का सात का, परिणामिक का भव्यरूप— अैसैं च्यारि स्थान हैं। तहां प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-तीन अर दोय-संयोगी विषैं गुणकार-तीन, क्षेप-दोय अर तीन-संयोगी विषैं गुणकार-दोय मिलिकरि गुणकार-छह, क्षेप-पांच, पूर्वोक्त गुण्य एकसौ असी यथोक्त करते सर्वभंग एक हजार पिच्यासी हो हैं।

बहुरि असंयत विषैं औपशमिक का उपशम-सम्यक्त्वरूप एक, मिश्र के बारह-दश के दोय, औदयिक का सात का एक, परिणामिक का भव्यत्वरूप एक— अैसै पांच-स्थान हैं। तहां प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-च्यारि ; दोय-संयोगी विषैं गुणकार-च्यारि, क्षेप-पांच ;

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

तीन-संयोगी विषैं गुणकार-पांच, क्षेप-दोय ; च्यारि संयोगी विषैं गुणकार-दोय, मिलिकरि गुणकार-बारह, क्षेप-ग्यारह, पूर्वोक्त गुण्य एकसौ असी, सर्व-भंग इकईससै इकहत्तरि-भंग हो हैं। बहुरि क्षायिक-सम्यग्दृष्टी के क्षायिक का क्षायिक-सम्यक्त्वरूप एक ; मिश्र के बारह-दश के दोय ; औदयिक का सात का एक ; पारिणामिक का भव्यत्वरूप एक— अैसैं पांच-स्थान। तहां प्रत्येक-भंग विषैं क्षेप-एक ; दोय संयोगी विषैं गुणकार-एक, क्षेप तीन ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-तीन, क्षेप-दोय ; च्यारि-संयोगी विषैं गुणकार-दोय हैं। अवशेष गुणकार वा क्षेप पुनरुक्त जानने, मिलिकरि गुणकार-छह, क्षेप-छह, पूर्वोक्त गुण्य एकसौ च्यारि, सर्व-भंग छसै तीस हो हैं। दोऊनि कौं मिलाएं, असंयत विषैं सर्व-भंग अठाईससै एक हो हैं।

बहुरि देशसंयत विषैं उपशम का उपशम-सम्यक्त्व रूप एक, मिश्र के तेरह-ग्यारह के दोय, औदयिक का छह का एक, पारिणामिक का भव्यत्वरूप एक— अैसे पांच-स्थान हैं। तहां प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-च्यारि ; दोय-संयोगी विषैं गुणकार-च्यारि, क्षेप-पांच ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-पांच, क्षेप-दोय ; च्यारि-संयोगी विषैं गुणकार-दोय, मिलिकरि गुणकार-बारह, क्षेप-ग्यारह, पूर्वोक्त गुण्य बहत्तरि, सर्व-भंग आठसै पिचहत्तरि हो हैं। बहुरि क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं उपशम का स्थान जायगा, क्षायिक-सम्यक्त्वरूप क्षायिक का स्थान कहना अन्य पूर्ववत्। तहां प्रत्येक भंग विषैं क्षेप-एक ; दोय-संयोगी विषैं गुणकार-एक, क्षेप-तीन ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-तीन, क्षेप-दोय ; च्यारि-संयोगी विषैं गुणकार-दोय, अवशेष गुणकार वा क्षेप पुनरुक्त जानने। मिलिकरि गुणकार-छह, क्षेप-छह, पूर्वोक्त गुण्य छत्तीस, सर्व-भंग दोयसै बाईस हो हैं। दोऊ मिलि देशसंयत विषैं सर्व-भंग एक हजार सत्याणवै हो हैं।

बहुरि प्रमत्त विषैं उपशम का उपशम-सम्यक्त्वरूप एक, क्षायिक का क्षायिक-सम्यक्त्वरूप एक ; मिश्र के चौदह, तेरह, बारह, ग्यारह के च्यारि ; औदयिक का छह का एक ; पारिणामिक का भव्यत्वरूप एक — अैसैं आठ स्थान हैं। तहां प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-सात ; दोय-संयोगी विषैं गुणकार-सात, क्षेप-चौदह ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-चौदह, क्षेप-आठ ; च्यारि संयोगी विषैं गुणकार-आठ मिलिकरि गुणकार-तीस, क्षेप गुणतीस, पूर्वोक्त गुण्य छत्तीस, सर्व-भंग ग्यारहसै नव हो हैं।

बहुरि अप्रमत्त विषैं प्रमत्तवत् स्थान-आठ, गुणकार-तीस, क्षेप-गुणतीस, पूर्वोक्त गुण्य छत्तीस, सर्व-भंग ग्यारहसै नव हो हैं।

बहुरि क्षपक-श्रेणी विषैं अपूर्वकरण विषैं क्षायिक का सम्यक्त्वचारित्ररूप एक-स्थान, मिश्र के बारह, ग्यारह, दश, नव ; च्यारि औदयिक का छह का एक, पारिणामिक का भव्यत्वरूप एक— अैसैं सात-स्थान हैं। तहां प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-छह ; दोय संयोगी विषैं गुणकार छह, क्षेप नव, तीन संयोगी विषैं गुणकार नव, क्षेप च्यारि, च्यारि संयोगी विषैं गुणकार च्यारि, मिलि करि गुणकार-बीस, क्षेप उगणीस ; पूर्वोक्त गुण्य बारह, भंग दोयसै गुणसठि हो हैं।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषैं वेदसहित भाग विषैं अपूर्वकरणवत् च्यारि-भाव के सात-स्थान हैं। तहां गुणकार-बीस, क्षेप-उगणीस, पूर्वोक्त गुण्य बारह, भंग दोयसै गुणसठि जानने। वेदरहित भाग विषैं भी तैसैं ही च्यारि भाव के सात-स्थान हैं। विशेष इतना-इहां औदयिक का पांच का एक स्थान जानना। तहां अपूर्वकरणवत् गुणकार-बीस, क्षेप-उगणीस। इहां पूर्वोक्त गुण्य च्यारि, भंग निन्याणवै हैं। बहुरि क्रोधरहित भाग विषैं भी तैसैं ही वेद रहित भागवत् जानना। तहां गुणकार-बीस, क्षेप-उगणीस, पूर्वोक्त गुण्य-तीन, भंग गुण्यासी जानने। मानरहित भाग विषैं भी तैसैं ही हैं। तहां गुणकार-बीस, क्षेप-उगणीस, पूर्वोक्त गुण्य दोय भंग गुणसठि जानने। माया रहित भाग विषैं भी तैसैं ही जानना तहां गुणकार बीस क्षेप उगणीस पूर्वोक्त गुण्य एक, भंग गुणतालीस जानने।

बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं भी तैसैं ही गुणकार-बीस, क्षेप-उगणीस, गुण्य-एक, भंग-गुणतालीस हैं।

बहुरि क्षीणकषाय विषैं भी तैसैं ही गुणकार-बीस, क्षेप-उगणीस, गुण्य-एक, भंग-गुणतालीस हैं।

बहुरि सयोगी विषैं क्षायिक का एक, औदयिक का तीन का-एक, पारिणामिक का एक— असैं तीन स्थान हैं। तहां प्रत्येक भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-दोय; दोय संयोगी विषैं गुणकार-दोय, क्षेप-एक ; तीन संयोगी विषैं गुणकार-एक मिलिकरि गुणकार-च्यारि, क्षेप-तीन, गुण्य-एक, भंग-सात जानने।

बहुरि अयोगी विषैं क्षायिक का एक, औदयिक का दोय का, एक पारिणामिक का एक—असैं तीन-स्थान हैं। तहां सयोगीवत् गुणकार-च्यारि, क्षेप-तीन, गुण्य-एक, भंग-सात जानने। बहुरि सिद्ध विषैं क्षायिक का एक, पारिणामक का जीवत्वरूप एक— असैं दोय-स्थान हैं। तहां प्रत्येक-भंग विषैं क्षेप-दोय ; दोय संयोगी विषैं एक-क्षेप मिलिकरि तीन-भंग हैं।

बहुरि उपशम-श्रेणी विषैं अपूर्वकरणादि उपशांत-कषाय पर्यंत उपशम का सम्यक्त्व-चारित्ररूप एक स्थान ; क्षायिक का सम्यक्त्वरूप एक स्थान, मिश्र के बारह, ग्यारह, दश, नव के च्यारि-स्थान ; औदयिक का अपूर्वकरण वा वेदसहित अनिवृत्ति-करण विषैं छह का अर ऊपरि उपशांतकषाय पर्यंत पांच का एक स्थान ; पारिणामिक का भव्यत्वरूप एक स्थान— असैं आठ-आठ स्थान हैं। तहां प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-सात ; दोय-संयोगी विषैं गुणकार-सात, क्षेप-पंद्रह ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-पंद्रह, क्षेप-तेरह ; च्यारि-संयोगी विषैं गुणकार-तेरह, क्षेप-च्यारि ; पंच-संयोगी विषैं गुणकार-च्यारि मिलिकरि गुणकार-चालीस, क्षेप-गुणतालीस भए।

तहां अपूर्वकरण विषैं गुण्य-बारह, भंग-पांचसै उगणीस ; अनिवृत्तिकरण का वेदसहित भाग

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विषैं गुण्य-बारह, भंग-पांचसै उगणीस ; वेदरहित भाग विषैं गुण्य-च्यारि, भंग-एकसै निन्याणवै, क्रोधरहित-भाग विषैं गुण्य-तीन, भंग-एकसौ गुणसठि; मानरहित भाग विषैं गुण्य-दोय, भंग-एकसौ उगणीस ; मायारहित-भाग विषैं गुण्य-एक, भंग-गुण्यासी ; सूक्ष्मसांपराय विषैं गुण्य-एक, भंग-गुण्यासी ; उपशांतकषाय विषैं गुण्य-एक, भंग-गुण्यासी जानने ॥ ८३४ ॥

आगैं कहे जे ए गुण्यादिक, तिनकौं कहैं हैं–

दुसु दुसु देसे दोसुवि, चउरुत्तरदुसदगसिदिसहिदसदं।
बावत्तरि छत्तीसा, बारमपुव्वे गुणिज्जपमा॥ ८३५ ॥
बारचउतिदुगमेक्कं, थूले तो इगि हवे अजोगित्ति।
पुण बार बार सुण्ण, चउसद छत्तीस देसोत्ति॥ ८३६ ॥ जुम्मं।

द्वयोर्द्वयोर्देशे द्वयोरपि, चतुरुत्तरद्विशतकमशीतिसहितशतं।
द्वासप्ततिः षट्त्रिंशद्, द्वादश अपूर्वे गुण्यप्रमाः ॥ ८३५ ॥
द्वादशचतुस्त्रिद्विकैकं, स्थूलेऽत एको भवेदयोगीति।
पुनर्द्वादश द्वादश शून्यं, चतुःशतं षट्त्रिंशद्देश इति॥ ८३६ ॥ युग्मं।

टीका – औदयिक के गुण्यरूप भंग मिथ्यादृष्ट्यादिक दोय विषैं प्रत्येक-च्यारि अधिक दोयसे हैं। मिश्रादिक दोय विषैं असी अधिक सौ हैं। देशसंयत विषैं बहत्तरि हैं। प्रमत्तादि दोय विषैं छत्तीस हैं। अपूर्वकरण विषैं बारह हैं। अनिवृत्तिकरण के भागनि विषैं क्रम तैं बारह, च्यारि, तीन, दोय, एक हैं ; तातैं ऊपरि अयोगीपर्यंत एक-एक हैं। बहुरि मिथ्यादृष्ट्यादि देशपर्यंत चक्षुदर्शन रहित वा क्षायिक-सम्यक्त्व की अपेक्षा क्रम तैं बारह, बारह, शून्य, एकसौ-च्यारि, छत्तीस गुण्यरूप भंग हैं॥ ८३५-८३६ ॥

वामे दुसु दुसु दुसु तिसु, खीणे दोसुवि कमेण गुणगारा।
णव छब्बारस तीसं, बीसं बीसं चउक्कं च॥ ८३७॥

वामे द्वयोर्द्वयोर्द्वयोस्त्रिषु क्षीणे द्वयोरपि क्रमेण गुणकाराः।
नव षट् द्वादश त्रिंशं, विंशं विंशं चतुष्कं च॥ ८३७॥

टीका – तिन गुण्यनि कौं जिनकरि गुणिए– असैं गुणकार क्रम तैं मिथ्यादृष्टि विषैं नव, सासादनादि दोय विषैं छह, असंयतादि दोय विषैं बारह, प्रमत्तादि दोय विषैं तीस, अपूर्वकरणादि तीन अर क्षीणकषाय विषैं बीस, सयोगी-अयोगी विषैं च्यारि हैं॥ ८३७ ॥

पुणरवि देसोत्ति गुणो, तिदुणभछछक्कयं पुणो खेवा।
पुव्वपदे अड पंचयमेगारमुगुतीसमुगुवीसं॥ ८३८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पुनरपि देश इति गुणस्त्रिद्विनभः षट्षट्कं पुनः क्षेपाः ।
पूर्वपदे अष्ट पंचकमेकादश एकोनत्रिंशमेकोनविंशं ॥ ८३८ ॥

टीका – बहुरि चक्षुदर्शन रहित वा क्षायिक-सम्यक्त्व अपेक्षा मिथ्यादृष्ट्यादि देशसंयत पर्यंत विषैं क्रम तैं गुणकार तीन, दो, शून्य, छह, छह जानने । बहुरि गुण्य कौं गुणकार करि गुणैं जो प्रमाण होइ, तिस विषैं जिनकौं मिलाइए– अैसै क्षेप पूर्वोक्त ठिकाने विषैं प्रत्येक मिथ्यादृष्टि विषैं आठ, सासादनादि दोय विषैं पांच, असंयतादि दोय विषैं ग्यारह, प्रमत्तादि दोय विषैं गुणतीस, अपूर्वकरणादि तीन विषैं उगणीस हैं ॥ ८३८ ॥

उगुवीस तियं तत्तो, तिदुणभछछक्कयं च देसोत्ति ।
चउसुवसमगेसु गुणा, तालं रूऊणया खेवा ॥ ८३९ ॥

एकोनविंशं त्रयस्ततस्त्रिद्विनभः षट्षट्कं च देश इति ।
चतुर्षूपशामकेषु गुणाः, चत्वारिंशत् रूपोनाः क्षेपाः ॥ ८३९ ॥

टीका – क्षीणकषाय विषैं उगणीस, सयोगी-अयोगी विषैं तीन हैं । बहुरि चक्षुदर्शन रहित वा क्षायिक-सम्यग्दृष्टी अपेक्षा मिथ्यादृष्ट्यादि देशसंयतपर्यंत क्रम तैं तीन, दोय, शून्य, छह, छह-क्षेप हैं । बहुरि च्यारि उपशम-श्रेणी के गुणस्थाननि विषैं गुणकार-चालीस, क्षेप-गुणतालीस हैं ॥ ८३९ ॥

मिच्छादिठाणभंगा, अट्ठारसया हवंति तेसीदा ।
बारसया पणवण्णा, सहस्ससहिया हु पणसीदा ॥ ८४० ॥

मिथ्यादिस्थानभंगा, अष्टादशशतं भवंति त्रयशीतिः ।
द्वादशशतं पंचपंचाशत्, सहस्रसहिता हि पंचाशीतिः ॥ ८४० ॥

टीका – पूर्वोक्त गुण्य कौं गुणकार करि गुणै, क्षेप कौं मिलाएं, उत्तर-भावनि के स्थाननि के भंग मिथ्यादृष्टि विषैं अठारहसै तियासी, सासादन विषैं बारहसै पचावन, मिश्र विषै, एक हजार पिच्यासी हो हैं ॥ ८४० ॥

रूवहियडवीससया, सगणउदा दससया णवेणहिया ।
एक्कारसया दोण्हं, खवगेसु जहाकमं वोच्छं ॥ ८४१ ॥

रूपाधिकाष्टविंश, शतानि, सप्तनवतिर्दशशतानि नवेनाधिकाः ।
एकादशशतानि द्वयोः, क्षपकेषु यथाक्रमं वक्ष्यामि ॥ ८४१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – असंयत विषैं अठाईससै एक, देशसंयत विषैं सत्याणवै अधिक दशसै, प्रमत्तादि दोय विषैं नव अधिक ग्यारहसै भंग हो हैं। क्षपक-श्रेणीवालों विषैं यथाक्रम कहों हों ॥ ८४१ ॥

पुव्वे पंचणियट्टी, सुहुमे खीणे दहाण छव्वीसा।
तत्तियमेत्ता दसअड, छच्चदुचदुचदुय एगूणं॥ ८४२ ॥

अपूर्वे पंचानिवृत्ति, सूक्ष्मे क्षीणे दशानां षड्विंशतिः।
तावन्मात्रा दशाष्टषट्चतुश्चतुश्चतुष्कमेकोनं॥ ८४२ ॥

टीका – अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण के पंच-भाग, सूक्ष्मसांपराय, क्षीणकषाय– इन आठौं क्षपकनि विषैं क्रम तैं दश गुणै छंव्वीस, एक घाटि तिनके दोयसै गुणसठि बहुरि तितने ही दोय से गुणसठि, बहुरि दशगुणे दश, एक घाटि तिनके निन्याणवै, बहुरि दशगुणे आठ, एक घाटि तिनके गुण्यासी, बहुरि दशगुणे छह, एक घाटि तिनके गुणसठि, बहुरि दशगुणे च्यारि, एक घाटि तिनके गुणतालीस, बहुरि दशगुणे च्यारि, एक घाटि तिनके गुणतालीस, बहुरि दशगुणे च्यारि, एक घाटि तिनके गुणतालीस-भंग हैं ॥ ८४२ ॥

उवसामगेसु दुगुणं, रूवहियं होदि सत्त जोगिम्हि।
सत्तेव अजोगिम्मि य, सिद्धे तिण्णेव भंगा हु॥ ८४३ ॥

उपशामकेषु द्विगुणं, रूपाधिकं भवति सप्त योगिनि।
सप्तैवायोगिनि च, सिद्धे त्रय एवं भंगा हि॥ ८४३ ॥

टीका – उपशमक च्यारि गुणस्थाननि विषैं, क्षपक-श्रेणी के च्यारि-गुणस्थाननि विषैं जितने भंग कहे, तितने दूणे, एक अधिक जानने। सयोगी विषैं सात, अयोगी विषैं सात, सिद्धनि विषैं तीन भंग जानने। कथन पूर्वैं करि ही आए हैं। ऐसैं स्थान-भंग का कथन कह्या ॥ ८४३ ॥

आगैं पदभंग कहैं हैं–

दुविहा पुण पदभंगा, जादिगपदसव्वपदभवात्ति हवे।
जातिपदखइगमिस्से, पिंडेव य होदि सगजोगो॥ ८४४ ॥

द्विविधाः पुनः पदभंगा, जातिगपदसर्वपदभवा इति भवेत्।
जातिपदक्षायिकमिश्रे, पिंडे एव च भवति स्वकयोगः॥ ८४४ ॥

टीका – बहुरि पदभंग दोय प्रकार हैं। जाति पदभंग, सर्वपद भंग। सो जहां एक जाति का ग्रहण कीजिए, जैसै मिश्रभाव विषैं ज्ञान के च्यारि-भेद होतैं भी एक-ज्ञान जाति का ग्रहण करना। ऐसैं जाति ग्रहणकरि जे भंग करिए ते जातिपद भंग जानने। बहुरि जे जुदे-जुदे सर्व-भावनि का ग्रहण करि भंग कीजिए ते सर्वपद-भंग जानने। तहां जातिपद रूप क्षायिक-भाव अर मिश्रभाव इनके पिंड पदरूप जे भाव, तिनवषैं स्वसंयोगी-भंग भी पाइए हैं। क्षायिक विषैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लब्धि के पांच-भेद हैं ; तातैं लब्धि पिंडपदरूप है। मिश्र विषैं ज्ञान, अज्ञान, दर्शन, लब्धि— ए पिंडपदरूप हैं, सो इनविषैं एक भेद होतैं, अन्य भेद जहां पाइए— जैसैं दान होतैं लाभ पाइए, तहां स्वसंयोगी भी भंग पाइए हैं ॥ ८४४ ॥

अयदुवसमगचउक्के, एक्कं दो उवसमस्स जादिपदो।
खइगपदं तत्थेक्कं, खवगे जिणसिद्धगेसु दु पण चदू॥ ८४५ ॥

अयतौपशमिकचतुष्के, एकं द्वे उपशमस्य जातिपदं।
क्षायिकपदं तत्रैकं, क्षपके जिनसिद्धकेषु द्वे पंच चत्वारि॥ ८४५ ॥

टीका – औपशमिकभाव के जाति-पद असंयतादि च्यारि विषैं तौ सम्यक्त्वरूप एक ही हैं। उपशम-श्रेणी के च्यारि गुणस्थाननि विषैं सम्यक्त्व अर चारित्र— ऐसैं दोय जातिपद हैं। बहुरि क्षायिकभाव के जातिपद असंयतादि च्यारि विषैं क्षायिक-सम्यक्त्वरूप एक है। क्षपक-श्रेणी के च्यारि गुणस्थाननि विषैं सम्यक्त्व अर चारित्र— ऐसैं दोय हैं। सयोगी, अयोगी विषैं सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, लब्धि— ऐसैं पांच हैं। सिद्ध विषैं चारित्र बिना च्यारि हैं॥ ८४५ ॥

मिच्छतिये मिस्सपदा, तिण्णि य अयदम्मि होंति चत्तारि।
देसतिये पंचपदा, तत्तो खीणोत्ति तिण्णिपदा॥ ८४६ ॥

मिथ्यत्रये मिश्रपदानि, त्रीणी चायते भवंति चत्वारि।
देशत्रये पंचपदानि, ततः क्षीण इति त्रिपदानि॥ ८४६ ॥

टीका – मिश्रभाव के जातिपद मिथ्यादृष्टि-सासादन विषैं अज्ञान, दर्शन, लब्धि, अर मिश्र विषैं ज्ञान, दर्शन, लब्धि— ऐसैं तीन हैं। असंयत विषैं ज्ञान, दर्शन, लब्धि, सम्यक्त्व— ऐसैं च्यारि हैं। देश-संयतादि तीन विषैं ज्ञान, दर्शन, लब्धि, सम्यक्त्व— च्यारि तौ ए अर देशसंयत विषैं देशसंयम, प्रमत्त-अप्रमत्त विषैं सरागसंयम— ऐसैं पांच हैं। तहां ऊपरि क्षीणकषायपर्यंत ज्ञान, दर्शन, लब्धि— ऐसैं तीन हैं॥ ८४६ ॥

मिच्छे अट्ठुदयपदा, ते तिसु सत्तेव तो सवेदोत्ति।
छस्सुहुमोत्ति य पणगं, खीणोत्ति जिणेसु चदुतिदुगं॥ ८४७ ॥

मिथ्येऽष्टोदयपदानि, तानि त्रिषु सप्तैवातः सवेदे इति।
षट् सूक्ष्म इति च पंचकं, क्षीण इति जिनेषु चतुस्त्रिद्विकं॥ ८४७ ॥

टीका – औदयिक-भाव के जातिपद मिथ्यादृष्टि विषैं आठ-गति, कषाय, लिंग, लेश्या, मिथ्यात्व, अज्ञान, असंयम, असिद्धत्व। बहुरि सासादनादि तीन विषैं मिथ्यात्व बिना सात, ऊपरि अनिवृत्ति के सवेद-भागपर्यंत असंयम बिना छह, ऊपरि सूक्ष्मसांपराय पर्यंत वेद बिना पांच, ऊपरि क्षीणकषाय पर्यंत कषाय बिना च्यारि, सयोगी विषैं अज्ञान बिना तीन, अयोगी विषैं लेश्या बिना दोय जानने॥ ८४७ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिच्छे परिणामपदा, दोण्णि य सेसेसु होदि एक्कं तु।
जातिपदं पडि वोच्छं, मिच्छादिसु भंगपिंडं तु॥ ८४८॥

मिथ्ये परिणामपदे, द्वे च शेषेषु भवति एकं तु।
जातिपदं प्रति वक्ष्यामि, मिथ्यादिषु भंगपिंडं तु॥ ८४८॥

टीका – पारिणामिक-भाव के जातिपद मिथ्यादृष्टि विषैं भव्य-अभव्यरूप दोय, अवशेष गुणस्थाननि विषैं वा सिद्ध विषैं भव्य वा जीवत्वरूप ही एक जानना। बहुरि जातिपद अपेक्षा गुणस्थाननि विषैं भंगनि का समुदाय कहौ हौं। सोई कहिए है–

जाति-पद– दोय-औपशमिक के, पंच-क्षायिक के, सात-क्षायोपशमिक के, आठ-औदयिक कै, तीन-पारिणामिक के हैं। तहां यथासंभव औदयिक के जितने जातिपद पाइए, तितने तो गुण्य जानने। बहुरि ताके गुणकार अर क्षेप कहने के अर्थि प्रत्येक-भंगादिक करने विषैं मिश्रादिक के तो जितने जातिपद होंहि, तितने भेद ग्रहण करने अर औदयिक का जातिपद का समूहरूप एक ही भेद ग्रहण करना– असैं करि प्रत्येक-भंग विषैं, औदयिक का भेद तौ गुणकार रूप जानना, अन्य-भावनि के भेद क्षेप-रूप जानने।

बहुरि दोय-संयोगी आदि भंगनि विषैं औदयिक का भेद अर अन्यभावनि के भेद सहित जे भंग होंहिं, ते गुणकाररूप जानने। अर औदयिक बिना अन्यभावनि के ही संयोग तैं जे द्विसंयोगी आदि भंग होंहि, ते क्षेपरूप जानने। बहुरि क्षायिक वा मिश्र के एक जातिपद का भेद विषैं ताही का अन्य भेद जहां संभवै, तहां स्वसंयोगी-भंग होंहि, ते क्षेपरूप जानने। सो गुण्य कौं गुणकार करि गुणैं क्षेप कौं मिलाएं, जितने होंहि, तितने तहां भंग जानने। सो मिथ्यादृष्टि विषैं मिश्र के अज्ञान, दर्शन, लब्धि– ए तीन; औदयिक के आठ; पारिणामिक के भव्य-अभव्यरूप दोय जाति-पद हैं। तहां औदयिक के आठ हैं, ते गुण्य जानने। बहुरि प्रत्येक-भंग विषैं औदयिक का आठ का समूहरूप एक तौ गुणकार जानना अर तीन-मिश्र के, दोय-पारिणामिक के– ए पांच-क्षेप जानने। बहुरि दोय-संयोगी विषैं औदयिक का आठ का समूहरूप एक का योग लिए, तीन-मिश्र के अर दोय पारिणामिक के – अैसैं पांच तौं गुणकार जानने। बहुरि तीन मिश्र के संयोग सहित दोय-पारिणामिक के भेदरूप छह, दोय-संयोगी-क्षेप जानने।

बहुरि तीन-संयोगी विषैं औदयिक का आठ का समूहरूप एक अर भव्य-पारिणामिक इनका संयोग सहित तीन, मिश्र के अर औदयिक का आठ का समूहरूप एक अर अभव्य-पारिणामिक इनका संयोग सहित तीन मिश्र के अैसै छह-भंग गुणकाररूप जानने।

बहुरि स्वसंयोगी विषैं एक अज्ञान होतैं अन्य अज्ञान पाइए है। जैसैं कुमति होतैं कुश्रुतादि पाइए हैं। बहुरि एक-दर्शन होतैं अन्य-दर्शन पाइए, जैसै चक्षुदर्शन होतैं अन्य दर्शन पाइए। वा एक लब्धि होतैं अन्य लब्धि पाइए, जैसैं दान होतैं लाभादि पाइए। अैसैं ए तीन भंग-क्षेप जानने।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिलिकरि गुण्य-आठ, गुणकार-बारह, क्षेप-चौदह। तहां गुण्य कौं गुणकार करि गुणैं, क्षेप कौं मिलाएं एकसौ दश-भंग हो हैं।

बहुरि याही प्रकार सासादन विषैं, मिश्र के अज्ञान, दर्शन, लब्धिरूप तीन, औदयिक के सात, पारिणामिक का भव्यरूप एक जातिपद है। तहां गुण्य सात, प्रत्येक भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप च्यारि, दोय संयोगी-भंग विषैं गुणकार-च्यारि, क्षेप-तीन ; तीन संयोगी विषैं गुणकार-तीन, स्वसंयोगी विषैं क्षेप-तीन, मिलिकरि गुण्य-सात, गुणकार-आठ, क्षेप-दश, भंग-छयासठि हैं।

बहुरि मिश्र विषैं मिश्र के ज्ञान, दर्शन, लब्धि– ए तीन ; औदयिक के सात ; पारिणामिक का भव्यरूप एक जातिपद है। तहां गुण्य सात, प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-च्यारि ; दोय-संयोगी-भंग विषैं गुणकार-च्यारि, क्षेप-तीन ; तीन-संयोगी भंग विषैं गुणकार-तीन ; स्वसंयोगी-भंग विषैं क्षेप-तीन, मिलिकरि गुण्य-सात, गुणकार-आठ, क्षेप-दश, भंग-छयासठि हैं।

बहुरि असंयत विषैं उपशमक का एक-सम्यक्त्व, क्षायिक का एक-सम्यक्त्व ; मिश्र के तीन-ज्ञान, दर्शन, लब्धि, औदयिक के सात ; पारिणामिक का एक भव्यरूप जाति-पद हैं। तहां गुण्य-सात, प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-सात ; दोय-संयोगी विषैं गुणकार-सात, क्षेप-बारह ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-बारह, क्षेप-छह ; च्यारि संयोगी विषैं गुणकार-छह ; पांच-संयोगी का अभाव है ; जातैं क्षायिक-सम्यक्त्व, उपशम-सम्यक्त्व का संयोग नाहीं। स्वसंयोगी विषैं क्षेप-तीन, मिलिकरि गुण्य-सात, गुणकार-छब्बीस, क्षेप-अठाईस, भंग-दोयसै दश हैं।

बहुरि देश-संयतादि तीन विषैं उपशमक का एक-सम्यक्त्व अर क्षायिक का एक-सम्यक्त्व अर मिश्र के च्यारि-ज्ञान, दर्शन, लब्धि, वेदक ; चारित्र अर औदयिक के छह अर पारिणामिक का एक भव्यत्व– ऐसैं जातिपद हैं। तहां गुण्य-छह, प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार एक, क्षेप-आठ ; दोय संयोगी विषैं गुणकार-आठ, क्षेप-पंद्रह ; तीन-संयोगी, विषैं गुणकार-पंद्रह, क्षेप-आठ ; च्यारि संयोगी विषैं गुणकार-आठ, स्वसंयोगी विषैं क्षेप-तीन, मिलिकरि गुण्य-छह, गुणकार-बत्तीस, क्षेप-चौंतीस, भंग-दोयसै छबीस हैं।

बहुरि उपशम-श्रेणी विषैं अपूर्वकरण अर वेद सहित-अनिवृत्तिकरण विषैं औपशमिक के दोय-सम्यक्त्व, चारित्र, अर क्षायिक का एक-सम्यक्त्व अर मिश्र के तीन-ज्ञान, दर्शन, लब्धि, अर औदयिक के छह अर पारिणामिक का एक भव्यत्व– ऐसैं जातिपद हैं। तहां गुण्य छह ; प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-सात ; दोय-संयोगी विषैं गुणकार-सात, क्षेप-सोलह ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-सोलह, क्षेप-तेरह ; च्यारि संयोगी विषैं गुणकार-तेरह, क्षेप-तीन ; पंच-संयोगी विषैं गुणकार-तीन ; इहां क्षायिक-सम्यक्त्व होतैं उपशम-चारित्र पाइए हैं ; तातैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पंच-संयोगी भी हैं। स्वसंयोगी विषैं क्षेप तीन, मिलिकरि गुण्य-छह, गुणकार-चालीस, क्षेप-बियालीस, भंग-दोयसै बियासी हैं।

बहुरि वेदरहित अनिवृत्तिकरण अर सूक्ष्मसांपराय विषैं उपशम के दोय– सम्यक्त्व अर चारित्र, अर क्षायिक का एक-सम्यक्त्व अर मिश्र के तीन– ज्ञान, दर्शन, लब्धि अर औदयिक के पांच अर पारिणामिक का एक भव्यत्व– असैं जातिपद हैं। इहां गुण्य-पांच, प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-सात ; दोय संयोगी विषैं गुणकार-सात क्षेप-सोलह ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-सोलह, क्षेप-तेरह, च्यारि-संयोगी विषैं गुणकार-तेरह, क्षेप-तीन, पांच-संयोगी विषैं गुणकार-तीन ; स्वसंयोगी विषैं क्षेप-तीन, मिलिकरि गुण्य-पांच, गुणकार-चालीस, क्षेप-बियालीस, भंग-दोयसै बियालीस हैं। इहां कषाय का जातिपद एक ग्रह्या ; तातैं कषाय रहित भागनि के विशेष न कीए।

बहुरि उपशांत-कषाय विषैं भी सूक्ष्मसांपरायवत् जातिपद हैं। विशेष इतना-औदयिक के च्यारि ही हैं। तहां गुण्य-च्यारि, गुणकार अर क्षेप पूर्वोक्त प्रकार चालीस, बियालीस हैं ; भंग-दोयसै दोय हैं।

बहुरि क्षपकश्रेणी विषैं अपूर्वकरण वा वेदसहित-अनिवृत्तिकरण विषैं क्षायिक के दोय-सम्यक्त्व अर चारित्र अर मिश्र के तीन-ज्ञान, दर्शन, लब्धि ; औदयिक के छह अर पारिणामिक का एक भव्यत्व– असैं जातिपद हैं। तहां गुण्य छह ; प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-छह, दोय-संयोगी विषैं गुणकार-छह, क्षेप-ग्यारह ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-ग्यारह, क्षेप-छह ; च्यारि-संयोगी विषैं गुणकार-छह ; स्वसंयोगी विषैं क्षेप-तीन मिलिकरि गुण्य-छह, गुणकार-चौईस, क्षेप-छब्बीस, भंग-एकसौ सत्तरि हैं।

बहुरि वेद रहित अनिवृत्तिकरण वा सूक्ष्म-सांपराय विषैं भी अपूर्वकरणवत् जातिपद हैं। विशेष इतना-इहां औदयिक के पांच ही हैं ; तातैं तहां गुण्य-पांच, गुणकार-चौईस, क्षेप-छब्बीस, भंग-एकसौ छियालीस हैं।

बहुरि क्षीणकषाय विषैं भी तैसैं ही जातिपद हैं। विशेष इतना– इहां औदयिक के च्यारि ही हैं ; तातैं गुण्य-च्यारि, गुणकार-चौईस, क्षेप-छब्बीस, भंग-एकसौ बावीस हैं।

बहुरि संयोगी विषैं क्षायिक के पांच-ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र, लब्धि ; औदयिक के तीन, पारिणामिक का एक भव्यत्व– असैं जातिपद हैं। तहां गुण्य-तीन ; प्रत्येक-भंग विषैं गुणकार-एक, क्षेप-छह ; दोय-संयोगी विषैं गुणकार-छह, क्षेप-पांच ; तीन-संयोगी विषैं गुणकार-पांच ; स्वसंयोगी विषैं कोई एक क्षायिक-लब्धि विषैं अन्य क्षायिक-लब्धि पाइए ; तातैं क्षेप-एक, मिलिकरि गुण्य-तीन, गुणकार-बारह, क्षेप-बारह, भंग-अठतालीस हैं।

बहुरि अयोगी विषैं भी सयोगीवत् जातिपद हैं। विशेष इतना-इहां औदयिक के दोय ही हैं ; तातैं गुण्य-दोय, गुणकार-बारह, क्षेप-बारह, भंग-छत्तीस हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि सिद्धि विषैं क्षायिक के च्यारि-सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, वीर्यरूप-लब्धि अर पारिणामिक का एक जीवत्व जातिपद है। तहां प्रत्येक भंग विषैं क्षेप-पांच ; द्विसंयोगी विषैं क्षेप-च्यारि मिलिकरि नव-भंग भए॥ ८४८ ॥

आगैं ए कहे जे गुण्यादिक, तिनकी संख्या कहैं हैं—

अट्ठ गुणिज्जा वामे, तिसु सग छच्चउसु छक्क पणगं च।
थूले सुहुमे पणगं, दुसु चउतियदुगमदो सुण्णं॥ ८४९ ॥

अष्ट गुण्यानि वामे, त्रिषु सप्त षट् चतुर्षु षट्कं पंचकं च।
स्थूले सूक्ष्मे पंचकं, द्वयोश्चतुस्त्रिकद्विकमतः शून्यं॥ ८४९ ॥

टीका — जिनकौं गुणिए अैसें गुण्य, ते मिथ्यादृष्टि विषैं आठ, सासादनादि तीन विषैं, देशसंयतादि तीन वा क्षपक-उपशमक-अपूर्वकरण विषैं छह, अनिवृत्तिकरण विषैं छह वा पांच, सूक्ष्मसांपराय विषैं पांच, उपशांत-कषाय, क्षीणकषाय विषैं च्यारि, संयोगी विषैं तीन, अयोगी विषैं दोय, सिद्ध विषैं शून्य जानने॥ ८४९ ॥

बारट्ठट्ठछवीसं, तिसु तिसु बत्तीसयं च चउवीसं।
तो तालं चउवीसं, गुणगारा बार बार णभं॥ ८५० ॥

द्वादशाष्टाष्ट षड्विंशं, त्रिषु त्रिषु द्वात्रिंशत्कं च चतुर्विंशं।
अतश्चत्वारिंशच्चतुर्विंशं, गुणकारा द्वादश द्वादश नभः॥ ८५० ॥

टीका - जिनकरि गुणिए अैसे गुणकार, मिथ्यादृष्टि विषैं बारह, सासादनादि दोय विषैं आठ-आठ, असंयत विषैं छब्बीस, देशसंयतादि तीन विषैं बत्तीस, क्षपक-अपूर्वकरणादि तीन विषैं चौबीस, उपशमक-अपूर्वकरणादि च्यारि विषैं चालीस, क्षीणकषाय विषैं चौईस, सयोगी-अयोगी विषैं बारह, सिद्ध विषैं शून्य जानने॥ ८५० ॥

वामे चउदस दुसु दस, अडवीसं तिसु हवंति चोत्तीसं।
तिसु छव्वीस दुदालं, खेवा छव्वीस बार बार णवं॥ ८५१ ॥

वामे चतुर्दश द्वयोः दश, अष्टाविंशं त्रिषु भवंति चतुस्त्रिंशत्।
त्रिषु षड्विंशं द्विचत्वारिंशत्क्षेपाः षड्विंशं द्वादश द्वादश नव॥ ८५१ ॥

टीका — जिनकौं मिलाइए अैसे क्षेप, मिथ्यादृष्टि विषैं चौदह, सासादन-मिश्र विषैं दश, असंयत विषैं अठाईस, देशसंयतादि तीन विषैं चौंतीस, क्षपक-अपूर्वकरणादि तीन विषैं छबीस, उपशमक-अपूर्वकरणादि च्यारि विषैं वियालीस, क्षीणकषाय विषैं छबीस, सयोगी-अयोगी विषैं बारह-बारह, सिद्ध विषैं नव जानने॥ ८५१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक्कारं दसगुणियं, दुसु छावट्ठी दसाहियं बिसयं।
तिसु छव्वीसं बिसयं, वेदुवसामोत्ति दुसय बासीदी॥ ८५२॥

एकादश दशगुणितं, द्वयोः षट्षष्टिः दशाधिकं द्विशतं।
त्रिषु षड्विंशं द्विशतं, वेदोपशम इति द्विशतं द्वयशीतिः॥ ८५२॥

टीका – गुण्य कौं गुणकारकरि गुणैं क्षेप कौं मिलाएं, भंग, मिथ्यादृष्टि विषैं एकसौ दश, सासादन ; मिश्र विषैं छ्यासठि, असंयत विषैं दश अधिक दोय से, देशसंयतादि तीन विषैं छबीस अधिक दोयसै, उपशमक-अपूर्वकरण, सवेद अनिवृत्तिकरण विषैं दोयसै बियासी हैं॥ ८५२॥

बादालं बेण्णिसया, तत्तो सुहुमोत्ति दुसय दोसहियं।
उवसंतम्मि य भंगा, खवगेसु जहाकमं वोच्छं॥ ८५३॥

द्वाचत्वारिंशद्द्विशतं, ततः सूक्ष्म इति द्विशतं द्विसहितं।
उपशांते च भंगाः, क्षपकेषु यथाक्रमं वक्ष्यामि॥ ८५३॥

टीका – तातैं ऊपरि उपशमक-वेदरहित-अनिवृत्तिकरण-सूक्ष्मसांपराय विषैं दोसै बियालीस, उपशांतकषाय विषैं दोयसै दोय-भंग हैं॥ ८५३॥

अब क्षपक विषैं यथाक्रम कहों हों–

सत्तरसं दसगुणिदं, वेदित्ति सयाहियं तु छादालं।
सुहुमोत्ति खीणमोहे, बावीससयं हवे भंगा॥ ८५४॥

सप्तदश दशगुणितं, वेद इति शताधिकं तु षट्चत्वारिंशत्।
सूक्ष्म इति क्षीणमोहे, द्वाविंशशतं भवेयुर्भंगाः॥ ८५४॥

टीका – अपूर्वकरण, सवेद्-अनिवृत्तिकरण विषैं दश गुणे सतरह, तिनके एकसौ सत्तरि, वेदरहित-अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म-सांपराय विषैं एकसौ छियालीस, क्षीणकषाय विषैं एकसौ बाईस-भंग हैं॥ ८५४॥

अडदालं छत्तीसं, जिणेसु सिद्धेसु होंति णव भंगा।
एत्तो सव्वपदं पडि, मिच्छादिसु सुणह वोच्छामि॥ ८५५॥

अष्टचत्वारिंशत्, षट्त्रिंशत् जिनेषु सिद्धेषु भवंति नव भंगाः।
एतस्मात्सर्वपदं प्रति, मिथ्यादिषु श्रृणुत वक्ष्यामि॥ ८५५॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सयोगी विषैं अठतालीस, अयोगी विषैं छत्तीस, सिद्ध विषैं नव-भंग हैं ॥ ८५५ ॥

इहां तैं आगैं सर्व-पदनि कौं आश्रयकरि मिथ्यादृष्ट्यादि विषैं भंग कहों हों, तुम सुनहु–

भव्विदराणण्णदरं, गदीण लिंगाण कोहपहुदीणं।
इगिसमये लेस्साणं, सम्मत्ताणं च णियमेण॥ ८५६ ॥

भव्येतरयोरन्यतरत्, गतीनां लिंगानां क्रोधप्रभृतीनां।
एकसमये लेश्यानां, सम्यक्त्वानां च नियमेन॥ ८५६ ॥

टीका – ते सर्वपद दोयप्रकार हैं– पिंडपद , प्रत्येकपद । तहां जिस भाव-समूह, एकैं कालि, एक जीव कैं एक-एक ही संभवै, सर्व न संभवै ; जैसैं च्यारों-गति विषैं एक जीव कैं, एकै-काल विषैं, एक-गति ही संभवै, च्यारों न संभवै, तिस भाव-समूह कौं पिंडपद कहिए। बहुरि जे भाव, एक-जीव कैं, एक-काल विषैं, युगपत् भी संभवै, अैसे भाव, तिनकौं प्रत्येकपद कहिए। तहां भव्य-अभव्य अर गति अर लिंग अर क्रोधादिक च्यारि अर लेश्या अर सम्यक्त्व– ए पिंडपद हैं, सो इनविषैं एक-कालि, एक-जीव कैं, गुणस्थाननि विषैं, यथायोग्य एक-एक ही, नियम करि युगपत् संभवै है ॥ ८५६ ॥

पत्तेयपदा मिच्छे, पण्णरसा पंच चेव उवजोगा।
दाणादी ओदयिये, चत्तारि य जीवभावो य॥ ८५७॥

प्रत्येकपदानि मिथ्ये, पंचदश पंच चैव उपयोगाः।
दानादय औदयिके, चत्वारि च जीवभावश्च॥ ८५७॥

टीका – युगवत् संभवै अैसे प्रत्येकपद, मिथ्यादृष्टि विषैं पंद्रह ही हैं। ते कौन ? तीन अज्ञान, दोय दर्शन– ए पांच उपयोग अर दानादिक पांच क्षयोपशम-लब्धि अर औदयिक विषैं मिथ्यात्व, अज्ञान, असंयम, असिद्धत्व–' ए च्यारि अर जीवत्व-पारिणामिक– ऐसैं पंद्रह जानने ॥८५७ ॥

पिंडपदा पंचेव य, भव्विदरदुगं गदी य लिंग च।
कोहादी लेस्सावि य, इदि वीसपदा हु उड्ढेण॥ ८५८ ॥

पिंडपदानि पंचैव च, भव्येतरद्विकं गतिश्च लिंगं च।
क्रोधादयः लेश्या अपि च, इति विंशपदानि हि वृद्धया॥ ८५८ ॥

टीका – तिन पंद्रह-प्रत्येकपदनि के ऊपरि पिंडपद, मिथ्यादृष्टि विषैं पांच हैं, ते कौंन ? भव्य-अभव्य युगल अर गति अर लिंग, अर क्रोधादि अर लेश्या– अैसैं पांच हैं, मिलिकरि बीस-पद भए। ते ऊर्ध्वरूप ऊपरि-ऊपरि स्थापन करने ॥ ८५८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पत्तेयाणं उवरिं, भव्विदरदुगस्स होदि गदिलिंगे।
कोहादिलेस्ससम्मत्ताणं रयणा तिरिच्छेण॥ ८५९ ॥

प्रत्येकानामुपरि, भव्येतरद्विकस्य भवति गतिलिंगयोः।
क्रोधादिलेश्यासम्यक्त्वानां रचना तिरश्चा॥ ८५९ ॥

टीका – प्रत्येक-पदनि के ऊपरि जिनका स्थापन पाइए– असे भव्य-अभव्य अर गति अर लिंग, अर क्रोधादिक अर लेश्या अर सम्यक्त्व, तिनकी रचना तिर्यग् रूप बरोबरि करनी।

भावार्थ असा–जो नीचैं तो प्रत्येक-पद ऊपरि लिखने। तिनके ऊपरि मूल-पिंडपद ऊपरि-ऊपरि लिखने। तहां अपने-अपने पिंड-पद के भेद आगैं-आगैं बरोबरि लिखने, सो रचना आगैं लिखैंगे, तहां देखिलेने॥ ८५९ ॥

एक्कादी दुगुणकमा, एक्केक्कं रुधिऊण हेट्ठम्मि।
पदसंजोगे भंगा, गच्छं पडि होंति उवरुवरिं॥ ८६० ॥

एकादि द्विगुणक्रमा, देकैकं रुद्ध्वा अधस्तने।
पदसंयोगे भंगा, गच्छं प्रति भवंत्युपर्युपरि॥ ८६० ॥

टीका – एक तैं लगाय दूणे-दूणे अनुक्रम तैं एक-एक पद का अवलंबनकरि नीचले-नीचले पदनि के संयोग तैं गच्छ जो जेथवां पद होइ, ताका प्रमाण तीहि प्रति ऊपरि-ऊपरि भंग हो हैं। सोई कहिए है–

मिथ्यादृष्टि विषैं प्रत्येकपद नीचैं ही नीचैं कुमति स्थाप्या, तिस विषैं प्रत्येक-भंग एक ही है। बहुरि ताके ऊपरि कुश्रुत, तिस विषैं प्रत्येक-भंग एक अर याके नीचैं कुमति, ताका संयोग कीएं दोय-संयोगी भंग एक– असैं दोय-भंग भए। बहुरि ताके ऊपरि विभंग, तिस विषैं प्रत्येक-भंग एक अर याके नीचले कुश्रुत वा कुमति का संयोग तैं दोय-संयोगी-भंग दोय। बहुरि तीनूं का संयोग तैं तीन-संयोगी-भंग एक– असैं च्यारि-भंग भए। बहुरि ताके ऊपरि चक्षु-दर्शन, तिसविषैं प्रत्येक-भंग एक अर याके नीचले विभंग, कुश्रुत, कुमति, तिनका संयोग तैं, चक्षुदर्शन तैं कीए दोय-संयोगी-भंग तीन अर चक्षु, कुमति, कुश्रुत वा चक्षु, कुमति, विभंग वा चक्षु, कुश्रुत, विभंग का संयोग तैं तीन-संयोगी-भंग तीन। बहुरि च्यार्यो के संयोग तैं च्यारि-संयोगी-भंग एक– असैं आठ भए।

बहुरि ताके ऊपरि अचक्षुदर्शन, तिस विषैं प्रत्येक-भंग एक अर याके नीचले चक्षुदर्शन, विभंग, कुश्रुत, कुमति, तिनका संयोग क्रम तैं अचक्षु-दर्शन तैं कीएं दोय-संयोगी-भंग च्यारि। बहुरि अचक्षु, चक्षु, कुमति वा अचक्षु, चक्षु, कुश्रुत वा अचक्षु, चक्षु, विभंग वा अचक्षु, कुमति, कुश्रुत वा अचक्षु, कुमति, विभंग वा अचक्षु, कुश्रुत, विभंग के संयोग तैं तीन-संयोगी-भंग छह।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि अचक्षु, चक्षु, कुमति, कुश्रुत वा अचक्षु, चक्षु कुमति, विभंग वा अचक्षु, चक्षु, कुश्रुत, विभंग वा अचक्षु कुमति, कुश्रुत, विभंग के संयोग तैं च्यारि-संयोगी-भंग च्यारि। बहुरि अचक्षु, चक्षु, विभंग, कुश्रुत, कुमति– इनि पंचनि के संयोग तैं पंच-संयोगी-भंग एक– मिलिकरि सोलह भए।

याही प्रकार ताके ऊपरि दान-लब्धि, तिसविषैं प्रत्येक-भंग एक अर बहुरि याके नीचले चक्षु आदि, तिनके संयोग तैं दोय-संयोगी-भंग पांच, तीन-संयोगी दश, च्यारि-संयोगी दश, पांच-संयोगी पांच, छह-संयोगी एक, मिलिकरि बत्तीस-भंग भए।

अैसैं ही ऊपरि-ऊपरि एक-एक पद प्रति दूणे-दूणे भंग होंहि, तिनि विषैं प्रत्येक-भंग तौ एक अर दोय-संयोगी आदि भंग नीचले भावनि के संयोग के बदलने तैं जितने-जितने होंहिं, तितने-तितने जानने। सो लाभ-लब्धि विषैं चौसठि, भोग विषैं एकसौ अठाईस, उपभोग विषैं दोयसै छप्पन, वीर्य विषैं पांचसै बारह, मिथ्यात्व विषैं एक हजार चौईस, अज्ञान विषैं दोय हजार अठतालीस, असंयम विषैं च्यारि हजार छिनवै, असिद्धत्व विषैं इक्यासीसै बाणवै, जीवत्व विषैं सोलह हजार तीनसै चौरासी-भंग होंहि।

तहां पंद्रह्वां जीव-पद विषैं इतने भंग कैसैं होंइ, सो कहिए है–

प्रत्येक-भंग तौ एक, बहुरि दोय-संयोगी अर चौदह-संयोगी चौदह-चौदह हैं। बहुरि तीन संयोगी अर तेरह-संयोगी-भंग, दोय घाटि गच्छ प्रमाण का एकबार संकलनमात्र हैं, सो इक्याणवै-इक्याणवै हैं। बहुरि च्यारि-संयोगी अर बारह-संयोगी भंग, तीन घाटि गच्छ का दोयवार संकलनमात्र हैं, ते तीनसै इकसठि-तीनसै इकसठि हैं। बहुरि पांच-संयोगी अर ग्यारह-संयोगी भंग च्यारि घाटि गच्छ का तीनबार संकलनमात्र हैं। ते एक हजार एक, एक हजार एक भंग हैं। बहुरि छह-संयोगी अर दश-संयोगी भंग, पांच घाटि गच्छ का च्यारिवार संकलनमात्र हैं, ते दोय हजार दोय, दोय हजार दोय भंग हैं। बहुरि सात-संयोगी अर नव-संयोगी भंग, छह घाटि गच्छ का पांच बार संकलन मात्र हैं, ते तीन हजार तीन, तीन हजार तीन भंग हैं। बहुरि आठ संयोगी भंग, सात घाटि गच्छ का छहवार संकलन-मात्र हैं, ते चौंतीससे बत्तीस-भंग हैं।

अैसैं सर्व मिलि पंद्रह्वां-जीवपद विषैं सोलह हजार तीनसै चौरासी-भंग जानने। सो पण्णट्ठी का चौथा भाग भया; जातैं पैंसठि हजार पांच से छत्तीस रूप प्रमाण की पण्णट्ठी अैसी संज्ञा है।

इहां एक-बार, दोय-बार आदि संकलन का विधान वा भंग ल्यावने का विधान, जैसैं जीवकांड का ज्ञानाधिकार विषैं पर्याय-समास श्रुतज्ञान का वर्णन करते पत्तेयभंगमेगं, इत्यादि सूत्र करि कह्या था, तैसैं इहां भी जानना। सो इहां जीव-पद पंद्रह्वां हैं; तातैं गच्छ का प्रमाण पंद्रह जानना। तहां दोय घाटि गच्छ का एकबार संकलन करने कौं पूर्वोक्त सूत्र अनुसारि तेरह, चौदह कौं परस्पर गुणि, ताकौं दोय, एक कौं परस्पर गुणि, ताका भाग दीए इक्याणवै हो हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि तीन घाटि गच्छ का दोयबार संकलन करने कौं बारह, तेरह, चौदह कौं परस्पर गुणि, ताकौं तीन, दोय, एक कौं परस्पर गुणि, ताका भाग दीए तीनसै चौसठि हो हैं। बहुरि च्यारि घाटि गच्छ का तीनबार संकलन करने कौं ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह कौं परस्पर गुणि, ताकौं च्यारि, तीन, दोय, एक कौं परस्पर गुणि, ताका भाग दीएं एक हजार एक हो है। बहुरि पांच बार गच्छ का च्यारिबार संकलन करने कौं दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह कौं परस्पर-गुणि, ताकौं पांच, च्यारि, तीन, दोय, एक कौं परस्पर-गुणि, ताका भाग दीए दोय हजार दोय हो हैं।

बहुरि छह घाटि गच्छ का पांचबार संकलन करने कौं नव, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह कौं परस्पर गुणि, ताकौं छह, पांच, च्यारि, तीन, दोय, एक कौं परस्पर गुणि, ताका भाग दीए तीन हजार तीन हो हैं। बहुरि सात घाटि गच्छ का छहबार संकलन ल्यावने कौं आठ, नव, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह कौं परस्पर गुणि, ताकौं सात, छह, पांच, च्यारि, तीन, दोय, एक कौं परस्पर गुणि, ताका भाग दीए चौंतीससै बत्तीस हो हैं, असैं विधान जानना ॥ ८६० ॥

आगैं भंगनि के मिलावने के अर्थि संकलन सूत्र कहैं हैं—

इट्ठपदे रुऊणे, दुगसंवग्गम्मि होदि इट्ठधणं।
असरित्थाणंतधणं, दुगुणेगूणे सगीयसव्वधणं॥ ८६१ ॥

इष्टपदे रूपोने, द्विकसंवर्गे भवतीष्टधनं।
असदृशानामंतधनं, द्विगुणे एकोने स्वकीयसर्वधनं॥ ८६१ ॥

टीका – विवक्षित जेथवां पद होहि, तामैं एक घटाएं जितने रहैं, तितने दूवे माडि परस्पर गुणैं, विवक्षित पद विषैं भंगनि का प्रमाणरूप इष्टधन होइ। जैसैं जीवपद पंद्रह का है, तामैं एक घटाएं चौदह भए सो चौदह जायगा दूवे माडि परस्पर गुणैं सोलह हजार तीनसै चौरासी भए, सो इतने ही जीवपद विषैं भंग हैं। बहुरि तिस इष्टधन कौं दूणाकरि, तामैं एक घटाएं जो प्रमाण होइ, तितना प्रथम-पद तैं लगाय विविक्षित-पद पर्यंत, सर्व पदनि के भंगनि का जोडरूप सर्व-धन हो है।

जैसैं विवक्षित जीवपद पंद्रह्वां, ताका इष्ट-धन पण्णट्ठी का चौथा-भाग, ताकौं दूणा करि, तामैं एक घटाएं प्रथमपद तैं पंद्रह्वां-पद पर्यंत सर्वपदनि के भंगनि का जोडरूप प्रमाण हो हैं। बहुरि जो जीवपद विषैं इष्ट-धन कह्या, ताका दूणा आधा पण्णट्ठी प्रमाण, भव्य-भाव के भंग हो हैं अर इतने ही अभव्य-भाव के भंग हो हैं। मिलिकरि दोऊनि के पण्णट्ठी प्रमाण-भंग हो हैं। बहुरि इनकौं दूणे कीजिये, तब एक-गति के भंग होंहि, सो नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवगति के इतने-इतने भंग जानने। च्यारूं गति के भंग जोडें पण्णट्ठी तैं आठ-गुणे भए। बहुरि एकगति के, पण्णट्ठी तैं दूणे भंग कहे, तिनकौं दूणे किएं एक लिंग के भंग होइ, तिनकौं नरक-गति विषैं एक लिंग, तिर्यंच विषैं तीनलिंग, मनुष्य विषैं तीन-लिंग, देव विषैं दोय-लिंग—मिलिकरि नव भए, तिनिकरि गुणे पण्णट्ठी तैं छत्तीस-गुणें भंग भए।

बहुरि एक लिंग के पण्णट्ठी तैं चौगुणे-भंग, तिनकौं दूणे कीएं एक-कषाय के भंग होंहि, तिनकौं नरकगति विषैं एकलिंग सहित च्यारि-कषाय, तहां च्यारि करि गुणैं ; तिर्यंच विषैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तीन-लिंग सहित च्यारि-कषाय, तहां बारह करि गुणै; मनुष्य विषैं तीन-लिंगसहित च्यारि-कषाय, तहां बारह करि गुणैं; देव विषैं दोय-लिंग सहित च्यारि-कषाय, तहां आठकरि गुणैं भंग होहिं; सो मिलिकरि छत्तीस करि पण्णट्ठी तैं आठगुणे भंगनि कौं गुणैं पण्णट्ठी तैं दोयसै अठ्यासी गुणे भंग भए।

बहुरि एक-कषाय के पण्णट्ठी तैं आठ-गुणे भंग, तिनकौं दूणे कीएं एक लेश्या के भंग होंहि, तिनकौं नरक विषैं एकलिंग, च्यारि-कषाय सहित तीनलेश्या, तहां बारह करि गुणैं; तिर्यंच विषैं तीन-लिंग च्यारि-कषाय सहित छह लेश्या, तहां बहत्तरिकरि गुणैं; मनुष्य विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्या, तहां बहत्तरि करि गुणैं, देव विषैं दोय-लिंग, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्या, तहां अठतालीस-करि गुणैं भंग होंहि— मिलिकरि दोयसै च्यारि करि पण्णट्ठी तैं सोलह-गुणे भंगनि कौं गुणैं पण्णट्ठी तैं बत्तीससै चौसठि गुणैं-भंग हो हैं, सर्व मिलि पिंडपदनि के भंग १ । ८ । ३६ । २८८ । ३२६४ । पण्णट्ठी तैं पैंतीससै सत्याणवैं गुणे हो हैं। इनिविषैं नीचले प्रत्येक-पदनि के भंग एक घाटि पण्णट्ठी तैं आधे कहे थे, तिनकौं मिलाएं मिथ्यादृष्टि विषैं सर्वपदभंग पण्णट्ठी कौं सात हजार एकसौ पिच्याणवै का आधा प्रमाण करि गुणि, तामैं एक घटाएं जो प्रमाण होइ, तितने भंग हो हैं।

मिथ्यादृष्टि विषैं प्रत्येकपद-पिंडपदनि की रचना, इहां पण्णट्ठी की संदृष्टि ऐसी ६५ =				
नरकलिंग १ क ४ ले ३ भंग ६५ = १६	तिर्यंचलिं ३ क ४ ले ६ भंग ६५ = १६	मनुष्य लिं ३ क ४ ले ६ भंग ६५ = १६	देवलिंग २ क. ४ ले ६ भंग ६५ = १६	भंग ६५ = ३२ ६४
नरकलिंग १ क ४ भंग ६५ = ८	तिर्यंच लिं ३ क ४ भंग ६५ = ८	मनुष्य लिं ३ क ४ भंग ६५ = ८	देवलिंग २ क ४ भंग ६५ = ८	भंग ६५ = २८८
नरकलिंग १ भंग ६५ = ४	तिर्यंच लिंग ३ भंग ६५ = ४	मनुष्य लिं ३ भंग ६५ = ४	देवलिंग २ भंग ६५ = ४	भंग ६५ = ३६
नरकगति भंग ६५ = २	तिर्यंच भंग ६५ = २	मनुष्य भंग ६५ = २	देव, भंग ६५ = २	भंग ६५ = ८
	भव्यत्व भंग ६५ = २	अभव्य ६५ = २	भंग ६५	

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जीव १६३८४	अ ८१९२	अ ४०९६	अ २०४८	मि १०२४	वी ५१२	उ २५६	भो १२८	ला ६४	दा ३२	अ १६	च ८	वि ४	कुश्रु २	कुम १

इनकी ऊर्ध्व, तिर्यक् लिखने की रचना दिखाइए है– प्रत्येकपद तौ कुमति आदि नीचै लिखने। तिनके ऊपरि भव्य-अभव्य बरोबरि लिखने। तिनके ऊपरि च्यारिगति बरोबरि लिखनी। तिनके ऊपरि लिंग यथासंभव बरोबरि लिखने। तिनके ऊपरि च्यारि-च्यारि कषाय बरोबरि लिखने। तिनके ऊपरि लेश्या यथासंभव बरोबरि लिखनी ऐसैं इनकी रचना करनी।

बहुरि जैसैं मिथ्यादृष्टि विषैं भंग वा रचना का विधान कह्या, तैसैं ही सासादनादि विषैं यथासंभव भंग वा रचना का विधान जानना। तहां सासादन विषैं मिथ्यात्व प्रत्येक-पद का तौ अभाव है अर भव्य-अभव्य पिंडपद कह्या था, सो इहां अभव्यत्व का अभाव है ; तातैं प्रतिपक्षी के अभाव तैं भव्यत्व कौं भी प्रत्येक-पद कहिए, ऐसे प्रत्येकपद पंद्रह, पिंडपद च्यारि हैं। तहां पूर्वोक्त प्रकार कुमति १, कुश्रुत २, विभंग ४, चक्षु ८, अचक्षु १६, दान ३२, लाभ ६४, भोग १२८, उपभोग २५६, वीर्य ५१२, अज्ञान १०२४, असंयम २०४८, असिद्धत्व ४०९६, जीवत्व ८१९२, भव्यत्व १६३८४ इनके दूणे-दूणे भंग जानने।

तहां भव्यत्व के पण्णट्ठी का चौथा-भाग प्रमाण भंग भए, तिनकौं दूणे-दूणे कीएं पण्णट्ठी के आधे एक गति के भंग होंहिं। तिनकौं चौगुणे कीएं च्यारिगति के भंग मिलि पण्णट्ठी तैं दूणे होंहि। बहुरि एक-गति के भंग दूणे कीएं पण्णट्ठी प्रमाण एक-लिंग के होंहि, तिनकौं नरक विषैं एक, तिर्यंच विषैं तीन, मनुष्य विषैं तीन, देव विषैं दोय-लिंगनि करि गुणै मिलिकरि पण्णट्ठी तैं नौगुणें भंग भए। बहुरि एक लिंग के भंगनि तैं दूणे एक-कषाय के भंग पण्णट्ठी तैं दूणे होंहि, तिनकौं नरकविषैं एक वेदसहित च्यारि-कषाय, तिर्यंच विषैं तीन-वेदसहित च्यारि-कषाय, मनुष्य विषैं तीन-वेदसहित च्यारि-कषाय, देवविषैं दोय-वेदसहित च्यारि-कषाय करि गुणैं मिलिकरि पण्णट्ठी कौं दूणे करि छत्तीस-गुणेकरि इतने भंग भए।

बहुरि एक-कषाय के भंगनि तैं दूणे एक-लेश्या के पण्णट्ठी तैं चौगुणे-भंग होंहि। तिनकौं नरक विषैं एक-लिंग, च्यारि-कषाय सहित तीन-लेश्या, तिर्यंच विषैं तीन-वेद, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्या ; मनुष्य विषैं तीन-वेद, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्या ; देव विषैं दोय-वेद, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्यानिकरि गुणैं– मिलिकरि पण्णट्ठी कौं चौगुणे करि दोय सै च्यारि गुणे करिए। इतने पण्ण्ट्ठी तैं आठसै सोलह गुणें भंग भए। ऐसैं प्रत्येकपद-पिंडपदनि के मिलिकरि सासादन विषैं पण्णट्ठी कौं सतरहसै निन्याणवै का आधाकरि गुणिए, तामें एक घटाइए इतने सर्वपद-भंग भए।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मिश्रविषैं प्रत्येकपद मिश्ररूप मति १, श्रुत २, अवधिज्ञान ४, अर चक्षु ८, अचक्षु १६, अवधिदर्शन ३२, दान ६४, लाभ १२८, भोग २५६, उपभोग ५१२, वीर्य-लब्धि १०२४, अज्ञान २०४८, असंयम ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, जीवत्व १६३८४, भव्यत्व ३२७६८ हैं, तिनविषैं दूणे-दूणे भंग जानने। बहुरि पिंडपद—गति, लिंग, कषाय, लेश्या हैं।

तहां भव्यत्व के पण्णट्ठी तैं आधे भंग, तिनकौं दूणे कीएं एक गति के होंहि, नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव च्यारि गति के मिलिकरि पण्णट्ठी तैं चौगुणे होंहि। बहुरि एक गति के भंगनि तैं दूणे, एक लिंग के पण्णट्ठी तैं दूणे भंग होंहि, तिनकौं नरक विषैं एक, तिर्यंच विषैं तीन मनुष्य विषैं तीन, देव विषैं दोय-लिंगनिकरि गुणैं, मिलिकरि पण्णट्ठी कौं दूणेकरि नव गुणे करिए इतने भंग होंहि।

बहुरि एक लिंग के भंगनि तैं दूणे एक-कषाय के भंग पण्णट्ठी तैं चौगुणे होंहि, तिनकौं नरक विषैं एक वेदसहित च्यारि-कषाय, तिर्यंच विषैं तीन-वेदसहित च्यारि-कषाय, मनुष्य विषैं तीन वेद सहित च्यारि-कषाय, देव विषैं दोय-वेदसहित च्यारि-कषायनि करि गुणैं मिलिकरि पण्णट्ठी कौं चौगुणे करि छत्तीस गुणे करिए इतने भंग भए।

बहुरि एक-कषाय के भंगनि तैं दूणे एक-लेश्या के भंग पण्णट्ठी तैं आठगुणे होंहि, तिनकौं नरकविषैं एक-वेद, च्यारि-कषाय सहित तीन-लेश्या ; तिर्यंच विषैं तीन-वेद, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्या ; मनुष्य विषैं तीन-वेद, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्या ; देव विषैं दोय-वेद च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्यानिकरि गुणैं मिलिकरि पण्णट्ठी कौं आठगुणाकरि एकसौ असी गुणा करिए, इतने भंग भए। ऐसैं प्रत्येकपद-पिंडपदनि के मिलिकरि मिश्रविषैं पण्णट्ठी कौं सोलहसै सातकरि गुणि, तामैं एक घटाएं जो प्रमाण होइ, तितने सर्वपद-भंग हो हैं।

बहुरि असंयत विषैं प्रत्येकपद सोलह— मति १, श्रुति २, अवधि ४, चक्षु ८, अचक्षु १६, अवधि ३२, दान ६४, लाभ १२८, भोग २५६, उपभोग ५१२, वीर्य १०२४, अज्ञान २०४८, असंयम ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, जीवत्व १६३८४, भव्यत्व ३२७६८ हैं। तिनविषैं दूणे-दूणे भंग जानने। बहुरि पिंडपद च्यारि पूर्वोक्त अर एक सम्यक्त्व— ऐसैं पांच हैं।

तिनविषैं भव्यत्व विषैं पण्णट्ठी तैं आधे भंग भए, तिनकौं दूणे कीएं पण्णट्ठी प्रमाण एक-गति के भंग होंहि, ते प्रत्येक नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवगति के मिलाएं पण्णट्ठी तैं चौगुणे भए। बहुरि एकगति के भंगनि के दूणे एक लिंग के भंग पण्णट्ठी तैं दूणें होंहि, तिनकौं नरक विषैं एक-लिंग, तिर्यंच विषैं तीन-लिंग, मनुष्य विषैं तीन-लिंग, देव विषैं दोय-लिंगकरि गुणै, मिलिकरि पण्णट्ठी कौं दूणा करि नव गुणा करिए, इतने भंग भए।

बहुरि एक-लिंग के भंगनि तैं दूणे एक-कषाय के भंग पण्णट्ठी तैं चौगुणे भए। तिनकौं नरक विषैं एक-लिंगसहित च्यारि-कषाय ; तिर्यंच विषैं तीन-लिंग सहित च्यारि-कषाय, मनुष्य विषैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तीन-लिंगसहित च्यारि-कषाय ; देव विषैं दोय-लिंग सहित च्यारि-कषायनिकरि गुणैं मिलिकरि पण्णट्ठी कौ चौगुणाकरि छत्तीस-गुणाकरिए, इतने भंग भए।

बहुरि एक कषाय के भंगनि तैं दूणे एक-लेश्या के भंग पण्णट्ठी तैं आठगुणे हैं। तिनकौं नरक विषैं एक-लिंग, च्यारि-कषाय सहित तीन-अशुभ लेश्या ; तिर्यंच विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्या ; मनुष्य विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय सहित छह-लेश्या ; देव विषैं दोय लिंग, च्यारि-कषाय सहित तीन-शुभलेश्यानिकरि, मिलिकरि पण्णट्ठी कौं आठ गुणाकरि एकसौ असी गुणा करिए— इतने-भंग भए।

बहुरि एक-लेश्या के भंगनि तैं दूणै एक-सम्यक्त्व के भंग पण्णट्ठी तैं सोलह गुणे हैं। तिनकौं नरक विषैं एक-लिंग, च्यारि-कषाय, तीन-लेश्या ; तिर्यंच विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, छह-लेश्या ; मनुष्य विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, छह-लेश्या ; देव विषैं दोय-लिंग, च्यारि-कषाय, तीन-लेश्यानिकरि गुणै, मिलाए तैं पण्णट्ठी कौं सोलह-गुणाकरि एकसौ असी गुणाकरिए, इतने भंग उपशम-सम्यक्त्व के अर इतने ही भंग वेदकसम्यक्त्व के हैं।

बहुरि क्षायिक-सम्यक्त्व का जुदा कथन है, सो एक-लेश्या के भंगनि तैं दूणे क्षायिक-सम्यक्त्व के भंग पण्णट्ठी तैं सोलह-गुणे हैं। तिनकौं नरक विषैं एकलिंग, च्यारि-कषाय, एक लेश्या ; तिर्यंच विषैं एक-लिंग, च्यारि-कषाय, च्यारि-लेश्या ; मनुष्य विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, छह-लेश्या ; देव विषैं एकलिंग, च्यारि-कषाय, तीन लेश्यानिकरि गुणै मिलिकरिं पण्णट्ठी कौं सोलह-गुणेकरि एकसौ च्यारि गुणे करिए, इतने-भंग भए।

ऐसैं असंयत विषैं प्रत्येकपद-पिंडपदनि के भंग जोडै पण्णट्ठी तैं तिहत्तरिसै सडसठि गुणे एक घाटि सर्वपद भंग हो हैं। क्षायिकसम्यक्त्व कैं पण्णट्ठी तैं सोलहसै चौसठि गुणे भंग हो हैं।

बहुरि देशसंयत विषैं असंयम की जायगा देशसंयम भया ; देव, नरकगति का अभाव भया, तहां प्रत्येकपद सोलह— मति १, श्रुत २, अवधि ४, चक्षु ८, अचक्षु १६, अवधि ३२, दान, ६४, लाभ १२८, भोग २५६, उपभोग ५१२, वीर्य १०२४, अज्ञान २०४८, देशसंयम ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, जीवत्व १६३८४, भव्यत्व ३२७६८ है। तिनके दूणे-दूणे भंग जानने।

बहुरि भव्यत्व विषैं पण्णट्ठी तैं आधे भंग, तिनके दूणे पण्णट्ठी प्रमाण एक गति के भंग हैं, तिनकौं तिर्यंच, मनुष्य दोय-गति करि गुणे पण्णट्ठी तैं दूणे-भंग भए। बहुरि एक गति के भंगनि तैं दूणे एक लिंग के भंग पण्णट्ठी तैं दूणे हैं। तिनकौं तिर्यंच विषैं तीन-लिंग, मनुष्य विषैं तीन-लिंग करि गुणै मिलि करि पण्णट्ठी कौ दूणाकरि छह-गुणा करिए, इतने भंग भए। बहुरि एकलिंग के भंगनि तैं दूणे एक-कषाय के भंग पण्णट्ठी तैं चौगुणे हैं। तिनकौं तिर्यंच विषैं तीन-लिंग सहित च्यारि-कषाय ; मनुष्य विषैं तीन-लिंग सहित च्यारि-कषायनि करि गुणैं, मिलिकरि पण्णट्ठी कौं चौगुणाकरि चौबीस-गुणा करिए इतने भंग भए।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि एक-कषाय के भंगनि तैं दूणे एक-लेश्या के भंग पण्णट्ठी तैं अठगुणे हैं। तिनकौं तिर्यंच विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय सहित तीन-लेश्या ; मनुष्य विषैं तीन-वेद, च्यारि-कषाय सहित तीन-लेश्यानिकरि गुणै मिलिकरि पण्णट्ठी कौं अठगुणाकरि बहत्तरिगुणा करिए इतने भंग हो हैं। बहुरि एक-लेश्या के भंगनि तैं दूणे एक-सम्यक्त्व के पण्णट्ठी तैं सोलह-गुणे भंग हैं, तिनकौं तिर्यंच विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, छह-लेश्या ; मनुष्य विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, छह-लेश्यानिकरि गुणैं, पण्णट्ठी कौं सोलह-गुणाकरि बहत्तरिगुणा कीजिए इतने भंग भए, सो इतने उपशम-सम्यक्त्व के इतने ही वेदक-सम्यक्त्व के जानने।

बहुरि क्षायिक-सम्यक्त्व विषैं एक लेश्या के भंगनि तैं दूणे पण्णट्ठी तैं सोलह गुणे भंग, तिनकौं मनुष्यगति विषैं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय, तीन-लेश्यानि करि गुणैं पण्णट्ठी कौं सोलह-गुणाकरि छत्तीस-गुणा करिए, इतने भंग भए।

अैसैं देशसंयत विषैं मिलिकरि पण्णट्ठी तैं गुणतीससै इक्याणवै गुणैं एक घाटि अर क्षायिक-सम्यक्त्व अपेक्षा पण्णट्ठी तैं पांचसै छिहंत्तरि गुणै सर्वपद भंग हो हैं।

बहुरि प्रमत्त विषैं मनःपर्ययज्ञान प्रत्येक पद भया। देश-संयम की जायगा सराग-संयम भया। और गति के अभाव तैं मनुष्यगति भी प्रत्येकपद ही भया। अैसैं प्रत्येकपद अठारह— मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८, लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, सकलसंयम १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यत्व ६५ = मनुष्य ६५ = २ हैं। तिनके दूणे-दूणे भंग जानने। बहुरि पिंडपद लिंग, कषाय, लेश्या, सम्यक्त्व, तिन विषैं मनुष्यगति के भंग पण्णट्ठी तैं दूणे भए, तिनके दूणे एक लिंग के भंग पण्णट्ठी तैं चौगुणे हैं, तिनकौं तीन-वेदकरि गुणे पण्णट्ठी तैं बारह भए।

बहुरि एक-लिंग के भंगनि तैं दूणे पण्णट्ठी तैं अठगुणे एक-कषाय के भंग हैं। तिनकौं तीन वेदसहित च्यारि कषाय करि गुणैं पण्णट्ठी तैं छिनवैगुणे भंग हो हैं। बहुरि एक कषाय के भंगनि तैं दूणे एक लेश्या के भंग, पण्णट्ठी तैं सोलह गुणे हैं, तिनकौं तीन-लिंग, च्यारि-कषाय सहित तीन-लेश्यानिकरि गुणैं पण्णट्ठी तैं पांचसै छिहंत्तरि गुणे भंग हो हैं। बहुरि एक लेश्या के भंगनि तैं दूणे एक-सम्यक्त्व के भंग पण्णट्ठी तैं बत्तीस-गुणे हैं, तिनकौं तीन-वेद, च्यारि-कषाय, तीन-लेश्या सहित तीन सम्यक्त्व करि गुणैं पण्णट्ठी तैं चौंतीससै छप्पन-गुणे भंग हो हैं। मिलि करि प्रमत्त विषैं पण्णट्ठी तैं इकतालीस से चवालीस गुणे एक घाटि सर्वपद-भंग हो हैं।

बहुरि अप्रमत्त विषैं भी प्रमत्तवत् पण्णट्ठी तैं इकतालीससै चवालीस गुणे एक घाटि-भंग हैं।

बहुरि उपशमश्रेणी विषैं अपूर्वकरण विषैं और लेश्या के अभाव तैं शुक्ललेश्या भी प्रत्येकपद है। तहां मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, उपशमचारित्र १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यत्व ६५ = मनुष्य-गति ६५ = २, शुक्ललेश्या ६५ = ४ प्रत्येकपद हैं, तिनके दूणे-दूणे भंग हैं। बहुरि पिंडपद लिंग, कषाय, सम्यक्त्व तिनविषैं शुक्ललेश्या के भंग पण्णट्ठी तैं चौगुणे, तिनतैं दूणे एक-लिंग के भंग पण्णट्ठी तैं अठगुणे हैं। तिनकौं तीन-लिंगकरि गुणै पण्णट्ठी तैं चौबीस-गुणे भए।

बहुरि एक-लिंग के भंगनि तैं दूणे एक-कषाय के भंग पण्णट्ठी तैं सोलह गुणै हैं। तिनकौं तीन वेदसहित च्यारि-कषायनि करि गुणैं पण्णट्ठी तैं एकसौ बाणवै गुणे भंग हो हैं। बहुरि एक-कषाय के भंगनि तैं दूणे एक-सम्यक्त्व के भंग पण्णट्ठी तैं बत्तीसगुणे हैं। तिनकौं तीन-वेद, च्यारि-कषायसहित दोय सम्यक्त्व करि गुणैं पण्णट्ठी तैं सातसै अडसठि गुणे भंग हो हैं, मिलिकरि अपूर्वकरण विषैं पण्णट्ठी तैं नवसै बाणवै गुणे एक घाटि सर्वपद-भंग हो हैं।

बहुरि वेदसहित-अनिवृत्तिकरण विषैं भी अपूर्वकरणवत् पण्णट्ठी तैं नवसै बाणवै गुणे एक घाटि भंग हैं।

बहुरि वेदरहित-अनिवृत्तिकरण विषैं प्रत्येकपद मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८, लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, उपशम-संयम १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यत्व ६५ = मनुष्यगति ६५ = २ शुक्ललेश्या ६५ = ४ है, तिनके दूणे-दूणे भंग हैं। बहुरि पिंडपद विषैं शुक्ललेश्या के पण्णट्ठी तैं चौगुणे-भंग, तिनतैं दूणे एक-कषाय के पण्णट्ठी तैं अठगुणे भंग हैं, तिनकौं च्यारि-कषायनिकरि गुणै पण्णट्ठी तैं बत्तीस-गुणे भंग हो हैं। बहुरि एक-कषाय के भंगनि तैं दूणे पण्णट्ठी तैं सोलह-गुणे एक -सम्यक्त्व के भंग हैं, तिनकौं च्यारि-कषाय सहित दोय-सम्यक्त्व निकरि गुणै पण्णट्ठी तैं एकसौ अठाईस-गुणे भंग हो हैं।

प्रत्येकपद-पिंडपद के भंग मिलिकरि पण्णट्ठी तैं एकसौ अडसठिगुणे एक घाटि भंग भए।

बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं प्रत्येकपद मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८, लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, उपशम-संयम १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यत्व ६५ = मनुष्य ६५ = २ शुक्ललेश्या ६५ = ४ सूक्ष्मलोभ ६५ = ८ हैं, तिनके दूणे-दूणे भंग जानने। बहुरि पिंडपद विषैं सूक्ष्मलोभ के पण्ण्ट्ठी तैं अठगुणे भंगनि तैं दूणे एक सम्यक्त्व के भंग हैं, तिनकौं उपशम-क्षायिक सम्यक्त्वकरि गुणैं पण्णट्ठी तैं बत्तीस गुणे-भंग भए।

प्रत्येकपद-पिंडपद के मिलि पण्णट्ठी तैं अठतालीसगुणे एक घाटि सर्वपद भंग भए।

बहुरि उपशांतकषाय विषैं प्रत्येकपद मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८, लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, उपशम-संयम १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यंत्व ६५ =

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मनुष्य ६५ = २ शुक्ललेश्या ६५ = ४ हैं, तिनके दूणे-दूणे भंग हैं। बहुरि पिंडपद विषैं शुक्ललेश्या के पण्णट्ठी तैं चौगुणे-भंगनि तैं दूणे एक सम्यक्त्व के भंग, सो इतने ही उपशमसम्यक्त्व के इतने ही क्षायिक-सम्यक्त्व के मिलिकरि पण्णट्ठी तैं सोलह-गुणे भए।

प्रत्येकपद-पिंडपद के मिलि पण्णट्ठी तैं चौबीस-गुणे एक घाटि सर्वपद-भंग भए।

बहुरि क्षपकश्रेणी विषैं-अपूर्वकरण विषैं मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८, लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, क्षायिक-संयम १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यत्व ६५ = मनुष्यगति ६५ = २ शुक्ललेश्या ६५ = ४ क्षायिक-सम्यक्त्व ६५ = ८ हैं, तिनके दूणे-दूणे भंग हैं। बहुरि क्षायिकसम्यक्त्व के पण्णट्ठी तैं अठगुणे-भंगनि तैं दूणे एकलिंग के भंग हैं। तिनकौं तीन-वेदकरि गुणैं पण्णट्ठी तैं अठतालीस गुणे भए। बहुरि एक-लिंग के भंगनि तैं दूणे एक-कषाय के भंग पण्णट्ठी तैं बत्तीस-गुणे हैं, तिनकौं तीन-वेदसहित च्यारि-कषायनि करि गुणैं पण्णट्ठी तैं तीनसै चौरासी गुणे भए।

सर्व प्रत्येकपद-पिंडपद के मिलिकरि पण्णट्ठी तैं च्यारिसै अठतालीसगुणै एक घाटि सर्वपद-भंग हैं।

बहुरि तैसैं ही अपूर्वकरणवत् वेदसहित अनिवृत्तिकरण विषैं भी पण्णट्ठी तैं च्यारिसै अडतालीस गुणे एक घाटि सर्वपद भंग हैं।

बहुरि वेदरहित अनिवृत्तिकरण विषैं मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८, लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, क्षायिक-संयम १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यत्व ६५ = मनुष्यगति ६५ = २ शुक्ललेश्या ६५ = ४ क्षायिक-सम्यक्त्व ६५ = ८ हैं, तिनतैं दूणे-दूणे भंग हैं। बहुरि पिंडपद विषैं क्षायिकसम्यक्त्व के पण्ट्ठी तैं अठगुणे भंगनि तैं दूणे एक-कषाय के भंग हैं। तिनकौं च्यारि कषायनि करि गुणैं पण्णट्ठी तैं चौसठि गुणे भए।

प्रत्येकपद-पिंडपद के मिलिकरि सर्वपद-भंग पण्णट्ठी तैं असीगुणे एक घाटि भए।

बहुरि सूक्ष्मसांपरायादिक विषैं प्रत्येकपद ही है, पिंडपद नाहीं। तहां सूक्ष्मसांपराय विषैं मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८, लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व ८१९२, संयम १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यत्व ६५ = मनुष्यगति ६५ = २ शुक्ललेश्या ६५ = ४ क्षायिक-सम्यक्त्व ६५ = ८ सूक्ष्मलोभ ६५ = १६ हैं। तिनके दूणे-दूणे भंग मिलिकरि सर्वपद-भंग पण्णट्ठी तैं बत्तीसगुणे एक घाटि भए।

बहुरि क्षीणकषाय विषैं मति १, श्रुत २, अवधि ४, मनःपर्यय ८, चक्षु १६, अचक्षु ३२, अवधि ६४, दान १२८, लाभ २५६, भोग ५१२, उपभोग १०२४, वीर्य २०४८, अज्ञान ४०९६, असिद्धत्व

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

८१९२, संयम १६३८४, जीवत्व ३२७६८, भव्यत्व ६५ = मनुष्यगति ६५ = २ शुक्ललेश्या ६५ = ४ क्षायिक-सम्यक्त्व ६५ = ८ प्रत्येकपद वीस हैं। तिनके दूणे-दूणे भंग मिलिकरि 'अंतधणं गुणगुणियं' इत्यादि करण-सूत्र करि पण्णट्ठी तैं सोलहगुणे एक घाटि सर्वपद-भंग हो हैं।

बहुरि सयोगी विषैं केवलज्ञान १, केवल दर्शन २, क्षायिकसम्यक्त्व ४, यथाख्यात-चारित्र ८, क्षायिकदान १६, लाभ ३२, भोग ६४, उपभोग १२८, वीर्य २५६, असिद्धत्व ५१२, जीवत्व १०६४, भव्यत्व २०४८, मनुष्यगति ४०९६, शुक्ललेश्या ८१९२ प्रत्येकपद हैं, तिनके दूणे-दूणे भंग मिलिकरि दोयसै छप्पन तैं चौसठि गुणै एक घाटि भंग हो हैं।

बहुरि अयोगी विषैं केवलज्ञान १, केवल दर्शन २, क्षायिकसम्यक्त्व ४, यथाख्यात-चारित्र ८, क्षायिकदान १६, लाभ ३२, भोग ६४, उपभोग १२८, वीर्य २५६, असिद्धत्व ५१२, जीवत्व १०२४, भव्यत्व २०४८, मनुष्यगति ४०९६ प्रत्येकपद हैं। तिनके दूणे-दूणे भंग मिलिकरि दोयसै छप्पन तैं बत्तीसगुणे एकघाटि सर्वपद-भंग हो हैं।

बहुरि सिद्ध विषैं केवल ज्ञान १, केवल दर्शन २, क्षायिक-सम्यक्त्व ४, अनंतवीर्य ८, जीवत्व १६, प्रत्येकपद हैं। तिनके दूणे-दूणे भंग मिलिकरि इकतीस-भंग हो हैं।

असैं प्रत्येकपद-पिंडपदनि करि भंग कहे। प्रत्येक पद का नाम असदृशपद भी है ; जातैं इनके प्रतिपक्षीकरि समानता नाहीं हैं अर पिंडपद का नाम सदृशपद भी है ; जातैं इनके प्रतिपक्षी करि समानता पाइए है ॥ ८६१ ॥

आगैं इस ही कथन कौं गाथानि करि कहै हैं—

तेरिच्छा हु सरित्था, अविरददेसाण खयियसम्मत्तं।
मोत्तूण संभवं पडि, खयिगस्सवि आणए भंगे॥ ८६२ ॥

तिर्यंचि हि सदृशानि, अविरतदेशयोः क्षायिकसम्यक्त्वं।
मुक्त्वा संभवं प्रति, क्षायिकस्याप्यानयेद्भंगान्॥ ८६२ ॥

टीका — गुणस्थाननि विषैं कहे जो पिंडपदरूप भाव, तिनकौं तिर्यक् कहिए बरोबरि रचनारूपकरि तहां असंयत अर देशसंयत विषैं क्षायिकसम्यक्त्व का जुदा ही कथन है ; तातैं तहां क्षायिकसम्यक्त्व कौं छोडि औरनि विषैं गुणस्थाननि का आश्रय करि यथासंभव भंग जानने। बहुरि तहां क्षायिकसम्यक्त्व के भी यथा-संभव जुदे भंग जानने ॥ ८६२ ॥

उड्ढतिरिच्छपदाणं, दव्वसमासेण होदि सव्वधणं।
सव्वपदाणं भंगे, मिच्छादिगुणेसु णियमेण॥ ८६३ ॥

ऊर्ध्वतिर्यक्पदानां, द्रव्यसमासेन भवति सर्वधनं।
सर्वपदानां भंगे, मिथ्यादिगुणेषु नियमेन॥ ८६३ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सर्वपदभंगनि के जानने के अर्थि मिथ्यादृष्ट्यादि गुणस्थाननि विषैं ऊर्ध्वरूप जिनकी रचना कही– अैसे प्रत्येकपद, तिनका भंग रूप धन अर तिर्यगरूप जिनकी रचना कही– अैसे पिंडपद, तिनका भंगरूप धन, तिन दोऊनि कौं जुदे-जुदे जानि तिन दोऊनि का समास कहिए मिलावना, तिसकरि तिस गुणस्थान का सर्वपदनि के भंग रूप सर्व-धन हो है नियम करि ॥ ८६३ ॥

मिच्छादीणं दुति दुसु, अपुव्वअणियट्टिखवगसमगेसु।
सुहुमुवसमगे संते, सेसे पत्तेयपदसंखा ॥ ८६४ ॥
पण्णर सोलट्ठारस, वीसुगुवीसं च वीसमुगुवीसं।
इगिवीस वीसचउदस, तेरसपणगं जहाकमसो ॥ ८६५ ॥ जुम्मं।

मिथ्यादीनां द्वित्रिषु, द्वयोरपूर्वानिवृत्तिक्षपकोपशमकेषु।
सूक्ष्मोपशमके शांते, शेषे प्रत्येकपदसंख्या ॥ ८६४ ॥
पंचदश षोडशाष्टादश, विंशैकोनविंशं च विंशमेकोनविंशं।
एकविंशं विंशचतुर्दश, त्रयोदशपंचकं यथाक्रमशः ॥ ८६५ ॥ युग्मं।

टीका – ते प्रत्येकपद क्रमकरि मिथ्यादृष्टि आदि दोय विषैं पंद्रह, मिश्रादि तीन विषैं सोलह, प्रमत्तादि दोय विषैं अठारह, दोऊ श्रेणी के अपूर्वकरणादिक दोय विषैं बीस अर उगणीस अर उपशमक-सूक्ष्मसांपराय विषैं बीस, उपशांतकषाय विषैं उगणीस, क्षपक-सूक्ष्मसांपराय विषैं इकईस, क्षीणकषाय विषैं बीस, सयोगी विषैं चौदह, अयोगी विषैं तेरह, सिद्ध विषैं पांच जानने ॥ ८६४-८६५ ॥

मिच्छाइट्ठिप्पहुदिं, खीणकसाओत्ति सव्वपदभंगा।
पण्णट्ठिं च सहस्सा, पंचसया होंति छत्तीसा ॥ ८६६ ॥

मिथ्यादृष्टिप्रभृति, क्षीणकषाय इति सर्वपदभंगाः।
पंचषष्टिश्च सहस्राणि, पंचशतानि भवंति षट्त्रिंशत् ॥ ८६६ ॥

टीका – मिथ्यादृष्ट्यादि क्षीणकषायपर्यंत सर्वपद-भंग कहिए है, तहां पैंसठि हजार पांचसै छत्तीस गुण्य जानना, इस प्रमाण ही का नाम पण्णट्ठी है। सो इस गुण्य कौं आगैं कहिए हैं गुणाकार, तिसकरि गुणिए ॥ ८६६ ॥

तग्गुणगारा कमसो, पण णउदेयत्तरीसयाण दलं।
ऊणट्ठारसयाणं, दलं तु सत्तहियसोलसयं ॥ ८६७ ॥

तद्गुणकाराः क्रमशः, पंच नवत्येकसप्ततिशतानां दलं।
एकोनमष्टादशशतानां, दलं तु सप्ताधिकषोडशशतं ॥ ८६७ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तिस गुण्य के गुणकार क्रम तैं मिथ्यादृष्टि विषैं इकहत्तरिसै पिच्याणवै का आधा प्रमाण है। सासादन विषैं एक घाटि अठारहसै का आधा प्रमाण है। मिश्र विषैं सात अधिक सोलहसै है ॥ ८६७ ॥

तेवत्तरिं सयाइं, सत्तावट्ठी य अविरदे सम्मे।
सोलस चेव सयाइं, चउसट्ठी खयियसम्मस्स ॥ ८६८ ॥

त्रिसप्ततिशतानि, सप्तषष्टिश्च अविरते सम्ये।
षोडश चैव शतानि, चतुःषष्टिः क्षायिकसम्यस्य ॥ ८६८ ॥

टीका – असंयत सम्यग्दृष्टि विषैं तेहत्तरिसै सडसठि है, तहां ही क्षायिकसम्यक्त्व विषैं सोलहसै चौसठि है ॥ ८६८ ॥

ऊणत्तीससयाइं, एक्काणउदी य देसविरदम्मि।
छावत्तरि पंचसया, खइयणरे णत्थि तिरियम्मि ॥ ८६९ ॥

एकोनत्रिंशच्छतानि, एकनवतिश्च देशविरते।
षट्सप्ततिः पंचशतानि, क्षायिकनरे नास्ति तिरश्चि ॥ ८६९ ॥

टीका – देशसंयत विषैं गुणतीससै इक्याणवै है। तहां ही क्षायिक-सम्यग्दृष्टी मनुष्य विषैं पांचसै छिहंत्तरि है। तहां तिर्यंच विषैं गुण्य-गुणकार नाहीं है; जातैं क्षायिकसम्यक्त्वी तिर्यंच-देशव्रती न होइ ॥ ८६९ ॥

इगिदालं च सयाइं , चउदालं च य पमत्त इदरे य।
पुव्वुवसमगे वेदाणियट्टिभागे सहस्समट्ठूणं ॥ ८७० ॥

एकचत्वारिंच्च शतानि, चतुश्चत्वारिंशच्च च प्रमत्ते इतरस्मिंश्च।
अपूर्वोपशमके वेदा, निवृत्तिभागे सहस्रमष्टोनं ॥ ८७० ॥

टीका – प्रमत्त वा अप्रमत्त विषैं इकतालीससै चवालीस है। उपशमश्रेणी विषैं अपूर्वकरण वा सवेद-अनिवृत्तिकरण विषैं आठ घाटि एक हजार है ॥ ८७० ॥

अडसट्ठी एक्कसयं, कसायभागम्मि सुहुमगे संते।
अडदालं चउवीसं, खवगेसु जहाकमं वोच्छं ॥ ८७१ ॥

अष्टषष्टिः एकशतं, कषायभागे सूक्ष्मके शांते।
अष्टचत्वारिंशच्चतुर्विंशं, क्षपकेषु यथाक्रमं वक्ष्यामि ॥ ८७१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – बहुरि कषाय सहित वेदरहित अनिवृत्तिकरण के भाग विषैं एकसौ अडसठि हैं। सूक्ष्मसांपराय विषैं अड़तालीस हैं। उपशांत-कषाय विषैं चौबीस हैं। अब क्षपक-श्रेणी विषैं यथाक्रम कहैं हैं ॥ ८७१ ॥

अडदालं चारिसया, पुव्वे अणियट्टिवेदभागे य।
सीदी कसायभागे, तत्तो बत्तीस सोलं तु॥ ८७२ ॥

अष्टचत्वारिंशत् चतुःशतान्यपूर्वे अनिवृत्तिवेदभागे च।
अशीतिः कषायभागे, ततो द्वात्रिंशत् षोडश तु॥ ८७२ ॥

टीका – अपूर्वकरण वा अनिवृत्तिकरण का सवेद-भाग विषैं च्यारिसै अडतालीस है। अनिवृत्तिकरण का कषाय-भाग विषैं असी हैं। तहां तैं ऊपरि सूक्ष्मसांपराय विषैं बत्तीस हैं। क्षीणकषाय विषैं सोलह है।

अैसैं ये पण्णट्ठी के गुणकार कहे ॥ ८७२ ॥

जोगिम्मि अजोग्गिम्मि य, बेसदछप्पण्णयाण गुणगारा।
चउसट्ठी बत्तीसा, गुणगुणिदेक्कूणया सव्वे॥ ८७३ ॥

योगिन्ययोगिनि च, द्विशतषट्पंचाशतां गुणकाराः।
चतुःषष्टिः द्वात्रिंशत्, गुण्यगुणिते एकोनकाः सर्वे॥ ८७३ ॥

टीका – सयोगी-अयोगी विषैं वेसदछप्पण्ण कहिए दोयसै छप्पन गुण्य जानना। तिसके गुणकार सयोगी विषैं चौंसठि, अयोगी विषैं बत्तीस हैं। अैसैं गुणकार करि गुण्य कौं गुणैं जो-जो प्रमाण आवै, तिस-तिस विषैं सर्वत्र एक-एक घटाय देना, अैसैं करतैं सर्वपद-भंगनि का प्रमाण आवै है ॥ ८७३ ॥

सिद्धेसु सुद्धभंगा, एक्कत्तीसा हवंति णियमेण।
सव्वपदं पडि भंगा, असहायपरक्कमुद्दिट्ठा॥ ८७४ ॥

सिद्धेषु शुद्धभंगा, एकत्रिंशत् भवंति नियमेन।
सर्वपद प्रति भंगा, असहायपराक्रमोद्दिष्टाः॥ ८७४ ॥

टीका – सिद्धनि विषैं शुद्ध गुण्य-गुणकार के भेदरहित नियमकरि इकतीस ही सर्वपद-भंग हैं, अैसैं सहाय-रहित पराक्रम-शक्ति का धारक वर्धमानस्वामीकरि सर्व प्रति-भंग कहे हैं ॥८७४ ॥

आदेसेवि य एवं, संभवभावेहिं ठाणभंगाणि।
पदभंगाणि य कमसो, अव्वामोहेण आणेज्जो॥ ८७५ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आदेशेऽपि च एवं, संभवभावैः स्थानभंगाः ।
पदभंगाश्च क्रमशः अव्यामोहेन आनेयाः ॥ ८७५ ॥

टीका — जैसे गुणस्थाननि विषैं कहे—अैसें ही यथासंभव भावनिकरि आदेश जो मार्गणास्थान, तिसविषैं स्थानभंग अर पदभंग क्रम तैं मोहरहित सावधान होइ, यथासंभव जानने ॥ ८७५ ॥

आगैं जिनविषैं सर्वथा एक नय का ग्रहण पाइए अैसे एकांतमत, तिनके भेद कहे हैं—

असिदिसदं किरियाणं, अक्किरियाणं च आहु चुलसीदी ।
सत्तट्ठण्णाणीणं, वेणयियाणं तु बत्तीसं ॥ ८७६ ॥

अशीतिशतं क्रियाणामक्रियाणां चाहुश्चतुरशीतिः ।
सप्तषष्टिरज्ञानिनां, वैनयिकानां तु द्वात्रिंशत् ॥ ८७६ ॥

टीका — क्रियावादीनि के एकसौ असी, अक्रियावादीनि के चौरासी, अज्ञानवादीनि के सडसठि, वैनयिकवादीनि के बत्तीस भेद हैं ॥ ८७६ ॥

तहां क्रियावादीनि के मूलभंग कहैं हैं—

अत्थि सदो परदोवि य, णिच्चाणिच्चत्तणेण य णवत्था ।
कालीसरप्पणियदिसहावेहि य ते हि [१]भंगा हु ॥ ८७७ ॥

अस्ति स्वतः परतोऽपि च, नित्यानित्यत्वेन च नवार्थाः ।
कालेश्वरात्मनियति, स्वभावैश्च ते हि भंगा हि ॥ ८७७ ॥

टीका — प्रथम तौं अस्ति अैसें एकपद लिखना । ताके ऊपरि आपतैं, परतैं, नित्यपनेकरि, अनित्यपनेकरि— अैसें च्यारि पद लिखने । तिनके ऊपरि जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष— अैसें नव पद लिखने । तिनके ऊपरि काल, ईश्वर, आत्मा, नियति, स्वभाव— अैसे पंचपद लिखने । तिनिविषैं जैसें जीवकांड का गुणस्थानाधिकार विषैं प्रमादनि का भंग करतैं अक्षसंचार-विधान कह्या था, तैसें इन पदनि के बदलने तैं अक्षसंचारकरि एक, च्यारि, नव, पांच के परस्पर गुणनरूप एकसौ असी भंग हो हैं । सोई कहिए है—

आपतै जीव कालकरि अस्ति करिए है, परतैं जीव कालकरि अस्ति करिए है, नित्यपनेकरि

१-

काल । ईश्वर । आत्म । निय । स्वभा ५
जी अ पु पा आ सं नि बं मो ९
अस्ति १
स्वयं से, पर से, नित्यपने से, अनित्यपने से ४

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जीव कालकरि अस्ति करिए है, अनित्यपनै करि जीव कालकरि अस्ति करिए है— ऐसैं च्यारि-भंग भए। बहुरि जीव की जायगा क्रम तैं अजीवादिक कहै च्यारि-च्यारि भंग होंइ, तहां नव-पदार्थ के बदलने तैं एक कालसहित छत्तीस-भंग भए। बहुरि काल की जायगा क्रम तैं ईश्वरादिक कहैं छत्तीस-छत्तीस भंग होंइ। तहां पंचपद के बदलने तैं एकसौ असी क्रियावादनि के भंग हो हैं॥ ८७७ ॥

अत्थि सदो परदोवि य, णिच्चाणिच्चत्तणेण य णवत्था।
एसिं अत्था सुगमा, कालादीणं तु वोच्छामि॥ ८७८ ॥

अस्ति स्वतः परतोऽपि च, नित्यानित्यत्वेन च नवार्थाः।
एषामर्थाः सुगमाः, कालादीनां तु वक्ष्यामि॥ ८७८ ॥

टीका — अस्ति-आप तैं, पर तैं, नित्यपनै करि, अनित्यपनै करि नव-पदार्थ— इनका अर्थ तौ सुगम हैं। अस्ति का तौ "है" ऐसा अर्थ है, सो क्रियावादी वस्तु कूं अस्तिरूप ही मानिकरि क्रिया का स्थापन करै है। तहां आप तैं कहिए अपने स्वरूप-चतुष्टय की अस्ति मानै है। अर पर तैं कहिए परचतुष्टय तैं भी अस्तिरूप ही मानै है। नित्यपनेकरि कहिए शाश्वता अस्तिरूप मानै है। अनित्यपनै कहिए क्षणिक अस्तिरूप मानै है। ऐसैं जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्षरूप नव-पदार्थनि कौं मानै हैं, सो इन चौदह का तौ अर्थ सुगम है ; तातैं इनका विशेष न कह्या। बहुरि कालवादादिकनि का अर्थ क्रमकरि कहों हौं—

कालो सव्वं जणंयदि, कालो सव्वं विणस्सदे भूदं।
जागत्ति हि सुत्तेसु वि, ण सक्कदे वंचिदुं कालो॥ ८७९ ॥

कालः सर्वं जनयति, कालः सर्व विनाशयति भूतं।
जागर्ति हि सुप्तेष्वपि, न शक्यते वंचितुं कालः॥ ८७९ ॥

टीका – काल ही सर्व कों उपजावै है, काल ही सर्व को विनाशै हैं। सूता प्राणीनि विषैं भी काल ही प्रगट जागै हैं, काल के ठिगने कौं-बंचने कौं समर्थ न होइए है। ऐसैं काल ही करि सबकौं मानना, सो कालवाद का अर्थ जानना॥ ८७९ ॥

अण्णाणी हु अणीसो, अप्पा तस्स य सुहं च दुक्खं च।
सग्गं णिरयं गमणं, सव्व ईसरकयं होदि॥ ८८० ॥

अज्ञानी ह्यनीश, आत्मा तस्य च सुखं च दुःखं च।
स्वर्गं निरयं गमनं, सर्वमीश्वरकृतं भवति॥ ८८० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – आत्मा अज्ञानी-ज्ञानरहित है। बहुरि अनीश कहिए अनाथ-कछू करने कौं समर्थ नाहीं– अैसा है। तिस आत्मा के सुख-दुःख, स्वर्ग-नरकादिक विषैं गमनागमनादिक सर्व ईश्वर का कीया हो है। अैसै ईश्वरकरि कीया सबकौं मानना, सोई ईश्वरवाद का अर्थ है ॥ ८८० ॥

एक्को चेव महप्पा, पुरिसो देवो य सव्ववावी य।
सव्वंगणिगूढोवि य, सचेयणो णिग्गुणो परमो॥ ८८१ ॥

एकश्चैव महात्मा, पुरुषो देवश्च सर्वव्यापी च।
सर्वांगनिगूढोऽपि च, सचेतनो निर्गुणः परमः॥ ८८१ ॥

टीका – एक ही महात्मा है। सोई पुरुष है। देव है। सर्व विषैं व्यापक है। सर्वांगपनै निगूढ कहिए अगम्य है। चेतना सहित है। निर्गुण है। परम-उत्कृष्ट है। अैसैं एक आत्मा ही करि सबकौं मानना, सो आत्मवाद का अर्थ है ॥ ८८१ ॥

जत्तु जदा जेण जहा, जस्स य णियमेण होदि तत्तु तदा।
तेण तहा तस्स हवे, इदि वादो णियदिवादो दु॥ ८८२ ॥

यत्तु यदा येन यथा, यस्य च नियमेन भवति तत्तु तदा।
तेन तथा तस्य भवे, दिति वादो नियतिवादस्तु॥ ८८२ ॥

टीका – जो जिसकाल, जिहिकरि, जैसैं, जिसकैं नियमकरि है; सो तिसकाल, तीहिकरि, तैसैं, तिसही कैं हो है; अैसा नियमकरि ही सबकौं मानना, सो नियतिवाद का अर्थ है ॥ ८८२ ॥

को करइ कंटयाणं, तिक्खत्तं मियविहंगमादीणं।
विविहत्तं तु सहाओ, इदि सव्वंपि य सहाओत्ति॥ ८८३ ॥

कः करोति कंटकानां, तीक्ष्णत्वं मृगविहंगमादीनां।
विविधत्वं तु स्वभाव, इति सर्वमपि च स्वभाव इति॥ ८८३ ॥

टीका – कांटानै आदि दैकरि जे तीखे वस्तु हैं, तिनकैं कौंन तीक्ष्णपना करै है ? बहुरि मृग अर विहंगी पक्षी इत्यादिकनि कैं नानाप्रकारपना पाइए है, सो कौन करै है ? अैसा प्रश्न होतैं, अैसा ही उत्तर कहैं कि–स्वभाव ही है। अैसैं सबकौं कारण बिना-स्वभाव ही करि मानना, सो स्वभाववाद का अर्थ है।

ऐसै कालादि करि पूर्वोक्तप्रकार एकांतग्रहण तैं क्रियावाद हो है ॥ ८८३ ॥

आगैं अक्रियावादनि के भंग कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

णत्थि सदो परदोवि य, सत्तपयत्था य पुण्णपाऊणा।
कालादियादिभंगा, सत्तरि चदुपंतिसंजादा[१] ॥ ८८४ ॥

नास्ति स्वतः परतोऽपि च, सप्तपदार्थाश्च पुण्यपापोनाः।
कालादिकादिभंगाः, सप्ततिश्चतुःपंक्तिसंजाताः ॥ ८८४ ॥

टीका – प्रथम नास्ति ऐसा पद लिखना, ताके ऊपरि आप तैं, परतैं– ऐसैं दोय पद लिखने। तिनके ऊपरि पुण्य-पाप बिना सात-पदार्थ लिखने। तिनके ऊपरि काल नैं आदि दैकरि पंच-पद लिखने। ऐसैं च्यारि-पंक्ति करनी, तिनविषैं पूर्वोक्त अक्षसंचार-विधान करि भंग हो हैं। आपतैं जीव कालकरि नास्ति करिए है, परतैं जीव कालकरि नास्ति करिए है। ऐसैं ही जीव की जायगा अजीवादिक कहैं चौदह-भंग एक कालकरि भए। बहुरि काल की जायगा ईश्वर आदि कहैं, सत्तरि-भंग हो हैं।

भावार्थ– ऐसा कि–अक्रियावादी, वस्तु कौं नास्तिरूप मानि क्रिया का स्थापन नाहीं करै हैं ॥ ८८४ ॥

का। ई। आ। नि। स्व। ५।
जी। अ। आ। सं। नि। बं। मो। ७।
स्वतः १ परतः २
नास्ति १

णत्थि य सत्तपदत्था, णियदीदो कालदो तिपंतिभवा।
चोद्दस इदि णत्थित्ते, अक्किरियाणं च चुलसीदी ॥ ८८५ ॥

नास्ति च सप्तपदार्था, नियतितः कालतस्त्रिपंक्तिभवाः।
चतुर्दश इति नास्तित्वे, अक्रियाणां च चतुरशीतिः ॥ ८८५ ॥

टीका – प्रथम नास्तित्व ऐसा पद लिखना। ताके ऊपरि सात पदार्थ लिखने। तिनके ऊपरि नियति, काल– ऐसैं दोय पद लिखने। तहां अक्षसंचार करि जीव-नियति तैं नास्ति करिए है। जीव-काल तैं नास्ति करिए है। बहुरि जीव की जायगा अजीवादिक कहैं, चौदह-भेद हो हैं।

इहां अक्रियावाद का जैसैं प्रकार हैं, तैसैं सत्तरि-भेद जुदे-जुदे कहे, मिलिकरि अक्रियावादनि के चौरासी-भेद भए ॥ ८८५ ॥

१-

नियति १ काल २
जी। अ। आ। सं। नि। बं। मो। ७।
नास्ति १

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आगैं अज्ञानवाद के भेद कहैं हैं–

को जाणइ णवभावे, सत्तमसत्तं दयं अवच्चमिदि।
अवयणजुद सत्ततयं, इदि भंगा होंति तेसट्ठी॥ ८८६॥

को जानाति नवभावेषु, सत्त्वमसत्त्वं द्वयमवाच्यमिति।
अवचनयुतं सप्ततयमिति भंगा भवंति त्रिषष्टिः॥ ८८६॥

टीका – जीवादिक नवपदार्थनि विषैं एक-एक का सप्तभंग अपेक्षा न जानना। जीव अस्ति अैसा कौन जानै है ? जीव नास्ति अैसा कौन जानै है ? जीव अस्ति-नास्ति अैसा कौन जाने है ? जीव अवक्तव्य अैसा कौन जानै है ? जीव अस्ति-अवक्तव्य अैसा कौन जानै है ? जीव नास्ति-अवक्तव्य अैसा कौन जाने है ? जीव अस्ति-नास्ति अवक्तव्य अैसा कौन जानैं है ? अैसैं ही जीव की जायगा अजीवादिक कहैं, तरेसठि भेद हो हैं॥ ८८६॥

को जाणइ सत्तचऊ, भावं सुद्धं खु दोण्णिपंतिभवा।
चत्तारि होंति एवं, अण्णाणीणं तु सत्तट्ठी॥ ८८७॥

को जानाति सत्त्वचतुष्कं, भावं शुद्धं खलु द्विपंक्तिभवाः।
चत्वारो भवंति एवमज्ञानिनां तु सप्तषष्टिः॥ ८८७॥

टीका – प्रथम शुद्धपदार्थ अैसा लिखिए, ताके ऊपरि अस्ति आदि च्यारि लिखिए। इन दोऊ-पंक्तिनि करि उपजे च्यारि-भंग हो हैं। शुद्ध-पदार्थ अस्ति अैसा कौंन जानै है ? शुद्धपदार्थ-नास्ति अैसा कौंन जाने है ? शुद्ध पदार्थ अस्ति-नास्ति अैसा कौन जानै है ? शुद्धपदार्थ अवक्तव्य अैसा कौन जानै है ? अैसे च्यारि तौं ए अर पूर्वोक्त तरेसठि मिलिकरि अज्ञानवाद सडसठि हो हैं।

भावार्थ–अज्ञानवादवाले वस्तु का न जानना ही मानै हैं॥ ८८७॥

अस्ति। नास्ति। अस्तिनास्ति। अवक्तव्य ४
शुद्धपदार्थः १

आगैं वैनयिकवादनि के मूलभंग कहै हैं–

मणवयणकायदाणगविणवो सुरणिवइणाणिजदिवुड्ढे।
वाले मादुपिदुम्मि च, कायव्वो चेदि अट्ठचऊ॥ ८८८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मनोवचनकायदान, विनयः सुरनृपतिज्ञानियतिवृद्धे।
बाले मातृपित्रोश्च, कर्तव्यश्चेत्यष्टचतुष्कं ॥ ८८८ ॥

टीका — देव, राजा, ज्ञानी, जती, बूढ़ा, बालक, माता-पिता इन आठनि का मन करि, वचनकरि, कायकरि, दान देने करि च्यारि प्रकार विनय करना— असैं वैनयिकवाद बत्तीस हैं।

भावार्थ—विनयवादी गुण-अगुण की परीक्षारहित विनय ही तैं सिद्धि मानै हैं ॥ ८८८ ॥

सच्छंददिट्ठीहिं वियप्पियाणि, तेसट्ठिजुत्ताणि सयाणि तिण्णि।
पाखंडिणं वाउलकारणाणि, अण्णाणिचित्ताणि हरंति ताणि ॥८८९ ॥

स्वच्छंददृष्टिभिर्विकल्पितानि, त्रिषष्टियुक्तानि शतानि त्रीणी।
पाखंडिनां व्याकुलकारणानि, अज्ञानिचित्तानि हरंति तानि ॥ ८८९ ॥

टीका — स्वच्छंद मनकल्पित है दृष्टि-श्रद्धान जिनिका, तिनिकरि विकल्पनारूप कीएं— असैं तरेसठि सहित तीनसै पाखंडीनि के, जीवनि कूं व्याकुलता के कारणभूत वचन, ते मिथ्यात्व के उदय तैं अज्ञानी-जीवनि के चित्त कूं हरैं हैं ॥ ८८९ ॥

आगैं और भी एकांतवाद कहैं हैं—

आलसड्ढो णिरुच्छाहो, फलं किंचिं ण भुंजदे।
थणक्खीरादिपाणं वा, पउरुसेण विणा ण हि ॥ ८९० ॥

आलस्याढ्यो निरुत्साहः, फलं किंचिन् भुंक्ते।
स्तनक्षीरादिपानं वा, पौरुषेण विना नहि ॥ ८९० ॥

टीका — आलस्यकरि संयुक्त होय, उत्साह-उद्यमरहित होइ, सो किछू भी फल कूं भोगवै नाहीं। जैसै स्तन का दूध उद्यम ही तैं पीवने में आवै है, पौरुष विना पीवने में न आवै है, तैसैं सर्व पौरुषकरि सिद्धि है। असा पौरुषवाद है।

भावार्थ—पौरुषवादी पुरुषार्थ ही तैं सर्वसिद्धि मानै हैं ॥ ८९० ॥

दइवमेव परं मण्णे, धिप्पउरुसमणत्थयं।
एसो सालसमुत्तुंगो, कण्णो हण्णइ संगरे ॥ ८९१ ॥

दैवमेव परं मन्ये, धिक् पौरुषमनर्थकं।
एष सालसमुतुंगः, कर्णो हन्यते संगरे ॥ ८९१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – दैव ही कौं केवल मानो हौं, निरर्थक पौरुष कौं धिक्कार होहु। देखहु यहु कोटिसारिखा ऊँचा करण-नामा राजा, सो संग्राम विषैं मारिये है। असा दैववाद है।

भावार्थ– दैववादी दैव ही तैं सर्वसिद्धि मानै हैं॥ ८९१ ॥

संजोगमेवेति वदंति तण्णा, णेवेक्कचक्केण रहो पयादिं।
अंधो य पंगू य वणं पविट्ठा, ते संपजुत्ता णयरं पविट्ठा॥ ८९२ ॥

संयोगमेवेति वदंति तज्ज्ञा, नैवेकचक्रेण रथः प्रयाति।
अंधश्च पंगुश्च वनं प्रविष्टौ, तौ संप्रयुक्तौ नगरं प्रविष्टौ॥ ८९२ ॥

टीका – तज्ज्ञ यथार्थ-ज्ञानी हैं, ते संयोग ही कौं कहैं हैं, एक पहिये करि रथ चालै नाहीं। आंधा अर पांगला वन विषैं तिष्ठते थे, ते संयोग करि आंधा-कांधा ऊपरि पांगला चढि दोऊ नगर विषैं प्रवेश करैं हैं, असा संयोगवाद है।

भावार्थ–संयोगवादवाले वस्तुनि के मिलाप तैं ही सर्वसिद्धि मानै हैं॥ ८९२ ॥

सइउट्ठिया पसिद्धी, दुव्वारा मेलिदेहिंवि सुरेहिं।
मज्झिमपंडवखित्ता, माला पंचसुवि खित्तेव॥ ८९३ ॥

सकृदुत्थिता प्रसिद्धिर्दुर्वारा मिलितैरपि सुरैः।
मध्यमपांडवक्षिप्ता, माला पंचस्वपि क्षिप्तैव॥ ८९३ ॥

टीका – सकृत-एकबार ही उठ्ठी मिले हुए देवनिकरि भी प्रसिद्धपनैं निवारी न जाय–असी द्रौपदी करि मध्यम-पांडव-अर्जुन, तिसविषैं क्षेपी हुई माला, सौ पांचू ही पांडवनि विषैं क्षेपी–असा लोकवाद है।

भावार्थ–लोकवादी लोक विषैं जो प्रवृतिरूप होइ, तिस ही कौं मानै हैं। बहुत कहने करि कहा॥ ८९३ ॥

जावदिया वयणवहा, तावदिया चेव होंति णयवादा।
जावदिया णयवादा, तावदिया चेव होंति परसमया॥ ८९४ ॥

यावंतो वचनपथाः, तावंतश्चैव भवंति नयवादाः।
यावंतो नयवादास्तावंतश्चैव भवंति परसमयाः॥ ८९४ ॥

टीका – जितने वचन के मार्ग हैं, तितने ही नयवाद हैं। जितने नयवाद हैं, तितने ही परसमय हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भावार्थ—जो किछू वचन बोलिए है, सो किछू अपेक्षा कौं लिएं बोलिए है, तहां तिस अपेक्षारूप सोई नय जानना। बहुरि जहां तिसही कौं अन्य अपेक्षारहित ग्रहण करिए, तहां ही मिथ्यामत हो है; तातैं जितने वचन के प्रकार तितने नय, जितने नय तितने मिथ्यामत हैं॥ ८९४॥

तहां परसमयी-मिथ्यामती, तिनके वचन असत्य कैसैं कहिए है ? सो कारण कहै हैं—

परसमयाणं वयणं, मिच्छं खलु होइ सव्वहा वयणा।
जेणाणं पुण वयणं, सम्मं खु कहंचिवयणादो॥ ८९५॥

परसमयानां वचनं, मिथ्या खलु भवंति सर्वथा बचनात्।
जैनानां पुनर्वचनं, सम्यक् खलु कथंचिद्वचनात्॥ ८९५॥

टीका – परसमयी-मिथ्यामती तिनके वचन मिथ्या हैं-असत्य हैं; जातैं इनके सर्वथा वचन हैं।

परसमयी जिस वचन कौं कहैं हैं, तिसही कौं सर्वथा एकांतपने करि कहैं हैं, तिसके प्रतिपक्षी कौं नाहीं कहै हैं। अर वस्तु है सो तिसरूप भी है, अर तिसके प्रतिपक्षी स्वरूप भी है; तातैं तिनका वचन असत्य है। जैसैं वस्तु तौ नित्य-अनित्य दोऊरूप है, कोऊ नित्य ही कहै वा कोऊ अनित्य ही कहै हैं, तिनके वचन कैसै प्रमाण होंइ ? बहुरि जिन-देव के उपासक जैनी हैं, तिनके वचन सम्यक् हैं-सत्य हैं; जातैं इनके कथंचित् वचन हैं।

जैनमत स्याद्वादरूप है। स्यात् इस शब्द का अर्थ कथंचित् है। जिस वचन कौं जैनी कहैं हैं, तिसकौं कोई एकप्रकार करि कहै हैं। सर्वथा नियम नाहीं कहैं हैं। वस्तु भी तिसरूप कोई एकप्रकार करि ही है। जैसै वस्तु, द्रव्य अपेक्षा नित्य है, पर्याय अपेक्षा अनित्य है; तातैं जैनिनि के वचन सत्य हैं।

भावार्थ—जितने वचन के मार्ग तितने नय हैं, तिनकौं प्रतिपक्षी की अपेक्षारहित एकांतपनैं ग्रहण कीएं मिथ्यारूप हो हैं। बहुरि प्रतिपक्षी की सापेक्षा लीएं स्याद्वादपने ग्रहण कीएं सम्यक्रूप हो हैं॥ ८९५॥

इति आचार्य श्रीनेमिचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्तिविरचित गोम्मटसार द्वितीय पंचसंग्रह नामा ग्रंथ की जीवतत्वप्रदीपिका नाम संस्कृतटीका के अनुसारि सम्यग्ज्ञानचंद्रिका नामा भाषाटीका विषैं कर्मकांड विषैं भावचूलिका नामा सातवां अधिकार संपूर्ण भया॥ ७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अथ त्रिकरणचूलिकाधिकारः ।

करि निज कारज करणकरि, कर्मसमूह खिपाय।
भए शुद्ध परमातमा, नमौं-नमौं शिवराय॥ ८॥

णमह गुणरयणभूसण, सिद्धंतामियमहद्धिभवभावं।
वरवीरणंदिचंदं, णिम्मलगुणमिंदणंदिगुरुं॥ ८९६॥

नमत गुणरत्नभूषण ! सिद्धांतामृतमहाब्धिभवभावं।
वरवीरनंदिचंद्रं, निर्मलगुणमिंद्रनंदिगुरुं॥ ८९६॥

टीका – गुणरूपी रत्न का है आभूषण जाकैं – ऐसा चामुंडराजा ताका संबोधन हे गुणरत्नभूषण ! तुम उत्कृष्ट 'वीरनंदी' नामा आचार्य, सोई भया चंद्रमा ताहि नमस्कार करहु। सो लोक विषैं चंद्रमा कौं समुद्र तैं उपज्या कहिए है। वीरनंदिरूप चंद्रमा, सिद्धांतरूपी अमृतमयी-महासमुद्र, तीहिंकरि भया है सद्भाव जाका ऐसा है। बहुरि निर्मलगुण जिस विषैं पाइए– ऐसा 'इंद्रनंदि' नामा गुरु, ताहि तुम नमस्कार करहु। ऐसैं श्रोतृजन कौं सावधान करि तीन-करणनि का व्याख्यान करैं हैं। सो प्रसंग पाइ जीवकांड का गुणस्थानाधिकार विषैं तीन-करणनि का स्वरूप कह्या। इहां आचार्य जुदा अधिकार करि कहैं हैं। सो इहां कोई अर्थ नीकैं जान्या न जाय, सो तहां देख लेना॥ ८९६॥

इगिवीसमोहखवणुवसमणणिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं।
पढमं अधापवत्तं, करणं तु करेदि अपमत्तो॥ ८९७॥

एकविंशतिमोहक्षपणोपशमननिमित्तानि त्रिकरणानि तस्मिन्।
प्रथममधः प्रवृत्तं, करणं तु करोत्यप्रमत्तः॥ ८९७॥

टीका – अनंतानुबंधी का चतुष्क बिना अवशेष इकवीस-चारित्रमोहनी की प्रकृति, तिनकी क्षपणा वा उपशम कौं कारणभूत ऐसै तीन अधःप्रवृत्त, अपूर्व, अनिवृत्ति-करण हैं। तिनविषैं पहिला अधः प्रवृत्तकरण कौं सातिशय अप्रमत्त-गुणस्थानवर्ती ही करै है॥ ८९७॥

जम्हा उवरिमभावा, हेट्ठिमभावेहिं सरिसगा होंति।
तम्हा पढमं करणं, अधापवत्तोत्ति णिद्दिट्ठं। ८९८॥

यस्मादुपरितनभावा, अधस्तनभावैः सदृशका भवंति।
तस्मात्प्रथमं करणमधः प्रवृत्तमिति निर्दिष्टं॥ ८९८॥

टीका – जातैं इस करण विषैं ऊपरि के समयसंबंधी भाव नीचै के समयसंबंधी भावनि करि समान हो हैं। जैसै कोई जीव का दूसरा, तीसरा आदि समय विषैं जैसा भाव होइ, तैसा

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ही भाव कोई जीव का पहिलै ही समय होइ ; तातैं पहिला-करण अधःप्रवृत्त है— असा कह्या है ॥ ८९८ ॥

अंतोमुहुत्तमेत्तो, तक्कालो होदि तत्थ परिणामा।
लोगाणमसंखपमा, उवरुवरिं सरिसवड्ढिगया ॥ ८९९ ॥

अंतर्मुहूर्तमात्र स्तत्कालो भवति तत्र परिणामाः ।
लोकानामसंख्यप्रमा, उपर्युपरि सदृशवृद्धिगताः ॥ ८९९ ॥

टीका — तिस अधःप्रवृत्त-करण का काल अंतर्मुहूर्तमात्र है। तिस काल विषैं संभवै— अैसै विशुद्धतारूप कषायनि के परिणाम, ते असंख्यात-लोकप्रमाण हैं। ते परिणाम पहले समय तैं लगाय, ऊपरि-ऊपरि समान चयवृद्धिकरि बंधैं हैं। पहिले समय के परिणामनि तैं दूसरे समय के परिणाम जितने बधती हैं, तितने ही दूसरे समय के परिणामनि तैं तीसरे समय के परिणाम बधती हैं। अैसैं अंतसमयपर्यंत समान वृद्धि जाननी ॥ ८९९ ॥

बावत्तरितिसहस्सा, सोलस चउ चारि एक्कयं चेव।
धणअद्धाणविसेसे, तियसंखा होइ संखेज्जे ॥ ९०० ॥

द्वासप्तस्त्रीसहस्त्राणि, षोडश चतुष्कं चत्वारि एकं चैव।
धनाध्वानविशेषाः, त्रयसंख्या भवति संख्येये ॥ ९०० ॥

टीका - तहां प्रथम-अंकनि की सहनानी करि कथन दिखावै हैं। तहां सर्वधन तीनहजार बहत्तरि अर ऊर्ध्वरूप अध्वान जो गच्छ, सो सोलह अर तिर्यग्रूप गच्छ च्यारि अर ऊर्ध्वरूप विशेष च्यारि, तिर्यग्रूप विशेष एक अर चय का साधन के अर्थि संख्यात की सहनानी तीन है। तहां करण के सर्वसमयसंबंधी परिणामनि का समूह, सो सर्वधन है। बहुरि करणकाल के जितने समय होंहि, तिनकी ऊपरि-ऊपरि रचना करनी ; तातैं तिसकाल का समयनि का प्रमाण, सो ऊर्ध्व-गच्छ वा पद जानना। बहुरि एक समय विषैं कोऊ जीव कैं कितने परिणाम पाइए, कोई कैं कितने परिणाम पाइए— अैसैं जितने एक समय विषैं खंड होंहि, तिनकी विवक्षित-समय की रचना के बरोबरि रचना करनी ; तातैं तिन खंडनि का जो प्रमाण सो अनुकृष्टि का तिर्यग्-गच्छ वा पद कहिए है। बहुरि समय-समय विषैं जितने-जितने परिणाम क्रम तैं बंधती होंइ, ताकौं ऊर्ध्व रूप अनुकष्टि का विशेष वा चय वा प्रचय वा उत्तर कहिये। बहुरि खंड २ विषैं जितने-जितने परिणाम क्रम तैं बधती होंइ, ताकौं तिर्यग्रूप अनुकृष्टि का विशेष वा चय वा प्रचय वा उत्तर कहिए। बहुरि आगैं चय का प्रमाण जानने के अर्थि संख्यात का भाग दीजिएगा, तहां अंकसंदृष्टि विषैं संख्यात की जायगा तीन का अंक जानना ॥ ९०० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

आदिधणादो सव्वं, पचयधणं संखभागपरिमाणं।
करणे अधापवत्ते, होदित्ति जिणेहि णिद्दिट्ठं ॥ ९०१ ॥

आदिधनात्सर्वं, प्रचयधनं संख्यभागपरिमाणं।
करणेऽधःप्रवृत्ते, भवतीति जिनैर्निर्दिष्टं ॥ ९०१ ॥

टीका – अधःप्रवृत्तकरण विषैं सर्व प्रचयधन आदि धन तैं संख्यातवें-भाग प्रमाण है। सर्व समयसंबंधी जे चय, तिनका जोड दीएं जो प्रमाण होइ, सो प्रचयधन कहिए है। जे-जे चय बंधे तिन बिना सर्व समयसंबंधी आदि-धन का जोड दीएं जो प्रमाण होइ, सो आदिधन कहिए है। सो 'पदकृत्या संख्यातेन सर्वधने भक्ते ऊर्ध्वचयप्रमाणंस्यात' पद की कृति अर संख्यात का भाग सर्वधन कौं दीएं ऊर्ध्वचय का प्रमाण हो है। सो पद कहिए गच्छ सोलह, ताकी कृति कहिए, वर्ग दोयसे छप्पन अर संख्यात की सहनानी तीन, इनका भाग सर्वधन तीन हजार बहत्तरि कौं दीएं च्यारि पाए, सोई ऊर्ध्वचय का प्रमाण जानना। बहुरि "व्येकपदार्धध्नचयगुणो गच्छ उत्तरधनं" एक घाटि पद का आधा कौं चय करि अर गच्छ करि गुणैं प्रचयधन हो है, सो एक घाटि गच्छ पंद्रह का आधा साढा सात, ताकौं चय करि गुणैं तीस, ताकौं गच्छकरि गुणैं च्यारिसै असी, सो ही उत्तरधन जानना। इसकौं सर्वधन तीन हजार बहत्तरि मैं घटाएं पचीससै बाणवै रहे, सो आदिधन जानना। बहुरि प्रमाणराशि च्यारिसै असी अर फलराशि शलाका एक अर इच्छा पचीससै बाणवैं, तहां फलकरि इच्छा कौं गुणि प्रमाण का भाग दीएं सत्ताईस का पांचवां भाग प्रमाण शलाका भई। बहुरि प्रमाण-शलाका सत्ताईस का पांचवां-भाग अर फल पचीससै बाणवै अर इच्छा एक शलाका, तहां फलकरि इच्छा कौं गुणि प्रमाण का भाग दीएं च्यारिसै असी पाए। ऐसैं त्रैराशिक करि सर्वधन तीन हजार बहत्तरि कौं सत्ताईस का पांचवां-भाग का भाग दीजिए, तब उत्तरधन च्यारिसै असी होइ; तातैं आदि-धन के संख्यातवें-भागि उत्तर-धन कह्या है ॥ ९०१ ॥

उभयधणे संमिलिदे, पदकदिगुणसंखरूवहदपचयं।
सव्वधणं तं तम्हा, पदकदिसंखेण भाजिदे पचयं ॥ ९०२ ॥

उभयधने संमिलिते, पदकृतिगुणसंख्यरूपहतप्रचयः।
सर्वधनं तत्तस्मात्, पदकृतिसंख्येन भाजिते प्रचयं ॥ ९०२ ॥

टीका – आदि-धन अर प्रचय-धन दोऊ मिलाएं सर्वधन होइ, सो गच्छ का वर्ग कौं संख्यातकरि गुणि अर चयकरि गुणैं जो प्रमाण होइ, तितना होइ। सो गच्छ-सोलह, ताका वर्ग दोयसै छप्पन, संख्यात की सहनानी तीन, ताकरि गुणैं सातसै अडसठि, चय च्यारिकरि गुणै तीन हजार बहत्तरि होंइ, सोइ आदिधन-उत्तरधन मिलाएं होइ; तातैं पद का वर्ग अर संख्यात, ताका भाग सर्वधन कौं दीएं जो प्रमाण होंइ, सोई चय का प्रमाण कह्या है ॥ ९०२ ॥

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चयधणहीणं दव्वं, पदभजिदे होदि आदिपरिमाणं।
आदिम्मि चये उड्ढे, पडिसमयधणं तु भावाणं॥ ९०३ ॥

चयधनहीनं द्रव्यं, पदभक्ते भवति आदिपरिमाणं।
आदौ चये वृद्धे, प्रतिसमयधनं तु भावानां॥ ९०३ ॥

टीका – तीहिं सर्वधन तीन हजार बहत्तरि कौं चयधन च्यारिसै असीकरि हीन करिए, तब पचीससै बाणवैं होंइ, ताकों पद जो गच्छ-सोलह, ताका भाग दीजिए, तब एकसौ बासठि पाया, सोई प्रथम समयसंबंधी विशुद्ध-परिणामनि का प्रमाण जानना। तामैं एक चय च्यारि मिलाएं एंकसौ छ्यासठि दूसरा-समय संबंधी जानना। तामैं एक चय मिलाएं एकसौ सत्तरि तीसरा-समयसंबंधी जानना। अैसैं ऊपरि-ऊपरि रचना करि एक-एक चय बधाएं समय-समय प्रति अध: प्रवृत्तकरण के विशुद्ध-परिणामनि का प्रमाण आवै है। १६२, १६६, १७०, १७४, १७८, १८२, १८६, १९०, १९४, १९८, २०२, २०६, २१०, २१४, २१८, २२२ ॥ ९०३ ॥

पचयधणस्साणयणे, पचयं पभवं तु पचयमेव हवे।
रूऊणपदं तु पदं, सव्वत्थवि होदि णियमेण॥ ९०४ ॥

प्रचयधनस्यानयने, प्रचय: प्रभवस्तु प्रचय एव भवेत्।
रूपोनपदं तु पदं, सर्वत्रापि भवति नियमेन॥ ९०४ ॥

टीका – प्रचय-धन के ल्यावने के अर्थि आदि-उत्तर गच्छ स्थापि श्रेणी व्यवहार-विधान कहिए है– तहां प्रचय कहिए जितना-जितना बधै, सो उत्तर अर प्रभव कहिए आदि विषैं होइ, सो आदि– ए दोऊ तौ इहां प्रचय का जो प्रमाण है, तीहिं प्रमाण जानने। बहुरि पहिला-स्थान विषैं चय का अभाव है ; तातैं इहां गच्छ का प्रमाण विवक्षित-गच्छ का प्रमाण तैं एक घाटि जानना। सो इहां ऊर्ध्व-रचना विषैं चय का प्रमाण च्यारि है ; तातैं आदि-च्यारि अर उत्तर-च्यारि अर गच्छ का प्रमाण सोलह है ; तातैं तामैं एक घटाएं गच्छ-पंद्रह। तहां–

पदमेगेण विहीणं, दु भाजिदं उत्तरेण संगुणिदं।
पभवजुदं पदगुणिदं, पदगुणिदं होदि सव्वत्थ[1] ॥ १६४ ॥ त्रिलोकसार।

इस करण-सूत्र करि जोडिए है। एक घाटि-पद कौं दोय का भाग देइ, चयकरि गुणि, आदि कौं मिलाय गच्छ करि गुणिए, तब गच्छ का जोड होइ, सो इहां गच्छ-पंद्रह मैं एक घटाएं, एक घाटि पद-चौदह, ताकौं दोय का भाग दीएं सात, ताकौं चय च्यारिकरि गुणैं अठाईस, तामैं आदि च्यारि मिलाएं बत्तीस, ताकौं गच्छ-पंद्रह करि गुणैं च्यारिसै असी होंइ। सोई प्रचय-धन का प्रमाण जानना ॥ ९०४ ॥

१– त्रिलोकसार में चतुर्थपाद मैं "पदगणिदं तं विजाणाहि" पाठ है। अन्यत्र यह गाथा अनुपलब्ध है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आगैं अनुकृष्टि कहिए नीचले-ऊपरले समयनि विषैं समानता का खंड कहै हैं, तहां प्रथम-खंड का प्रमाण कहै हैं–

पडिसमयधणेवि पदं, पचयं पभवं च होइ तेरिच्छे।
अणुकट्टिपदं सव्वद्धाणस्स य संखभागो हु॥ ९०५॥

प्रतिसमयधनेऽपि पदं, प्रचयः प्रभवश्च भवति तिरश्चि।
अनुकृष्टिपदं सर्वाध्वानस्य च संख्यभागो हि॥ ९०५॥

टीका – अनुकृष्टि का समय-समय प्रति धन ल्यावने के अर्थि अनुकृष्टि का गच्छ-चयादिक सर्व तिर्यग्रूप ही है। जहां पहिले समय संबंधी परिणाम लिखे थे, तिसही के आगैं बरोबरि पहिले समय संबंधी अनुकृष्टि के खंडनि के परिणाम लिखने। ऐसैं ही सर्व समयप्रति तिर्यग्-रचना जाननी। तहां अनुकृष्टि का गच्छ ऊर्ध्वगच्छ के संख्यातवें-भाग प्रमाण है। अंकनि की सहनानी करि ऊर्ध्व-गच्छ सोलह, ताकौं संख्यात की सहनानी च्यारि का भाग दीएं अनुकृष्टि का गच्छ च्यारि जानना॥ ९०५॥

अणुकट्टिपदेण हदे, पचये पचयो दु होइ तेरिच्छे।
पचयधणूणं दव्वं, सगपदभजिदं हवे आदी॥ ९०६॥

अनुकृष्टिपदेन हते, प्रचये प्रचयस्तु भवति तिरश्चि।
प्रचयधनोनं द्रव्यं, स्वकपदभाजितं भवेदादि॥ ९०६॥

टीका – अनुकृष्टि का गच्छ का भाग ऊर्ध्वचय कौं दीएं जो प्रमाण होइ, सो अनुकृष्टि का चय का प्रमाण जानना। सो अनुकृष्टि का गच्छ-च्यारि, ताकौं ऊर्ध्वचय च्यारि का भाग दीएं एक पाया, सोई अनुकृष्टि का चय जानना। बहुरि 'व्येकपदार्धध्नचयगुणो गच्छ उत्तरधनं' इस सूत्र करि एक घाटि गच्छ तीन, ताका आधा ड्योढ, ताकौं चय एककरि गुणैं भी ड्योढ अर गच्छकरि गुणैं छह भए, सो अनुकृष्टि विषैं प्रचयधन जानना। सो प्रथम-समय संबंधी जो परिणाम एकसौ बासठि, सो ही प्रथम-समय संबंधी अनुकृष्टि का सर्व-धन, तामैं प्रचय-धन छह घटाएं एकसौ छप्पन रहे, ताकौं अनुकृष्टि-गच्छ का भाग दीएं गुणतालीस पाया, सोई प्रथम-समय संबंधी अनुकृष्टि का प्रथम खंड का प्रमाण जानना॥ ९०६॥

आदिम्मि कमे वड्डदि, अणुकट्टिस्स य चयं तु तेरिच्छे।
इदि उड्डतिरियरयणा, अधापवत्तम्मि करणम्मि॥ ९०७॥

आदौ क्रमेण वर्धते, अनुकृष्टेश्च चयस्तु तिरश्चि।
इति ऊर्ध्वतिर्यग्रचना, अधः प्रवृत्ते करणे॥ ९०७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

टीका — तिस आदि-खंड तैं दूसरा आदि-खंडनि विषैं क्रमकरि तिर्यगरूप एक-एक अनुकृष्टि का चय बधाइए, सो अनुकृष्टि का चय एक-एक बधै गुणतालीस, चालीस, इकतालीस, बियालीस, प्रमाण हो है (३९, ४०, ४१, ४२)। बहुरि याही प्रकार दूसरा समय संबंधी अनुकृष्टि के खंड विषैं चालीस, इकतालीस, बियालीस, तियालीस प्रमाण हो है (४०, ४१, ४२, ४३)। सो दूसरा-समय संबंधी अर पहला-समय संबंधी चालीस, इकतालीस, बियालीस का प्रमाण की समानता भई। अैसैं तृतीयादिक समयनि विषैं अनुकृष्टि-रचना करि खंडनि विषैं परिणामनि का प्रमाण वा नीचले समयसंबंधी परिणामनि तैं समानता जाननी। अैसैं ऊर्ध्वरूप वा तिर्यगरूप दोऊ रचना अध:प्रवृत्तकरण विषैं है सो जाननी।

अंक-संदृष्टि अपेक्षा अध:करण-रचना।

	अनुकृष्टिरूप एक-एक समयसंबंधी च्यारि खंडनि की तिर्यक्-रचना।			
सोलह समयनि की ऊर्ध्व रचना	प्रथमखंड	द्वितीयखंड	तृतीयखंड	चतुर्थखंड
२२२	५४	५५	५६	५७
२१८	५३	५४	५५	५६
२१४	५२	५३	५४	५५
२१०	५१	५२	५३	५४
२०६	५०	५१	५२	५३
२०२	४९	५०	५१	५२
१९८	४८	४९	५०	५१
१९४	४७	४८	४९	५०
१९०	४६	४७	४८	४९
१८६	४५	४६	४७	४८
१८२	४४	४५	४६	४७
१७८	४३	४४	४५	४६
१७४	४२	४३	४४	४५
१७०	४१	४२	४३	४४
१६६	४०	४१	४२	४३
१६२	३९	४०	४१	४२

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जैसे अंकनि की सहनानी करि दृष्टांतरूप कथन दिखाया, तैसैं ही अर्थसंदृष्टि करि कथन जानना। तहां अर्थसंदृष्टि तो आगैं संदृष्टि-अधिकार विषैं लिखैंगे तहां जानना। अर अर्थ इहां लिखिए है–

अध:प्रवृत्तकरण का सर्व परिणाम असंख्यातलोकप्रमाण, सो सर्वधन जानना। अध:प्रवृत्तकरण का काल का समयनि का प्रमाण, सो गच्छ जानना। गच्छ का वर्ग कौं संख्यातगुणा करि ताका भाग सर्वधन कौं दीएं जो प्रमाण होइ, सो ऊर्ध्वचय जानना। एक घाटि गच्छ का आधा कौं चयकरि गुणि गच्छ करि गुणिए, सो प्रचयधन जानना। इनकौं सर्वधन में घटाएं जो रहै, ताकौं गच्छ का भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सो प्रथम समयसंबंधी परिणामनि का प्रमाण है। यामैं एक चय मिलाएं दूसरा समय संबंधी होइ– ऐसै एक-एक चय मिलाए तैं दोय घाटि गच्छ प्रमाण चय मिलैं द्विचरम समयसंबंधी होइ। यामैं एक चय मिलाएं अंत के समय संबंधी होइ। अब अनुकृष्टि-रचना कहिए है–

जिस समयसंबंधी अनुकृष्टि होइ, तिस समय के परिणामनि का समूह, सो तिस अनुकृष्टि का सर्वधन है। बहुरि अध:प्रवृत्तकरण का काल के जितने समय हैं, तिसकौं संख्यात का भाग दीएं जो प्रमाण होइ, सो अनुकृष्टि का गच्छ जानना। अनुकृष्टि का गच्छ का ऊर्ध्वचय कौं भाग दीएं अनुकृष्टि विषैं चय का प्रमाण होइ। एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छ का अर्धप्रमाण कौं अनुकृष्टि का चयकरि गुणि गच्छ करि गुणैं अनुकृष्टि का प्रचयधन का प्रमाण होइ। ताकौं प्रथम समय संबंधी परिणामनि मैंस्यों घटाइ अवशेष रहैं, तिनकौं अनुकृष्टि के गच्छ का भाग दीएं जो प्रमाण होइ। सोई प्रथम-समय संबंधी अनुकृष्टि का प्रथमखंड विषैं प्रमाण होइ। यामैं एक चय मिलाएं दूसरा-खंड विषैं प्रमाण होइ। ऐसैं एक-एक चय मिलाएं तौं एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छ प्रमाण चय मिलै प्रथम-अनुकृष्टि का अंत-खंड विषैं प्रमाण हो है।

बहुरि तिस प्रथम समयसंबंधी अनुकृष्टि का प्रथम-खंड का प्रमाण विषैं एक अनुकृष्टि का चय मिलैं दूसरा समयसंबंधी अनुकृष्टि का प्रथमखंड विषैं प्रमाण हो है। बहुरि द्वितीयादि खंडनि विषैं एक-एक चय मिलाइ एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छ प्रमाण चय मिलैं दूसरा समयसंबंधी अनुकृष्टि का अंत का खंड विषैं प्रमाण हो है। बहुरि प्रथम समय संबंधी अनुकृष्टि का प्रथमखंड का प्रमाण विषैं दोय घाटि ऊर्ध्वगच्छ प्रमाण अनुकृष्टि के चय मिलै द्विचरम संबंधी अनुकृष्टि का प्रथमखंड विषैं प्रमाण हो है।

बहुरि द्वितीयादि खंडनि विषैं एक-एक चय मिलाएं एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छ प्रमाण चय मिलें तिस ही का अंत-खंड विषैं प्रमाण हो है। बहुरि द्विचरम समयसंबंधी अनुकृष्टि का प्रथमखंड का प्रमाण विषैं एक अनुकृष्टि-चय मिले अंत-समयसंबंधी अनुकृष्टि का प्रथमखंड विषैं प्रमाण हो है। बहुरि द्वितीयादि-खंडनि विषैं एक-एक चय मिलाइ एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छ प्रमाण चय मिलें अध: प्रवृत्तकरण का अंत समयसंबंधी अनुकृष्टि का अंत-खंड विषैं प्रमाण हो है। इहां ऐसा अर्थ जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

अप्रमत्तसंयमी उपशमश्रेणी वा क्षपकश्रेणी चढने कौं अधः प्रवृत्तकरण करै है, तिसका काल अंतर्मुहूर्तमात्र है तथापि अनिवृत्ति-करण के काल तैं संख्यातगुणा ऐसा जो अपूर्वकरण का काल, तिसतैं भी संख्यातगुणा हैं। तहां संज्वलन-कषाय के देशघातिया-स्पर्धकनि के उदयरूप विशुद्धि-परिणामनि के स्थान, ते अन्य प्रत्याख्यानादि-कषायनि के सहित जिनका उदय होइ, ऐसैं संज्वलन के सर्वघातिया-स्पर्धकनि के उदयरूप संक्लेश-स्थान, तिनके असंख्यातवें-भाग हैं तथापि ते असंख्यात-लोकप्रमाण हैं। तहां भी अनुकृष्टि का जघन्य पहिला-खंड का विशुद्धि-जघन्य परिणामरूप स्थान सो सर्वज्ञकरि जैसा देख्या, तैसा अष्टांक कहिए अनंतगुणवृद्धि लिए है। पूर्व परिणाम के अविभाग-प्रतिच्छेदनि का प्रमाण तैं अनंतगुणा-अविभाग-प्रतिच्छेदनि का समूहरूप स्थान है। कषायनि के उदयरूप के स्थान असंख्यात हैं। तहां अविभाग-प्रतिच्छेदनि करि परिणामनि का प्रमाण अनंत है, सो जैसैं-जैसैं निर्मलता हो हैं, तैसैं-तैसैं विशुद्धता के अविभाग-प्रतिच्छेद बधते हो हैं ; तातैं इहां अनंतगुणपना संभवै है। बहुरि तिस पहिला-खंड का जघन्य तैं तिस ही का उत्कृष्ट-अनंतगुणा है।

काहे तैं ? तिस जघन्य के ऊपरि सूच्यंगुल का असंख्यातवां-भागप्रमाण अनंतभागवृद्धिरूप स्थान भए एकबार असंख्यातभागवृद्धि स्थान हो है। याप्रकार तितने ही तैसैं असंख्यातभागवृद्धि-स्थान भए। बहुरि एकबार पूर्ववत् भएं अंत विषैं असंख्यात-भागवृद्धि के ठिकानैं संख्यातभागवृद्धि हो है। बहुरि याप्रकार तितने ही तैसैं संख्यात-भागवृद्धिरूप स्थान भए। बहुरि एकबार पूर्ववत् भएं अंत विषैं संख्यात-भागवृद्धि के ठिकाने संख्यातगुणवृद्धि हो है। याप्रकार तितने ही तैसैं संख्यातगुणवृद्धिरूप स्थान भए।

बहुरि एकबार पूर्ववत् भएं अंत विषैं संख्यातगुणवृद्धि के ठिकानैं असंख्यातगुणवृद्धि हो है। बहुरि याप्रकार तितने ही तैसैं असंख्यातगुणवृद्धिरूप स्थान भए। बहुरि एकबार तैसैं ही भएं अंतविषैं असंख्यातगुणवृद्धि के ठिकानैं अनंतगुणवृद्धि हो है। ऐसै एक अधिक सूच्यंगुल का असंख्यातवां-भाग का घन करि तिस ही के वर्ग कौं गुणैं जो प्रमाण होइ, तीहि प्रमाण वृद्धि की पलटनि भएं एक षट्-स्थानपतित-वृद्धिरूप स्थान हो है। सो जीवकांड का ज्ञानमार्गणा-अधिकार विषैं पर्याय-समास-श्रुतज्ञान का वर्णन विषैं षट्स्थान-वृद्धि का जैसैं विशेष करि कथन कीया है, तैसैं इहां भी जानना।

सो ए षट्-वृद्धिस्थान तिस कषायस्थान विषैं असंख्यातलोकप्रमाण पाइए है ; जातैं जघन्य तैं उत्कृष्ट कौं अनंत गुणा कह्या। बहुरि प्रथम-खंड के उत्कृष्ट तैं दूसरे-खंड का जघन्य अनंत-गुणा है ; जातैं षट्वृद्धिस्थान विषैं आठ का अंक की सहनानीरूप अनंत-गुणवृद्धि पीछै ही पीछै होइ, तहां दूसरा-खंड का जघन्यपणा हो है। बहुरि इसतैं याका उत्कृष्ट अनंतगुणा है। ऐसैं सर्व-खंडनि विषैं अपने-अपने जघन्य तैं अपना-अपना उत्कृष्ट अनंतगुणा अर तिस उत्कृष्ट तैं अनंतर-स्थान का जघन्य-अनंतगुणा जानना। बहुरि तिस प्रथम-समय का पहिला-खंड अर

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंत-समय का अंत-खंड बिना सर्व ऊपरि के खंड संबंधी परिणामनि के नीचले-खंड संबंधी परिणामनिस्यों यथासंभव समानता है। असैं इस करण का नाम अधःप्रवृत्त हैं ॥ ९०७ ॥

अंतोमुहुत्तकालं, गमिऊण अधापवत्तकरणं तु।
पढिसमयं सुज्झंता, अपुव्वकरणं समल्लियइ ॥ ९०८ ॥

अंतर्मुहूर्तकालं, गमयित्वा अधःप्रवृत्तकरणं तु।
प्रतिसमयं शुद्ध्यन्न-पूर्वकरणं समाश्रयति ॥ ९०८ ॥

टीका– अंतर्मुहूर्त काल ताई समय-समय अनंतगुणी-विशुद्धताकरि बधता सातिशय-अप्रमत्त-संयमी तिस अधःप्रवृत्तकरण कौं समाप्त करि अपूर्वकरण कौं प्राप्त हो हैं ॥ ९०८ ॥

छण्णउदिचउसहस्सा, अट्ठ य सोलस धणं तदद्धाणं।
परिणामविसेसोवि य, चउ संखापुव्वकरणसंदिट्ठी ॥ ९०९ ॥

षण्णवतिचतुःसहस्री, अष्टौ च षोडश धनं तदध्वानः।
परिणामविशेषोपि च, चत्वारि संख्यातान्यपूर्वकरणसंदृष्टिः ॥ ९०९ ॥

टीका – तिस अपूर्वकरण विषैं अंकनि की सहनानी सर्वधन च्यारि हजार छिनवै अर अध्वान कहिए गच्छ सो आठ अर परिणाम विशेष सोलह अर संख्यात का प्रमाण च्यारि जानना। इहां अपूर्वकरण के सर्वस्थाननि का प्रमाण, सो सर्वधन जानना। अपूर्वकरण के काल का समयनि का प्रमाण, सो गच्छ जानना। समय-समय प्रति जितने जितने बधती होंइ, सो परिणाम विशेष जानना इस ही का नाम चय है। चय का साधन के अर्थि संख्यात का प्रमाण जानना ॥ ९०९ ॥

अंतोमुहुत्तमेत्ते, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा।
कमउड्ढापुव्वगुणे, अणुकट्टी णत्थि णियमेण ॥ ९१० ॥

अंतर्मुहूर्तमात्रे, प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः।
क्रमवृद्धाः अपूर्वगुणे, अनुकृष्टिर्नास्ति नियमेन ॥ ९१० ॥

टीका – तिस अपूर्वकरण का काल अंतर्मुहूर्त मात्र है। तिसविषैं समय-समय प्रति असंख्यात-लोकप्रमाण परिणाम पाइए है, ते प्रथम-समय तैं लगाय अंत-समय पर्यंत समान चयकरि बधते-बधते हैं। तिनविषैं अनुकृष्टि-रचना नाहीं है; जातैं ऊपरि समय संबंधी परिणामनि कैं नीचले समय संबंधी परिणामनि तैं समानता न पाइए है। कोई जीव का प्रथम-समय विषैं उत्कृष्ट परिणाम होइ अर कोई जीव का दूसरे समय जघन्य-परिणाम होइ, तो भी तिसतै ताकैं अधिकता ही पाइए है, सो इहां जिनकौं अपूर्वकरण मांडे पहला-समय है, तिन अनेक-जीवनि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

के परिणामनि की समानता भी होइ वा असमानता भी होइ; परन्तु जिनकौं करण मांडें द्वितीयादिक समय भए, तिनकैं परिणामनि तैं कदाचित् समानता न होइ, अैसै ही जिनकौं अपूर्वकरण मांडें द्वितीयादिक समय भए हैं, तिनके परस्पर समानता वा असमानता अर ऊपरि के वा नीचले समयवाले तैं असमानता ही परिणामनि की जाननी। या ही तैं अपूर्वकरण अैसा नाम है।

तहां सर्वधन च्यारि हजार छिनवै 'पदकदिसंखेण भाजिदे पचयं' इस सूत्र करि गच्छ आठ, ताका वर्ग चौंसठ, संख्यात की सहनानी च्यारि, इनका भाग सर्वधन कौ दीएं चय का प्रमाण सोलह आवै है। बहुरि 'व्येकपदार्धघ्नचयगुणो गच्छ उत्तरधनं' इस सूत्र करि एक घाटि गच्छ का आधा साढा तीन कौं चय सोलह करि गुणि, गच्छ आठकरि गुणिए, तब च्यारिसै अठतालीस होंइ, सो प्रचय-धन जानना।

बहुरि 'चयधणहीणं दव्वं पदभजिदे होदि आदिधणं'; इस सूत्र करि चयधन च्यारिसै अठतालिस कौं सर्वधन च्यारिहजार छिनवै मैंस्यौं घटाएं छत्तीससै अठतालीस रहे, तिनकौं गच्छ आठ का भाग दीएं च्यारिसै छप्पन पाए, सोई प्रथम-समय संबंधी भावनि का प्रमाण जानना। बहुरि 'आदिम्मि चये उड्ढे पडिसमयधणं तु भावाणं' इस सूत्रकरि आदि के प्रमाण विषैं एक-एक चय का प्रमाण सोलह-सोलह क्रम तैं मिलाएं समय-समय संबंधी भावनि का प्रमाण होय। प्रथम-समय च्यारिसै छप्पन मैं एक-चय मिलैं दूसरे समय च्यारिसै बहत्तरि, यामैं एक चय मिलैं तीसरे-समय च्यारिसै अठ्यासी– अैसैं ही अंत-समय पर्यंत जानना।

अंकसंदृष्टि अपेक्षा

अपूर्वकरण का यंत्र

५६८
५५२
५३६
५२०
५०४
४८८
४७२
४५६
जोड़
४०९६

इस दृष्टांत करि अर्थ अैसा जानना अधःप्रवृत्तकरण के परिणाम असंख्यातलोक प्रमाण, तिनकौं असंख्यातलोक गुणां कीएं अपूर्वकरण का सर्वधन हो है। अपूर्वकरण के काल का समयनि का प्रमाण सो गच्छ है। गच्छ का वर्ग कौं संख्यात-गुणा करि, ताका भाग सर्वधन कौं दीएं चय का प्रमाण हो है। एक घाटि गच्छ का आधा कौं चय करि गुणि गच्छकरि गुणैं प्रचय-धन का प्रमाण हो है। प्रचय-धन कौं सर्व-धन मैंस्यों घटाएं अवशेष कौं गच्छ का भाग दीएं प्रथम-समय के भावनि का प्रमाण हो है। द्वितीयादि समयनि विषैं प्रमाण के अर्थि एक-एक चय मिलाव तैं एक घाटि गच्छ प्रमाण चय मिलैं, अंत-समय विषैं प्रमाण हो हैं। इनकी संदृष्टि आगैं संदृष्टि-अधिकार विषैं लिखैंगे तहां जाननी। बहुरि इहां यहु अर्थ है–

अपूर्वकरण का सर्वधन अधःप्रवृत्तकरण का सर्वधनस्यों असंख्यातलोक-गुणा है। तहां प्रथम-समय संबंधी परिणाम असंख्यात-लोक प्रमाण हैं। तिहिस्यों द्वितीयादिक-समयनि विषैं भी असंख्यात-लोक प्रमाण ही हैं, तथापि चयप्रमाणकरि बधते-बधते हैं। तहां प्रथम समय

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संबंधी जघन्य-विशुद्धि परिणाम अधःप्रवृत्तकरण का अंत का समय का अंत का अनुकृष्टि-खंड के विशुद्धि-परिणाम तैं अनन्त-गुणा है। तिसतैं प्रथम-समय संबंधी उत्कृष्ट अनन्तगुणा है; जातैं इहां भी असंख्यात-लोक प्रमाण षट्स्थान संभवै हैं। तीहिस्यों दूसरा-समय संबंधी जघन्य-परिणाम अनन्त-गुणा है।

अैसैं अंतसमय पर्यन्त जानना। बहुरि इहां ऊपरि के समय संबंधी परिणाम नीचले समय सम्बन्धी परिणामनि के समान कदाचित् न हो हैं; तातैं अपूर्वकरण अैसा नाम कहिए है॥ ९१० ॥

आगैं अनिवृत्तिकरण का स्वरूप कहैं हैं–

एकम्हि कालसमये, संठाणादीहिं जहा णिवट्टंति।
ण णिवट्टंति तहावि य, परिणामेहिं मिहो जे हु॥ ९११ ॥

एकस्मिन् कालसमये, संस्थानादिभिर्यथा निवर्तंते।
न निवर्तंते तथापि च, परिणामैर्मिथो ये हि॥ ९११ ॥

टीका – जे जीव अनिवृत्तिकरण-काल का विवक्षित एक-समय विषैं शरीर का संस्थान, वर्ण, वय आदिकरि जैसैं निवर्तंते कहिए भेदरूप हैं, कोई जीव कैं कैसा ही संस्थान, वर्णादिक पाइए, कोई जीव कैं कैसा ही पाइए है, तैसैं परिणामनि करि अधःकरण, अपूर्वकरणवत् नाहीं भेदरूप हो हैं। जिनकौं अनिवृत्तिकरण मांडैं पहिला-समय हो है अैसै त्रिकाल-संबंधी अनंते जीवनि के समान परिणाम ही होंइ, अन्य-अन्य रूप सर्वथा न होंइ। अैसैं ही द्वितीयादिक समयवर्ती जीवनि कैं परस्पर समानता जाननी॥ ९११ ॥

इस ही अर्थ कौं प्रगट करैं हैं–

होंति अणियट्टिणो ते, पडिसमयं जस्सिमेक्कपरिणामो।
विमलयरझाणहुदवह, सिहाहि णिद्दड्ढकम्मवणा॥ ९१२ ॥

भवंति अनिवर्तिनस्ते, प्रतिसमयं येषामेकपरिणामः।
विमलतरध्यानहुतवह, शिखाभिर्निर्दग्धकर्मवनाः॥ ९१२ ॥

टीका – जिस करण विषैं समय-समय प्रति अनेक जीवनि कैं एकरूप-एकरूप ही परिणाम हैं, ते परिणाम अतिशयकरि निर्मल ध्यान-सोई भया अग्नि, तिसकी शिखा करि दग्ध किए हैं कर्मरूप वन जिनकरि– अैसे अनिवृत्तिरूप कहिए है। तिसका काल प्रमाणरूप गच्छ, सो अंक सहनानी करि च्यारि है। अर्थकरि अंतर्मुहूर्त प्रमाण है॥ ९१२ ॥

इत्याचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ति विरचित गोम्मटसार द्वितीयनाम पंच संग्रह ग्रन्थ की जीवतत्त्व प्रदीपिका नामा संस्कृत टीका के अनुसार सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका नामा भाषा टीका विषैं कर्मकाण्ड विषैं त्रिकरणचूलिका नामा आठवां अधिकार संपूर्ण भया॥ ८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करि विनष्ट सवकर्मकी, थिति रचना सद्भाव।
परमेष्ठी परमात्मा, भए भजौं शिवराव॥ ९॥

सिद्धे विसुद्धणिलये, पणट्ठकम्मे विणट्ठसंसारे।
पणमिय सिरसा वोच्छं, कम्मट्ठिदिरयणसब्भावं॥ ९१३॥

सिद्धान् विशुद्धनिलयान् प्रणष्टकर्मणः निवष्टसंसारान्।
प्रणम्य शिरसा वक्ष्यामि, कर्मस्थितिरचनासद्भावं॥ ९१३॥

टीका – प्रकर्षपनै नष्ट भए हैं घाति-अघाति कर्म जिनके, बहुरि विशेषपनै नष्ट किया है संसार जिनिकरि, बहुरि शुद्ध-आत्मप्रदेशनि विषैं हैं निलय-स्थान जिनिका– अैसे जु सिद्ध-परमेष्ठी, तिनहिं मस्तक नमाय प्रकर्षपनै नमस्कार करि कर्म-स्थिति रचना सद्भाव कौं कहौं हौं। कर्मनि की जो स्थिति, तिसविषैं समय-समय प्रति निषेकनि विषैं केता-केता कार्माण द्रव्य पाइए, अैसी रचना का जो अस्तित्व सत्तारूप कथन ताहि कहौं हों। सो यहु कथन पूर्व भी प्रसंग पाइ जीवकांड का योग-अधिकार विषैं वा कर्मकांड का बंध-उदय-सत्त्व अधिकार विषैं कह्या है॥ ९१३॥

इहां गाथानि करि आचार्य कहैं हैं–

कम्मसरूवेणागय, दव्वं ण य एदि उदयरूवेण।
रूवेणुदीरणस्स य, आवाहा जाव ताव हवे॥ ९१४॥

कर्मरूपेणागत, द्रव्यं न चैति उदयरूपेण।
रूपेणोदीरणाया वा, आबाधा यावत्तावद्भवेत्॥ ९१४॥

टीका – कर्मस्वरूप होइ करि परिणम्या अैसा जो कार्माण-द्रव्य सो यावत् काल उदयरूप होइ करि वा उदीर्णारूप होइ करि नाहीं परिणमैं ,तावत् काल आबाधा अैसा नाम कहिए है।

भावार्थ–कर्म बंधै पीछैं यावत् काल उदय वा उदीरणा रूप न होइ सकैं, तिस काल का नाम आबाधा-काल है॥ ९१४॥

उदयं पडि सत्तण्हं, आबाहा कोडिकोडि उवहीणं।
वाससयं तप्पडिभागेण य सेसट्ठिदीणं च॥ ९१५॥

उदयं प्रति सप्तानामाबाधा कोटीकोटिरूदधीनां।
वर्षशतं तत्प्रतिभागेन च शेषस्थितीनां च॥ ९१५॥

टीका – आयु का जुदा कथन कहैंगें ; तातैं सात मूल-प्रकृतिनि की आबाधा उदय की अपेक्षा एक कोडा-कोडि सागर की स्थिति की सौ-वर्ष है। शेष स्थितिनि की भी आबाधा इसही प्रतिभाग करि जाननी। सोई कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक कोडाकोडी-सागर स्थिति की आबाधा सौ वर्ष है ; तो ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, अंतराय इनिकी तीस कोडाकोडी-सागर स्थिति की कितनी आबाधा होइ ? असै प्रमाणराशि एक कोडाकोडी सागर, फलराशि सौ वर्ष, इच्छाराशि तीस कोडाकोडी सागर, फल करि इच्छा कौं गुणि प्रमाण का भाग दीएं तीन हजार वर्ष की आबाधा हो है। असै ही मोहनीय की सत्तरि कोडाकोडी सागर की सात हजार वर्ष आबाधा हो है। नाम, गोत्र की बीस कोडाकोडी सागर की दोय हजार वर्ष आबाधा भई ॥ ९१५ ॥

बहुरि विशेष कहैं हैं—

अंतोकोडाकोडिट्ठि दिस्स अंतोमुहुत्तमाबाहा।

संखेज्जगुणविहीणं, सव्वजहण्णट्ठिदिस्स हवे॥ ९१६ ॥

अंतः कोटीकोटि, स्थितेरंतर्मुहूर्त आबाधा।

संख्यातगुणविहीनः सर्वजघन्यस्थितेर्भवेत्॥ ९१६ ॥

टीका — कोडि तैं ऊपरि कोडाकोडी के नीचै होइ सो अंतः कोटाकोटि कहिए, सो इतने सागरनि की स्थिति की आबाधा अंतर्मुहूर्तमात्र है। एक कांडक का प्रमाण चौहत्तरि लाख सात हजार च्यारिसै सात अर ग्यारह का सत्ताईसमां-भाग, ताकौं दश कोडि सागर मैस्यों घटाएं नव कोडि पचीस लाख बाणवै हजार पांचसै बाणवै अर सोलह का सत्ताईसमां-भाग रहै, सो इतनी स्थिति की आबाधा-उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त प्रमाण है, तीहिस्यों संख्यातगुणी घाटि— असी जु जघन्य-स्थिति, ताकी आबाधा तिसस्यों संख्यातगुणी घाटि है। उत्कृष्ट-अंतर्मुहूर्त कैं संख्यातवें-भाग है ॥ ९१६ ॥

आयु की आबाधा कहैं हैं—

पुव्वाणं कोडितिभागादासंखेपअद्ध वोत्ति हवे।

आउस्स य आबाहा, ण ट्ठिदिपडिभागमाउस्स॥ ९१७ ॥

पूर्वाणां कोटित्रिभागादासंक्षेपाद्धा वा इति भवेत्।

आयुषश्चाबाधा, न स्थितिप्रतिभाग आयुषः॥ ९१७ ॥

टीका — आयुकर्म की आबाधा कोडि पूर्ववर्ष की तीसरा-भाग प्रमाण तैं लगाय असंक्षेपाद्धा पर्यंत एक-एक समय घाटि सर्व-भेद लीएं हैं। बहुरि कोडि पूर्ववर्ष की आबाधा तिसका त्रिभाग है, तौ तीन पल्य की स्थिति की आबाधा कितनी हो है— असै स्थिति का प्रतिभाग करि आयु की आबाधा का प्रमाण सिद्ध न हो है ; जातैं भुज्यमान-आयु अवशेष जितनी रहैं, परभव का आयु बधै तितना ही तहां बध्यमान-आयु की आबाधा का प्रमाण है, सो कर्मभूमि विषैं आयु का त्रिभाग अवशेष रहैं अर भोगभूमिया वा देव-नारकी कैं नवमास वा छःमास अवशेष रहैं आयु-बंध की योग्यता हो हैं ; तातैं उत्कृष्ट-आबाधा पूर्वकोडिवर्ष का तीसरा-भाग है, सो जानना। बहुरि नहीं पाइए है आयु की आबाधा का संक्षेप घाटिपना ; जातैं ऐसा जो अद्धा-काल सो

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

असंक्षेपाद्धा कहिए है, सो जघन्य-आबाधा असंक्षेपबाद्धा-प्रमाण जाननी। ऐसैं उदय अपेक्षा आबाधा कही। बंधे पीछैं उदय होइ, तौ इतने काल पीछै हो है ॥ ९१७ ॥

आगैं उदीरणा अपेक्षा कहै हैं–

आवलियं आबाहा, उदिरणमासिज्ज सत्तकम्माणं।
परभवियआउगस्स य, उदीरणा णत्थि णियमेण॥ ९१८ ॥

आवलिकमाबाधा, उदीरणामाश्रित्य सप्तकर्मणां।
परभवीयायुष्कस्य च, उदीरणा नास्ति नियमेन॥ ९१८ ॥

टीका – उदीरणा का आश्रय करि आयु बिना सात-कर्म की आबाधा आवलीमात्र है, बंधे पीछैं उदीरणा होइ, तौ आवलीकाल भए ही हो जाइ। बहुरि परभव का बध्यमान आयु, ताकी नियमकरि उदीरणा नाहीं है ; जातैं उदय आया भुज्यमान-आयु ही की उदीरणा देवनारकी अर उत्कृष्ट चरम शरीरी अर असंख्यात-वर्ष आयु के धारक मनुष्य, तिर्यंच– इन बिना औरनि कैं संभवै है ॥ ९१८ ॥

आवाहूणियकम्म, ट्ठिदी णिसेगो दु सत्तकम्माणं।
आउस्स णिसेगो पुण, सगट्ठिदी होदि णियमेण॥ ९१९ ॥

आबाधोनितकर्मस्थि तिर्निषेकस्तु सप्त कर्मणां।
आयुषो निषेकः पुनः, स्वकस्थितिर्भवति नियमेन॥ ९१९ ॥

टीका – आयु बिना सात-कर्मनि की जेती उत्कृष्टादि-स्थिति है, तामैं आबाध-काल घटाएं जो रहैं, तिस काल के समयनि का प्रमाण, सोई निषेकनि का प्रमाण जानना। बहुरि आयुकर्म की जेती-स्थिति होइ, तिसके समयनि का जो प्रमाण, सोई निषेकनि का प्रमाण जानना। जातैं आयु की आबाधा पूर्वभव की आयु विषैं व्यतीत हो है ॥ ९१९ ॥

आबाहं बोलाविय, पढमणिसेगम्मि देय बहुगं तु।
तत्तो विसेसहीणं, बिदियस्सादिमणिसेओत्ति॥ ९२० ॥

आबाधां वा अपलाप्य, प्रथमनिषेके देयं बहुकं तु।
ततो विशेषहीनं, द्वितीयस्यादिमनिषेक इति॥ ९२० ॥

टीका – ज्ञानावरणादि कर्मनि की स्थिति विषैं आबाधाकाल भए पीछैं, पहिले-समय प्रथम-गुणहानि का प्रथमनिषेक है। तिसविषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि दूसरी-गुणहानि का प्रथम-निषेक पर्यंत एक-एक चय करि घाटि-घाटि द्रव्य दीजिए है ॥ ९२० ॥

बिदिये बिदियणिसेगे, हाणी पुव्विल्लहाणिअद्धं तु।
एवं गुणहाणिं पडि, हाणी अद्धद्धयं होदि॥ ९२१ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

द्वितीये द्वितीयनिषेके, हानिः पूर्वहान्यर्धं तु।
एवं गुणहानिं प्रति, हानिरर्धार्धं भवति ॥ ९२१ ॥

टीका — बहुरि दूसरी गुणहानि का दूसरा निषेक विषैं तिस ही का पहला-निषेक तैं एक-चय घाटि द्रव्य जानना। सो पहिली गुणहानि विषैं जो निषेक-निषेक प्रति हानिरूप चय का प्रमाण था, तिसतैं दूसरी गुणहानि विषैं हानिरूप चय का प्रमाण आधा जानना। अैसैं ऊपरि ऊपरि गुणहानि-गुणहानि प्रति हानिरूप चय का प्रमाण आधा-आधा जानना ॥ ९२१ ॥.

दव्वं ठिदिगुणहाणीणद्धाणं दलसला णिसेयछिदी।
अण्णोण्णगुणसलावि य, जाणेज्जो सव्वठिदिरयणे॥ ९२२ ॥

द्रव्यं स्थितिः गुणहानीनामध्वानं दलशला निषेकच्छितिः।
अन्योन्यगुणशला अपि च, ज्ञातव्यं सर्वस्थितिरचनायां॥ ९२२ ॥

टीका - सर्व कर्मनि की स्थिति-रचना विषैं द्रव्य एक, स्थिति-आयाम, गुणहानि-आयाम, दलशलाका कहिए नाना-गुणहानि, निषेकच्छेद कहिए दो-गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त— ए छहराशी जानने। तहां कर्मरूप परिणए पुद्गल-परमाणूं, तिनका प्रमाण, सो द्रव्य-राशि जानना। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार कर्मनि की स्थिति के समयनि का प्रमाण, सो स्थिति-राशि जानना। बहुरि जहां दूणा-दूणा घाटि द्रव्य दीजिए— अैसी गुणहानि, तिस एक गुणहानि विषैं समयनि का प्रमाण, सो गुणहानि-आयाम-राशि जानना। बहुरि सर्वस्थिति विषैं जितनी गुणहानि पाइए, तिनका प्रमाण, सो नाना-गुणहानि-राशि जानना। बहुरि गुणहानि के आयाम के प्रमाण कौं दूणा कीए जो प्रमाण होइ, सो दो-गुणहानि-राशि जानना। बहुरि नानागुणहानि का जितना प्रमाण होंइ, तितने दोइ के अंक मांडि परस्पर गुणैं जो प्रमाण होइ, सो अन्योन्याभ्यस्तराशि जानना ॥ ९२२ ॥

[१]तेवट्ठिं च सयाइं, अडदाला अट्ठ छक्क सोलसयं।
चउसट्ठिं च विजाणे, दव्वादीणं च संदिट्ठी॥ ९२३ ॥

त्रिषष्टिश्च शतानि, अष्टचत्वारिंशदष्ट षट्कं षोडशकं।
चतुःषष्टिं च विजानीहि द्रव्यादीनां च संदृष्टिः ॥ ९२३ ॥

टीका - तहां अंकनि की सहनानी विषैं दृष्टांतरूप द्रव्य-तरेसठिसैं, स्थिति-अड़तालीस, गुणहानि-आयाम-आठ, नानागुणहानि-छह, दो गुणहानि सोलह, अन्योन्याभ्यसस्त-चौंसठि जानने ॥ ९२३ ॥

१-

अंकसंदृष्टिः	द्रव्य ६३००	स्थिति ४८	गुणहानि ८	नानागुणहा ६	दो गुणहा १६	अन्योन्याभ्यस्त ६४ ॥
अर्थसंदृष्टिः	द्रव्य । स ७	स्थिति । प	गुण = प छेना व छे	नागुणहा = छै व छे	दोगुण । प । २ छे व छे	अन्योन्याभयस्त । प व

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दव्वं समयपबद्धं, उत्तपमाणं तु होदि तस्सेव।
जीवसहत्थणकालो, ठिदिअद्धा संखपल्लमिदा॥ ९२४॥

द्रव्यं समयप्रबद्धं, उक्तप्रमाणं तु भवति तस्यैव।
जीवेन सह स्थानकालः, स्थित्यद्धा संख्यपल्यमिता॥ ९२४॥

टीका – अर्थ-संदृष्टि विषैं दृष्टांतरूप यथार्थ कथन करि द्रव्य तौ पूर्वोक्त प्रमाण समय-प्रबद्ध जानना, एक समय विषैं जितने परमाणू बंधैं, तिनका कथन पूर्वें प्रदेश-बंधाधिकार में करि आए हैं, सो तिनका प्रमाणरूप तौ द्रव्यराशि है। बहुरि जो बंध्या समयप्रबद्ध, सो यावतकाल जीव की साथि अवस्थानरूप रहै, सो स्थिति का अद्धा कहिए-आयाम है, सो स्थिति संख्यात-पल्यप्रमाण है, सो तिसके समयनि का प्रमाण सोई स्थितिराशि है॥ ९२४॥

मिच्छे वग्गसलाय, प्पहुदिं पल्लस्स पढममूलोत्ति।
वग्गहदी चरिमो तच्छि, दिसंकलिदं चउत्थो य॥ ९२५॥

मिथ्ये वर्गशलाक, प्रभृति पल्यस्य प्रथममूलमिति।
वर्गहतिश्चरम तच्छित्ति संकलितं चतुर्थश्च॥ ९२५॥

टीका – द्रव्य, स्थिति, गुणहानि आयाम, दो गुणहानि– इनिकी संदृष्टि तौ सातौं-कर्मनि की समान हैं। इहां द्रव्यस्थिति यद्यपि हीनाधिक है, तथापि सामान्यपनै द्रव्य समय-प्रबद्ध प्रमाण, स्थिति संख्यात-पल्य प्रमाण कहनेकरि समानता जाननी। बहुरि नानागुणहानि अर अन्योन्याभयस्तराशि समान नाहीं है ; तातैं इनिका विशेष कह्या चाहैं हैं। तहां ही सत्तरि कोडाकोडि-सागर की जाकी स्थिति अैसा मिथ्यात्व नामा कर्म विषैं प्रथम ही कहै हैं। तहां पल्य की वर्गशलाका आदि पल्य का प्रथम मूलपर्यंत जे द्विरूप-वर्गधारा के स्थान, तिनकौं अर तिनहीं के अर्धच्छेदनि कौं अर तिनहीं की वर्गशलाकानि कौं स्थापनकरि तीन पंक्ति करिए।

प्रथम-पंक्ति विषैं तौ पल्य की वर्गशलाका का प्रमाण नीचैं लिखिए, याका वर्ग याके ऊपरि लिखिए। अैसैं क्रम तैं प्रथम मूलपर्यंत वर्गस्थान लिखिए। दूसरी-पंक्ति विषैं पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदनि तैं लगाय दूणे-दूणे पल्य का प्रथम-वर्गमूल के अर्धच्छेद पर्यंत लिखिए। तीसरी-पंक्ति विषैं पल्य की वर्गशलाका की वर्गशलाका तैं लगाय एक-एक अधिक प्रमाण लीएं पल्य का प्रथममूलकी वर्गशलाकापर्यंत लिखिए।

तहां प्रथम-पंक्ति के राशि, तिनकौं परस्पर गुणैं पल्य की वर्गशलाका का भाग पल्य कौं दीएं जो प्रमाण आवै, तितना भया, सोई चरमः कहिए अंत का छठा अन्योन्याभ्यस्त-राशि प्रमाण जानना। बहुरि दूसरी-पंक्ति का जोड़ दीऐं पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेदनि का प्रमाण कौं पल्य का अर्धच्छेदनि का प्रमाण मैंस्यों घटाएं जो प्रमाण रहै, तितना भया। कैसै ? सो कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

द्विरूप वर्गधारा विषैं अर्धच्छेद स्थान-स्थान प्रति दूणे कहे थे, सो 'अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तर पदभजियं' इस करण-सूत्र करि जोड़ दीजिए। गुणकार करतां अंत विषैं जो प्रमाण होइ, ताकौं जितने का गुणकार होइ ताकरि गुणिए। तिसविषैं पहिलैं जितना-प्रमाण होइ सो घटाइए। जो प्रमाण होइ, ताकौं एक घाटि गुणकार का भाग दीजिए, यों करता जो प्रमाण होइ, सो ही गुणकार रूप सर्व-स्थाननि का जोड़ जानना।

सो इहां अंत विषैं पल्य के अर्धच्छेदनि तैं आधे पल्य के प्रथम-मूल के अर्धच्छेद हैं। तिनकौं गुणकार इहां दोय, तिनकरि गुणिए तब पल्य का अर्धच्छेद प्रमाण भया, तिस विषैं पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेदनि का प्रमाण घटाइए, तब पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेद-राशि करि हीन पल्य का अर्धच्छेद-राशि का जो प्रमाण तितना भया। गुणकार दोय मैं एक घटाएं एक रह्या, ताका भाग दीएं तितने ही रहे, सो इहां चौथाराशि नानागुणहानि ताका प्रमाण जानना। इस कथन कौं अंकसंदृष्टि करि दिखाइए है–

पल्य का प्रमाण पण्णट्ठी (६५५३६) तिसकी वर्गशलाका च्यारि, ताका वर्ग सोलह, ताका वर्ग पण्णट्ठी का प्रथम वर्गमूल दोयसै छप्पन– ए तीनों प्रथम-पंक्ति विषैं लिखने। बहुरि इन तीनों के अर्धच्छेद च्यारि के तौ दोय, सोलह के च्यारि, दोयसै छप्पनके आठ– ए तीनों दूसरी-पंक्ति विषैं लिखने। बहुरि तिनही तीनों की वर्गशलाका च्यारि की तौ एक, सोलह की दोय, दोयसै छप्पन की तीन– ए तीनों तीसरी-पंक्ति विषैं लिखने।

तहां प्रथम-पंक्ति विषैं च्यारि, सोलह, दोयसौ छप्पन कौं परस्पर-गुणे सोलह हजार तीनसै चौरासी होइ। बहुरि पण्णट्ठी कौं अपनी वर्गशलाकाच्यारि का भाग दीएं भी इतने ही हो हैं। बहुरि दूसरी-पंक्ति विषैं दोय, च्यारि, आठ, तहां अंतधणं गुणगुणियं इत्यादि सूत्रकरि जोडिए, तब अंतधन आठ, ताकौं गुणकार दोयकरि गुणैं सोलह, तामैं आदि दोय घटाएं चौदह, एक घाटि गुणकार एक का भाग दीएं भी चौदह, तिन तीनों का जोड जानना। सोई पण्णट्ठी के अर्धच्छेद सोलह, तामैं तिस पण्णट्ठी का वर्गशलाका च्यारि, ताके अर्धच्छेद दोय घटाएं भी चौदह ही होइ। तीसरी-पंक्ति का इहां प्रयोजन नाहीं। इस दृष्टांत करि पूर्वोक्त कथन कौं नीकैं समझना। अैसैं सत्तर कोडाकोड़ि सागर स्थिति का धारी मिथ्यात्व नामा कर्म की अन्योन्याभ्यस्तराशि वा नानागुणहानिराशि कह्या। औरनि की आगैं कहेंगे ॥ १२५ ॥

वग्गसलायेणवहिद पल्लं अण्णोण्णगुणिदरासी हु।
णाणागुणहाणिसला, वग्गसलच्छेदणूणपल्लछिदी ॥ १२६ ॥

वर्गशलाकयावहित, पल्यमन्योन्यगुणितराशिर्हि।
नानागुणहानिशला, वर्गशलच्छेदन्यूनपल्यच्छित्तिः ॥ १२६ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका — अैसैं पल्य की वर्गशलाका का भाग पल्य कौं दीएं जो प्रमाण होइ, तितना तौ अन्योन्याभ्यस्तराशि जानना। बहुरि पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदनि कौं पल्य के अर्धच्छेदनि में घटाएं जो प्रमाण होइ, तितना नानागुणहानि-राशि जानना ॥ ९२६ ॥

आगैं गुणहानि-आयाम का प्रमाण कहैं हैं—

सव्वसलायाणं जदि, पयदणिसेये लहेज्ज एक्कस्स।
किं होदित्ति णिसेये, सलाहिदे होदि गुणहाणी॥ ९२७॥

सर्वशलाकानां यदि, प्रकृतनिषेके लभ्यते एकस्य।
किं भवतीति निषेके, शलाहिते भवति गुणहानिः॥ ९२७॥

टीका — सर्व नानागुणहानि-शलाकानि का जो स्थिति के सर्व-निषेक होंइ, तौ एक गुणहानि-शलाका के केते निषेक होंइ— अैसै त्रैराशिक करना। तहां प्रमाणराशि नानागुणहानि का प्रमाण, सो इहां पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेदनि करि हीन पल्य का अर्धच्छेद प्रमाण है। अर फलराशि सर्व-स्थिति के निषेक, सो इहां संख्यात-पल्य-प्रमाण हैं। अर इच्छाराशि शलाका एक-तहां फलकरि इच्छा कौं गुणि प्रमाण का भाग दीएं जो प्रमाण होइ, सोई गुणहानि-आयाम का प्रमाण जानना। जैसै अंकसंदृष्टि करि प्रमाणराशि नानागुणहानि छह, फलराशि स्थिति-अडतालीस, इच्छाराशि एक गुणहानि। फल करि इच्छा कौं गुणि प्रमाण का भाग दीएं गुणहानि-आयाम का प्रमाण आठ हो है। एक गुणहानि विषैं एते निषेक पाइए है ॥९२७॥

आगैं दो गुणहानि का प्रमाण वा ताका प्रयोजन कहै हैं—

दोगुणहाणिपमाणं, णिसेयहारो दु होइ तेण हिदे।
इट्ठे पढमणिसेये, विसेसमागच्छदे तत्थ॥ ९२८॥

द्विगुणहानिप्रमाणं, निषेकहारस्तु भवति तेन हिते।
इष्टे प्रथमनिषेके, विशेष आगच्छति तत्र॥ ९२८॥

टीका — गुणहानि-आयाम के प्रमाण कौं दूणा कीएं दो गुणहानि हो है। इसही का निषेकहार अैसा नाम है। इस दो गुणहानि प्रमाण भागहार का भाग विवक्षित-गुणहानि के पहिले निषेक कौं दीएं जो प्रमाण आवै, सोई तिस गुणहानि विषैं विशेष जानना। निषेक-निषेक प्रति जितने-जितने आदि-निषेक तैं अंत-निषेक पर्यंत घटते जांहि वा अंत-निषेक तैं आदि-निषेकपर्यंत बधते जाहि, तितने प्रमाण का नाम विशेष है वा इसही का नाम चय है ॥ ९२८ ॥

अैसैं द्रव्यादि का प्रमाण का ज्ञान करवाय अन्य कार्य कहैं हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

रूऊणण्णोण्णब्भत्थ, वहिददव्वं च चरिमगुणदव्वं।
होदि तदो दुगुणकमो, आदिमगुणहाणिदव्वोत्ति॥ १२९ ॥

रूपोनान्योन्याभ्यस्ता, वहितद्रव्यं च चरमगुणद्रव्यं।
भवति ततो द्विगुणक्रममादिमगुणहानिद्रव्यमिति॥ १२९ ॥

टीका – एक घाटि अन्योन्याभ्यस्त-राशि का भाग सर्व-द्रव्य कौं दीएं जो प्रमाण आवै, सोई अंत-गुणहानि का द्रव्य जानना। यातैं दूणा-दूणा आदि-गुणहानिपर्यंत द्रव्य जानना। अंकसंदृष्टि करि मिथ्यात्व का सर्वद्रव्य तरेसठिसै, याकौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्तराशि तरेसठि का भाग दीएं सौ पाए, "सौ" अंत की छठी-गुणहानि का द्रव्य जानना। यातैं पंचमी आदि गुणहानि विषैं दूणा-दूणा द्रव्य पहिली-गुणहानि पर्यंत जानना–

१००
२००
४००
८००
१६००
३२००

॥ १२९ ॥

अैसै नाना-गुणहानि विषैं द्रव्य जानि कहा करना ? सो कहै हैं–

रूऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयभागहारेण।
हदगुणहाणिविभजिदे, सगसगदव्वे विसेसा हु॥ १३० ॥

रूपोनाध्वानार्धेनोनेन निषेकभागहारेण।
हतगुणहानिविभाजिते, स्वकस्वकद्रव्ये विशेषा हि॥ १३० ॥

टीका – विवक्षित-गुणहानि के द्रव्य कौं एक घाटि गुणहानि-आयाम प्रमाण जो गच्छ, ताका आधा प्रमाण कौं निषेक-भागहार जो दो गुणहानि, तामैं घटाएं जो प्रमाण रहै, ताकरि गुणहानि-आयाम कौं गुणैं जो प्रमाण होइ, ताका भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सोई तिस गुणहानि विषैं विशेष जानना। अंक-संदृष्टि करि गुणहानि-आयाम का प्रमाण आठ, एक घटाएं सात, ताके आधे साढा तीन, याकौं निषेक भागहार सोलह मैं घटाएं साढा बारा, ताकरि गुणहानि आयाम-आठ कौं गुणैं सौ होइ, ताका भाग प्रथम-गुणहानि का द्रव्य बत्तीससै कौं दीएं बत्तीस पाया, सोई प्रथम गुणहानि विषैं चय का प्रमाण हो है। दूसरी-गुणहानि का द्रव्य सोलहसै कौं ताका भाग दीएं सोलह पाया, सोई द्वितीय गुणहानि विषैं चय है। अैसैं ही तृतीयादि-गुणहानि का द्रव्य आठसै, च्यारिसै, दोयसै, सौ कौं ताका भाग दीएं आठ, च्यारि, दोय, एक पाए, सोई तिन गुणहानि विषैं चय जानना। चय कौं जानने कौं पूर्वैं विधान कह्या था; परंतु पहिले ही आदि-निषेक का ज्ञान कैसै होइ ? तातैं इहां अन्य विधान कह्या॥ १३० ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पचयस्य य संकलणं, सगसगगुणहाणिदव्वमज्झम्हि।
अवणिय गुणहाणिहिदे, आदिपमाणं तु सव्वत्थ॥ ९३१ ॥

प्रचयस्य च संकलनं, स्वकस्वकगुणहानिद्रव्यमध्ये।
अपनीय गुणहानिहिते, आदिप्रमाणं तु सर्वत्र॥ ९३१ ॥

टीका – विवक्षित-गुणहानि कौं मिलाएं सर्व चयधन का जो प्रमाण होइ, ताकौं अपना-अपना गुणहानि का सर्वद्रव्य मैस्यों घटाएं जो प्रमाण रहै, ताकौं गुणहानि-आयाम का भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सोई, आदि कहिए चयरहित अंत का निषेक विषैं प्रमाण जानना। यामैं क्रम तैं एक-एक चय बधावतैं एक घाटि गुणहानि प्रमाण चय मिलैं प्रथम-निषेक विषैं प्रमाण हो है। अंकसंदृष्टि करि प्रथम-गुणहानि विषैं 'व्येकपदार्धघ्नचयगुणो गच्छ उत्तरधनं' इस करण सूत्र करि एक घाटि गच्छ सात, ताकौं आधा साढा तीन, ताका चय, बत्तीस करि गुणैं एकसौ बारह, ताकौं गच्छ आठ करि गुणैं आठसै छिनवै होइ, सोई प्रचयधन जानना। याकौं सर्वद्रव्य बत्तीससै में घटाएं तेईससै च्यारि रहै। तिन कौं गुणहानि आठ का भाग दीएं दोयसै अठ्यासी भए, सोई अंत-निषेक का प्रमाण है। यामैं एक-एक चय बत्तीस-बत्तीस बधाएं द्वितीयादि निषेकनि विषैं प्रमाण हो है। याही प्रकार द्वितीयादि गुणहानि विषैं चय का प्रमाण आधा-आधा है ; तातैं प्रचयधन भी आधा-आधा है। ताकौं सर्व-द्रव्य भी आधा-आधा है, तामैं घटाएं जो-जो प्रमाण रहै, ताकौं गुणहानि-आयाम का भाग दीएं अंत-निषेक होइ, यामैं अपना-अपना एक चय मिलाएं अन्य निषेक हो है।

अंक-संदृष्टि करि निषेकनि का यंत्र

प्रथम गुणहानि	द्वितीय गुणहानि	तृतीय गुणहानि	चतुर्थ गुणहानि	पंचम गुणहानि	षष्ठ गुणहानि
२८८	१४४	७२	३६	१८	९
३२०	१६०	८०	४०	२०	१०
३५२	१७६	८८	४४	२२	११
३८४	१९२	९६	४८	२४	१२
४१६	२०८	१०४	५२	२६	१३
४४८	२२४	११२	५६	२८	१४
४८०	२४०	१२०	६०	३०	१५
५१२	२५६	१२८	६४	३२	१६
जोड ३२००	१६००	८००	४००	२००	१००

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

याप्रकार जैसै अंकसंदृष्टि करि कथन कीया तैसैं ही यथार्थ कथन जानना। विशेष इतना– इहां प्रमाण जैसा कहिए तैसै जानना। सो अर्थ दिखाए हैं–

कोई जीव विवक्षित एक समय विषैं मिथ्यात्व, अविरत, कषाय, योगनि करि आयु बिना सात-कर्मनि के उत्कृष्ट-समय प्रबद्ध कौं सर्व आत्मा के प्रदेशनि करि ग्रहण करै है। सो उत्कृष्ट-समय-प्रबद्ध, जघन्य-समय-प्रबद्ध तैं पल्य के अर्धच्छेदां के असंख्यातवें-भाग गुणा है। अपवर्तन कीएं जघन्य-समय-प्रबद्ध तैं असंख्यात-गुणा है। इस उत्कृष्ट समय-प्रबद्ध के परमाणूनि का प्रमाणरूप द्रव्य कौं सात का भाग दीएं मोहनीय का द्रव्य होइ। बहुरि याकों अनंत का भाग दीएं मोहनीय का सर्वघाती-द्रव्य होई, याकौं एक-मिथ्यात्व, सोलह-कषाय– इनि सतरहनि का भाग दीएं मिथ्यात्व का द्रव्य होइ, सो यहु तौ सर्वद्रव्य का प्रमाण जानना। बहुरि इस मिथ्यात्व की सत्तर कोडाकोडि सागर के जेते समय होंहि तीहि प्रमाण स्थिति जाननी। बहुरि पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेदनि करि हीन असैे पल्य के अर्धच्छेदनि का जेता प्रमाण, तितनी नानागुणहानि है। बहुरि नानागुणहानि प्रमाण दोय का अंक मांडि परस्पर गुणैं पल्य की वर्गशलाका करि हीन पल्यप्रमाण अन्योन्याभ्यस्तराशि जाननी। इस अन्योन्याभ्यस्तराशि मैंस्यों एक घटाय, याका भाग सर्वद्रव्य कौं दीएं, जो प्रमाण होइ, सो अंत का गुणहानि का द्रव्य जानना। तीसूं नीचे २ आदि की गुणहानिपर्यंत द्रव्य दूणा-दूणा जानना। बहुरि–

रूऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयभागहारेण।

हदगुणहाणिविभजिदे सगसग (गुणहाणि) दव्वे विसेसा हु॥ ९३० ॥ कर्म.।

इस सूत्र करि एक घाटि गुणहानि-आयाम प्रमाण गच्छ, ताका आधा प्रमाण कौं दो-गुणहानि मैंस्यो घटाएं जो प्रमाण अर्ध अधिक ड्योढ-गुणहानि प्रमाण भया, ताकौं गुणहानि-आयाम करि गुणैं जो प्रमाण होइ, ताका भाग विवक्षित-गुणहानि के द्रव्य कौं दीएं जो प्रमाण आवै, तितना-तितना अपनी-अपनी गुणहानि विषैं विशेष जानना। बहुरि 'व्येकपदार्धघ्नचयगुणो गच्छ उत्तरधनं' इस सूत्र करि एक घाटि गुणहानि-आयाम प्रमाण गच्छ का आधा कौं अपना-अपना चयकरि गुणि तिस गच्छ करि गुणैं जो-जो प्रमाण होइ, तितना-तितना अपनी-अपनी गुणहानि विषैं प्रचयधन जानना। बहुरि प्रचयधन कौं अपनी-अपनी गुणहानि का द्रव्य मैंस्यों घटाएं अवशेष रहै, ताकौं गुणहानि-आयाम का भाग दीएं जो-जो प्रमाण होइ, सो-सो अपनी-अपनी गुणहानि का अंतनिषेक विषैं द्रव्य हो हैं। यामैं एक-एक अपना-अपना चय प्रथम-निषेक पर्यंत मिलाएं, अन्य निषेकनि विषैं प्रमाण हो है। एक घाटि गुणहानि प्रमाण चय अंत-निषेक विषैं मिलैं आदि-निषेक विषैं चय कौं दो-गुणहानि करि गुणैं जो प्रमाण होइ, तितना प्रमाण हो है। अैसैं अंत-निषेक कौं आदि स्थापि क्रम तैं चय करि बधता-बधता अनुक्रम करि कथन कीया। बहुरि प्रथम-निषेक तैं अंत-निषेकपर्यंत घटता-घटता अनुक्रम करि त्रिकोणरचनावत् जानना। सो कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथम-गुणहानि के द्रव्य कौं गुणहानि-आयाम का भाग दीएं बीचि विषैं प्रमाणरूप मध्यम-धन होइ। जैसैं— प्रथम-गुणहानि का द्रव्य बत्तीससै कौं गुणहानि आठ का भाग दीएं मध्य-धन च्यारिसै होइ। इहां चौथा, पांचवां निषेक का प्रमाण मिलाय आधा कीजिए, सोई मध्य-धन जानना। याकौं एक घाटि गुणहानि-आयाम का आधा करि हीन निषेक भागहार का भाग दीएं चय का प्रमाण हो है। जैसै एक घाटि गुणहानि सात, ताका आधा साढा तीन, सो निषेक-भागहार सोला मैं घटाएं साढा बारा हैं ताका भाग मध्यधन च्यारिसै कौं दीएं चय का प्रमाण बत्तीस हो है। इस चय कौं दोयगुण-हानि करि गुणैं प्रथम-निषेक हो है। जैसै चय प्रमाण बत्तीस कौ दोगुणहानि सोला करि गुणैं पांचसै बारह प्रमाण रूप प्रथम-निषेक हो है। यामैं एक २ चय घटाएं अंत-निषेक एक अधिक गुणहानि प्रमाण चय रूप होइ। जैसैं गुणहानि आठ, एक अधिक कीए नव अर चय प्रमाण बत्तीस, सो नव बत्तीस के दोयसै अठ्यासी भए, सोई अंतनिषेक विषैं प्रमाण जानना। अैसें ही और गुणहानि विषैं भी जानना। संदृष्टि—

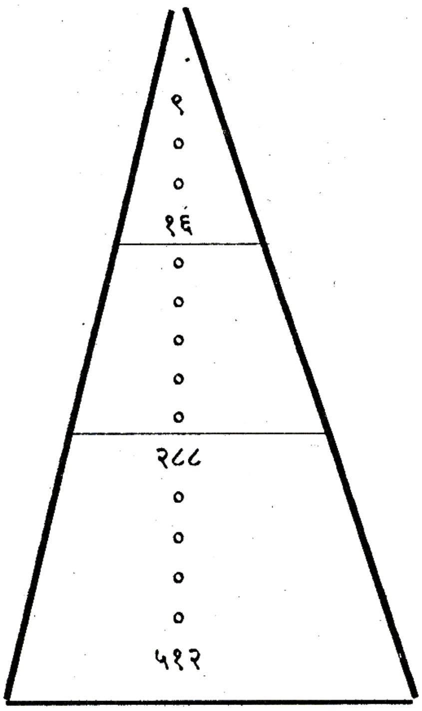

इस रचना विषैं प्रथम-गुणहानि का आदि-निषेक विषैं पांचसै बारह, मध्यनिषेक के ग्रहणनिमित्त बीचि बिंदी लिखीं, अंतनिषेक विषैं दोयसै अठ्यासी। बहुरि मध्यगुणहानि के निषेक ग्रहणनिमित्त बीचि बिंदी लिखीं। बहुरि अंत-गुणहानि विषैं प्रथम-निषेक सोलह, बीचि के ग्रहण निमित्त बिंदी, अंतनिषेक विषैं नव— अैसी अंक-संदृष्टि है। अर्थ-संदृष्टि सबही आगें संदृष्टि-अधिकार विषैं लिखेंगे तहां जाननी। जैसैं यहु मिथ्यात्व का कथन उत्कृष्ट-स्थिति वा उत्कृष्ट समय-प्रबद्ध की अपेक्षा कह्या है, तैसैं याही का मध्य, जघन्य-स्थिति वा समय-प्रबद्ध की अपेक्षा वा अन्य-प्रकृतिनि की यथासंभव विवक्षित-स्थिति वा समय-प्रबद्ध की अपेक्षा कथन जानना। जैसी जहां स्थिति होइ, तैसा तहां स्थिति का प्रमाण जानना। बहुरि जैसा जहां समयप्रबद्ध होइ, तैसा तहां द्रव्य का प्रमाण जानना। दो गुणहानि अर गुणहानि-आयाम का प्रमाण सर्व विषैं समान

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जानना। नाना-गुणहानि अन्योन्याभ्यस्तराशि स्थिति के अनुसारि जानना। ऐसैं आयु बिना सात-कर्मनि की स्थिति विषैं निषेक-रचना समय-समय प्रति हो हैं॥ ९३१॥

सव्वासिं पयडीणं, णिसेयहारो य एयगुणहाणी।

सरिसा हवंति णाणा, गुणहाणिसलाउ वोच्छामि॥ ९३२॥

सर्वासां प्रकृतीनां, निषेकहारश्च एकगुणहानिः।

सदृशे भवन्ति नाना, गुणहानिशला वक्ष्यामि॥ ९३२॥

टीका – सर्व मूलोत्तर प्रकृतिनि का निषेकहार जो दोगुणहानि अर एक-गुणहानि-आयाम—ए दोऊ तौ समान हैं। बहुरि नानागुणहानि-शलाका स्थिति के अनुसारि हैं; तातैं समान नाहीं। सो तिन नाना-गुणहानि शलाकानि कौं कहैं हैं॥ ९३२॥

मिच्छत्तस्स य उत्ता, उवरीदो तिण्णि तिण्णि संमिलिदा।

अट्ठगुणेणूणकमा, सत्तसु रइदा तिरिच्छेण॥ ९३३॥

मिथ्यात्वस्य च उक्ता, उपरितः त्रयस्त्रयः संमिलिताः।

अष्टगुणेनोनक्रमाः, सप्तसु रचिता तिरश्चा॥ ९३३॥

टीका – मिथ्यात्व-प्रकृति के जे पल्य वर्गशलाका के अर्धच्छेदनि कौं आदि देकरि पल्य के प्रथम-मूल के अर्धच्छेदनि पर्यंत दूणे-दूणे अर्धच्छेद एक-एक वर्गस्थान विषैं कहे, तिनिकौं स्थापन करि ऊपरि तैं पल्य का प्रथम-मूल तैं लगाय तीन-तीन वर्ग-स्थाननि के अर्धच्छेदराशि मिलाइए, ते आठ-आठ गुणा घाटि अनुक्रम तैं हो हैं। सोही कहिए है—

पल्य के प्रथम-वर्गमूल के अर्धच्छेद पल्य के अर्धच्छेदनि तैं आधे, इनतैं आधे पल्य के दूसरा-वर्गमूल के अर्धच्छेद, इनतैं आधे पल्य के तीसरा-वर्गमूल के अर्धच्छेद, इनि तीनू का जोड दीजिए 'अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं' इस सूत्र करि अंत विषैं धन पल्य के अर्धच्छेदनि तैं आधे प्रथम-मूल के अर्धच्छेद, इनकौं गुणकार दोय करि गुणैं पल्य के अर्धच्छेद प्रमाण होहि, इनविषैं आदि के पल्य के तीसरा-मूल के अर्धच्छेद, पल्य के अर्धच्छेदनि के आठवें-भाग तैं घटाइए, तब सात-गुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का आठवां-भाग आया, एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं भी तितने ही रहे, सोई तिन तीनू राशीनि का जोड़ जानना।

अैसैं ही करि पल्य के चौथा, पांचवां, छठा वर्गमूल के अर्धच्छेद पल्य के अर्धच्छेदनि तैं सोलहे बत्तीसवें, चौसठिवें भाग हैं। तिन तीनों राशि का जोड़ पूर्ववत् दीएं सात-गुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का चौसठिवां-भाग भया, सो पूर्वले जोड़ तैं आठ-गुणा घाटि हूवा। अैसै ही पहले-पहलैं तैं आधे-आधे सातवां, आठवां, नवां, पल्य का वर्गमूल के अर्धच्छेदनि कौं जोड़े सातगुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का पांचसै बारहवां भाग भया, सो पूर्वले जोड़ तैं आठ-गुणा घाटि हूवा।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

याहीं प्रकार उतरि-उतरि करि तीन-तीन वर्गस्थाननि के अर्धच्छेद जोड़ें आठ-आठ गुणे घाटि होते जायं, बहुरि उतरते-उतरते पल्य की वर्ग-शलाका का आठवां, सातवां, छठा वर्ग के अर्धच्छेद पल्य की वर्ग-शलाका के अर्धच्छेदनि तैं दोयसै छप्पन गुणे, एकसौ अट्ठाईसगुणे, चौसठ गुणे हैं। तिन तीन-राशि कौं जोड़ें पल्य-वर्गशालाका का अर्धच्छेदनि तैं च्यारिसै अठतालीस गुणा हूवा।

बहुरि पल्य की वर्ग-शलाका का पांचवां, चौथा, तीसरा वर्ग के अर्धच्छेद, पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेदनि तैं बत्तीस, सोलह, आठ गुणे हो हैं। तिन तीन-राशि के जोडें पल्य-वर्गशलाका अर्धच्छेदनि तैं छप्पन्न गुणे हो हैं, ते पूर्वराशि तैं आठगुणे घाटि भए। बहुरि पल्य की वर्गशलाका का दूसरा-वर्ग, पहला-वर्ग अर वर्गशलाका इन तीनों के अर्धच्छेद पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेदनि तैं चौगुणे, दूणे, इकगुणे हैं, तिन तीनौं के जोडें पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदनि तैं सात-गुणे हो हैं। सो पूर्वराशि तैं आठगुणा घाटि भए।

अैसें आठ-आठ गुणा घाटि जानना। इहां पल्य का वर्गमूल करिए, सो प्रथम-मूल जानना। प्रथम मूल का वर्गमूल करिए, सो दूसरा मूल जानना। दूसरा मूल का वर्गमूल करिए, सो तीसरा मूल जानना। अैसें ही चौथा आदि मूल जानने।

बहुरि पल्य की वर्गशलाका का वर्ग करिए, सो प्रथम-वर्ग जानना। प्रथम-वर्ग का वर्ग करिए, सो दूसरा-वर्ग जानना। ताका वर्ग करिए, सो तीसरा वर्ग जानना। अैसें ही चौथा आदि वर्ग जानना। सो पल्य का पहला, दूसरा, तीसरा मूल के अर्धच्छेद जोडें जो राशि भई, तीहिस्यों लगाय तीन-तीन स्थाननि के अर्धच्छेद जोडैं, जो-जो राशि पल्य की वर्ग-शलाका का दूसरा, पहला-वर्ग अर पल्य की वर्ग शलाका, इन तीनों के अर्धच्छेद जौडैं, जो-जो राशि होइ, तहां पर्यंत सर्व जोडे हुए असंख्यात-राशि जुदे-जुदे सात-स्थाननि विषैं आगै-आगै रचना रूप करने ॥९३३ ॥

छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८
छे ७ ८ । ८	छे ७ ८ । ८	छे ७ ८ । ८	छे ७ ८ । ८	छे ७ ८ । ८	छे ७ ८ । ८
छे ७ ८ । ८ । ८	छे ७ ८ । ८ । ८	छे ७ ८ । ८ । ८	छे ७ ८ । ८ । ८	छे ७ ८ । ८ । ८	छे ७ ८ । ८ । ८
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८
व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८
व छे ७	व छे ७	व छे ७	व छे ७	व छे ७	छे ७

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तत्थंतिमच्छिदिस्स य, अट्ठमभागो सलायछेदा हु।
आदिमरासिपमाणं, दसकोडाकोडिपडिबद्धे॥ १३४॥

तत्रांतिमच्छित्तेश्चाष्टमभागः शलाकच्छेदा हि।
आदिमराशिप्रमाणं, दशकोटीकोटिप्रतिबद्धे॥ १३४॥

टीका – तिनि पूर्वोक्त सात-पंक्तिनि विषैं पहली-पंक्ति विषैं जो-जो तीन-तीन का जोड दीएं राशि भया, तिन सबनि कौं जुदा-जुदा फलराशि करिए अर सबनि विषैं दश कोडाकोडि सागर प्रमाण इच्छा राशि करिए, अर सत्तर कोडाकोडि सागर प्रमाणराशि करिए– ऐसें त्रैराशिक करि फलराशि कौं इच्छाराशि करि गुणें प्रमाण का भाग दीए जो-जो प्रमाण होइ, सो-सो मांडि तिन सबनि का जोड दीए जो प्रमाण होइ, तितनी दश कोडाकोडि सागर प्रमाण स्थिति संबंधी नानागुणहानि शलाका जाननी। तिनिके जोड़ देने का विधान कहिए है–

'अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं' रूऊणुत्तरभजियं; इस सूत्र करि पल्य का पहिला, दूसरा, तीसरा वर्गमूल के अर्धच्छेद मिलैं सातगुणा पल्य के अर्धच्छेदनि के आठवें भागि भए, तिनकौं दस कोडाकोडि सागर करि गुणिए, सत्तर कोडाकोडि सागर का भाग दीए, पल्य का अर्धच्छेदनि के आठवें-भाग प्रमाण भया, सो इहां अंत-धन जानना। याकौं जोड-जोड़ प्रति गुणकार आठ, सो आठ करि गुणैं पल्य के अर्धच्छेद प्रमाण भया, या मैंस्यों आदि घटावना, सो पल्य की वर्ग-शलाका का दूसरा, पहिला वर्ग अर पल्य की वर्ग-शलाका– इन तीनों के अर्धच्छेद मिलैं सातगुणें पल्य की वर्ग-शलाका के अर्धच्छेद भए, तिनकौं दश कोडाकोडी सागर करि गुणैं सत्तर कोडाकोडि सागर का भाग दीएं पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेद प्रमाण भया, सोई आदि जानना। इतने घटाएं अवशेष जे रहे तिनकौं गुणकार आठ मैं एक घटाएं सात, ताका भाग दीएं जो पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेदनि करि हीन पल्य के अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग प्रमाण भया, सो दस कोडाकोडि सागर स्थिति संबंधी नानागुणहानि शलाका का प्रमाण जानना।

बहुरि इतने दूवे मांडि परस्पर गुणैं अन्योन्याभ्यस्त-राशि होइ, ताका प्रमाण ल्यावने कौं तीहि नाना-गुण हानि विषैं ऋणरूप पल्य की वर्ग-शलाका के अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग कह्या, सो ताकौं तौ जुदा राखिए अर अवशेष पल्य के अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग रह्या, ताकी सहनानी के अर्थि आठ ही का गुणकार करिए अर आठ ही का भागहार करिए। तहां गुणकार मैंस्यों एक घटाइ जुदा राखिए अवशेष सात का गुणकार रह्या अर पहलैं सात का भागहार था, सो दोऊनि कौं समान जानि अपवर्तन कीजिए– दोऊनि कौं दूरि कीजिए।

ऐसैं करतैं पल्य का अर्धच्छेदनि का आठवां-भाग भया, सो इतने दोय के अंक मांडि परस्पर-गुणैं पल्य का तीसरा-वर्गमूल भया ; जातैं भागहार के जेते अर्धच्छेद होंहि, तितने वर्ग-स्थान भाज्यराशि तैं नीचैं कौं गएं उत्पन्नराशि का प्रमाण हो है। सो इहां भागहार आठ है, सो ताके अर्धच्छेद तीन, सो पल्य तैं नीचैं तीसरा-वर्गस्थान पल्य का तृतीय-मूल है। बहुरि जो गुणकार मैंस्यों एक जुदा राख्या था, सो पल्य का छप्पनवां-भाग गुणकार था, तिसतैं पल्य का छप्पनवां-भाग प्रमाण रह्या, तामैं ऋणरूप पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घटाएं जो अवशेष रहैं, तितने दोय के अंक मांडि परस्पर-गुणैं असंख्यात-गुणा पल्य का पांचवां वर्गमूल मात्र असंख्यात प्रमाण भया सो–

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि अहियरूवाणि।
तेसिं अण्णोण्णहदी गुणगारो लद्धरासिस्स्॥ ११० ॥ त्रिलोकसार ॥

इस सूत्र के अनुसारि तैं अधिक राशि का परस्पर गुणन तैं राशि होइ सो जो गुणकार रूप हो है तातैं तिस असंख्यात करि पल्य के तीसरे-वर्गमूल कौं गुणें जो प्रमाण होइ, तितना दश कोडाकोडी सागर संबंधी अन्योन्याभ्यस्त-राशि जानना ॥ ९३४ ॥

आगैं बीस कोडाकोडि आदि स्थितिसंबंधी नानागुणहानि वा अन्योन्याभ्यस्तराशि कहिये है–

इगिपंतिगदं पुध पुध, अप्पिट्ठेण य हदे हवे णियमा।
अप्पिट्ठस्स य पंती, णाणागुणहाणिपडिबद्धा॥ ९३५ ॥

एकपंक्तिगतं पृथक् पृथगात्मेष्टेन च हते भवेन्नियमात्।
आत्मेष्टस्य च पंक्तयो, नानागुणहानिप्रतिबद्धाः ॥ ९३५ ॥

टीका – अवशेष छह-पंक्तिनि विषैं एक-एक पंक्ति विषैं जैसैं दश कोडाकोडी सागर संबधी प्रथम-पंक्ति विषैं सर्व तीन-तीन स्थान का जोड़ रूप-राशि जुदा-जुदा फल-राशि कीया था, तैसैं ही सब छहौं-पंक्तिनि विषैं फलराशि करना। बहुरि प्रथम-पंक्ति विषैं इच्छाराशि दश कोडाकोडी सागर कह्या, तिस इच्छाराशि करि फलराशि का गुणन कीया। इहां छह-पंक्तिनि विषैं अपने-अपने इष्टरूप प्रथम-पंक्ति विषैं बीस कोडाकोडी सागर, दूसरी-पंक्ति विषैं तीस कोडाकोडी सागर प्रमाण, तीसरी-पंक्ति विषैं चालीस कोडाकोडी सागर, चौथी-पंक्ति विषैं पचास कोडाकोडी सागर, पांचवीं-पंक्ति विषैं साठि कोडाकोडी सागर, छठी-पंक्ति विषैं सत्तर कोडाकोडी सागर प्रमाण इच्छाराशि करि गुणन करना। बहुरि जैसै प्रथम-पंक्ति विषैं प्रमाणराशि सत्तरि कोडाकोडी सागर का भाग दीया था, तैसैं इहां भी सर्वत्र प्रमाणराशि सत्तरि कोडाकोडी सागर का भाग देना। यों करता जो-जो प्रमाण आवै, सो-सो अपने इष्टरूप बीस कोडाकोडि सागर आदि स्थिति संबंधी नाना गुणहानि-शलाका की पंक्ति हो है ॥ ९३५ ॥

अप्पिट्ठपंतिचरिमो, जेत्तियमेत्ताण वग्गमूलाणं।
छिदिणिवहोत्ति णिहाणिय, सेसं य य मेलिदे इट्ठा॥ ९३६ ॥

आत्मेष्टपंक्तिचरमः, यावन्मात्राणां वर्गमूलानां।
छित्तिनिवह इति निर्धार्य, शेषं च च मेलिते इष्टा॥ ९३६ ॥

टीका – अपनी-अपनी इष्ट-पंक्ति विषैं यावत अंत-स्थान होइ, तितने वर्ग-मूलनि का अर्धच्छेदनि का समूह– अैसैं निर्धारि करि सबनि कौं मिलाएं अपने-अपने इष्ट-विवक्षित की

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नाना-गुणहानि हो है। तहां मिलावने का विधान दश कोडाकोडी सागर संबंधी पंक्ति विषैं जैसैं कह्या, तैसैं ही अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं इस सूत्र करि जानना। विशेष इतना-अंतधन अर आदि इनिका जो प्रमाण दश कोडाकोडी सागर संबंधी पंक्ति विषैं कह्या, तिसतैं इनि छहौं-पंक्तिनि विषैं क्रम तैं दूणा, तिगुणा, चौगुणा, पंचगुणा, छहगुणा, सातगुणा जानना ; जातैं इच्छाराशि के दुगुणा, तिगुणा आदि होतैं पंक्ति विषैं सर्व ही दूणे, तिगुणे आदि होइ गये। तहां बीस कोडाकोडी सागर संबंधी पंक्ति विषैं अंतधन पल्य का अर्धच्छेदनि के चौथे-भाग, तिसकौं गुणकार आठ करि गुणें पल्य के अर्धच्छेदनि तैं दूणा प्रमाण भया तिस विषैं आदि का प्रमाण पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदनि तैं चौदह-गुणे सो घटाइए, सो इस प्रमाण कौं स्तोक जानि तामैं किंचित्-ऊन करणा। बहुरि ताकौं एक घाटि गुणकार सात, ताका भाग देना— अैसैं करतैं किंचित्-ऊन दूणा पल्य के अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग प्रमाण जोड भया, सो इतनी नाना-गुणहानि राशि जाननी।

बहुरि इस प्रमाण कौं पूर्वोक्तप्रकार सहनानी के अर्थि आठ करि गुणिए आठ ही का भाग दीजिए, तहां गुणकार में एक जुदा राखि अवशेष सात का गुणकार रह्या अर पहलैं सात का भागहार था, तिनकौं समान जानि अपवर्तन कीया। अवशेष किंचित्-ऊन पल्य के अर्धच्छेदनि कैं दोय का गुणकार आठ का भागहार रह्या, तिनिके अपवर्तन कीएं किंचित्-ऊन पल्य के अर्धच्छेदनि का चौथा-भाग रह्या, सो इतने दूवे मांडि परस्पर-गुणन कीएं किंचित्-ऊन पल्य का द्वितीय मूल भया। बहुरि जो जुदा एक गुणकार राख्या था, सो गुणकार किंचित्-ऊन दूणा पल्य के अर्धच्छेदनि कैं छप्पनवां-भाग प्रमाण था ; तातैं तितने दूवे मांडि परस्पर-गुणे यथायोग्य असंख्यात भया, तिस करि गुणैं असंख्यातगुणा किंचित्-ऊन पल्य का द्वितीय-वर्गमूल प्रमाण, ताका अन्योन्याभ्यस्त-राशि भया।

बहुरि तीस कोडाकोडी सागर संबंधी पंक्ति विषैं पूर्वोक्त प्रकार जोड दीएं किंचित्-ऊन तिगुणें पल्य के अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग प्रमाण भया, सो इतनी नानागुणहानि-राशि है। बहुरि याकौं सहनानी के अर्थि आठ करि गुणिए आठ का भाग दीजिए गुणकार मैंस्यों एक जुदा राखिए अवशेष सात का गुणकार अर पहला सात का भागहार दोऊनि का अपवर्तन करिए— अैसैं करतैं किंचित्-ऊन तिगुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का आठवां-भाग भया, सो इहां तिगुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का आठवां-भाग कह्या, तामैं एक-गुणा प्रमाण दूवे मांडि परस्पर-गुणें पल्य का तृतीय-मूल भया। अर अवशेष दोयगुणा प्रमाण दूवे मांडि परस्पर-गुणैं पल्य का द्वितीय-मूल होइ। इनिकौं परस्पर गुणैं पल्य के तीसरे मूल तैं गुण्या हूवा पल्य का दूसरा-वर्गमूल प्रमाण होइ, तामैं किंचित्-ऊन करना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि एक गुणकार जुदा राख्या था, सो गुणकार किंचित्-ऊन तिगुणा पल्य के अर्धच्छेदनि के छप्पनवां-भाग का भाग था ; तातैं तितने दूवे मांडि परस्पर-गुणें यथायोग्य असंख्यात् भया। ताकरि गुणें असंख्यातगुणा किंचित्-ऊन पल्य का तीसरा-मूल करि गुण्या हुवा पल्य का दूसरा-वर्गमूल प्रमाण अन्योन्याभ्यस्त-राशि हो है।

बहुरि चालीस कोडाकोडी सागर संबंधी पंक्ति विषैं पूर्वोक्त प्रकार जोड दीएं किंचित्-ऊन चौगुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग भया, सो इतना नानागुणहानि-राशि जानना। बहुरि याकौं सहनानी के अर्थि आठ करि गुणिए आठ का भाग दीजिये, तहां गुणकार में एक जुदा राखि अवशेष सात का गुणकार अर पूर्वे सात का भागहार था, सो दोऊनि का अपवर्तन कीएं किंचित्-ऊन पल्य के एक अर्धच्छेदनि तैं आधे रहे, सो इतने दूवे मांडि परस्पर-गुणैं किंचित्-ऊन पल्य का प्रथम-मूल भया। बहुरि जुदा एक गुणकार राख्या था, सो गुणकार किंचित्-ऊन चौगुणा पल्य के अर्धच्छेदनि के छप्पनवां-भाग का था ; तातैं तितने दूवे मांडि परस्पर-गुणें यथायोग्य-असंख्यात भया। ताकरि गुणैं असंख्यात-गुणा किंचित्-ऊन पल्य का प्रथम-मूल प्रमाण अन्योन्याभ्यस्त-राशि हो है।

बहुरि पचास कोडाकोडी सागर संबंधी पंक्ति विषैं पूर्वोक्त प्रकार जोड दीएं किंचित्-ऊन पांच-गुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग प्रमाण हो है, सो इतनी तौ नानागुणहानि-राशि जाननी। बहुरि ताकौं सहनानी के अर्थि आठ करि गुणिये आठ का भाग दीजिए, तहां गुणकार विषैं एक जुदा राखि अवशेष सात का गुणकार अर पहलैं सात का भागहार था, सो दोऊनि का अपवर्तन कीएं किंचित्-ऊन पांच-गुणा पल्य का अर्धच्छेदनि का आठवां-भाग प्रमाण होइ। सो इहां पांचगुणा कह्या था, तामैं एक गुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का आठवां-भाग प्रमाण दूवा मांडि परस्पर-गुणें पल्य का तृतीय-मूल होइ। अर अवशेष च्यारि-गुणा तीहि प्रमाण दूवे मांडि परस्पर-गुणैं पल्य का प्रथम-मूल होइ। इनिकौं परस्पर गुणिए जो राशि होइ, ताकौं एक गुणकार जुदा राख्या था, सो वह किंचित्-ऊन पांच-गुणैं पल्य के अर्धच्छेदनि का छप्पनवां-भाग का गुणकार था ; तातैं तितने दूवे मांडि परस्पर गुणैं असंख्यात होइ, ताकरि गुणैं असंख्यात करि गुणा हूवा किंचित् ऊन पल्य का तीसरा-वर्गमूल करि गुण्या पल्य का प्रथम-मूल प्रमाण अन्योन्याभ्यस्त-राशि हो है।

बहुरि साठ कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति संबंधी पंक्ति विषैं पूर्ववत् जोड दीएं किंचित्-ऊन छह-गुणां पल्य का अर्धच्छेदनि का सातवां-भाग हो है। सो इतना नानागुणहानि-राशि है। बहुरि याकौं सहनानी के अर्थि आठ करि गुणिए आठ का भाग दीजिए, तहां गुणकार विषैं एक जुदा राखि अवशेष सात का गुणकार अर अगिला सात का भागहार दोऊनि का अपवर्तन करना। अैसैं करतैं किंचित्-ऊन तिगुणा पल्य के अर्धच्छेदनि का चौथा-भाग भया, सो इतने दूवे मांडि परस्पर गुणें किंचित्-ऊन पल्य का द्वितीय-मूल तैं गुण्या पल्य का प्रथम-मूल प्रमाण हो है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि एक गुणकार जुदा राख्या था, सो वह किंचित् छह-गुणा ऊन पल्य के अर्धच्छेदनि का छप्पनवां-भाग का गुणकार था ; तातैं तितने दूवे मांडि परस्पर-गुणैं असंख्यात भया, ताकरि गुणैं असंख्यातगुणा किंचित्-ऊन पल्य का द्वितीय-मूल तैं गुण्या हूवा पल्य का प्रथम-मूल प्रमाण अन्योन्याभ्यस्त-राशि हो है।

बहुरि सत्तर-कोडाकोडी सागर संबंधी पंक्ति विषैं पूर्ववत् जोड दीएं पल्य की वर्गशलाका का अर्धच्छेदनि करि हीन पल्य के अर्धच्छेद प्रमाण हो है, सो इतनी नानागुणहानि-राशि जानना। बहुरि पल्य के अर्धच्छेद प्रमाण दूवे मांडि परस्पर-गुणैं पल्य होइ। बहुरि–

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि।
तेसिं अण्णोण्णहदी हारो उप्पण्णरासिस्स ॥ १११ ॥ त्रिलोकसार ॥

इस सूत्र के अनुसार तैं जेते हीन रूप थे, तिन प्रमाण परस्पर-गुणन तैं जो राशि होइ, सो उत्पन्नराशि का भागहार होइ ; तातैं पल्य की वर्गशलाका अर्धच्छेद प्रमाण दूवे मांडि परस्पर-गुणैं पल्य की वर्गशलाका होइ सो घटाइए– असैं पल्य की वर्गशलाका करि हीन पल्यप्रमाण अन्योन्याभ्यस्त-राशि हो है। असैं स्थिति अपेक्षा नानागुणहानि अन्योन्याभ्यस्त-राशि कह्या, सो जिस कर्म-प्रकृति की जितनी स्थिति होइ, ताकी तीहि स्थिति संबंधी यथायोग्य जानना ॥ ९३६ ॥

कहे जे अन्योन्याभ्यस्त-राशि तिनकौं गाथानि करि कहैं हैं–

इट्ठसलायपमाणे, दुगसंवग्गे कदे दु इट्ठस्स।
पयडिस्स य अण्णोण्णा, भत्थपमाणं हवे णियमा॥ ९३७ ॥

इष्टशलाकाप्रमाणे, द्विकसंवर्गे कृते तु इष्टस्य।
प्रकृतेश्चान्योन्याभ्यस्तप्रमाणं भवेन्नियमात्॥ ९३७ ॥

टीका — अपनी-अपनी इष्ट-शलाका जो नाना-गुणहानि-शलाका, तीहिं प्रमाण दोय के अंक मांडि संवर्ग जो परस्पर-गुणन ताकौं कीएं, परस्पर-गुणैं अपनी इष्ट प्रकृति का अन्योन्याभ्यस्त-राशि का प्रमाण हो है नियमकरि ॥ ९३७ ॥

सो कहा किस कर्म का हो है, असा प्रश्न होतैं कहैं हैं–

आवरणबेदणीये, विग्घे पल्लस्स बिदियतदियपदं।
णामागोदे बिदियं, संखातीदं हवंतित्ति॥ ९३८ ॥

आवरणवेदनीये, विघ्ने पल्यस्य द्वितीयतृतीयपदं।
नामगोत्रे द्वितीयं, संख्यातीतं भवंतीति॥ ९३८ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका — ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, अंतराय इनि विषैं उत्कृष्टस्थिति तीस कोडाकोडी सागर है ; तातैं इनिका अन्योन्याभ्यस्त-राशि है सो पल्य का द्वितीय-मूल कौं असंख्यात तृतीय-मूलनि करि गुणैं जो प्रमाण होइ, तितनी है। बहुरि नाम, गोत्र विषैं उत्कृष्ट-स्थिति बीस कोडाकोडी सागर है ; तातैं इनिका अन्योन्याभ्यस्त-राशि असंख्यातगुणा पल्य का द्वितीय-वर्गमूल प्रमाण है ॥ ९३८ ॥

आउस्स य संखेज्जा, तप्पडिभागा हवंति णियमेण।
इदि अत्थपदं जाणिय, इट्ठठिदिस्साणए मदिमं॥ ९३९ ॥

आयुषश्च संख्येयास्तत्प्रतिभागा भवंति नियमेन।
इति अर्थपदं ज्ञात्वा, इष्टस्थितेरानयेत् मतिमान्॥ ९३९ ॥

टीका — आयुकर्म का जुदा ही स्थिति भेद है, सो ताकी नानागुणहानि शलाका स्थिति का बटवारा के अनुसारि नियम तैं है, सो सत्तर कोडाकोडी सागर स्थिति का पल्य की वर्गशलाका का छेदनि करि हीन पल्य के अर्धच्छेद प्रमाण नानागुणहानि शलाका होंइ, तो तेतीस सागर स्थिति की कितनी नानागुणहानि-शलाका होंइ— ऐसैं त्रैराशिक करि जो लब्धराशि आवै, तितनी नानागुणहानिशलाका जाननी। ऐसैं ही विवक्षित-स्थान जान बुद्धिमान जीव है, सो विवक्षित-स्थिति की नानागुणहानिशलाका का प्रमाण बनावै। ऐसैं एकगुणहानि-आयाम वा नानागुणहानि शलाका वा निषेक-भागहार वा अन्योन्याभ्यस्तराशि जानैं कहा सो कहैं हैं—

उक्कस्सट्ठिदिबंधे, सयलावाहा हु सव्वठिदिरयणा।
तक्काले दीसदि तो, धोधो बंधट्ठिदीणं च॥ ९४० ॥

उत्कृष्टस्थितिबंधे, सकलाबाधा हि सर्वस्थितिरचना।
तत्काले दृश्यते अतोऽधोधो बंधस्थितीनां च॥ ९४० ॥

टीका — विवक्षित-प्रकृति का उत्कृष्टस्थिति बंध होतैं तीहि का बंधसमय विषैं ही उत्कृष्ट आबाधा अर सर्वस्थिति की रचना देखिए है। तिस स्थिति के अंत के निषेक तैं नीचैं-नीचैं प्रथम निषेकपर्यंत स्थितिबंधरूप जे स्थिति, तिनकी एक-एक समय हीनता देखनी। अंत का निषेक की विवक्षित समय-प्रबद्ध की स्थिति-प्रमाण स्थिति है ताके नीचैं द्विचरम-निषेक की ; तातैं एक समय घाटि स्थिति है। ऐसैं ही आदि-निषेक पर्यंत जानि लेनी॥ ९४० ॥

ऐसैं स्थिति की अधिकता कैसैं देखिये, सो कहिए हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आबाधाणं बिदियो, तदियो कमसो हि चरमसमयो दु।
पढमो बिदियो तिदियो, कमसो चरिमो णिसेओ, दु॥ ९४१॥

आबाधानां द्वितीयः, तृतीयः क्रमशो हि चरमसमयस्तु।
प्रथमो द्वितीयः तृतीयः, क्रमशश्चरमो निषेकस्तु॥ ९४१॥

टीका – सर्व-प्रकृतिनि का बंध समय विषैं सर्व आबाधा सर्वनिषेक रूप जो स्थिति, ताका बंध होने के अनंतरि-समयनि विषैं, आबाधा-काल का दूसरा-समय, तीसरा-समय– ऐसैं एक-एक बंधता आबाधा-काल का अंत विषैं अंतसमय होइ। तहां पीछैं पहले समय प्रथम-निषेक, दूसरे-समय दूसरा-निषेक, तीसरे-समय तीसरा-निषेक– ऐसैं ही क्रम तैं स्थिति का अंत समय विषैं अंतनिषेक हो है, सो जिस-जिस समय जितनी परमाणूनि का समूहरूप निषेक है, तिस-तिस समय तितनी परमाणू उदयरूप हो हैं, तिस उदयरूप समय के अनंतरि ते परमाणू कर्मस्वभाव कौं छांडै हैं– ऐसा अर्थ जानना। ऐसैं करि प्रथम-निषेक तैं द्वितीय-निषेक की एक समय अधिक स्थिति दूसरे तैं तीसरे की अधिक है। ऐसैं करि एक-एक समय अधिक-स्थिति देखिए है॥ ९४१॥

आगैं समयप्रबद्धप्रमाण द्रव्य, सो वर्तमान एक समय विषैं बंधै है, वा उदय रूप हो है ऐसा कहैं है–

समयपबद्धपमाणं, होदि तिरिच्छेण वट्टमाणम्मि।
पडिसमयं बंधुदओ, एक्को समयप्पबद्धो दु॥ ९४२॥

समयप्रबद्धप्रमाणं, भवति तिरश्चा वर्तमाने।
प्रतिसमयं बंधोदय, एकः समयप्रबद्धस्तु॥९४२॥

टीका – त्रिकोण-रचना विषैं विवक्षित जो कोई वर्तमान समय, तीहिं विषैं विवक्षित मोहनीय-कर्म का आबाधारहित उत्कृष्ट-स्थितिमात्र जो काल का प्रमाण, तीहि विषैं जे समय-समय बंधे समयप्रबद्ध, तिनविषैं जिनि निषेकनि की निर्जरा भई सो तौ भई, अवशेष रहे तिन निषेकनि विषैं प्रथम समय-प्रबद्ध का अंत-निषेक तैं लगाइ अंत समय-प्रबद्ध का आदि निषेक पर्यंत तिर्यग् बरोबरि रचना रूप एक-एक निषेक मिलि करि संपूर्ण एक समय प्रबद्ध प्रमाण द्रव्य हो है। तिसका वर्तमान समय विषैं उदय हो है ; तातैं समय-समय प्रति एक-एक समयप्रबद्ध उदय रूप हो है। बहुरि समय-समय प्रति एक-एक समय-प्रबद्ध का ही बंध हो है॥ ९४२॥

आगैं समय-समय प्रति बंध, उदय एक-एक समय-प्रबद्ध है, सो यातैं बंध, उदय का समुदाय रूप सत्त्व भी तितना ही होगा– ऐसा संदेह दूरि करने कौं कहैं हैं–

सत्तं समयपबद्धं, दिवड्ढगुणहाणिताडियं ऊणं।
तियकोणसरूवट्ठिद, दव्वे मिलिदे हवे णियमा॥ ९४३॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सत्त्वं समयप्रबद्धं द्व्यर्धगुणहानिताडितमूनं।
त्रिककोणस्वरूपस्थितद्रव्यं मिलिते भवेन्नियमात्॥ ९४३॥

टीका – सत्तारूप परमाणूनि का समूहरूप सत्त्व द्रव्य सो किंचित् ऊन ड्योढ गुणहानि करि गुण्या हूवा समय-प्रबद्ध प्रमाण है, सो त्रिकोणरचना के सर्वद्रव्य का जोड दीएं इतना ही हो है नियम करि सो पूर्वे जीवकांड का योगाधिकार विषैं अर कर्मकांड का बंध, उदय, सत्त्व अधिकार विषैं प्रसंग पाइ त्रिकोण-यंत्र लिख्या है वा तहां ही कैसे समय-समय प्रति एक-समयप्रबद्ध प्रमाण का उदय हो है ? कैसे किंचित ऊन ड्योढ गुणहानि करि गुणित समय-प्रबद्ध प्रमाण सत्त्व है ? सो कह्या है। बंध समय-समय समयप्रबद्ध प्रमाण प्रदेश-बंध का कथन विषैं है। सो सर्व कथन तहां तैं जानि लेना। बारंबार न लिखने के अर्थि इहां न लिख्या है। इहां संदृष्टि मात्र अंकसंदृष्टिरूप त्रिकोण-यंत्र लिखिए है–

सो इसका अैसा अर्थ अंक-संदृष्टि करि जानना, जिस समय-प्रबद्ध के सर्व-निषेक सत्ता रूप पाइए, तिसके अठतालीसौं निषेक नीचैं ही नीचैं लिखे। बहुरि ताके ऊपरि जिस समय-प्रबद्ध का प्रथम-निषेक गलि गया अवशेष सैंतालीस-निषेक रहे ते लिखे। बहुरि ताके ऊपरि जिसका पहला, दूसरा-निषेक गलिगया, तिसके छियालीस-निषेक लिखे– अैसैं एक-एक निषेक घाटि लिखतैं अंत विषैं जिस समय-प्रबद्ध के सैंतालीस-निषेक गलिगये, ताका अंत का एक निषेक लिख्या– अैसैं तौं सत्ता अपेक्षा यहु रचना जाननी। बहुरि वर्तमान विवक्षित-समय तैं आगैं जैसैं एक समय-प्रबद्ध का बंध होइ, तैसा ही एक समय-प्रबद्ध की निर्जरा होइ; तातैं सत्ता की रचना जैसैं कही तैसैं रहै। इहां दोय यंत्र लिखे हैं, तिनविषैं सत्ता विषैं पहला-यंत्र ही की रचना का ग्रहण जानना। सो इस सर्व त्रिकोण-यंत्र का जोड दीएं किंचित्-ऊन ड्योढ-गुणहानि-आयाम करि गुणित समय-प्रबद्ध हो है। सोई सत्त्व-द्रव्य का प्रमाण जानना।

बहुरि विवक्षित वर्तमान-समय विषैं जिस समयप्रबद्ध के सैंतालीस-निषेक पूर्वे गलि गए, ताका एक अंत का निषेक उदय रूप है। जाके छियालीस-निषेक गलि गए, ताका द्विचरम-निषेक उदय रूप है, अंत का निषेक अगिले-समय विषैं उदय होगा, इसही क्रम तैं जाका एक भी निषेक पूर्वे गल्या नहीं, ताका प्रथम-निषेक उदयरूप है, अन्य निषेक अगले-समयनि विषैं उदय होंहिगे। अैसैं अंत का निषेक तैं लगाय आदि का निषेक पर्यंत सर्व निषेकनि का जोड दीएं एक समय-प्रबद्ध का उदय हो है। बहुरि ताके ऊपरि तिस विवक्षित-समय के अनंतरि जो समय वर्तमान होइ, तहां जिस समय-प्रबद्ध का पूर्व समय विषैं अंतनिषेक का उदय भया था, ताके तौ सर्वनिषेक गलि गये। बहुरि जिसका द्विचरम-निषेक उदय रूप था, ताका तहां अंत का निषेक उदय-रूप हो है।

बहुरि पूर्वोक्त प्रकार एक-एक निषेक का उदय होतैं जाका प्रथमनिषेक का उदय भया था, ताका इहां दूसरा-निषेक का उदय होइ अर तिस समय-प्रबद्ध के पीछै समयप्रबद्ध बंध्या था,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताका प्रथम-निषेक इहां उदयरूप होइ। अैसैं इस समय विषैं भी एक समयप्रबद्ध ही का उदय भया। अैसैं समय-समय प्रति एक-एक समय-प्रबद्ध का उदय जानना। तिस अपेक्षा त्रिकोण-रचना विषैं जो दोय रचना करी हैं; तिनकौं मिलाये, बरोबरि एक पंक्ति का जोड दीएं समय-समय प्रति समयप्रबद्ध प्रमाण का जोड आवै है। इस संदृष्टि रूप त्रिकोण-यंत्र विषैं तिर्यक्-रचना वा ऊर्ध्वरचना विषैं कितनेक आदि-निषेक वा कितनेक अंत-निषेक लिखे अर बीचि बिंदी लिखी सो बिंदी लिखने की इहां अैसी समस्या है जो आदि के वा अंत के निषेक लिखे तिनके बीचि मध्य के जेते निषेक रहे, ते सर्व जानि लेने, सो संपूर्ण त्रिकोण-यंत्र पूर्वैं लिख्या है सो जानना ॥९४३ ॥

आगैं इस सत्तारूप त्रिकोण-यंत्र के जोड देने का विधान कहैं हैं—

उवरिमगुणहाणीणं, धणमंतिमहीणपढमदलमेत्तं।
पढमे समयपबद्धं, ऊणकमेणट्ठिया तिरिया॥ ९४४॥

उपरितनगुणहानीनां, धनमंतिमहीनप्रथमदलमात्रं।
प्रथमे समयप्रबद्धमूनक्रमेण स्थितं तिरश्चा॥ ९४४॥

टीका – त्रिकोण-रचना विषैं विवक्षित वर्तमान-समय विषैं प्रथमगुणहानि के प्रथम निषेक विषैं तौ तिर्यग्-रूप बरोबरि लिखे निषेक, तिनिका समुदायरूप संपूर्ण समयप्रबद्ध प्रमाण हो है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीय-निषेक तैं लगाय अंत की गुणहानि का अंतनिषेक पर्यंत अनुक्रम तैं चय घाटि का अनुक्रम करि तिर्यग् बरोबरि रचनारूप तिष्ठती द्वितीयादिक-गुणहानि के जोड तैं अंत की गुणहानि के जोड कौं अपनी-अपनी पहली-गुणहानि का जोड मैंस्यों घटाएं जो-जो प्रमाण होइ, ताका आधा-आधा हो है। बहुरि प्रथम गुणहानि का जोड गुणहानि का प्रमाण करि समय-प्रबद्ध कौं गुणैं जो प्रमाण होइ, तितना हो है॥

भावार्थ–

इहां त्रिकोणरचना विषैं जो नीचै ही नीचै प्रथमपंक्ति विषैं बरोबरि रूप लिख्या, ताकौं प्रथम-गुणहानि का प्रथम-निषेक कहिए। ताके ऊपरि पंक्तिनि विषैं जे लिखे, तिनकौं प्रथम-गुणहानि का द्वितीयादि-निषेक कहिए। बहुरि गुणहानि-आयाम प्रमाण पंक्ति पूर्ण भए पीछै, ताके ऊपरि जो पंक्ति है, ताकौं द्वितीय-गुणहानि का प्रथम-निषेक कहिए। ताके ऊपरि-पंक्ति कौं द्वितीय-निषेक कहिए। ऐसैं गुणहानि प्रमाण पंक्ति पूर्ण भएं, ताके ऊपर-पंक्ति कौं तृतीय-गुणहानि का प्रथम-निषेक कहिए। अैसैं ही अंत की गुणहानि पर्यंत जानना। सो याका अर्थ अंकसंदृष्टिरूप त्रिकोणयंत्र विषैं दिखाइए है—

नीचै ही नीचै बरोबरि पंक्ति विषैं नव का निषेकस्यों लगाय पांचसै बारा का निषेक पर्यंत सर्व-निषेक लिखे, ताकौं प्रथम-गुणहानि का प्रथम-निषेक कहिए। सो इस पंक्ति का जोड़ दीएं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संपूर्ण समयप्रबद्धप्रमाण तरेसठिसै हो है। बहुरि ताके ऊपरि दूजी-पंक्ति विषैं नव का निषेकस्यों लगाय च्यारिसै असी का निषेक पर्यंत निषेक लिखे, ताकौं प्रथम-गुणहानि का द्वितीय-निषेक कहिए। इस पंक्ति का जोड़ इहां निषेक कौं चय संज्ञा है ; तातैं पांचसै बारा का चय घाटि समय-प्रबद्ध प्रमाण हो है। बहुरि ताके ऊपरि तीसरी-पंक्ति विषैं नव का निषेकस्यों लगाय च्यारिसै अठतालीस का निषेकपर्यंत लिखे, ताकौं प्रथम-गुणहानि का तृतीय-निषेक कहिए। इस पंक्ति का जोड़ च्यारिसै असी का एक चय और पूर्व-पंक्ति का जोड़ में घटाइए, तीहि प्रमाण जोड हो है।

अैसैं एक-एक निषेक रूप चय अनुक्रम तैं अंत की गुणहानि का अंत का निषेक पर्यंत घाटि-घाटि जानना। अैसैं ऊपरि-ऊपरि अठतालीस-पंक्ति भई, तिनविषैं नीचैस्यो लगाय आठ-पंक्तिपर्यंत का प्रथम-गुणहानि का प्रथमादि निषेक कहिए, ताके ऊपरि नवमी-पंक्ति तैं लगाय सोलमी-पंक्ति पर्यंत द्वितीय-गुणहानि के प्रथमादि निषेक कहिए– अैसै आठ-आठ पंक्ति कीएं एक-एक गुणहानि जाननी। तहां जे चय घटाए थे, तिनकौं मिलाएं प्रथम-गुणहानि का जोड समय प्रबद्ध तिरेसठिसै कौं गुणहानि आठ करि, गुणैं, जो प्रमाण होइ तितने हो हैं।

बहुरि इनविषैं अंत की गुणहानि का जोड आठ-गुणा सौ घटाएं आठगुणा बासठिसै होइ। ताका आधा आठ-गुणा इकतीससै होइ, सो दूसरी गुणहानि का जोड जानना। यामैं अंत की गुणहानि का जोड आठ-गुणा सौ घटाए आठ-गुणा तीससै होइ, ताका आधा आठ-गुणा पंद्रहसै होइ, सो तीसरी गुणहानि का जोड जानना– अैसैं अंत की गुणहानि पर्यंत जानना। इनि सबनि का जोड देना बहुरि जो प्रथम-गुणहानि विषैं जे चय घटे थे, तिनिका जोड दीएं प्रथम-गुणहानि विषैं ऋण होइ। बहुरि ताका आधा द्वितीय-गुणहानि विषैं होइ। अैसैं आधा-आधा अंत की गुणहानि पर्यंत होइ। तिन सबनि का जोड देइ पूर्व प्रमाण मैंस्यों घटाएं जो अवशेष रहै, सोई सर्वत्रिकोणयंत्र का जोड जानना। सोई दिखाइए है–

त्रिकोण-रचना विषैं अनादि-बंधन करि बंधे, तिनविषैं निर्जरा रूप गलि गए, पीछै अवशेष रहे– अैसैं विविक्षित मोहनीय मूल-प्रकृति के समय-प्रबद्ध, ते आबाधा रहित उत्कृष्ट-स्थिति प्रमाण हैं। तहां प्रथम समय-प्रबद्ध का अंत का निषेकस्यों लगाय अंत समय-प्रबद्ध का प्रथम-निषेक पर्यंत बरोबरि रचना रूप चय का आधिक्य लीएं क्रम तैं तिष्ठे एक-एक निषेक, ते मिलि करि विवक्षित वर्तमान-समय विषैं एक समय-प्रबद्ध उदय रूप हो है। बहुरि तिस ही समय विषैं एक समय-प्रबद्ध बंधै है। बहुरि सत्तारूप द्रव्य किंचित्-ऊन ड्योढ-गुणहानि करि गुणित समय-प्रबद्ध प्रमाण तिष्ठै है। तहां सत्ता अपेक्षा त्रिकोण-रचना विषैं प्रथम-गुणहानि का प्रथम-निषेक विषैं अनेक समयप्रबद्ध संबंधी एक-एक निषेक मिलि करि संपूर्ण समयप्रबद्ध

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

प्रमाण होहै। बहुरि द्वितीयादि-निषेकनि विषैं प्रथमादि निषेकनि करि एक-एक अधिक घाटि है, सो इस घाटि प्रमाणकौं ज्यों का त्यों मिलाएं गुणहानि करि गुण्या समयप्रबद्ध प्रमाण हो है।

इहां अंकसंदृष्टि करि कथन दिखावते जाइए है ; तातैं आठगुणा तरेसठिसै हुआ।

बहुरि इसविषैं जितना घटावना सो ऋण, ताका प्रमाण कहैं हैं।

एक घाटि गुणहानि का प्रमाणरूप गच्छ विषैं क्रम करि एकनै आदि दैकरि एक-एक अधिक करि गुण्या हूवा प्रथम-निषेक का जोड दीजिये, सो पांचसै बारा कौं क्रम तैं एक, दोय, तीन, च्यारि, पांच, छह, सात करि गुणैं जोड दीजिए, तब पांचसै बारा कौं एक घाटि आठ अर आठ करि गुणिए अर दोय कौं एक गुणा करि ताका भाग दीजिए, इतने भए

१
५१२ ।८ ।८ ।
२ ।१ ।

इहां प्रथम-निषेक कौं दो-गुणहानि करि भेदिए, तब पांचसै बारा की जायगा बत्तीसनै आठ गुणा करि दो-गुणा करिए अैसैं भए

१
३२ ।८ ।२ ।८ ।८ ।
२ ।१ ।

याकौं गुणकार वा भागहर विषैं कीजिए, तब दोय की जायगा गुणकार विषैं वा भागहारि विषैं छह भया तहां छह विषैं गुणकार

१
३२ ।८ ।६ ।८ ।८,

एक जुदा राखिए सो, याका

१
३२ ।८ ।१ ।८ ।८,
६

सो याका प्रमाण तेईससै निवासी अर दोय का छठा भाग भया।

बहुरि तीसरानै आदि दैकरि निषेक तिन विषैं पूर्वें संकलन-विधान कह्या था, तिस विधान करि दोयबार संकलन क्रमकरि प्रथम-गुणाहनि के चय का जोड दीजिए, सो दोय घाटि गच्छ का दोयबार संकलनमात्र प्रथम-गुणहानि का चय का जोड दीजिए, तहां बत्तीसनै एक, तीन, छह, दश, पंद्रह, इकईस करि क्रम तैं गुणि जोड दीए-बत्तीसनै दोय घाटि आठ करि अर एक घाटि आठ करि अर आठ करि गुणि छह का भाग दीजिए इतना भया, सो सतरहसै बानवै भए। इनकौ एक जुदा राख्या था, गुणकार, ताका प्रमाण मैं स्यों घटाएं पांचसै सत्ताणवै-दोय का छठा-भाग रह्या, सो अवशेष पांच-गुणकार रहे थे, तिनिका प्रमाण ग्यारह हजार नवसै छियालीस अर च्यारि का छठा-भाग भया, तिन विषैं मिलाएं बारह हजार पांचसै चवालीस भया, सो प्रथम-गुणहानि विषैं ऋण जानना।

सो घटावने योग्य राशि होइ ताकौं ऋण कहिए। जो विवक्षित का प्रमाण होइ ताकौं धन कहिये। सो प्रथम-गुणहानि का ऋण सहित धन कौं अंत की गुणहानि का ऋण सहित धन कर रहित करि ताका आधा द्वितीय-गुणहानि का धन हो है। अैसैं ही ऊपरि भी सर्व गुणहानि के धन जानने सो प्रथमादि गुणहानि के धन तरेसठिसै, इकतीससै, पंद्रहसै, सातसौ, तीनसो, एकसौ, आठ-आठ गुणा हूवा।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इन सबनि विषैं अंत की गुणहानि का प्रमाण मिलाएं अर दोय करि भेदें क्रम तैं प्रथमादि गुणहानि विषैं बत्तीससौ, सोलहसौ, आठसौ, च्यारिसौ, दोयसौ, सौ का आठ-गुणा अर दोय-गुणा करिए, इतना प्रमाण भया। सबनि का जोड़ **'अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं'**, इस सूत्र करि अंत का धन प्रथम-गुणहानि विषैं प्रमाण, ताकौं गुणकार दोय करि गुणि, तामैं आदि जो अंत-गुणहानि का धन, ताकौं घटाएं तरेसठसै नैं आठ-गुणा करि दोय-गुणा करिए इतने भए। सो इहां तरेसठिसै तौ समय-प्रबद्ध का प्रमाण अर आठ-गुणहानि का प्रमाण दोय-गुणा कीएं दो-गुणहानि का प्रमाण-अैसैं करि दोय गुणहानि करि गुण्या हूवा समय प्रबद्ध प्रमाण जोड भया।

अब इनिविषैं ऋण कितना घटावना, सो कहैं हैं—

प्रथम-गुणहानि विषैं ऋण बत्तीसनैं आठ, पांच, एक घाटि आठ-आठ गुणाकरि तिनविषैं एक-गुणकार जुदा राख्या था अर तिसविषैं दोयबार संकलनमात्र चय घटाएं जो प्रमाण भया था, तिसकौं मिलाएं छह का भाग दीएं बारह हजार पांचसै चवालीस भया। काहे तैं ? पांचसै बारा का निषेक सात-पंक्ति विषैं घट्या च्यारिसै असी का छह विषैं, च्यारिसै अठतालीस का पांच विषैं, च्यारिसै सोलह का च्यारि विषैं, तीनसै चौरासी का तीन विषैं, तीन से बावन का दोय विषैं, तीनसै बीस का एक विषैं घटैं अर दोयसै अठ्यासी का आठौं ही पंक्ति विषैं पाइए; तातैं घट्या नाहीं। अैसैं इन सबनि का ३५८४, २८८०, २२४०, १६६४, ११५२, ७०४, ३२० जोड़ दीएं बारह हजार पांचसै चवालीस हो है।

बहुरि प्रथम-गुणहानि के ऋण तैं द्वितीयादिक गुणहानि विषैं आधा-आधा ऋण जानना। सब गुणहानि का जोड **'अंतधणं गुणगुणियं आदि विहीणं'**, इस सूत्र करि अंत-धन जो प्रथम-गुणहानि का ऋण, ताकौं गुणकार दोय करि गुणिए, तामैं आदि जो अंत-गुणहानि का ऋण सो घटाइए, सो अंत-धन बारह हजार पांचसै चवालीस कौं दोय करि गुणै पचीस हजार अठ्यासी, तामैं आदि तीनसै बाणवै घटाएं चौईस हजार छसै छिनवै, सर्व-गुणहानि का ऋण हूवा।

बहुरि अंत की गुणहानि का धन-प्रमाण सर्व-गुणहानि विषैं ऋण मिलाया था, तिसका जोड दीएं नाना-गुणहानि करि गुणित अंत की गुणहानि का धन-प्रमाण दूसरा ऋण भया, सो अंत का धन आठ-गुणा सौ, ताकौं नाना-गुणाहानि छहकरि गुणै अठतालीससै हूवा—अैसैं दोऊ-ऋण का जोड़ दीएं किछू अधिक आधा-गुणहानि का प्रमाणकरि गुणित समय-प्रबद्ध प्रमाण भया। सो गुणतीस हजार च्यारिसै छिनवै हूवा। तहां गुणहानि आठ का आधा च्यारि करि समय-प्रबद्ध कौं गुणैं पचीस हजार दोयसै होइ। अवशेष च्यारि हजार दोयसै छिनवै रहे सो अधिक का प्रमाण जानना। अैसैं इनि दोऊ-ऋण के जोड़ देने तैं जो प्रमाण भया, ताकौं पूर्वोक्त दोगुणहानि करि गुण्या हुवा समय-प्रबद्ध मैंस्यों घटाएं किंचित्-ऊन ड्योढ-गुणहानि करि गुणित समय-प्रबद्ध प्रमाण भया, सो दोगुणहानिगुणित समय-प्रबद्ध का प्रमाण एक लाख आठसै, तामैं, दोऊ-ऋण के गुणतीस हजार च्यारिसै छिनवै घटाएं इकहत्तरि हजार तीनसै च्यारि रहै। सोई सर्व त्रिकोण-रचना का जोड़ जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

यथार्थ करि दोय गुणहानि विषैं आधा-गुणहानि अर एक-गुणहानि का अठारहवां-भाग अर संख्यात-वर्गशलाका घटाएं, जो किंचित्-ऊन ड्योढ-गुणहानिमात्र प्रमाण रह्या, ताकरि समय-प्रबद्ध कौं गुणैं जो प्रमाण होइ, तितना सर्व त्रिकोण-रचना का जोड प्रमित्त किंचित्-ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय-प्रबद्ध प्रमाण सत्त्व-द्रव्य जानना। इहां जोड विषैं गुणकार दोय गुणहानि विषैं आधा-गुणहानि एक अर गुणहानि का अठारह्वां-भाग अर संख्यात-वर्गशलाका कैसें घटी सो विशेष संस्कृत-टीका तैं जानना। इहां कठिन जानि नाहीं लिख्या है। प्रयोजनमात्र लिख्या ही है॥ ९४४ ॥

आगे स्थिति के भेद कहै है—

अंतोकोडाकोडिट्ठि दित्ति सव्वे णिरंतरट्ठाणा।
उक्कस्सट्ठाणादो, सण्णिस्स य होंति णियमेण॥ ९४५ ॥

अंतः कोटाकोटिस्थितिरिति सर्वाणि निरंतरस्थानानि।
उत्कृष्टस्थानात्संज्ञिनश्च भवंति नियमेन॥ ९४५ ॥

टीका – आयुविना सातकर्मनि के उत्कृष्ट-स्थिति तैं लगाय अंतः कोटाकोटी सागर प्रमाण जघन्य-स्थिति पर्यंत एक-एक समय घाटि का अनुक्रम लीएं जे निरंतर-स्थिति के भेद ते संख्यात-पल्य-प्रमाण नियम करि संज्ञी-पंचेन्द्री-जीवनि कै हो हैं। इहां बीस-सागर के उत्कृष्ट-स्थिति धारक कर्मनि की अंतः कोटाकोटी होइ, तौ तीस सागर वालों की कहा होइ ? अैसै त्रैराशिक करतां ड्योढी अंतः कोटाकाटी होई— अैसैं ज्ञानावरणादि-कर्मनि की अंतः कोटाकोटी का प्रमाण साधना॥ ९४५ ॥

आगे सांतरस्थिति के भेद कहै हैं—

संखेज्जसहस्साणिवि, सेढीरूढम्मि सांतरा होंति।
सगसगअवरोत्ति हवे, उक्कसादो दु सेसाणं॥ ९४६ ॥

संख्येयसहस्राण्यपि, श्रेणीरूढे सांतरा भवंति।
स्वकस्वकावर इति भवेदुत्कृष्टात्तु शेषाणां॥ ९४६ ॥

टीका – सम्यक्त्व, देशसंयम, सकलसंयम, उपशमक वा क्षपक श्रेणी के सन्मुख भए— अैसैं क्रम तैं मिथ्यादृष्टि, असंयत, देशसंयत, अप्रमत्त, अपूर्वकरणादिक तीन-गुणस्थानवर्ती जीव, बहुरि उपशमक-क्षपक श्रेणी चढे— अैसे जीव, तिन विषैं सांतर कहिए एक-एक समय घाटि का नियम करि रहित अैसे स्थिति के भेद संख्यात हजार हैं। सोई कहिए है—

अधः प्रवृत्तकरण विषैं पहले-समय तैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत, ज्ञानावरणादिक प्रकृतिनि की अपने योग्य अंतः कोटाकोटी प्रमाण स्थिति बांधै हैं। तहां पीछै अंतर्मुहूर्तपर्यंत पल्य का

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

असंख्यातवां-भाग प्रमाण घाटि बांधैं हैं। तहां पीछै अंतर्मुहूर्त पर्यंत तिसतैं भी तितनी ही घाटि स्थिति बांधै है। अैसैं संख्यात हजार वार करि तिस करण कौं पूर्णकरि अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म-सांपराय विषैं भी अपने-अपने स्थिति-बंध कौं आलाप करि तितनी-तितनी ही वार करि घटाय वेदनीय की बारह-मुहूर्त पर्यंत, नाम-गोत्र की आठ-मुहूर्त पर्यंत, अवशेषनि की एक-मुहूर्त पर्यंत स्थिति को बांधै है।

अैसैं सांतर-स्थिति के भेद संख्यात-हजार जानने। बहुरि संज्ञी-पर्याप्त-अपर्याप्त बिना अवशेष रहै बारह-जीवसमास, तिनकैं '**एयं पण कदि पण्णं**' इत्यादि सूत्र करि '**वासूप**' इत्यादि पूर्वैं स्थिति-बंध का कथन विषैं जघन्य-स्थिति वा उत्कृष्ट-स्थिति कही है, सो उत्कृष्ट-स्थिति तैं जघन्य-स्थिति पर्यंत एक-एक समय घाटि क्रम लीएं निरंतर-स्थिति के भेद जानने ॥ ९४६ ॥

आगैं स्थिति के भेदनि कौं कारणभूत ऐसे कषायाध्यवसाय कहिए स्थिति-बंधाध्यवसाय स्थान ते मूल-प्रकृतिनि के कितने हैं, सो कहै हैं—

आउट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा।
णामागोदे सरिसं, आवरणदु तदियविग्घे य॥ ९४७ ॥

आयुःस्थितिबंधाध्यवसायस्थानानि असंख्यलोकमितानि।
नामगोत्रे सदृशमावरणद्विके तृतीयविघ्ने च॥ ९४७॥

टीका – आयु के स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थान सबनि तैं थोरे हैं, तथापि ते भी यथायोग्य असंख्यात-लोक प्रमाण हैं। बहुरि तिनतैं पल्य का असंख्यातवां-भाग गुणा नाम अर गोत्र दोऊनि के स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थान परस्पर समान जानने। बहुरि तिनतैं पल्य का असंख्यातवां-भाग गुणा ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, अंतराय— इनि च्यारि के स्थिति-बंधाध्यवसायस्थान परस्पर समान जानने ॥ ९४७ ॥

सव्वुवरि मोहणीये, असंखगुणिदक्कमा हु गुणगारो।
पल्लासंखेज्जदिमो, पयडिसमाहारमासेज्ज॥ ९४८ ॥

सर्वोपरि मोहनीये, असंख्यगुणितक्रमाणि हि गुणकारः।
पल्यासंख्येयिमः, प्रकृतिसमाहारमासाद्य॥ ९४८॥

टीका – सर्व के ऊपरि मोहनीय के स्थिति-बंधाध्यवसायस्थान तिनतैं पल्य का असंख्यातवां-भागगुणां जाननें— अैसे प्रकृतिनि का स्थिति-भेदनि की अपेक्षा कषायाध्यवसायस्थान तीनों जायगा क्रम तैं असंख्यात-गुणे जानने। इहां गुणकार का प्रमाण पल्य का असंख्यातवां-भाग जानना। इहां प्रांसंगिकसिद्धांत के वचन कहिये हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ण य सव्वमूलपयडीणं समाणाणं कसायोदयट्ठाणाणमेत्थ गहणं, कसायोदयट्ठाणेण विणा मूलपयडिबंधाभावेण सव्वपयडिट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं समाणप्पसंगादो तम्हा सव्वमूलपयडीणं सगसगउदयादो समुप्पण्णपरिणामाणं सगसगट्ठिदिबंधकारणंत्तेण ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणसण्णिदाणमुत्तरपच्चयाणमेत्थ गहणं। पयडिसमाहारमासज्ज णाणावरणादीणं पयडीणं सगसगट्ठिदिबंधकारणज्झवसाणट्ठाणाणि सव्वाणि एगत्त काऊण पमाणं परूविदं। ण ट्ठिदि पडि एसा परूवणा होदि उवरिमसुत्तेहि ट्ठिदिं पडि अज्झवसाणपमाणस्स परूविज्जमाणत्तादो हेट्ठिमेहिंतो उपरिमाणि किमट्ठमसंखेज्जगुणाणि साहावियादो मिच्छत्तासंजमकसायपच्चयेहिं सव्वाणि कम्माणि सरसाणि तेण एदेसिं कम्माणमज्झवसाणट्ठाणाणि अंसखेज्जगुणहाणित्ति ण घडदे हेट्ठिमाणं ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो उवरिमाणं कम्माणं ठिदिबंधट्ठाणाणि अहियाणित्ति असंखेज्जगुणत्तं ण जुज्जदे हेट्ठिमहेट्ठिमकम्माणं ठिदिबंधट्ठाणपाओग्ग कसायेहिंतो उवरिमउवरिमाणं कम्माणमहियट्ठिदिबंधट्ठाणपाउग्गकसाय उदयट्ठाणाणं असमाणाणमणुवलंभेण असंखेज्जगुणत्ताणुववत्तीदो। ण एस दोसो हेट्ठिमाणं उदयट्ठाणेहिंतो उवरिमाणं कम्माणं उदयट्ठाणबहुत्तेण असंखेज्जगुणत्ताधिरोहादो।

या का अर्थ—

बहुरि नाहीं सर्व मूल-प्रकृतिनि के समान पाइए अैसे जु कषायनि के उदय-स्थान, तिनिका यहां ग्रहण है ; जातैं कषायनि के उदयस्थान बिना मूलप्रकृतिनि के बंध का अभाव है, तीहिं करि सर्व-प्रकृतिनि के स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थानननि की समानता का प्रसंग होय जाय, सो है नाहीं ; तातैं सर्व मूल-प्रकृतिनि का अपने-अपने उदय तैं निपजे अैसै जु आत्मा के परिणाम ते अपना-अपना स्थिति-बंध कौ कारण, तीहि करि स्थितिबंधाध्यवसाय है नाम जिनिका— अैसे जु उत्तर-प्रत्यय कहिए आस्रव-भेद, तिनिका इहां ग्रहण है। प्रकृतिनि का स्थिति-भेदरूप समाहार जो समुदाय, ताकौं आश्रय करि ज्ञानावरणादिक-प्रकृतिनि का अपने-अपने स्थिति बंध कौं कारणभूत— अैसे जु अध्यवसायस्थान, तिन सबनि कौं एकठे करि प्रमाण कह्या है, नाहीं स्थिति की अपेक्षा अैसी प्ररूपणा है ; तातैं ऊपरले सूत्रनि करि स्थिति की अपेक्षा अध्यवसाय के प्रमाण का प्ररूपण कीया है। इहां तर्क—

जो **अधस्तनेभ्य** कहिए पहले कहे आयु नै आदि दैकरि कर्म, तिनके स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थान, तिनतैं **उपरिमाण** कहिए पीछे कहे कर्म, तिनके स्थितिबंधाध्यवसाय-स्थान ते कैसे अर्थ असंख्यातगुणे हैं ; जातैं स्वभाव पणे ही तैं मिथ्यात्व, असंयम, कषाय रूप प्रत्ययनि करि सर्व-कर्म समान हैं। तीहिंकरि हीन-कर्मनि के अध्यवसाय-स्थान असंख्यात-गुणे नाहीं शोभै हैं। अधस्तन जे पहिली कहे आयु आदिक कर्म, तिनके स्थितिबंध के स्थान, तिनतैं उपरितन जे पीछै कहे कर्म, तिनके स्थितिबंध के स्थान अधिक हैं। अैसैं भी असंख्यात-गुणापणे करि युक्त नाहीं हो है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भावार्थ-

नीचले-कर्मनि तैं ऊपरले-कर्मनि के स्थिति-स्थान अपेक्षा भी अधिकपणो संभवै है। असंख्यात-गुणापणों न संभवै है।

तहां उत्तर कहिए है, नाहीं यहु दोष है ; जातैं अधस्तन जे पहिली कहे आयु आदि कर्म, तिनके उदय-स्थाननि तैं उपरिम जे पीछैं कहे कर्म, तिनके उदयस्थान बहुत हैं। तीहिं करि असंख्यातगुणापने कौं विरोध नाहीं

अपने-अपने उदय तैं निपजे आत्मा के परिणाम, तिनका स्थितिबंधाध्यवसायस्थाननाम है, सो आयु आदि कर्मनि कैं उदयस्थानकनि तैं नाम आदि कर्मनि कैं उदयस्थान बहुत हैं ; तातैं असंख्यातगुणे कहे ॥ ९४८ ॥

आगैं जघन्यादिक स्थिति की अपेक्षा स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थाननि का प्रमाण कहै हैं—

अवरट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा।
अहियकमा उक्कस्स, ट्ठिदिपरिणामोत्ति णियमेण॥ ९४९ ॥

अवरस्थितिबंधाध्यवसायस्थानानि असंख्यलोकमितानि।
अधिकक्रमाणि उत्कृष्ट, स्थितिपरिणाम इति नियमेन॥ ९४९ ॥

टीका – विवक्षित मोहनीय-कर्म की स्थिति सो जघन्य तौ अंत: कोटाकोटी सागर प्रमाण है, सो संख्यात पल्य प्रमाण है। बहुरि उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोडाकोडी सागर प्रमाण है, सो जघन्य-स्थिति तैं संख्यात-गुणी है। तहां जघन्य-स्थिति कौं उत्कृष्ट-स्थित मैंस्यों घटाय, तामैं एक और मिलाइए जो प्रमाण होइ, तितने स्थिति के भेद हैं। इनि भेदनि विषैं सर्व जघन्य-स्थिति बंध कौं कारणभूत अैसैं अध्यवसाय-स्थान, ते असंख्यात-लोक प्रमाण हैं। ताके ऊपरि उत्कृष्ट-स्थिति पर्यंत चय करि अधिक-अधिक हैं नियम करि। जो जघन्य-स्थिति कौं कारण अध्यवसाय-स्थानानि का प्रमाण है, तामैं एक-चय का प्रमाण मिलाइए, तब जघन्य-स्थिति तैं एक समय अधिक स्थिति कौं कारण अध्यवसाय-स्थाननि का प्रमाण हो है। अैसैं ही उत्कृष्ट-स्थितिपर्यंत जानने ॥ ९४९ ॥

अहियागमणणिमित्तं, गुणहाणी होदि भागहारो दु।
दुगुणं दुगुणं वड्ढी, गुणहाणिं पडि कमेण हवे॥ ९५० ॥

अधिकागमननिमित्तं, गुणहानिर्भवति भागहारस्तु।
द्विगुणा द्विगुणा वृद्धिः, गुणहानिं प्रति क्रमेण भवेत्॥ ९५० ॥

टीका – अधिक रूप जो चय, ताका प्रमाण ल्यावने कौं विवक्षित-गुणहानि विषैं अंत के निषेक कौं दोगुणहानि का भाग दीजिए अर "तु" शब्द करि अथवा प्रथम-निषेक कौं एक अधिक गुणहानि का भाग दीजिए, तब चय का प्रमाण आवै है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जैसैं— अंक संदृष्टिकरि अंत-गुणहानि विषैं अंत का निषेक का प्रमाण सोलह, ताकौ दूणी गुणहानि का प्रमाण सोलह, ताका भाग दीएं एक पाया। अथवा आदि का निषेक का प्रमाण नव, ताकौं एक अधिक गुणहानि प्रमाण नव का भाग दीए भी एक पाया, सोई तिस गुणहानि विषैं चय का प्रमाण जानना। बहुरि तिसतैं गुणहानि-गुणहानि प्रति दूणा-दूणा चय का प्रमाण जानना ; जातैं गुणहानि-गुणहानि विषैं आदि-निषेक वा अंत-निषेक का प्रमाण दूणा-दूणा पाइए है ॥ ९५० ॥

ठिदिगुणहाणिपमाणं, अज्झवसाणम्मि होदि गुणहाणी।
णाणागुणहाणिसला, असंखभागो ठिदिस्स हवे॥ ९५१ ॥

स्थितिगुणहानिप्रमाणमध्यवसाने भवति गुणहानिः।
नानागुणहानिशला, असंख्यभागः स्थितेर्भवेत्॥ ९५१ ॥

टीका — इहां गुणहानि का प्रमाण पूर्वैं बंध का अवसर विषैं कर्म-स्थिति की रचना करी है, तहां जैसे गुणहानि का प्रमाण कह्या है, तैसैं इहां कषायाध्यवसाय-स्थान का कथन विषैं भी जानना।

भावार्थ—जैसैं पूर्वैं कह्या था जो स्थिति के प्रमाण कौं नानागुणहानि-शलाका प्रमाण का भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सो गुणहानि का प्रमाण है। तैसैं ही इहां जानना। सो इहां जघन्य-स्थिति तैं लगाय उत्कृष्ट-स्थितिपर्यंत जेते स्थिति के भेद, तिनिका जो प्रमाण सोई स्थिति का प्रमाण जानना। याकौं नाना-गुणहानि-शलाका का जो प्रमाण कहिए है ताका भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सोई एक गुणहानि-आयाम का प्रमाण जानना। याकौं दूणा कीए जो प्रमाण होइ, सोई दो गुणहानि का प्रमाण जानना। बहुरि नानागुणहानि का प्रमाण स्थिति-रचना विषैं जो नानागुणहानि का प्रमाण कह्या था, ताके असंख्यातवें-भाग जानना । सो विवक्षित-मोहनीय की स्थिति- रचना विषैं नाना-गुणहानि शलाका का प्रमाण पल्य के अर्द्धच्छेदनि मैंस्यों पल्य की वर्ग-शलाका का अर्द्धच्छेद घटाएं जो प्रमाण होइ, तितना कह्या था ताकौं असंख्यात का भाग दीएं जो प्रमाण होइ, सो इहां कषायाध्यवसाय-रचना विषैं नाना-गुणहानि का प्रमाण जानना।

जैसैं स्थितिरचना विषैं कथन अंक-संदृष्टयादिक करि कीया था, तैसे इहां भी जानना। इहां जो स्थिति के भेदनि का प्रमाण, सो तौ स्थिति का प्रमाण जानना। तहां जेता गुणहानि-आयाम का प्रमाण है, तितने जघन्यस्यों लगाय जे स्थिति के भेद, तिनविषैं प्रथम-गुणहानि कहिए। तहां जघन्य-स्थिति कौं कारण जो अध्यवसायनि का प्रमाण, सो प्रथम-निषेक का प्रमाण जानना। यामैं एक चय मिलाएं एक समय अधिक जघन्य-स्थिति कौं कारण अध्यवसायनि का प्रमाण रूप दूसरा-निषेक हो है, सो प्रथम-निषेक कौं एक अधिक गुणहानि-आयाम का भाग दीएं जो प्रमाण होइ, सोई चय का प्रमाण है। ऐसैं एक-एक चय अधिक प्रथम-गुणहानि का अंत-निषेक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पर्यंत जानना। बहुरि ताके ऊपरि तितने ही स्थिति के भेदनि विषैं दूसरी-गुणहानि कहिए, तहां निषेक-चयादिक का प्रमाण प्रथम-गुणहानि तैं दूना जानना— ऐसैं ही अंत की गुणहानिपर्यंत कथन जानना॥ ९५१ ॥

तहां जघन्य-चय का महत्त्वपना कौं दिखावै हैं—

लोगाणमसंखपमा, जहण्णउट्ढिम्मि तम्हि छट्ठाणा।
ठिदिबंधज्झवसाण, ट्ठाणाणं होंति सत्तण्हं॥ ९५२ ॥

लोकानामसंख्यप्रमाण, जघन्यवृद्धौ तस्मिन् षट्स्थानानि।
स्थितिबंधाध्यवसायस्थानानां भवंति सप्तानां॥ ९५२ ॥

टीका – आयु बिना सात मूल-प्रकृतिनि के जे स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थान, तिनिका सर्व गुणहानि संबंधी जे चय, तिनविषैं प्रथम-जघन्य वृद्धि जो प्रथम-गुणहानि संबंधी चय का प्रमाण, तिसविषैं परिणामनि का अविभाग-प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा असंख्यात-लोक का जो प्रमाण, तितनी बार अनंतभाग-वृद्धि आदि षट् स्थान-पतित वृद्धि पाइए है॥ ९५२ ॥

आगे आयु-कर्म के स्थिति-बंधाध्यवसायनि विषैं विशेष है सो कहै हैं—

आउस्स जहण्णट्ठिदि, बंधणजोग्गा असंखलोगमिदा।
आवलिअसंख भागेणुवरुवरिं होंति गुणिदकमा॥ ९५३ ॥

आयुषः जघन्यस्थिति, बंधनयोग्यानि असंख्यलोकमितानी।
आवल्यसंख्यभागे, नोपर्युपरि भवंति गुणितक्रमाणि॥ ९५३ ॥

टीका – आयु-कर्म की सर्व जघन्य-स्थितिबंध कौं योग्य— ऐसै अध्यवसाय-स्थान, ते असंख्यात-लोक प्रमाण हैं। याकौं आवली का असंख्यातवां-भाग करि गुणैं जघन्य तैं एक समय अधिक दूसरी स्थिति के योग्य अध्यवसायस्थान हैं। ऐसैं ही उत्कृष्ट-स्थिति पर्यंत क्रम तैं आवली का असंख्यातवां-भाग करि गुणित अध्यवसाय-स्थान जानने। तहां अंक-संदृष्टि करि कथन दिखाइए हैं—

आयु-कर्म की स्थिति के जेते भेद संख्यात-पल्य प्रमाण हैं, ताकी सहनानी सोलह (१६)। बहुरि जघन्य-स्थिति कौं योग्य अध्यवसाय-स्थान असंख्यात-लोक प्रमाण, ताकी सहनानी बाईस (२२)। द्वितीयादि-स्थिति विषैं गुणकार आवली का असंख्यातवां-भाग, ताकी सहनानी च्यारि। बहुरि नाना-जीव अपेक्षा नीचली-स्थिति के बंध कौं कारण अध्यवसाय-स्थान अर ऊपरली स्थिति के बंध कौं कारण अध्यवसाय-स्थान, तिनविषैं समानता भी पाइए है; तातैं इहां अनुकृष्टि का विधान संभवै है। जातैं ऊपरि नीचे विषैं समानता का नाम ही **अनुकृष्टि** है, सो अनुकृष्टि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

के गच्छ का प्रमाण अंकसंदृष्टि करि च्यारि जानना। सो स्थिति की रचना तो ऊपरि-ऊपरि जाननी अर एक-एक स्थिति-रचना के बरोबरि अनुकृष्टि-रचना जाननी।

तहां जघन्य-स्थिति की अनुकृष्टि विषैं चय का प्रमाण एक, सर्व-चय का जोड़ रूप चयधन छह, सो प्रथम-स्थिति विषैं द्रव्य बाईस, तामैं घटाएं सोलह रहे, ताकौं अनुकृष्टि-गच्छ च्यारि का भाग दीएं च्यारि पाए, सो जघन्य-स्थिति विषैं जघन्य-अनुकृष्टि का खंड जानना। तातैं **उत्कृष्ट-खंड** पर्यंत एक-एक चय अधिक जानना। सो दूसरा, तीसरा, चौथा-खंड का प्रमाण पांच, छह, सात, जानना– अैसैं चारों खंड जोडैं, बाईस हो है।

बहुरि दूसरा स्थिति-भेद विषैं द्रव्य बाईस, सौ चौगुणा अध्यवसाय है सो अठ्यासी हूवा। तिनविषैं एक-भाग एक-गुणा बाईस कौं ग्रहि करि प्रथमादि अनुकृष्टि का खंड विषैं क्रम तैं पांच, छह, सात देने, अवशेष च्यारि रहे सो अर बहुभाग का तिगुणा बाईस रहे, सो अंत का चौथा उत्कृष्ट-खंड विषैं देने से अंत का खंड विषैं सत्तरि हूवा सर्वमिलि अठ्यासी हुवा।

बहुरि तीसरा स्थिति-भेद विषैं बाईस का दोयवार चौगुणा अध्यवसाय है। सो तीनसै बावन हूवा। तहां एक भाग का चौगुणा बाईस जुदा ग्रहि अवशेष चौगुणा बाईससै तिगुणा जो दोयसै चौसठि, सो अंत का चौथा-खंड विषैं देना। बहुरि जुदा ग्रह्या जो चौगुणा बाईस, तीहि विषैं एक-भाग का एकगुणा बाईस जुदा ग्रहि अवशेष तिगुणा बाईस का छ्यासठि रह्या, सो उपांत जो तीसरा-खंड, तीहिं विषैं जानना। बहुरि एक गुणा बाईस रह्या तिस विषैं पहला, दूसरा खंड विषैं तो छह अर सात देना अर तीसरा, चौथा-खंड विषैं पूर्वै कह्या था तिनविषैं च्यारि अर पांच मिल्यावने।

अैसैं करि प्रथम-खंड विषैं छह, दूसरा-खंड विषैं सात, तीसरा-खंड विषैं सत्तरि, चौथा खंड विषैं दोयसै गुणहत्तरि (६ । ७ । ७० । २६९)। सबका जोड दीए तीनसै बावन हुवा।

बहुरि चौथा स्थिति-भेद विषैं बाईस कौं तीनबार चौगुणा करिए इतने अध्यवसाय हैं। सो चौदहसै आठ हुवा। तहां एक-भाग का बाईस का दोयबार चौगुणा जुदा ग्रहि करि अवशेष बाईस का दोयबार चौगुणा कौं तिगुणा करिए ताके एक हजार छप्पन भए, सो अन्त का चौथा-खंड विषैं देने। बहुरि बाईस का दोयबार चौगुणा जुदा ग्रह्या था, तिनविषैं एक-भाग का बाईस तैं चौगुणा जुदा राखि अवशेष-चौगुणा बाईस का तिगुणा, ताका दोयसै चौसठि हुवा, सो उपांत तीसरा-खंड विषैं देना।

बहुरि बाईस तैं चौगुणा जुदा राख्या था, तामैं एक-भाग का इकगुणा बाईस जुदा राखि अवशेष तिगुणा बाईस का छ्यासठि हुवा, सो दूसरा खंड विषैं देना। बहुरि इकगुणा बाईस जुदा राख्या था तिनविषैं सात तौ प्रथम खंड विषैं देने अर च्यारि, पांच, छह ; दूसरा, तीसरा, चौथा खंड का प्रमाण विषैं मिलावने। अैसैं करि प्रथम खंड विषैं सात, दूसरा विषैं सत्तरि, तीसरा विषैं दोयसै गुणहत्तरि, चौथा विषैं एक हजार बासठि (७ । ७० । २६९ । १०६२)। सबका

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जोड़ दीएं चौदहसै आठ हुवा। अैसैं ही क्रम तैं पांचवां, छठावां, सातवां, आठवां इत्यादि उपांत का वा अन्त का स्थितिभेद विषैं अनुकृष्टि-रचना जाननी।

सर्वत्र जो नीचला स्थिति-भेद का दूसरा, तीसरा, चौथा अनुकृष्टि-खंड विषैं होइ सो ऊपरला स्थिति-भेद का पहिला, दूसरा, तीसरा, अनुकृष्टि-खंड विषैं लिखने। बहुरि तिस ऊपरला-स्थिति-भेद का सर्व-द्रव्य मैंस्यों तीनों-खंडनि का प्रमाण जोडि घटाएं अवशेष रहै, सो चौथा-खंड विषैं प्रमाण लिखना। अैसैं नीचली-स्थितिके ऊपरली-स्थिति के अध्यवसायनि की समानता पाइए है। कोई जीव के जितने अध्यवसायनि करि नीचली-स्थिति बंधै है, तितने ही परिणामनि करि कोई जीव के ऊपरली भी स्थिति बंधै है। अैसैं समानता जानि अनुकृष्टि-रचना कही।

नीचली-स्थिति का जघन्य-खंड ऊपरली-स्थिति का खंडनिस्यों समान नाहीं। ऊपरली-स्थिति का उत्कृष्ट-खंड नीचली-स्थिति का खंडनिस्यों समान नाहीं— अैसैं जानना। अैसैं करि आयु के स्थिति-बंधाध्यवसाय कहे। अवशेष-कर्मनि के कहिए हैं—

तहां मोहनीय के जघन्यस्थिति संख्यात-पल्यप्रमाण, तीहिंस्यों लगाय एक-एक समय बंध्या तीहिं जघन्य-स्थितिस्यों संख्यातगुणा उत्कृष्ट-स्थितिपर्यंत जे स्थिति के भेद होंहि, तहां स्थिति-रचना विषैं अैसा आकार जानना।

नीचैं जो ऊभी लीक करी ते तौ आबाधा-काल के समय जानने। तहां ऊपरि आदि के समय तैं लगाय अन्त पर्यंत घटता २ निषेक हैं। तातैं नीचैस्यों चौरा ऊपरिसे संकोचरूप आकार जाननां। सो ते स्थिति के भेद जितने होइ हैं। सो इहां मोहनीय का स्थिति-बंधाध्यवसाय रचना विषैं स्थिति का प्रमाण जानना। याकौं पल्य की वर्गशलाका का अर्द्धच्छेद प्रमाण करि हीन अैसा पल्य का अर्द्धच्छेद प्रमाण का असंख्यातवां-भाग प्रमाण जो नाना-गुणहानि शलाका, ताका भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सो गुणहानि-आयाम जानना। याकौं दूणा कीए दो गुणहानि का प्रमाण होइ।

बहुरि नाना-गुणहानि-शलाका प्रमाण दोय का अंक मांडि परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ, सा अन्योन्याभ्यस्त-राशि का प्रमाण जानना सो पल्य का असंख्यातवां-भाग प्रमाण हो है। बहुरि स्थिति-बंधाध्यवसायस्थान असंख्यात-लोक कौं तीनबार पल्य का असंख्यातवां-भाग करि गुणैं जो प्रमाण होइ, तितने हैं। सो इहां द्रव्य का प्रमाण जानना। इस द्रव्य कौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्त-राशि का भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सो प्रथम-गुणहानि का प्रमाण है। पूर्वैं स्थिति-रचना विषैं अनुक्रम तैं निषेक घाटि प्रमाण लीएं थे ; तातैं थोरा प्रमाण अंत की गुणहानि के द्रव्य का कह्या था, इहां अनुक्रम तैं अधिक है ; तातैं थोरा प्रमाण प्रथम-गुणहानि द्रव्य का कह्या। इस प्रथम-गुणहानि तैं द्वितीयादि गुणहानि विषैं द्रव्य दूणा-दूणा अंत की गुणहानि पर्यंत जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

तहां प्रथम-गुणहानि का द्रव्य का जो प्रमाण, ताकौ **अद्धाणेण खंडिदे मज्झिमधणमागच्छदि अद्धाण** जो गुणहानि-आयाम का प्रमाण रूप गच्छ, ताका भाग दीए मध्यम-धन का प्रमाण आवै है। गच्छ के बीचि के निषेक का जो प्रमाण, ताकौं मध्यम-धन कहिए। जो गच्छ का प्रमाण सम संख्या रूप होइ, तहां बीचि के दोय निषेकनि का आधा प्रमाण, सो मध्यम-धन जानना।

बहुरि **'तं रूऊणद्धाण अद्धेण ऊणेण णिसेयभागहारेण अवहरिदे पचओ'** तिस मध्यम-धन कौं एक घाटि गुणहानि-आयाम का प्रमाण का आधा निषेक भागहार जो दोगुणहानि सो घटाए जो प्रमाण रहै, ताका भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सोई चय का प्रमाण जानना। बहुरि इहां निषेकनि का प्रमाण अधिक-अधिक है; तातैं तिस चय-प्रमाण कौं एक अधिक गुणहानि-आयाम का प्रमाण करि गुणें जो प्रमाण होइ, सोई प्रथम-निषेक जानना। यामैं एक-एक चय क्रम तैं मिलाएं द्वितीयादि निषेकनि का प्रमाण होइ करि एक घाटि गुणहानि प्रमाण चय मिले अंत का निषेक हो है।

बहुरि प्रथम गुणहानि तैं गुणहानि गुणहानि प्रति द्रव्य, चय, निषेकनि का प्रमाण दूणा-दूणा जानना—ऐसैं रचना करि अंत की गुणहानि विषैं प्रथम-गुणहानि के द्रव्य कौं अन्योन्याभ्यस्तराशि का आधा प्रमाण करि गुणैं द्रव्य का प्रमाण होइ। याकौं गुणहानि-आयाम रूप गच्छ का भाग दीएं मध्यम-धन होइ, तिस मध्यम-धन कौं एक घाटि गच्छ का आधा करि हीन दो गुणहानि का भाग दीएं चय का प्रमाण होइ। याकौं एक अधिक गुणहानि-आयाम करि गुणैं प्रथम-निषेक होइ। द्वितीयादि-निषेकनि विषैं यातैं क्रम तैं एक-एक चय अधिक होइ, अंत-निषेक एक घाटि गुण-हानि प्रमाण चय मिलैं हो हैं।

ऐसैं स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थान का बटवारा स्थिति के भेदनि विषैं कह्या। अब इस ही कथन कौं अंक-सहनानी करि दिखाइए है—

सर्व स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थान तरेसठिसै याकौं **'रूऊणण्णोण्णब्भत्थवहिददव्वं'**, एक घाटि अन्योन्याभ्यस्त-राशि तरेसठि का भाग दीएं सौ पाया, सो प्रथम-गुणहानि का द्रव्य जानना। याकौं गच्छ का भाग दीएं चौथा, पांचवां मिल्या हुवा निषेकनि का आधा प्रमाण साढा बारा मध्य-धन जानना। याकौं एक घाटि गच्छ सात, ताका आधा साढा तीन, सौ दो गुणहानि सोला में घटाएं रहे साढा बारा, ताका भाग दीएं एक पाया, सो चय का प्रमाण जानना। याकौं एक अधिक गुणहानि का प्रमाण नव ताकरि गुणैं नव पाया, सो प्रथम-निषेक जानना। द्वितीयादि निषेकनि विषैं एक-एक चय अधिक होइ। एक घाटि गुणहानि का प्रमाण सात सो इतने चय मिलें सोला भए सो अंत-निषेक जानना।

ऐसैं द्वितीयादि गुणहानि विषैं द्रव्य, चय, निषेक, दूणा-दूणा होइ। अंत गुणहानि विषैं प्रथम गुणहानि का द्रव्य सौ कौं अन्योन्याभ्यस्त-राशि का आधा बत्तीस करि गुणैं बत्तीससै तौ द्रव्य

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जानना। याकौं गच्छ आठ का भाग दीएं मध्य-धन च्यारि सै। याकौं एक घाटि गुणहानि का आधा करि हीन दो गुण-हानि का प्रमाण साडा बारा, ताका भाग दीएं बत्तीस पाया सो चय जानना। याकौं एक अधिक गुणहानि का प्रमाण नव करि गुणैं दोय सै अठ्यासी हुवा, सो प्रथम-निषेक जानना।

द्वितीयादि निषेकनि विषैं एक-एक चय मिलि एक घाटि गुण-हानि प्रमाण सात-चय मिले, पांचसै बारा हुआ सो अंत का निषेक जानना।

अैसैं अंक-सहनानी करि कथन दिखाया। इहां भी प्रथम गुणहानि के प्रथम-निषेक प्रमाण अध्यवसाय-स्थान जघन्य-स्थिति कौं कारण जानने। द्वितीय-निषेक प्रमाण ते एक समय अधिक स्थिति कौं कारण जानने। अैसैं ही अंत-गुणहानि का अंत-निषेक प्रमाण स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थान उत्कृष्ट-स्थिति कौं कारण जानने॥ ९५३॥

बहुरि इहां एक-एक स्थिति भेद संबंधी अध्यवसायनि विषैं नाना-जीवनि की अपेक्षा-खंड पाइए है। वा कोई जीव के जितने अध्यवसायनि तैं नीचली-स्थिति बंधै है, कोई कैं तितने ही तैं अधिक ऊपरली स्थिति बंधै हैं, सो अैसैं ऊपरि-नीचै समानता जानि अनुकृष्टि-विधान कहिए है—

पल्लासंखेज्जदिमा, अणुकट्ठी तत्तियाणि खंडाणि।
अहियकमाणि तिरिच्छे, चरिमं खंडं य अहियं तु॥ ९५४॥

पल्यासंख्येयिमा, अनुकृष्टिः तावंति खंडानि।
अधिकक्रमाणि तिरश्चि, चरमं खंडं च अधिकं तु॥ ९५४॥

टीका – स्थितिबंधाध्यवसायस्थाननि विषैं जो गुणहानि-आयाम का प्रमाण कह्या, ताकौं संख्यात का भाग दीएं सिद्ध भया जो पल्य का असंख्यातवां-भाग, तीहि प्रमाण अनुकृष्टि-रचना विषैं गच्छ का प्रमाण जानना। तितने ही अनुकृष्टि के खंड हैं। ते खंड विवक्षित स्थिति भेद-रचना के आगे तिर्यक् बरोबरी रचने, ते प्रथम-खंड तैं लगाय क्रम तैं एक-एक अनुकृष्टि का चय करि अधिक जानने। तथापि जघन्य प्रथम-खंड तैं उत्कृष्ट अंत का खंड अधिक प्रमाण लिए ही हो है दूणा, तिगुणा इत्यादि नहीं है॥ ९५४॥

तिस विशेष प्रमाण कौं जनावै हैं—

लोगाणमसंखमिदा, अहियपमाणा हवंति पत्तेयं।
समुदायेणवि तच्चिय, ण हि अणुकिट्ठिम्मि गुणहाणी॥ ९५५॥

लोकानामसंख्यमितानि, अधिकप्रमाणानि भवंति प्रत्येकं।
समुदायेनापि तावन्नहि अनुकृष्टौ गुणहानिः॥ ९५५॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अनुकृष्टि का चय गुणहानि-गुणहानि प्रति दूणा-दूणा है, तथापि सामान्यपनै असंख्यात-लोकमात्र ही कहिए है ; जातैं विवक्षित गुणहानि का ऊर्ध्वरचना विषैं जो चय का प्रमाण, ताकौं अनुकृष्टि-गच्छ का भाग दीएं अनुकृष्टि के चय का प्रमाण आवै है, सो स्थूलता करि असंख्यात-लोक प्रमाण ही है। तहां प्रथम-खंड तैं एक-एक चय करि अधिक द्वितीयादिक खंड हैं, तथापि तिन सबनि का प्रमाण असंख्यात-लोक प्रमाण ही कहिए ; जातैं असंख्यात-लोक का भेद असंख्यात-लोक प्रमाण पाइए है। बहुरि अनुकृष्टि का गच्छ विषैं गुणहानि की रचना नाहीं है ; जातैं सर्व उत्कृष्ट-खंडनि कैं जघन्य-खंड तैं एक घाटि गुणहानि का गच्छ प्रमाण चयनि की अधिकता पाइए है। अैसैं अनुकृष्टि का गच्छ अर चय का प्रमाण जनाय तिस अनुकृष्टि के खंडनि विषैं स्थिति-बंधाध्यवसायनि का प्रमाण कहिए है—

जघन्य-स्थिति बंध कौं योग्य कषाय परिणाम सो द्रव्य जानना। बहुरि प्रथम-गुणहानि विषैं जो चय का प्रमाण, ताकौं अनुकृष्टि-गच्छ पल्य का असंख्यातवां-भाग प्रमाण, ताका भाग दीएं अनुकृष्टि-चय का प्रमाण भया। बहुरि **व्येकपदार्धध्नचयगुणो गच्छ उत्तरधनं,** एक घाटि अनुकृष्टि-गच्छ का आधा कौं अनुकृष्टि-चय करि गुणि अनुकृष्टि गच्छ करि गुणें जो प्रमाण होइ, सो इहां प्रचय-धन जानना।

बहुरि प्रथम-गुणहानि विषैं जघन्य-स्थिति संबंधी स्थितिबंधाध्यवसायनि का जो प्रमाण, तिन विषैं प्रथम-धन का प्रमाण घटाएं अवशेष रहे, ताकौं अनुकृष्टि-गच्छ का भाग दीएं जो प्रमाण आवै, सो प्रथम-गुणहानि विषैं जघन्य-स्थिति संबंधी अनुकृष्टि का प्रथम-खंड जानना। बहुरि द्वितीयादि खंड एक, एक एक अनुकृष्टि का चय करि अधिक होइ एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छप्रमाण चय जघन्य-खंड विषैं अधिक भएं उत्कृष्ट अंत-खंड हो है। तहां-**पद हतमुखमादिधनं** पद जो अनुकृष्टि का गच्छ ताकरि मुख जो प्रथम-खंड, ताकौं गुणैं आदि-धन होइ। बहुरि **व्येकपदार्धध्नचयगुणो गच्छ उत्तरधनं** एक घाटि गच्छ का आधा करि चय कौं गुणैं चय-धन होइ, सो आदि-धन अर चय-धन मिलाएं जघन्य स्थिति संबंधी अध्यवसायनि का प्रमाण रूप सर्वधन हो है।

अैसैं ही द्वितीयादि निषेकनि विषैं अनुकृष्टि-रचना अनुक्रम तैं करि प्रथम-गुणहानि का अंत का निषेक विषैं जो द्रव्य, तीहि विषैं पूर्वोक्त चयधन घटाएं अवशेष कौं अनुकृष्टि-गच्छ का भाग दीएं प्रथम-खंड होइ। बहुरि द्वितीयादिक खंड एक-एक अनुकृष्टि-चय करि अधिक होइ अंत का खंड एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छ प्रमाण चय करि अधिक हो है। बहुरि गच्छ करि प्रथम-खंड गुणैं आदि-धन होइ। बहुरि चयधन का प्रमाण के अर्थि '**मुहभूमी जोगदले पदगुणिदे**

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पदधणं होदि', मुख तौ एक चय अर भूमि एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छप्रमाण चय, इनकौं जोड़िये पीछे आधा करिये, पीछै एक घाटि अनुकृष्टि का गच्छप्रमाण गच्छ करि गुणिएं, तब चयधन का प्रमाण होइ, सो आदिधन अर चयधन मिलाएं प्रथम गुणहानि का अंत का निषेक विषैं प्रमाण होइ। अैसैं प्रथम-गुणहानि विषैं अनुकृष्टि-रचना कही। अब इस अनुकृष्टि के कथन कौं अंक-संदृष्टि करि दिखाइए है—

प्रथम गुणहानि विषैं प्रथम-निषेक नव सौ द्रव्य, तामै अनुकृष्टि का गच्छ च्यारि, ताका भाग ऊर्ध्व चय एक कौं दीएं अनुकृष्टि चय चतुर्थांश तहां **'व्येकपदार्धध्यचयगुणो गच्छ उत्तर-धनं'**, इस सूत्र करि चय-धन ड्योढ, ताकौं सर्व-धन नव मैंस्यो घटाएं साढा सात, याकौं अनुकृष्टि-गच्छ च्यारि का भाग दीयें प्रथम-खंड अष्टमांश घाटि दोय प्रमाण हुवा, यामैं चतुर्थांश प्रमाण अनुकृष्टि का एक-एक चय मिलाएं द्वितीयादिक खंड होइ ; चार्‌यो खंडनि का जोड़ दीएं नव हो है। अैसैं ही अंत का निषेक विषैं द्रव्य सोलह, तामैं चय-धन ड्योढ घटाएं साढा चौदह, याकौं अनुकृष्टि-गच्छ च्यारि का भाग दीएं अष्टमांश अधिक साढा तीन पाए, सो प्रथम-खंड अर यामैं चतुर्थांश मात्र एक-एक चय अधिक भएं द्वितीयादि खंड-चार्‌यों-खंड जोडें सोलह होइ। इहां आधा चौथाई कह्या है सो अंक-संदृष्टि करि समझ में आनेवास्ते कह्या है।

बहुरि महत्प्रमाण रूप अर्थ-संदृष्टि विषैं अध्यवसायनि विषैं आधा चौथाई है नाहीं। अथवा स्वेच्छा अंक-संदृष्टि करिए तौ त्रिकरण-चूलिका अधिकार विषैं अधः प्रवृत्तकरण की रचना विषैं जैसै अंक-संदृष्टि करी तैसैं करनी। तहां प्रथम-गुणहानि विषैं सर्व अध्यवसाय तीन हजार बहत्तरि गुणहानि आयाम सोलह, तहां जघन्य-स्थिति संबधी प्रथम-निषेक एकसौ बासठि, निषेक-निषेक प्रति चयप्रमाण च्यारि। तहां प्रथम-निषेक विषैं द्रव्य एकसौ बासठि, तामैं चय-धन छह घटाएं एकसौ छप्पन, याकौं अनुकृष्टि-गच्छ च्यारि का भाग दीएं गुणतालीस सो प्रथम-खंड।

बहुरि द्वितीयादि-खंड विषैं अनुकृष्टि-चय का प्रमाण एक, सो एक चय अधिक जानना। च्यारू खंडनि का जोड दिएं एकसौ बासठि होइ। अैसैं ही द्वितीयादि निषेकनि की रचना करि अंत-निषेक विषैं द्रव्य दोयसै बाईस, तामें चय-धन छह घटाएं दोयसै सोलह, याकों अनुकृष्टि-गच्छ च्यारि का भाग दीएं, चौबन, सो प्रथमखंड। बहुरि द्वितीयादि खंड विषैं एक-एक चय अधिक जानना। चार्‌यों खंडनि का जोड दीएं दोयसै बाईस होंइ। अैसैं ही अंक-संदृष्टि करि पूर्वोक्त अर्थ जानना। अत्यंत परोक्ष अर्थ जानने कौं यह भी उपाय है। बहुरि याही प्रकार द्वितीयादिक गुणहानि विषैं भी अनुकृष्टि का विधान करना। प्रथम गुणहानि का अनुकृष्टि चय वा द्रव्य वा खंडनि तैं द्वितीयादि गुणहानि विषैं अनुकृष्टि-चयादिक का प्रमाण दूणा-दूणा जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंक संदृष्टि अपेक्षा स्थितिबंधाध्यवसाय रचना।

अनुकृष्टिरूप एक-एक समय सम्बन्धी खण्डनि विषैं तिर्यग्-रचना

जघन्यादि स्थिति बंध की ऊर्ध्व रचना	प्रथम खंड	द्वितीय खंड	तृतीय खंड	चतुर्थ खंड
२२२	५४	५५	५६	५७
२१८	५३	५४	५५	५६
२१४	५२	५३	५४	५५
२१०	५१	५२	५३	५४
२०६	५०	५१	५२	५३
२०२	४९	५०	५१	५२
१९८	४८	४९	५०	५१
१९४	४७	४८	४९	५०
१९०	४६	४७	४८	४९
१८६	४५	४६	४७	४८
१८२	४४	४५	४६	४७
१७८	४३	४४	४५	४६
१७४	४२	४३	४४	४५
१७०	४१	४२	४३	४४
१६६	४०	४१	४२	४३
१६२	३९	४०	४१	४२

पढमं पढमं खंडं, अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरित्थं।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं ॥ ९५६ ॥

प्रथमं प्रथमं खंडमन्योन्यमपेक्ष्य विसदृशं।
अधस्तनोत्कृष्टादनंतगुणादुपरिमजघन्यं ॥ ९५६ ॥

टीका – याप्रकार अनुकृष्टि-रचना रूप कीएं प्रथमादि गुणहानि विषैं अनुकृष्टि का पहला-पहला खंड परस्पर अपेक्षा करि विसदृश है संख्या करि समान नाहीं है, जातै तिर्यग् रूप रचना विषैं ऊपरि-ऊपरि रचनारूप पहिला-पहिला जो खंड, सो अंत-निषेक का पहला-खंड पर्यंत एक-एक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चय करि अधिक है, तैंसैं ही शक्ति करि भी अपने नीचले प्रथम-खंड का उत्कृष्ट-स्थान तैं भी ऊपरला प्रथम-खंड का जघन्य-स्थान भी अनंत-गुणा है ; तातैं पहला-पहला खंड परस्पर समान नाहीं है ॥ ९५६ ॥

विदियं विदियं खंडं, अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरित्थं।

हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं ॥ ९५७ ॥

द्वितीयं द्वितीयं खंडमन्योऽन्यमपेक्ष्य विसदृशं।

अधस्तनोत्कृष्टादनंतगुणादुपरिमजघन्यं ॥ ९५७ ॥

टीका – गुणहानिनि विषैं प्रथमादि निषेकनि का दूसरा-दूसरा खंड, सो गुणहानि का अंत के निषेक का दूसरा-खंड पर्यंत निरंतर एक-एक चयकरि अधिक है ; तातैं समान नाहीं है। नीचले दूसरे-खंड के उत्कृष्ट तैं ऊपरला दूसरा-खंड का जघन्य भी अनंत-गुणा है। अैसैं ही तीसरा-तीसरा इत्यादि खंडनि की असमानता जाननी ॥ ९५७ ॥

अैसैं एक घाटि अनुकृष्टि प्रमाण खंडनि की असमानता होइ कहा ? सो कहैं हैं–

चरिमं चरिमं खंडं, अण्णोण्णं पेक्खिउण विसरित्थं।

हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं ॥ ९५८ ॥

चरमं चरमं खंडमन्योन्यमपेक्ष्य विसदृशं।

अधस्तनोत्कृष्टादनंतगुणादुपरिमजघन्यं ॥ ९५८ ॥

टीका – गुणहानि का प्रथमादि निषेकनि का अंत का खंड अंत के निषेकनि का अंत-खंड पर्यंत निरंतर एक-एक चय अधिक है ; तातैं संख्या करि समान नाही। बहुरि शक्ति करि कैं भी नीचला अंत-खंड का उत्कृष्ट-स्थान तैं भी ऊपरला अंत-खंड का जघन्य-स्थान भी अनंत-गुणा है ॥ ९५८ ॥

तहां कारण कहा ? सो कहै हैं–

हेट्ठिमखंडुक्कस्सं, उव्वंकं होदि उवरिमजहण्णं।

अट्ठंकं होदि तदोणंतगुणं उवरिमजहण्णं ॥ ९५९ ॥

अधस्तनखंडोत्कृष्टमुर्वंको भवति उपरिमजघन्यं।

अष्टांको भवति ततोऽनंतगुणमुपरिमजघन्यम् ॥ ९५९ ॥

टीका – जा कारण तैं तिर्यग् रूप रचना विषैं ऊपरि-ऊपरि लिखे जै खंड, तिनके अपने-अपने नीचैं लिखे खंड, तिनका उत्कृष्ट-अध्यवसाय-स्थान सो **उर्वंक** कहिए–पूर्वस्थान तैं अनंतभाग-वृद्धि कौं लीए है। बहुरि ऊपरि-ऊपरि का खंड का जघन्य-अध्यवसाय-स्थान सो **अष्टांक** कहिए–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अनंतगुण-वृद्धि कौं लीए हैं। ताकारण तैं नीचले-खंड का उत्कृष्ट तैं ऊपरले खंड का जघन्य अनंत-गुणा कह्या ॥ ९५९ ॥

अवरुक्कस्सठिदीणं, जहण्णमुक्कस्सयं च णिव्वग्गं।
सेसा सव्वे खंडा, सरिसा खलु होंति उड्ढेण ॥ ९६० ॥

अवरोत्कृष्टस्थितीनां, जघन्यमुत्कृष्टकं च निर्वर्गं।
शेषाः सर्वे खंडाः, सदृशाः खलु भवंति ऊर्ध्वेन ॥ ९६० ॥

टीका – जघन्य-स्थिति कौं **कारणभूत** प्रथम-निषेक का जघन्य पहिला-खंड अर उत्कृष्ट स्थिति कौं कारणभूत अंत कैं निषेक का उत्कृष्ट अंत का खंड– ए दोऊ तौ **निर्वर्ग** कहिए– कोऊ खंडनि करि सर्वथा समान नाहीं है। बहुरि अवशेष सर्व-खंड ऊर्ध्व-रचना करि अन्य-खंडनि के समान हैं ॥ ९६० ॥

अट्ठण्हंपि य एवं, आउजहण्णट्ठिदिस्स वरखंडं।
जावय तावय खंडा, अणुकट्टिपदे विसेसहिया ॥ ९६१ ॥
तत्तो उवरिमखंडा, सगसगउक्कस्सगोत्ति सेसाणं।
सव्वे ठिदियणखंडाऽसंखेज्जगुणक्कमा तिरिये ॥ ९६२ ॥ जुम्मं।

अष्टानामपि च एवमायुर्जघन्यस्थितेः वरखंडं।
यावत् तावत्खंडा, अनुकृष्टिपदे विशेषाधिकाः ॥ ९६१ ॥
तत उपरिमखंडाः, स्वकस्वकोत्कृष्टक इति शेषाणां।
सर्वे स्थितितनखंडा, असंख्येयगुणक्रमास्तिरश्चि ॥ ९६२ ॥ युग्मम्।

टीका – आठौं ही कर्मनि का जैसैं कह्या तैसैं ही रचना विशेष समान है। जैसैं मोहनीय का कह्या तैसैं ज्ञानावरणादिक का भी जानना। स्थित्यादिक का प्रमाण यथासंभव जानि लेना। बहुरि विशेष इतना जो आयुकर्म का अनुकृष्टि-गच्छ विषैं खंड हैं, ते जघन्य-स्थिति का अंत का खंड पर्यंत ही तौ चय करि अधिक हैं। बहुरि ताके उत्कृष्ट-खंड तैं उपरिस्थिति के खंड, ते अपने-अपने उत्कृष्ट-खंड पर्यंत तथा अवशेष-स्थितिनि का अपना-अपना जघन्य-खंड तैं अपना-अपना उत्कृष्ट-खंड पर्यंत सर्व बरोबरि रचना रूप असंख्यातगुणे हैं, सो वर्णन करि आये हैं, तिस करि इस कथन का अर्थ जानि लेना ॥ ९६१-९६२ ॥

आगैं अनुभाग-बंधाध्यवसाय-स्थाननि का कथन करै हैं, तहां जघन्य-स्थितिसंबंधी अध्यवसायनि विषैं जघन्य संबंधी अनुभागाध्यवसाय-स्थाननि कौं कहै हैं–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

रसबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखलोगमेत्ताणि।
अवरट्ठिदिस्स अवरट्ठिदिपरिणामम्हि थोवाणि॥ ९६३ ॥

रसबंधाध्यवसायस्थानानि असंख्यलोकमात्राणि।
अवरस्थितेरवरस्थिति, परिणामे स्तोकानि॥ ९६३ ॥

टीका – अनुभागाध्यवसाय-स्थान असंख्यात-लोक कौं असंख्यात-लोक करि गुणिए– अैसैं असंख्यात-लोक प्रमाण हैं। तहां जघन्य स्थिति-संबंधी स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थाननि विषैं जघन्य-स्थिति-बंध योग्य अध्यवसायनि के प्रमाण तैं असंख्यात-लोक गुणे अनुभाग-बंधाध्यवसाय-स्थान हैं, तथापि ते और स्थिति-बंधाध्यवसाय संबंधी अनुभागाध्यवसायनि तैं थोरे हैं। सोई कहिए है–

जघन्य स्थितिसंबंधी स्थिति-बंधाध्यवसाय स्थाननि विषैं अनुभागाध्यवसाय-स्थाननि की रचना दिखाइए है– तहां जघन्य-स्थिति संबंधी स्थिति बंधाध्यवसाय-स्थानकनि का प्रमाण तैं असंख्यात-लोक गुणे अनुभाग-बंधाध्यवसायनि का प्रमाण है, सो तौ इहां द्रव्य का प्रमाण जानना। बहुरि जघन्य-स्थिति संबंधी स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थाननि का जो प्रमाण, सो इहां स्थिति का प्रमाण जानना। बहुरि आवली कौं दोय बार असंख्यात का भाग दीएं जो प्रमाण आवे सो नाना-गुणहानि शलाका का प्रमाण जानना। बहुरि स्थिति के प्रमाण कौं नाना-गुणहानि का भाग दीएं जो प्रमाण आवे, सो गुणहानि-आयाम का प्रमाण जानना। याकौं दूणा कीएं जो प्रमाण होइ, सो दो गुणहानि का प्रमाण जानना। बहुरि आवली के असंख्यातवें भाग अन्योन्याभ्यस्त-राशि का प्रमाण जानना। तहां द्रव्य कौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्त-राशि का भाग दीएं जो प्रमाण आवे, सो प्रथम-गुणहानि विषैं द्रव्य का प्रमाण है। यातैं दूणा-दूणा द्वितीयादि गुणहानि विषैं द्रव्य जानना। तहां प्रथम-गुणहानि का द्रव्य कौं गुणहानि-आयाम का भाग दीएं मध्यम-धन का प्रमाण होइ, याकौं एक घाटि गुणहानि-आयाम का आधा करि हीन अैसा दोगुणहानि के प्रमाण का भाग दीएं चय होइ। इस चय कौं एक अधिक गुणहानि-आयाम करि गुणैं प्रथम-निषेक होइ॥ ९६३ ॥

तत्तो कमेण वड्ढदि, पडिभागेण य असंखलोगेण।
अवरट्ठिदिस्स जेट्ठट्ठिदिपरिणामोत्ति णियमेण॥ ९६४ ॥

ततः क्रमेण वर्धते, प्रतिभागेन च असंख्यलोकेन।
अवरस्थितेः ज्येष्ठस्थितिपरिणाम इति नियमेन॥ ९६४ ॥

टीका – तहां पीछे जघन्य-स्थिति का जघन्य-परिणाम संबंधी प्रथम-निषेक रूप अनुभागाध्यवसाय-स्थान, तिनतैं तिस ही जघन्य-स्थिति का द्वितीयादिक परिणाम संबंधी द्वितीयादि निषेक रूप अनुभागाध्यवसाय-स्थान प्रथम-गुणहानि का अंत-निषेक रूप अंत का परिणाम पर्यंत

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

असंख्यात-लोकमात्र प्रमाण प्रतिभाग सर्व-द्रव्य कौं दीये उपज्या जो चय का प्रमाण, तिस एक-एक चय का प्रमाण करि निरन्तर बधते-बधते जानने। तहां आगें गुणहानि-गुणहानि प्रति प्रथम-निषेक तैं प्रथम-निषेक, चय के प्रमाण तैं चय का प्रमाण दूणा-दूणा जानना। ऐसैं स्थितिबंधाध्यवसाय-स्थान-रचना का जघन्य-स्थिति योग्य प्रथम-निषेक विषैं अनुभागाध्यवसायनि की रचना कही। याही प्रकार द्वितीयादिक स्थिति योग्य द्वितीयादिक निषेकनि विषैं भी उत्कृष्ट-स्थिति रूप अंत-निषेक पर्यंत रचना जाननी। स्थित्यादि प्रमाण यथासंभव जानना। इहां जघन्य-स्थिति संबंधी जघन्य-स्थिति-बंधाध्यवसाय-स्थाननि विषैं प्रथमनिषेक प्रमाण अनुभागाध्यवसाय-स्थान जानने। बहुरि तिसही के दूसरे स्थान विषैं द्वितीय-निषेक प्रमाण जानने– ऐसैं अनुक्रम हैं। बहुरि अनुभाग-बंधाध्यवसायनि कैं नाना-गुणहानि-शलाका हैं वा नाही हैं ऐसा आचार्यनि के मतकरि दोऊ उपदेश हैं॥ ९६४ ॥

आगे मूलग्रंथकर्ता जो 'नेमिचन्द्र-आचार्य' सो अपनी ग्रंथ करने की प्रतिज्ञा पूर्ण करि समाचार कहै हैं–

गोम्मटसंगहसुत्तं, गोम्मटदेवेण गोम्मटं रइयं।
कम्माण णिज्जरट्ठं, तच्चट्ठवधारणट्ठं च॥ ९६५ ॥

गोम्मटसंग्रहसूत्रं, गोम्मटदेवेन गोम्मटं रचितं।
कर्मणां निर्जरार्थं, तत्वावधारणार्थं च॥ ९६५ ॥

टीका – यहु गोम्मटसार ग्रंथ का संग्रह रूप सूत्र सो गोम्मट देव जो श्री 'वीरवर्धमान' नामा तीर्थंकर देव, तीहिं करि गोम्मट कहिए नय-प्रमाण के गोचर ऐसा ज्ञानावरणादिक-कर्मनि की निर्जरा के अर्थि, बहुरि तत्त्वार्थ का निश्चय होने के अर्थि रच्या है।

भावार्थ ऐसा–जो यहु ग्रंथ सो वर्धमान-स्वामी की वाणी के अनुसारि बना है, मेरा कर्तव्य नाही है॥ ९६५ ॥

जम्हि गुणा विस्संता, गणहरदेवादिइड्ढिपत्ताणं।
सो अजियसेणणाहो, जस्स गुरू जयउ सो राओ॥ ९६६ ॥

यस्मिन् गुणा विश्रांता, गणधरदेवादिऋद्धिप्राप्तानां।
सोऽजितसेननाथो, यस्य गुरुर्जयतु स रायः॥ ९६६ ॥

टीका – गणधर देवादिक मुनि जे बुद्धिआदिक ऋद्धि कौं प्राप्त भये, तिनके गुण जाविषैं-विश्राम करि तिष्ठैं हैं, गणधरादिक के से गुण जाविषैं पाइये हैं– ऐसा 'अजितसेन' नामा मुनिनाथ, जिस राजा का व्रत देनेवाला गुरु है, सो राजा सर्वोत्कृष्टपणाकरि वर्तौ॥ ९६६ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सिद्धंतुदयतडुग्गय, णिम्मलवरणेमिचंदकरकलिया।
गुणरयणभुसणंबुहिमइवेला भरउ भुवणयलं॥ ९६७॥

सिद्धांतोदयतटोद्‌गत, निर्मलवरनेमिचंद्रवरकलिता।
गुणरत्नभूषणाबुंधिमतिवेला भरतु भुवनतलं॥ ९६७॥

टीका – सिद्धांतरूपी उदयाचलपर्वत तिसविषैं ज्ञानादिक करि उदयमान भया अैसा निर्मल अर उत्कृष्ट नेमिनाथ रूपी चंद्रमा अथवा नेमिचंद्र-आचार्य रूपी चंद्रमा, ताकैं जु वचन रूप किरण तिनकरि बधी हुई अैसी जो **'गुणरत्नभूषणाबुंधि'** कहिये गुणरूपी रत्नकरि शोभित अैसा चामुडराय नामा राजा, सोई भया समुद्र, ताकी **मतिवेला** कहिए बुद्धिरूपी बेला, सो **'भुवनतलं भरतु'** कहिए जगत विषैं विस्तरिकरि भुवनतल कौं पूरो वा समस्त जगत विषैं अतिशय करि फैलो— अैसा आशीर्वाद है॥ ९६७॥

गोम्मटसंगहसुत्तं, गोम्मटसिंहरूवरि गोम्मटजिणो य।
गोम्मटरायविणिम्मिय, दक्खिणकुक्कुडजिणो जयउ॥ ९६८॥

गोम्मटसंग्रहसूत्रं, गोम्मटशिखरोपरि गोम्मटजिनश्च।
गोम्मटराजविनिर्मित, दक्षिणकुक्कुटजिनो जयतु॥ ९६८॥

टीका – गोम्मटसार संग्रह का रूप सूत्र जो जयवंत प्रवर्तो। बहुरि गोम्मट-शिखरि के ऊपरि गोम्मट-जिन कहिए चामुंडराय नामा राजा करि निर्मापित जिनमंदिर विषैं विराजमान एक हस्त प्रमाण इंद्र-नीलमणिमय 'नेमिनाथ' नामा तीर्थंकर-देव का प्रतिबिंब सो, जयवंत प्रवर्तौ। बहुरि चामुंडराय नामा राजा ही करि निर्मापित जगत विषैं रूढि करि दक्षिण-कुक्कुट-जिन है नाम जाका अैसा जिन प्रतिबिंब सो जयवंत प्रवर्तौ॥ ९६८॥

जेण विणिम्मियपडिमावयणं सव्वट्ठसिद्धिदेवेहिं।
सव्वपरमोहिजोगिहिं, दिट्ठं सो गोम्मटो जयउ॥ ९६९॥

येन विनिर्मितप्रतिमा, वदनं सर्वार्थसिद्धिदेवैः।
सर्वपरमावधियोगिभिः, दृष्टं स गोम्मटो जयतु॥ ९६९॥

टीका – जाकरि निर्मापित जिन-प्रतिमा का मुख सो सर्वार्थसिद्धि के वासी देवनि करि अवधि करि देख्या वा सर्वावधि, परमावधि के धारक योगीश्वरनि करि देख्या, सो चामुंडराय राजा सर्वात्कृष्टपनैं करि वर्तौ॥ ९६९॥

वज्जयणं जिणभवणं, ईसिपभारं सुवण्णकलसं तु।
तिहुवणपडिमाणिक्कं, जेण कयं जयउ सो राओ॥ ९७०॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वज्रतलं जिन भवनमी षत्प्रभारं सुवर्णकलशं तु।
त्रिभुवनप्रतिमानमेकं, येन कृतं जयतु स रायः ॥ ९७० ॥

टीका – वज्र सारिखा जाका अवनितल कहिए पीठबंध, बहुरि ईषत् है प्राग्भार जाका, बहुरि सुवर्णमयी है कलश जाकैं, बहुरि तीन-भुवन विषैं प्रतिमा कहिए उपमा देने योग्य अैसा एक कहिए दूसरा नाहीं– अैसा जिन-भवन जाकरि निर्मापण कीया, सो राजा विराजमान रहो ॥९७० ॥

जेणुब्भियथं भुवरिमजक्खतिरीटग्गकिरणजलधोया।
सिद्धाण सुद्धपाया, सो राओ गोम्मटो जयउ ॥ ९७१ ॥

येनोद्भितस्तंभोपरिमयक्षतिरीटाग्रकिरणजलधौतौ।
सिद्धानां शुद्धपादौ, स रायो गोम्मटो जयतु ॥ ९७१ ॥

टीका – जाकरि चैत्यालय विषैं ऊभा कीया स्तंभ, ताके ऊपर तिष्ठता जो यक्ष का आकार, ताका मुकुट का अग्रभाग की किरण रूपी जल करि सिद्ध-परमेष्ठी के आत्मप्रदेशनि के आकार रूप शुद्ध दोय-चरण ते धोय गए, सो राजा-चामुंडराय जीतिवंत होहु। यद्यपि सिद्धि स्थान पर्यंत यक्ष के मुकुट-किरण कैसैं प्राप्त होंइ ; परन्तु उपमालंकार करि कहने का दोष नाहीं। इहां इतना अर्थ जानना–

चैत्यालय विषैं स्तंभ बहुत ऊँचा बन्या है ता ऊपरि यक्ष का आकार है, ताके मुकुट विषैं ज्योतिवंत पदार्थ लगे हैं ॥ ९७१ ॥

गोम्मटसुत्तल्लिहणे, गोम्मटरायेण जा कया देसी।
सो राओ चिरं कालं, णामेण य वीरमत्तंडी ॥ ९७२ ॥

गोम्म्टसूत्रलेखने, गोम्मटरायेन या कृता देशी।
स रायश्चिरं कालं, नाम्नां च वीरमार्तंडी ॥ ९७२ ॥

टीका – गोम्मटसार-ग्रंथ के सूत्र लिखने विषैं गोम्मट-राजा करि जो देशी भाषा करी, सो राजा नाम करि वीरमार्तंड चिरकाल पर्यंत जीतिवंत प्रवृत्तौ। अैसैं मूल ग्रंथकर्ता श्री 'नेमिचंद्र' नामा आचार्य, तीहिं इस ग्रंथ होने विषैं अपने समाचार कहे। अब इस गोम्मटसार-ग्रंथ की जीवतत्त्वप्रदीपिका नामा संस्कृत-टीका का कर्ता 'केशव' नामा ब्रह्मचारी, सो टीका होने विषैं अपने समाचार श्लोकनि करि कहे, ते कहिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कवित्त

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म प्रभु देव जिनेश,
श्री सुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि जु, शीतल श्रेय वासु पूज्येश।
विमल अनंत धर्म सुरपतिनुत शांति कुंथु अर मल्लि महेश
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व पति, वर्धमान वंदौ परमेश ॥ १ ॥

दोहा

तीन काल संबंधि सब, तीर्थंकर अरहंत।
सिद्ध साधु शिव करहु मम, करत भक्ति भगवंत ॥ २ ॥

अडिल्ल

यावत तारे चंद्र दिपें परकाशतें, नंदो तावत् मूल संघ इह जासतें।
रत्नत्रय करि पद अरहंत सु पाइकैं, सुरनर सेवित सिद्ध होंइ शिव जाइकैं ॥ ३ ॥

दोहा

तहां शारदा गच्छवर, बलात्कार-गण भाय। कुंद-कुंद अन्वय सदा, नंदौं नंद्याम्नाय ॥ ४ ॥

सवैया

जाकौं गण समुदाय मानैं गण भरता, जाकौं ज्ञानभूषण सो नाम गुणवान है।
ताहि भट्टारक शिरोमणी कौं मैं नमौं, सदा बारंबार भक्तिभाव लीएं एक ध्यान है।
कर्णाटक देशस्वामी मल्लि महीपाल ताकौं, भक्ति तैं दयो है जिहि श्रुत-ज्ञान दान है।
अैसे मुनि चंद्र मुनि फुनि नमौं बारबार, जाकी वानी मुनिनि के अमृत समान है ॥

सोरठा

प्रभा चंद्र गुणसेत, नमिए भट्टारक रतन। धर्म वृद्धि के हेत, मोहि सूरिपद जिहि दयो ॥ ६ ॥

सवैया ३१

जो त्रैविद्य विद्या तैं प्रगट अैसा सूरि जाको, नाम है विशालकीर्ति कीर्ति जाकी घनी है।
इस टीका करने में कीनों है सहाय तिहि, सोइ फुनि प्रथम हीऽधीता बुद्धि घनी है ॥
धर्मचंद्र अभयेंदु गणी वर्णी लालादिक, भव्यनि के हेत अैसें जिनवानी भनी है।
कर्णाटक टीका तैं बनाई चित्र कूट नाम, पार्श्वनाथ-आलय में टीका यह बनी है ॥ ७ ॥

दोहा

साधू संगा सहस्स करी, करी प्रार्थना एह। रची मुमुक्षु तबै भली, टीका अर्थ अछेह ॥ ८ ॥

चौपाई—

यहु गोम्मटसार चौपाई की टीक। भव्यनिकरि विस्तारित ठीक ॥
नंदो, जो कुछ होइ विरुद्ध। श्रुत तैं श्रुतधर करियो शुद्ध ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सोरठा —

मुनि निग्रंथ महंत, वर त्रैविद्य सुचक्रधर । अभय-चंद्र मुनि संत, सोधि लिख्यो पुस्तक प्रथम ॥१० ॥

दोहा—

जीवतत्त्व प्रदीपिका, टीका संस्कृतसार । ताके कर्तनि कहे, अैसें स्व समाचार ॥ ११ ॥

आचार्य श्रीनेमिचंद्रविरचित गोम्मटसार द्वितीय नाम पंचसंग्रह ग्रंथकी जीवतत्त्वप्रदीपिका नाम संस्कृत टीका के अनुसारि सम्यग्ज्ञान-चंद्रिका नामा भाषाटीका विषैं कर्मकांड विषैं कर्म-रचना का स्वभाव नामा नवम अधिकार संपूर्ण भया। याकौं होतैं गोम्मटसार-ग्रंथ पूर्ण भया, सो सर्व जीवों कौं ज्ञानानंद का कर्ता होहु ॥

आचार्य श्री नेमिचन्द्र विरचित गोम्मटसार द्वितीयनाम पंचसंग्रह ग्रन्थ की जीव तत्त्व प्रदीपिका नाम संस्कृत टीका के अनुसारि सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका नामा भाषा टीका विषैं कर्मकाण्ड विषैं कर्म रचना का स्वभाव नामा नवमां अधिकार सम्पूर्ण भया। याकौं होतैं गोम्मटसार ग्रन्थ पूर्ण भया, सो सर्व जीव कौं ज्ञानानन्द का कर्त्ता होहु ॥

अब इहां भाषाटीकाकार करि कहिए है—

दोहा—

कर्म कांड कौं जानिकैं, ज्ञान कांडमय होय । परस्वरूप कौं परिहरैं, शिवपद पावै सोय ॥ १ ॥

सोरठा—

मंगल श्री अरहंत, सिद्ध साधु जिन धर्म फुनि । मंगल चारि महंत, एई हैं उत्तम सरण ॥ २ ॥

सवैया—इकतीसा

अर्थ के लोभी ह्वै कैं करि कैं सहास अति, अगम अपार ग्रंथ पारावारमें परे।
थाह तौ न आयो तहां फेर कौन पायो पार, तातैं सूधे मारग ह्वै सारे पार उतरे॥
इस आधे माहि कर्मकांड की है मरजाद, याके अर्थ जानें निज काज सब सुधरे।
निज मति अनुसारि अर्थ गहि **टोडर हू** भाषा बनवाई यानें अर्थ गहौ सगरे ॥ ३ ॥

इति कर्मकाण्ड समाप्त

कवित्त

गोम्मट सार शास्त्र यहु ताके, कहे दोय अधिकार महान।
जीव कांड अर कर्म कांड, अब ते तो पूरण भए प्रमाण
इहां अर्थ संदृष्टि आदि किछु, जाने चाहिए ते अमलान।
कहिए है जानहु सुज्ञानी, जानि साधिए पद निर्वान ॥ ४ ॥

इति श्रीगोम्मटसार सूत्रानुसार भाषा संपूर्ण।

कर्मकाण्ड समाप्त।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com